अलिफ लैला

परियों की अद्भुत कथाएं

अलिफ़ लैला - भूमिका

सहस्र-रजनी चरित्र, जो अब भी भारत में अपने अरबी नाम 'अल्फ लैला' के प्रचलित बिगड़े हुए रूप 'अलिफ लैला' के नाम से अधिक जाना जाता है, वास्तव में लोक कथाओं का ऐसा संग्रह है जिसकी लोकप्रियता का मुकाबला पंचतंत्र की कथा माला के अलावा और कोई कथा-माला नहीं कर सकती। अरबी साहित्य इतिहास के लेखक प्रोफेसर आ.ए. निकलसन के कथनानुसार यूरोपवासियों में कुरआन से भी अधिक जिस अरबी साहित्य को जाना जाता है वह अल्फ लैला ही है। अरबी में अल्फ का अर्थ है एक हजार और लैला का अर्थ है रात। इस लिहाज से इस कथामाला का हिंदी नाम 'सहस्र रजनी चरित्र' बहुत उपयुक्त अनुवाद है।
प्रोफेसर निकलसन ने दसवीं शताब्दी ईस्वी के अरब लेखक और इतिहासकार मसऊदी के हवाले से कहा है कि अल्फ लैला की कथामाला का आधार फारसी की प्राचीन कथामाला 'हजार अफसाना' है। अल्फ लैला की कई कहानियाँ जैसे 'मछुवारा और जिन्न' 'कमरुज्जमा और बदौरा' आदि कहानियाँ सीधे 'हजार अफसाना' से जैसी की तैसी ली गई हैं। निकलसन के अनुसार सब से अधिक कल्पनाशील कथाएँ यही हैं, शेष कहानियाँ जो अरब स्रोतों से आई हैं उनमें हास्यजनित मनोरंजन का तत्व अधिक है। निकलसन और मसऊदी का अपना एक विशेष दृष्टिकोण हो सकता है। मेरे विचार से जिसे इन लोगों ने कल्पनाशीलता का नाम दिया है वह जादू-टोने के बल खड़ा हुआ कल्पना का महल है। जिन अरब स्रोतों की कहानियों को इन लोगों ने हास्यात्मक मनोरंजन कहा है मेरे विचार से वे आधुनिकता के अधिक समीप हैं। यह सही है कि उनमें मानव मन की किन्हीं गहराइयों के दर्शन नहीं होते किंतु उनमें मिलने वाले उन्मुक्त वर्णन में हमें तत्कालीन समाज की जो झलकियाँ मिलती हैं वे उस समय के सामाजिक जीवन और सामाजिक मान्यताओं का अच्छा दिग्दर्शन कराती हैं। मैं इस पर बाद में कुछ कहूँगा, यहाँ मुझे सिर्फ यही कहना है कि जादू-टोने का सहारा पुराने कथाकार केवल इसलिए लिया करते थे कि स्वाभाविक वातावरण में श्रोताओं के कौतूहल को कायम रख सकें।
ऐसा मालूम होता है कि पुराने ईरानी कथा साहित्य का लगभग पूरा आधार ही जादू- टोने पर स्थापित है। फिरदौसी के शाहनामे में, जिसे एक प्रकार से प्राचीन ईरान का इतिहास कहा जा सकता है, अच्छे-खासे अनुपात में अलौलिक बातें पाई जाती हैं, जैसे जुह्हाक के कंधों पर साँप निकल आना, रुस्तम के पिता जाल का एक काल्पनिक पक्षी सीमुर्ग द्वारा पालन-पोषण, रुस्तम की देवों (राक्षसों)

जिनका अरब मानस पर संभवतः कोई प्रभाव नहीं पड़ा। दोनों जातियों में, राजकीय स्तर ही पर सही, पूर्ण सहयोग और सौहार्द दिखाई देता है। कहानियों के मुसलमान नायकों का धार्मिक संघर्ष केवल अग्निपूजकों से होता है। मुसलमान राजाओं के राज्यों में भी अग्निपूजक दिखाई देते हैं जो अपने आराध्य देव अग्नि को मुसलमानों की बलि देते हैं और तारीफ की बात यह है कि मुस्लिम शासकों को इसका पता भी नहीं चलता है क्योंकि ये अग्निपूजक यह काम बहुत गुप्त रूप से करते हैं। हाँ, उनका अपराध ज्ञात होने पर उनको जबरन मुसलमान बना लिया जाता है।
अग्निपूजक उस काल में केवल जरथुस्त्र मतावलंबी पारसी ही थे। उक्त धर्म में नरबलि का कहीं विधान नहीं है। यह बात जरूर है कि तेरहवीं-चौदहवीं ईस्वी शताब्दी में अग्निपूजक जहाँ भी थे वे मुसलमानों को, जिन्होंने उन्हें अपना देश छोड़ने को विवश किया था, बहुत ही नापसंद करते थे और उनसे कोई सामाजिक संबंध नहीं रखना चाहते थे। यह भी याद रहे कि सारी धार्मिक कट्टरताओं के बावजूद ईसाइयों और यहूदियों के मुसलमानों से व्यापारिक संबंध थे और ये लोग मुसलमानों के बीच घुलमिल कर रहते थे। मुसलमान भी अन्य धर्मावलंबियों की अपेक्षा ईसाइयों और यहूदियों को उनके एकेश्वरवाद और दैवी ग्रंथ पर विश्वास (अह्ले-किताब होने) के कारण अधिक क्षम्य समझते थे। अग्निपूजकों को इसी अलगाव के कारण आम मुसलमानों ने अपनी कल्पना में बहुत नीची जगह दी थी और उनकी दुष्टता की कहानियाँ गढ़ ली थीं।
हब्शियों का जहाँ भी उल्लेख आया है, गुलामों ही के रूप में आया है। इसमें आश्चर्य की कोई बात नहीं है। उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य तक अफ्रीका वासियों को सारे संसार में इसी रूप में देखा जाता था। साथ ही उन्हें बड़ा ओछा भी दिखाया गया है। जाफर का गुलाम, जिसे खाने-पीने की कोई तंगी नहीं हो सकती थी, बालक के हाथ से सेब छीन कर भागता है। जल्लाद का काम करने के लिए भी हब्शी रखे जाते थे। ताज्जुब की बात यह है कि व्यभिचारिणी स्त्रियों की काम-पिपासा शांत करने के लिए भी हब्शी ही प्रयुक्त किए गए हैं। यूँ तो गोरे रंग के गुलाम भी बाजारों में खूब बिकते थे, किंतु बेगमों को हब्शियों के अलावा कोई पसंद ही नहीं आता था। यहाँ तक कि एक कथा (मछुवारा और जिन्न) में परम शक्तिशालिनी जादूगरनी मलिका अपने हब्शी गुलाम पर ऐसी आसक्त दिखाई गई है कि उसकी लगातार खुशामद किया करती है और उस गुलाम के घायल और बोलने से लाचार होने पर बरसों तक उसकी सुश्रूषा करती रहती है।

इसका कारण केवल यही नहीं मालूम होता कि हब्शी लोग आम अरबों से शारीरिक रूप से अधिक पुष्ट होते थे। इसकी जड़ में यह बात दिखाई देती है कि कथाकार को जहाँ भी किसी स्त्री की दुष्टता को उभारना होता है वहीं उसका संबंध किसी हब्शी से करा दिया जाता है, क्योंकि तत्कालीन अरब समाज में हब्शियों को नर-पशु से अधिक नहीं समझा जाता था। जहाँ मधुर प्रेम-संबंध दिखाए गए हैं वहाँ मुसलमान शहजादों या धनाढ्य लोगों की भी नमाज दिखाई गई है, किंतु आम लोगों और निर्धनों की नमाज का उल्लेख नहीं के बराबर है। यह स्थिति आज की स्थिति से भिन्न हैं क्योंकि आज मुसलमानों में नमाज के पाबंद गरीब ही अधिक दिखाई देते हैं। हज का उल्लेख भी कहानियों में एक-आध जगह ही प्रकारांतर से हुआ है। उसका कोई विवरण नहीं दिया गया है जबकि शाही महलों और जादू के महलों की सजावट के वर्णन में पृष्ठ के पृष्ठ रंग दिए गए हैं।
हाँ, एक इस्लामी विश्वास जरूर उभर कर आता है। वह यह कि इस्लाम में आत्महत्या जघन्य अपराध समझी गई है। कई कहानियों में नायक निराश होकर आत्महत्या की बात सोचता है, फिर इसे घोर पाप समझ कर रुक जाता है। यह इस्लामी मान्यता कथा के प्रवाह को आगे बढ़ाने में बड़ी सहायक सिद्ध हुई है और इसीलिए इसका खूब सहारा लिया गया है।
किंतु इस्लामी मान्यताओं ने मदिरापान पर कहीं रोक नहीं लगाई। राजा हो या रंक, अगर उन्हें पेट भर खाने को मिलता है तो कुछ देर बाद शराब जरूर पीते हैं। शराब के साथ अनिवार्य रूप से फल और मिठाई खाने का रिवाज भी आम है। हर सम्मानित अतिथि का स्वागत सामिष भोज्य पदार्थों और फिर मदिरा से किया जाता है। इस्लाम में शराब और हर तरह के नशे की मनाही है किंतु यह धार्मिक निषेध किसी कहानी में प्रकारांतर से भी उल्लिखित नहीं हुआ है। तत्कालीन मुस्लिम समाज स्पष्टतः ही मद्यपान को बुराई समझना छोड़ चुका था। इसी तरह कोई हँसी-खुशी का मौका नाच-गाने के बगैर नहीं होता। बादशाहों और खलीफाओं के यहाँ तो यह दैनिक कार्यक्रम में शामिल है ही, आम लोग भी जहाँ खुशी मनाते हैं वहाँ नाच-गाना जरूर होता है और इस सिलसिले में इस बात का जिक्र तक नहीं होता कि इस्लाम ने नृत्य, संगीत, कविता (ईशभक्ति के काव्य के अतिरिक्त) आदि का निषेध किया है।
सामाजिक प्रतिष्ठा के प्रथम सोपान पर स्वभावतः ही बादशाह, शहजादे और वजीर दिखाई देते हैं। लेकिन उसके बाद व्यापारियों ही का नंबर आता है। बड़े व्यापारी, विशेषतः जौहरी, तो अति प्रतिष्ठित हैं ही, मामूली व्यापारी भी

वास्तव में यह कथामाला किसी सर्वमान्य रूप में नहीं है। कई संग्रहों में कई ऐसी कहानियाँ हैं जो अन्य संग्रहों में नहीं हैं। ऐसा मालूम होता है कि यूरोपियनों या उनके प्रभाव में आने वाले अन्य लोगों ने ऐसी अजीब-अजीब कहानियाँ गढ़कर इसमें शामिल कर दी हैं, जो दूसरी कहानियों के मिजाज से मेल नहीं खाती। इन लोगों ने शायद यह समझ लिया है कि कोई भी कामुकतापूर्ण घटना अल्फ लैला में चल जाएगी।
प्रस्तुत संग्रह में केवल सर्वमान्य कहानियाँ दी गई हैं, यद्यपि उनका ऐसा संक्षिप्तीकरण नहीं किया गया है जो कहानी को कथानक तक सीमित कर दे क्योंकि लोकसाहित्य का मूल्य उसके कथानक में नहीं, उसके वर्णन में निहित होता है।

शहरयार और शाहजमाँ की कहानी

फारस देश भी हिंदुस्तान और चीन के समान था और कई नरेश उसके अधीन थे। वहाँ का राजा महाप्रतापी और बड़ा तेजस्वी था और न्यायप्रिय होने के कारण प्रजा को प्रिय था। उस बादशाह के दो बेटे थे जिनमें बड़े लड़के का नाम शहरयार और छोटे लड़के का नाम शाहजमाँ था। दोनों राजकुमार गुणवान, वीर धीर और शीलवान थे।
जब बादशाह का देहांत हुआ तो शहजादा शहरयार गद्दी पर बैठा और उसने अपने छोटे भाई को जो उसे बहुत मानता था तातार देश का राज्य, सेना और खजाना दिया। शाहजमाँ अपने बड़े भाई की आज्ञा में तत्पर हुआ और देश के प्रबंध के लिए समरकंद को जो संसार के सभी शहरों से उत्तम और बड़ा था अपनी राजधानी बनाकर आराम से रहने लगा। जब उन दोनों को अलग हुए दस वर्ष हो गए तो बड़े ने चाहा कि किसी को भेजकर उसे अपने पास बुलाए। उसने अपने मंत्री को उसे बुलाने की आज्ञा दी और मंत्री यह आज्ञा पाकर बड़ी धूमधाम से विदा हुआ। जब वह समरकंद शहर के समीप पहुँचा तो शाहजमाँ यह समाचार सुनकर उसकी अगवानी को सेना लेकर अपनी राजधानी से रवाना हुआ और शहर के बाहर पहुँचकर मंत्री से मिला। वह उसे देखकर प्रसन्न हुआ। शाहजमाँ अपने भाई शहरयार का कुशलक्षेम पूछने लगा। मंत्री ने शाहजमाँ को दंडवत कर उसके भाई का हाल कहा।
वह मंत्री बादशाह शहरयार का परम आज्ञा पालक था और उससे प्रेम करता था। शाहजमाँ ने उससे कहा कि भाई! मेरे अग्रज ने तुम्हें मुझे लेने को भेजा इस बात से मुझको अत्यंत हर्ष हुआ। उनकी आज्ञा मेरे शिरोधार्य है। अगर भगवान ने चाहा तो दस दिन में यात्रा की तैयारी कर के और शासन में अपना प्रतिनिधि

सौगंध देकर एक बात पूछता हूँ, तुम वह बात जरूर बताना। शाहजमाँ ने कहा, 'जो बात भी आप पूछेंगे मैं अवश्य बताऊँगा।'
शहरयार ने कहा, 'जब तुम अपनी राजधानी से यहाँ आए थे तो मैंने तुम्हें शोक सागर में डूबा देखा था। मैंने तुम्हारा चित्त प्रसन्न करने के लिए अनेक उपाय किए, भाँति-भाँति के खेल-तमाशे करवाए किंतु तुम्हारी दशा जैसी की तैसी रही। मैंने बहुत सोचा कि इस दुख का कारण क्या हो सकता है किंतु इसके सिवा कोई कारण समझ में नहीं आया कि तुम्हें अपनी बेगम के विछोह का दुख है और राज्य प्रबंध की चिंता है। किंतु अब क्या बात हुई जिससे तुम्हारा दुख और चिंता दूर हो गई?
शाहजमाँ यह सुनकर मौन रहा किंतु जब शहरयार ने बार-बार यही प्रश्न पूछा तो वह बोला, 'आप मेरे मालिक हैं मुझ से बड़े हैं; मैं इस प्रश्न का उत्तर न दूँगा क्योंकि इसमें बड़ी निर्लज्जता की बात है।' शहरयार ने कहा कि जब तक तुम मुझे यह न बताओगे तब तक मुझे चैन न आएगा। शाहजमाँ ने विवश होकर अपनी बेगम के कुकर्म का सविस्तार वर्णन किया और कहा कि मैं इसी कारण दुखी रहता था।
शहरयार ने कहा, 'भैय्या, यह तो तुमने बड़े आश्चर्य की, असंभव-सी बात बताई। यह तो तुमने बड़ा अच्छा किया कि ऐसी व्यभिचारिणी को उसके प्रेमी सहित मार डाला। इस मामले में कोई तुम्हें अन्यायी नहीं कह सकता। मैं तुम्हारी जगह होता तो मुझे एक स्त्री को मारने से संतोष न होता, हजार स्त्रियों को मार डालता। बताओ कि मेरे बाहर जाने पर यह शोक किस प्रकार दूर हुआ?'
शाहजमाँ ने कहा, 'मुझे यह बात कहते डर लगता है कि ऐसा न हो कि यह सुनकर आपको मुझसे भी अधिक दुख हो।' शहरयार ने कहा कि भाई, तुमने यह कह कर मेरी उत्कंठा और बढ़ा दी है; मुझे अब इसे सुने बगैर चैन न आएगा इसलिए यह बात जरूर बताओ। विवश होकर शाहजमाँ ने मसऊद, दसों दासियों और बेगम का सारा हाल बताया और बोला, यह घटना मैंने अपनी आँखों से देखी है और समझ लिया है कि सारी स्त्रियों के स्वभाव में दुष्टता और पाप होता है। और आदमी को चाहिए कि उनका भरोसा न करे। मुझे यह सारा कांड देखकर अपना दुख भूल गया है और इसीलिए मैं नीरोग और प्रसन्नचित्त दिखाई देता हूँ।'
यह हाल सुनकर भी शहरयार को अपने भाई के कथन पर विश्वास न हुआ। वह क्रुद्ध स्वर में बोला, 'क्या हमारे देश की सारी बेगमें व्यभिचारिणी हैं? मुझे तुम्हारे कहने का विश्वास नहीं होगा जब तक मैं खुद अपनी आँखों से यह न देख

लूँ। संभव है तुम्हें भ्रम हुआ हो।' शाहजमाँ ने कहा, 'भाई साहब, आप खुद देखना चाहते हैं तो ऐसा कीजिए कि दुबारा शिकार के लिए आज्ञा दीजिए। हम आप दोनों फौज के साथ शहर से कूच कर के बाहर चलें। दिन भर अपने खेमों में रहें और रात को चुपचाप इसी मकान में आ बैठें। फिर निश्चय ही आप वह सारा व्यापार अपनी आँखों देख लेंगे जो मैंने आपको बताया है।'
शहरयार ने यह बात स्वीकार कर के दरबारियों को आज्ञा दी कि कल मैं फिर शिकार को जाऊँगा। अतः दूसरे दिन प्रातःकाल ही दोनों भाई शिकार को चले और शहर के बाहर जाकर अपने खेमों में ठहरे। जब रात हुई तो शहरयार ने मंत्री को बुलाकर आज्ञा दी कि मैं एक जरूरी काम से जा रहा हूँ, तुम फौज के किसी आदमी को यहाँ से जाने न देना। तत्पश्चात दोनों भाई घोड़ों पर सवार होकर गुप्त रूप से शहर में आए और सवेरा होने के पहले ही शाहजमाँ के महल की उसी खिड़की में आ बैठे जिससे शाहजमाँ ने सारा कांड देखा था। सूर्योदय के पूर्व ही महल का चोर दरवाजा खुला और कुछ देर में बेगम अपने उन्हीं स्त्री वेशधारी हब्शियों के साथ वहाँ से निकल कर बाग में आई और मसऊद को पुकारा।
यह सारा हाल - जो न कहने के योग्य है न सुनने के - देखकर शहरयार अपने मन में कहने लगा कि हे! भगवान, यह कैसा अनर्थ है कि मुझ जैसे महान नृपति की पत्नी ऐसी व्यभिचारणी हो। फिर वह शाहजमाँ से बोला कि यह अच्छा रहेगा कि हम इस क्षणभंगुर संसार को जिसमें एक क्षण आनंद का होता है दूसरा दुख का, छोड़ दें और अपने देशों और सेनाओं का परित्याग कर के अन्य देशों में शेष जीवन काटें और इस घृणित व्यापार के बारे में किसी से कुछ न कहें।
शाहजमाँ को यह बात पसंद नहीं आई किंतु अपने भाई की अत्यंत दुखी दशा देखकर उसने इनकार करना ठीक न समझा और बोला, 'भाई साहब, मैं आपका अनुचर हूँ और आपकी आज्ञा को पूर्ण रूप से मानूँगा। लेकिन मेरी एक शर्त है। जब आप किसी व्यक्ति को अपने से अधिक इस दुर्भाग्य से पीड़ित देखें तो अपने देश को लौट आएँ।'
शहरयार ने कहा, 'मुझे तुम्हारी यह शर्त स्वीकार है लेकिन मेरा विचार है कि संसार में किसी मनुष्य को हमारे जैसा दुख नहीं होगा।' शाहजमाँ ने कहा, 'थोड़ी-सी ही यात्रा करने पर आपको इस बात का पता अच्छी तरह से चल जाएगा।' अतएव वे दोनों छुप कर एक सुनसान रास्ते से नगर के बाहर एक ओर को चले। दिन भर चलने के बाद रात को एक पेड़ के नीचे लेट कर सो रहे। दूसरे दिन प्रातःकाल वे वहाँ से भी आगे चले और चलते-चलते एक मनोरम वाटिका में पहुँचे जो एक नदी

नहीं है? तू सोच- समझ कर बात किया कर। तू किस तरह बादशाह को इस अन्याय से रोक सकेगी? बेकार ही अपनी जान गँवाएगी।
शहरजाद ने कहा, 'मैं बादशाह के प्रण को भली भाँति जानती हूँ, परंतु अपने इस विचार को किसी प्रकार न छोड़ूँगी। यदि मैं अन्य कन्याओं की भाँति मारी गई तो इस असार संसार से मुक्ति पा जाऊँगी और अगर मैंने बादशाह को इस अत्याचार से विमुख कर दिया तो अपने नगर निवासियों का बड़ा हित कर सकूँगी।'
मंत्री ने कहा, 'मैं किसी प्रकार तेरी यह इच्छा स्वीकार नहीं कर सकता। मैं तुझे जानते-बूझते ऐसी विकट परिस्थिति में कैसे डाल सकता हूँ? अजीब-सी बात है कि तू मुझ से कहती है कि मेरी मौत का सामान कर दो। कौन-सा पिता ऐसा होगा जो अपनी प्यारी संतान के लिए ऐसा करने का सोच भी सकेगा। तुझे चाहे अपने प्राण प्यारे न हों लेकिन मुझ से यह नहीं हो सकता कि तेरे खून से हाथ रँगूँ।' शहरजाद फिर भी अपनी जिद पर अड़ी रही और विवाह की प्रार्थी रही। मंत्री ने कहा, तू बेकार ही मुझे गुस्सा दिला रही है। आखिर क्यों तू मरना चाहती है? क्यों अपने प्राणों से इतनी रुष्ट है? सुन ले, जो भी व्यक्ति किसी काम को बगैर सोच-विचार के करता है उसे बाद में पछताना पड़ता है। मुझे भय है कि तेरी दशा उस गधे की तरह न हो जाए जो सुख से रहता था किंतु मूर्खता के कारण दुख में पड़ा। शहरजाद ने कहा, यह कहानी मुझे बताइए। मंत्री ने कहानी सुनाई।

गधे, बैल और उनके मालिक की कहानी

एक बड़ा व्यापारी था जिसके गाँव में बहुत-से घर और कारखाने थे जिनमें तरह-तरह के पशु रहते थे। एक दिन वह अपने परिवार सहित कारखानों को देखने के लिए गाँव गया। उसने अपनी पशुशाला भी देखी जहाँ एक गधा और एक बैल बँधे हुए थे। उसने देखा कि वे दोनों आपस में वार्तालाप कर रहे हैं। वह व्यापारी पशु- पक्षियों की बोली समझता था। वह चुपचाप खड़ा होकर दोनों की बातें सुनने लगा।
बैल ने गधे से कहा, 'तू बड़ा ही भाग्यशाली है, सदैव सुखपूर्वक रहता है। मालिक हमेशा तेरा खयाल रखता है। तेरी रोज मलाई-दलाई होती है, खाने को दोनों समय जौ और पीने के लिए साफ पानी मिलता है। इतने आदर-सत्कार के बाद भी तुझसे केवल यह काम लिया जाता है कि कभी काम पड़ने पर मालिक तेरी पीठ पर बैठ कर कुछ दूर चला जाता है। तुझे दाने-घास की कभी कमी नहीं होती।

'और तू जितना भाग्यवान है मैं उतना ही अभागा हूँ। मैं सवेरा होते ही पीठ पर हल लादकर जाता हूँ। वहाँ दिन भर मुझे हल में जोतकर चलाते हैं। हलवाहा मुझ पर बराबर चाबुक चलाता रहता है। उसके चाबुकों की मार से पीठ और जुए से मेरे कंधे छिल गए हैं। सुबह से शाम तक ऐसा कठिन काम लेने के बाद भी ये लोग मेरे आगे सूखा और सड़ा भूसा डालते हैं जो मुझसे खाया नहीं जाता। रात भर मैं भूखा-प्यासा अपने गोबर और मूत्र में पड़ा रहता हूँ और तेरी सुख-सुविधा पर ईर्ष्या किया करता हूँ।'
गधे ने यह सुनकर कहा, 'ऐ भाई, जो कुछ तू कहता है सब सच है, सचमुच तुझे बड़ा कष्ट है। किंतु जान पड़ता है तू इसी में प्रसन्न है, तू स्वयं ही सुख से रहना नहीं चाहता। तू यदि मेहनत करते-करते मर जाए तो भी ये लोग तेरी दशा पर तरस नहीं खाएँगे। अतएव तू एक काम कर, फिर वे तुझ से इतनी मेहनत नहीं लिया करेंगे और तू सूख से रहेगा।'
बैल ने पूछा कि ऐसा कौन-सा उपाय हो सकता है। गधे ने कहा, 'तू अपने को रोगी दिखा। एक शाम का दाना-भूसा न खा और अपने स्थान पर चुपचाप लेट जा।' बैल को यह सुझाव बड़ा अच्छा लगा। उसने गधे की बात सुनकर कहा, 'मैं ऐसा ही करूँगा। तूने मुझे बड़ा अच्छा उपाय बताया है। भगवान तुझे प्रसन्न रखें।'
दूसरे दिन प्रातःकाल हलवाहा जब पशुशाला में यह सोचकर गया कि रोज की तरह बैल को खेत जोतने के लिए ले जाए तो उसने देखा कि रात की लगाई सानी ज्यों की त्यों रखी है और बैल धरती पर पड़ा हाँफ रहा है, उसकी आँखें बंद हैं और उसका पेट फूला हुआ है। हलवाहे ने समझा कि बैल बीमार हो गया है और यह सोचकर उसे हल में न जोता। उसने व्यापारी को बैल के बीमारी की सूचना दी।
व्यापारी यह सुनकर जान गया कि बैल ने गधे की शिक्षा पर कार्य कर के स्वयं को रोगी दिखाया है अतएव उसने हलवाहे से कहा कि आज गधे को हल में जोत दो। इसलिए हलवाहे ने गधे को हल में जोत कर उससे सारे दिन काम लिया। गधे को खेत जोतने का अभ्यास नहीं था। वह बहुत थक गया और उसके हाथ-पाँव ठंडे होने लगे। शारीरिक श्रम के अतिरिक्त सारे दिन उस पर इतनी मार पड़ी थी कि संध्या को घर लौटते समय उसके पाँव भी ठीक से नहीं पड़ रहे थे।
इधर बैल दिन भर बड़े आराम से रहा। वह नाँद की सारी सानी खा गया और गधे को दुआएँ देता रहा। जब गधा गिरता-पड़ता खेत से आया तो बैल ने कहा कि भाई, तुम्हारे उपदेश के कारण मुझे बड़ा सुख मिला। गधा थकान के कारण उत्तर न दे सका और आकर अपने स्थान पर गिर पड़ा। यह मन ही मन अपने को धिक्कारने लगा कि

अभागे, तूने बैल को आराम पहुँचाने के लिए अपनी सुख-सुविधा का विनाश कर दिया।
मंत्री ने इतनी कथा कर कहा, 'बेटी, तू इस समय बड़ी सुख-सुविधा में रहती है। तू क्यों चाहती है कि गधे के समान स्वयं को कष्ट में डाले?' शहरजाद अपने पिता की बात सुनकर बोली, 'इस कहानी से मैं अपनी जिद नहीं छोड़ती। जब तक आप बादशाह से मेरा विवाह नहीं करेंगे मैं इसी तरह आपके पीछे पड़ी रहूँगी।' मंत्री बोला, 'अगर तू जिद पर अड़ी रही तो मैं तुझे वैसा ही दंड दूँगा जो व्यापारी ने अपनी स्त्री को दिया था।' शहरजाद ने पूछा, 'व्यापारी ने क्यों स्त्री को दंड दिया और गधे और बैल का क्या हुआ?'
मंत्री ने कहा, 'दूसरे दिन व्यापारी रात्रि भोजन के पश्चात अपनी पत्नी के साथ पशुशाला में जा बैठा और पशुओं की बातें सुनने लगा। गधे ने बैल से पूछा, 'सुबह हलवाहा तुम्हारे लिए दाना-घास लाएगा तो तुम क्या करोगे?' 'जैसा तुमने कहा है वैसा ही करूँगा,' बैल ने कहा। गधे ने कहा, 'नहीं, ऐसा न करना, वरना जान से जाओगे। शाम को लौटते समय मैंने सुना कि हमारा स्वामी अपने रसोइए से कह रहा था कि कल कसाई और चमार को बुला लाना और बैल, जो बीमार हो गया है, का मांस और खाल बेच डालना। मैंने जो सुना था वह मित्रता के नाते तुझे बता दिया। अब तेरी इसी में भलाई है कि सुबह जब तेरे आगे चारा डाला जाए तो तू उसे जल्दी से उठकर खा ले और स्वस्थ बन जा। फिर हमारा स्वामी तुझे स्वस्थ देखकर तुझे मारने का इरादा छोड़ देगा।' यह बात सुन कर बैल भयभीत होकर बोला, 'भाई, ईश्वर तुझे सदा सुखी रखे। तेरे कारण मेरे प्राण बच गए। अब मैं वही करूँगा जैसा तूने कहा है।
व्यापारी यह बात सुनकर ठहाका लगा कर हँस पड़ा। उसकी स्त्री को इस बात से बड़ा आश्चर्य हुआ। वह पूछने लगी, 'तुम अकारण ही क्यों हँस पड़े?' व्यापारी ने कहा कि यह बात बताने की नहीं है, मैं सिर्फ यह कह सकता हूँ कि मैं बैल और गधे की बातें सुन कर हँसा हूँ। स्त्री ने कहा, 'मुझे भी वह विद्या सिखाओ जिससे पशुओं की बोली समझ लेते हैं।' व्यापारी ने इससे इनकार कर दिया। स्त्री बोली, 'आखिर तुम मुझे यह क्यों नहीं सिखाते?' व्यापारी बोला, 'अगर मैंने तुझे यह विद्या सिखाई तो मैं जीवित नहीं रहूँगा।' स्त्री ने कहा, 'तुम मुझे धोखा दे रहे हो। क्या वह आदमी जिसने तुझे यह सिखाया था, सिखाने के बाद मर गया? तुम कैसे मर जाओगे? तुम झूठ बोलते हो। कुछ भी हो मैं तुम से यह

विद्या सीख कर ही रहूँगी। अगर तुम मुझे नहीं सिखाओगे तो मैं प्राण तज दूँगी।'
यह कह कर वह स्त्री घर में आ गई और अपनी कोठरी का दरवाजा बंद कर के रात भर चिल्लाती और गाली-गलौज करती रही। व्यापारी रात को तो सो गया लेकिन दूसरे दिन भी वही हाल देखा तो स्त्री को समझाने लगा कि तू बेकार जिद करती है, यह विद्या तेरे सीखने योग्य नहीं है। स्त्री ने कहा कि जब तक तुम मुझे यह भेद नहीं बताओगे, मैं खाना-पीना छोड़े रहूँगी और इसी प्रकार चिल्लाती रहूँगी। व्यापारी ने कहा कि अगर मैं तेरी मूर्खता की बात मान लूँ तो मैं अपनी जान से हाथ धो बैठूँगा। स्त्री ने कहा, 'मेरी बला से तुम जियो या मरो, लेकिन मैं तुमसे यह सीख कर ही रहूँगी कि पशुओं की बोली कैसे समझी जाती है।'
व्यापारी ने जब देखा कि यह महामूर्ख अपना हठ छोड़ ही नहीं रही है तो उसने अपने और ससुराल के रिश्तेदारों को बुलाया कि वे उस स्त्री को अनुचित हठ छोड़ने के लिए समझाएँ। उन लोगों ने भी उस मूर्ख को हर प्रकार समझाया लेकिन वह अपनी जिद से न हटी। उसे इस बात की बिल्कुल चिंता न थी कि उसका पति मर जाएगा। छोटे बच्चे माँ की यह दशा देखकर हाहाकार करने लगे।
व्यापारी की समझ ही में नहीं आ रहा था कि वह स्त्री को कैसे समझाए कि इस विद्या को सीखने का हठ ठीक नहीं है। वह अजीब दुविधा में था - अगर मैं बताता हूँ तो मेरी जान जाती है और नहीं बताता तो स्त्री रो रो कर मर जाएगी। इसी उधेड़बुन में वह अपने घर के बाहर जा बैठा।
उसने देखा कि उसका कुत्ता उसके मुर्गे को मुर्गियों से भोग करते देख कर गुर्राने लगा। उसने मुर्गे से कहा, 'तुझे लज्जा नहीं आती कि आज के जैसे दुखदायी दिन भी तू यह काम कर रहा है?'
मुर्गे ने कहा, 'आज ऐसी क्या बात हो गई है कि मैं आनंद न करूँ?' कुत्ता बोला, 'आज हमारा स्वामी अति चिंताकुल है। उसकी स्त्री की मति मारी गई है और वह उससे ऐसे भेद को पूछ रही है जिसे बताने से वह तुरंत ही मर जाएगा। नहीं बताएगा तो स्त्री रो-रो कर मर जाएगी। इसी से सारे लोग दुखी हैं और तेरे अतिरिक्त कोई ऐसा नहीं है जो स्त्री संभोग की भी बात भी सोचे।'
मुर्गा बोला, 'हमारा स्वामी मूर्ख है जो एक स्त्री का पति है और वह भी उसके अधीन नहीं है। मेरी तो पचास मुर्गियाँ हैं और सब मेरे अधीन हैं। अगर हमारा स्वामी एक काम करे तो उसका दुख अभी दूर हो जाएगा।'

कुत्ते ने पूछा कि स्वामी क्या करे कि उसकी मूर्ख स्त्री की समझ वापस आ जाए। मुर्गे ने कहा, 'हमारे स्वामी को चाहिए कि एक मजबूत डंडा लेकर उस कोठरी में जाए जहाँ उसकी स्त्री चीख-चिल्ला रही है। दरवाजा अंदर से बंद कर ले और स्त्री की जम कर पिटाई करे। कुछ देर में स्त्री अपना हठ छोड़ देगी।' मुर्गे की बात सुनकर व्यापारी ने उठकर एक मोटा डंडा लिया और उस कोठरी में गया जहाँ उसकी पत्नी चीख-चिल्ला रही थी। दरवाजा अंदर से बंद कर के व्यापारी ने स्त्री पर डंडे बरसाने शुरू कर दिए। कुछ देर चीख-पुकार बढ़ाने पर भी जब स्त्री ने देखा कि डंडे पड़ते ही जा रहे हैं तो वह घबरा उठी। वह पति के पैरों पर गिर कर कहने लगी कि अब हाथ रोक ले, अब मैं कभी ऐसी जिद नही करूँगी। इस पर व्यापारी ने हाथ रोक लिया।
यह कहानी सुनाकर मंत्री ने शहरजाद से कहा कि अगर तुमने अपना हठ न छोड़ा तो मैं तुम्हें ऐसा ही दंड दूँगा जैसा व्यापारी ने अपनी स्त्री को दिया था। शहरजाद ने कहा 'आप की बातें अपनी जगह ठीक हैं किंतु मैं किसी भी प्रकार अपना मंतव्य बदलना नहीं चाहती। अपनी इच्छा का औचित्य सिद्ध करने के लिए मुझे भी कई ऐतिहासिक घटनाएँ और कथाएँ मालूम हैं लेकिन उन्हें कहना बेकार है। यदि आप मेरी कामना पूरी न करेंगे तो मैं आप से पूछे बगैर स्वयं ही बादशाह की सेवा में पहुँच जाऊँगी।'
अब मंत्री विवश हो गया। उसे शहरजाद की बात माननी पड़ी। वह बादशाह के पास पहुँचा और अत्यंत शोक-संतप्त स्वर में निवेदन करने लगा, 'मेरी पुत्री आपके साथ विवाह सूत्र में बँधना चाहती है।' बादशाह को इस बात पर बड़ा आश्चर्य हुआ। उसने कहा, 'तुम सब कुछ जानते हो फिर भी तुमने अपनी पुत्री के लिए ऐसा भयानक निर्णय क्यों लिया?' मंत्री ने कहा, 'लड़की ने खुद ही मुझ पर इस बात के लिए जोर दिया है। उसकी खुशी इसी बात में हैं कि वह एक रात के लिए आप की दुल्हन बने और सुबह मृत्यु के मुख में चली जाए।' बादशाह का आश्चर्य इस बात से और बढ़ा। वह बोला, 'तुम इस धोखे में न रहना कि तुम्हारा खयाल कर के मैं अपनी प्रतिज्ञा छोड़ दूँगा। सवेरा होते ही मैं तुम्हारे ही हाथों तुम्हारी बेटी को सौंपूँगा कि उसका वध करवाओ। यह भी याद रखना कि यदि तुमने संतान प्रेम के कारण उसके वध में विलंब किया तो मैं उसके वध के साथ तेरे वध की भी आज्ञा दूँगा।'
मंत्री ने निवेदन किया, 'मैं आपका चरण सेवक हूँ। यह सही है कि वह मेरी बेटी है और उसकी मृत्यु से मुझे बहुत ही दुख होगा। लेकिन मैं आपकी आज्ञा का पालन

करूँगा।' बादशाह ने मंत्री की बात सुनकर कहा, 'यह बात है तो इस कार्य में विलंब क्यों किया जाए। तुम आज ही रात को अपनी बेटी को लाकर उसका विवाह मुझ से कर दो।'
मंत्री बादशाह से विदा लेकर अपने घर आया और शहरजाद को सारी बात बताई। शहरजाद यह सुनकर बहुत प्रसन्न हुई और अपने शोकाकुल पिता के प्रति कृतज्ञता प्रकट कर के कहने लगी, 'आप मेरा विवाह कर के कोई पश्चात्ताप न करें। भगवान चाहेगा तो इस मंगल कार्य से आप जीवन पर्यंत हर्षित रहेंगे।' फिर शहरजाद ने अपनी छोटी बहन दुनियाजाद को एकांत में ले जाकर उससे कहा, 'मैं तुमसे एक बात में सहायता चाहती हूँ। आशा है तुम इससे इनकार न करोगी। मुझे बादशाह से ब्याहने के लिए ले जाएँगे। तुम इस बात से शोक-विह्वल न होना बल्कि मैं जैसा कहूँ वैसा करना। मैं तुम्हें विवाह की रात पास में सुलाऊँगी और बादशाह से कहूँगी कि तुम्हें मेरे पास आने दे ताकि मैं मरने के पहले तुम्हें धैर्य बँधा सकूँ। मैं कहानी कहने लगूँगी। मुझे विश्वास है कि इस उपाय से मेरी जान बच जाएगी।' दुनियाजाद ने कहा, 'तुम जैसा कहती हो वैसा ही करूँगी।'
शाम को मंत्री शहरजाद को लेकर राजमहल में गया। उसने धर्मानुसार पुत्री का विवाह बादशाह के साथ करवाया और पुत्री को महल में छोड़कर घर आ गया। एकांत में बादशाह ने शहरजाद से कहा, 'अपने मुँह का नकाब हटाओ।' नकाब उठने पर उसके अप्रतिम सौंदर्य से बादशाह स्तंभित-सा रह गया। लेकिन उसकी आँखों मे आँसू देख कर पूछने लगा कि तू रो क्यों रही है। शहरजाद बोली, 'मेरी एक छोटी बहन है जो मुझे बहुत प्यार करती है और मैं भी उसे बहुत प्यार करती हूँ। मैं चाहती हूँ कि आज वह भी यहाँ रहे ताकि सूर्योदय होने पर हम दोनों बहनें अंतिम बार गले मिल लें। यदि आप अनुमति दें तो वह भी पास के कमरे में सो रहे।' बादशाह ने कहा, 'क्या हर्ज है, उसे बुलवा लो और पास के कमरे में क्यों, इसी कमरे में दूसरी तरफ सुला लो।'
चुनांचे दुनियाजाद को भी महल में बुला लिया गया। शहरयार शहरजाद के साथ ऊँचे शाही पलँग पर सोया और दुनियाजाद पास ही दूसरे छोटे पलँग पर लेट रही। जब एक घड़ी रात रह गई तो दुनियाजाद ने शहरजाद को जगाया और बोली, 'बहन, मैं तो तुम्हारे जीवन की चिंता से रात भर न सो सकी। मेरा चित्त बड़ा व्याकुल है। तुम्हें बहुत नींद न आ रही हो और कोई अच्छी-सी कहानी इस समय तुम्हें याद हो तो सुनाओ ताकि मेरा जी बहले।' शहरजाद ने बादशाह से कहा कि यदि आपकी

अनुमति हो तो मैं जीवन के अंतिम क्षणों में अपनी प्रिय बहन की इच्छा पूरी कर लूँ। बादशाह ने अनुमति दे दी।

व्यापारी और दैत्य की कहानी

शहरजाद ने कहा:
प्राचीन काल में एक अत्यंत धनी व्यापारी बहुत-सी वस्तुओं का कारोबार किया करता था। यद्यपि प्रत्येक स्थान पर उसकी कोठियाँ, गुमाश्ते और नौकर-चाकर रहते थे तथापि वह स्वयं भी व्यापार के लिए देश-विदेश की यात्रा किया करता था। एक बार उसे किसी विशेष कार्य के लिए अन्य स्थान पर जाना पड़ा। वह अकेला घोड़े पर बैठ कर चल दिया। गंतव्य स्थान पर खाने-पीने को कुछ नहीं मिलता था, इसलिए उसने एक खुर्जी में कुलचे और खजूर भर लिए। काम पूरा होने पर वह वापस लौटा। चौथे दिन सवेरे अपने मार्ग से कुछ दूर सघन वृक्षों के समीप एक निर्मल तड़ाग देखकर उस की विश्राम करने की इच्छा हुई। वह घोड़े से उतरा और तालाब के किनारे बैठ कर कुलचे और खजूर खाने लगा। जब पेट भर गया तो उसने जगह साफ करने के लिए खजूरों की गुठलियाँ इधर-उधर फेंक दीं और आराम करने लगा। इतने में उसे एक महा भयंकर दैत्य अपनी ओर बड़ी-सी तलवार खींचे आता दिखाई दिया। पास आकर दैत्य क्रोध से गरज कर बोला, 'इधर आ। तुझे मारूँगा।' व्यापारी उसका भयानक रूप देखकर और गर्जन सुनकर काँपने लगा और बोला, 'स्वामी, मैंने क्या अपराध किया है कि आप मेरी हत्या कर रहे हैं?' दैत्य ने कहा, 'तूने मेरे पुत्र की हत्या की है, मैं तेरी हत्या करूँगा।'
व्यापारी ने कहा, 'मैने तो आपके पुत्र को देखा भी नहीं, मैंने उसे मारा किस तरह?'
दैत्य बोला, 'क्या तू अपना रास्ता छोड़कर इधर नहीं आया? क्या तूने अपनी झोली से निकाल कर खजूर नहीं खाए और उनकी गुठलियाँ इधर-उधर नहीं फेंकीं?' व्यापारी ने कहा, 'आपकी बातें ठीक हैं। मैंने ऐसा ही किया है।' दैत्य ने कहा, 'जब तू गुठलियाँ फेंक रहा था तो इतनी जोर से फेंक रहा था कि एक गुठली मेरे बेटे की आँख में लगी और बेचारे का उसी समय प्राणांत हो गया। अब मैं तुझे मारूँगा।'
व्यापारी बोला, 'स्वामी मैंने आप के पुत्र को जान-बूझकर तो मारा नहीं है। फिर मुझ से जो भूल हो गई है उसके लिए मैं आप के पैरों पर गिर कर क्षमा माँगता हूँ।' दैत्य ने कहा, 'मैं न दया करना जानता हूँ न क्षमा करना। और

क्या खुद तुम्हारी शरीयत में नरवध के बदले नरवध की आज्ञा नहीं दी गई है? मैं तुझे मारे बगैर नहीं रहूँगा।'
यह कह कर दैत्य ने व्यापारी की बाँह पकड़कर उसे पृथ्वी पर गिरा दिया और उसे मारने के लिए तलवार उठाई। व्यापारी अपने स्त्री-पुत्रों की याद कर-कर के विलाप करने लगा, साथ ही ईश्वर और पवित्रात्माओं की सौगंध दिला-दिला कर दैत्य से अपने प्राणों की भिक्षा माँगने लगा। दैत्य ने यह सोच कर हाथ रोक लिया कि जब यह थक कर हाथ-पाँव पटकना बंद कर देगा तो इसे मारूँगा। लेकिन व्यापारी ने रोना-पीटना बंद ही नहीं किया। अंत में दैत्य ने उससे कहा, 'तू बेकार ही अपने को और मुझे तंग कर रहा है। तू अगर आँसू की जगह आँखों से खून बहाए तो भी मैं तुझे मार डालूँगा।'
व्यापारी ने कहा, 'कितने दुख की बात है कि आपको किसी भाँति मुझ पर दया नहीं आती। आप एक दीन, निष्पाप मनुष्य को अन्यायपूर्वक मारे डाल रहे हैं और मेरे रोने- गिड़गिड़ाने का आप पर कोई प्रभाव नहीं होता। मुझे तो अब भी विश्वास नहीं होता कि आप मुझे मार डालेंगे।' दैत्य ने कहा, 'नहीं। निश्चय ही मैं तुम्हें मार डालूँगा।'
इतने में सवेरा हो गया। शहरजाद इतनी कहानी कह कर चुप हो गई। उसने सोचा, बादशाह के नमाज पढ़ने का समय हो गया है और उसके बाद वह दरबार को जाएगा। दुनियाजाद ने कहा, 'बहन, यह कितनी अच्छी कहानी थी।' शहरजाद बोली, 'तुम्हें यह कहानी पसंद है? अभी तो कुछ नहीं, आगे तो और भी आश्चर्यप्रद है। तुम सुनोगी तो और भी खुश होगी। अगर बादशाह सलामत ने आज मुझे जीवित रहने दिया और फिर कहानी कहने की अनुमति दी तो कल रात मैं तुम्हें शेष कथा सुनाऊँगी, वरना भगवान के पास चली जाऊँगी।'
शहरयार को भी यह कहानी बेहद पसंद आई थी। उसने विचार किया कि जब तक कहानी पूरी न हो जाए शहरजाद को नहीं मरवाना चाहिए इसलिए उसने उस दिन उसे प्राणदंड देने का इरादा छोड़ दिया। पलँग से उठकर वह नमाज पढ़ने गया और फिर दरबार में जा बैठा। शोक-कातर मंत्री भी उपस्थित था। वह अपनी बेटी का भाग्य सोच कर सारी रात न सोया था। वह प्रतीक्षा में था कि शाही हुक्म हो तो मैं अपनी बेटी को ले जाकर जल्लाद के सुपुर्द करूँ। किंतु उसे यह देख कर आश्चर्य हुआ कि बादशाह ने यह अत्याचारी आदेश नहीं दिया। शहरयार दिन भर राजकाज में व्यस्त रहा और रात को शहरजाद के साथ सो रहा।

एक घड़ी रात रहे दुनियाजाद फिर जागी और उसने बड़ी बहन से कहा कि यदि तुम सोई नहीं तो वह कहानी आगे कहो। शहरयार भी जाग गया और बोला, 'यह ठीक कहती है। मैं भी व्यापारी और दैत्य की कहानी सुनना चाहता हूँ। तुम कहानी को आगे बढ़ाओ।'
शहरजाद ने फिर कहना शुरू किया:
जब व्यापारी ने देखा कि दैत्य मुझे किसी प्रकार जीवित न छोड़ेगा तो उसने कहा, 'स्वामी, यदि आपने मुझे वध्य समझ ही लिया है और किसी भाँति भी मुझे प्राण दान देने को तैयार नहीं हैं तो मुझे इतना अवसर तो दीजिए कि मैं घर जाकर अपने स्त्री-पुत्रों से विदा ले लूँ और अपनी संपत्ति अपने उत्तराधिकारियों में बाँट आऊँ ताकि मेरे पीछे उनमें संपत्ति को लेकर लड़ाई-झगड़ा न हो। मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि यह सब करने के बाद मैं इसी स्थान पर पहुँच जाऊँगा। उस समय आप जो ठीक समझें वह मेरे साथ करें।' दैत्य ने कहा, 'यदि मैं तुम्हें घर जाने दूँ और तुम वापस न आओ फिर क्या होगा? ' व्यापारी बोला, 'मैं जो कहता हूँ उससे फिरता नहीं। फिर भी यदि आपको विश्वास न हो तो मैं उस भगवान की, जिसने पृथ्वी-आकाश आदि सब कुछ रचा है, सौगंध खाकर कहता हूँ कि मैं घर से इस स्थान पर अवश्य वापस आऊँगा।' दैत्य ने कहा, 'तुम्हें कितना समय चाहिए?' व्यापारी ने कहा, 'मुझे केवल एक वर्ष की मुहलत चाहिए जिसमें मैं अपनी सारी जाएदाद का प्रबंध कर के आऊँ और मरते समय मुझे कोई चिंता न रहे। मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि वर्षोपरांत मैं इसी स्थान पर आकर स्वयं को आप के सुपुर्द कर दूँगा।' दैत्य ने कहा, 'अच्छा, मैं तुम्हें एक वर्ष के लिए जाने दूँगा किंतु तुम यह प्रतिज्ञा ईश्वर को साक्षी देकर करो।' व्यापारी ने ईश्वर की सौगंध खाकर प्रतिज्ञा दुहराई और दैत्य व्यापारी को उसी तालाब पर छोड़ कर अंतर्ध्यान हो गया। व्यापारी अपने घोड़े पर सवार होकर घर को चल दिया।
रास्ते में व्यापारी की अजीब हालत रही। कभी तो वह इस बात से प्रसन्न होता कि वह अभी तक जीवित है और कभी एक वर्ष बाद की निश्चित मृत्यु पर शोकातुर हो उठता था। जब वह घर पहुँचा तो उसकी पत्नी और बंधु-बांधव उसे देखकर प्रसन्न हुए किंतु वह उन लोगों को देख कर रोने लगा। वे लोग उसके विलाप से समझे कि उसे व्यापार में कोई भारी घाटा हुआ है या कोई और प्रिय वस्तु उसके हाथ से निकल गई है जिससे उसका धैर्य जाता रहा है।

बूढ़े ने आश्चर्य से कहा, 'यह तुमने ऐसी बात बताई जैसी संसार में अब तक किसी ने नहीं सुनी होगी। तुमने ईश्वर की जो सौंगध खाई थी उसे पूरा करने में प्राणों की भी चिंता नहीं की। तुम बड़े सत्यवान हो और तुम्हारी सत्यनिष्ठा की जितनी प्रशंसा की जाए कम है। अब में यहाँ ठहर कर देखूँगा कि दैत्य तुम्हारे साथ क्या करता है।'
वे आपस में वार्तालाप करने लगे। इतने ही में एक और वृद्ध पुरुष आया जिसके हाथ में रस्सी थी और दो काले कुत्ते उस रस्सी से बँधे हुए थे। वह उन दोनों से उनका हालचाल पूछने लगा। पहले बूढ़े ने व्यापारी का संपूर्ण वृतांत कहा और यह भी कहा कि मैं आगे का हाल-चाल देखने यहाँ बैठा हूँ। दूसरा बूढ़ा भी यह सब सुनकर आश्चर्यचकित हुआ और वहीं बैठकर दोनों से बातें करने लगा।
कुछ समय के उपरांत एक और बूढ़ा एक खच्चर लिए हुए आया और पहले दो बूढ़ों से पूछने लगा कि यह व्यापारी इतना दुखी होकर यहाँ क्यों बैठा है। दोनों ने उस व्यापारी का पूरा हाल कहा। तीसरे वृद्ध पुरुष ने वहाँ ठहरकर इस व्यापार का अंत देखने की इच्छा प्रकट की। अतएव वह भी वहाँ बैठ गया।
अभी तीसरा बूढ़ा अच्छी तरह साँस भी नहीं ले पाया था कि उन चारों व्यक्तियों ने देखा कि सामने के जंगल में एक बड़ा गहन धूम्रपुंज उठ रहा है। वह धुएँ का बादल उनके समीप आकर गायब हो गया। वे लोग आश्चर्य से आँखें मल ही रहे थे कि एक अत्यंत भयानक दैत्य उपस्थित हो गया। उसके हाथ में तलवार थी और उसने व्यापारी से कहा, 'उठकर इधर आ। मैं तुझे मारूँगा, तून मेरे बेटे को मारा है।' यह सुन कर व्यापारी और तीनों बूढ़े काँपने लगे और उच्च स्वर में विलाप करने लगे। उन सब के रोने- चिल्लाने से जंगल गूँज उठा। किंतु दैत्य व्यापारी को पकड़कर एक ओर ले ही गया।
हिरनी वाले बूढ़े ने यह देखा और वह दौड़कर दैत्य के पास पहुँचा और बोला, 'दैत्य महाराज, मैं आपसे कुछ निवेदन करना चाहता हूँ। आप अपने क्रोध पर कुछ देर के लिए संयम रखें। मेरी इच्छा है कि मैं अपनी और इस हिरनी की कहानी आपको सुनाऊँ। किंतु कहानी के लिए एक शर्त है। यदि आप को यह कहानी विचित्र लगे और पसंद आए तो आप इस व्यापारी का एक तिहाई अपराध क्षमा कर दें।' दैत्य ने कुछ देर तक सोचकर कहा, 'अच्छा, मुझे तुम्हारी शर्त स्वीकार है। कहानी कहो।'

[redacted]

[redacted], '[redacted], [redacted] [redacted] [redacted]

यह सुनकर मेरी पत्नी बहुत क्रुद्ध हुई और कहने लगी कि इसी गाय की बलि दी जाएगी, ग्वाले के पास इससे अधिक हृष्ट-पुष्ट और कोई गौ नहीं है।
'उसके भला-बुरा करने से मैंने फिर छुरी हाथ में ली और गाय को मारने के लिए उद्यत हुआ। इस पर गाय और भी चीख-पुकार करने लगी। मैं अजीब दुविधा में पड़ा। अंत में मैंने छुरी ग्वाले को दे दी और कहा, मुझ से इस गाय पर छुरी नहीं चलती, तू ही इसका बलिदान कर दे। ग्वाले को गाय के रोने-चिल्लाने पर दया न आई और उसने छुरी फेर दी।
'जब गाय की खाल उतारी गई तो सब ने देखा कि उसके अंदर अस्थिपंजर मात्र है, मांस का कहीं पता नहीं। कारण यह था कि गाय की हृष्टतापुष्टता तो केवल मायाजाल के कारण थी। मैं उस ग्वाले पर नाराज हुआ कि गाय को ऐसी दशा में क्यों रखा कि वह ऐसी दुबली-पतली हो गई। मैंने गाय ग्वाले ही को दे दी और कहा, तू इसे अपने ही काम में ला, मेरे कुरबानी करने के लिए कोई बछड़ा ही ले आ, किंतु वह मोटा-ताजा होना चाहिए, इस गाय की तरह नहीं।
'ग्वाला शीघ्र ही एक मोटा-ताजा बछड़ा ले आया। बछड़ा देखने में भी बड़ा सुंदर था। यद्यपि उस बछड़े के बारे में मुझे मालूम न था कि यह मेरा ही पुत्र है तथापि उसे देखकर मेरे हृदय में प्रेम उमड़ने लगा और वह बछड़ा भी मुझे देखते ही रस्सी तुड़ाकर मेरे पैरों पर गिर पड़ा। इस बात से मेरे हृदय में प्रेम का स्रोत और जोर से उबलने लगा और मैं सोचने लगा कि ऐसे प्यारे बछड़े को कैसे मारूँ। इन भावनाओं ने मुझे अत्यंत विह्वल कर दिया। उस बछड़े की आँखों से आँसू बहने लगे। इससे उसके प्रति मेरा प्यार और उमड़ा और मैंने ग्वाले से कहा कि इस बछड़े को वापस ले जा और इसकी जगह कोई दूसरा बछड़ा ले आ।
'इस पर मेरी पत्नी ने कहा कि तुम इतने मोटे-ताजे बछड़े की कुर्बानी क्यों नहीं करते। मैंने कहा कि यह बछड़ा मुझे बड़ा प्यारा लगता है और मेरा जी नहीं करता है कि इसका वध करूँ, तुम इसके लिए कुछ जोर मत दो। लेकिन उस निष्ठुर दुष्ट ने तकरार जारी रखी और विद्वेषवश उसके वध पर जोर देती रही। मैं उसकी बहस से तंग आकर छुरी लेकर पुत्र की गर्दन काटने चला। उसने फिर मेरी ओर देखकर आँसू बहाए। मेरे हृदय में ऐसी दया और प्रीति उमड़ी कि छुरी हाथ से गिर गई।
'फिर मैंने अपनी पत्नी से कहा कि मेरे पास एक और बछड़ा है, मैं उसे कुरबान कर दूँगा। वह दुष्टमना फिर भी उसी बछड़े को मारने पर जोर देती रही। किंतु

इस बार मैंने उसके बकने-झकने की परवाह नहीं की और बछड़े को वापस कर दिया। हाँ, पत्नी के हृदय को सांत्वना देने के लिए कह दिया कि बकरीद के दिन इसी बछड़े की बलि दूँगा।
'ग्वाला बछड़े को अपने घर ले गया। लेकिन दूसरे दिन तड़के ही मुझ से एकांत में कहा कि मैं आप से कुछ कहना चाहता हूँ और मुझे आशा है कि आप मेरी बात सुन कर प्रसन्न होंगे। मेरी बेटी जादू-टोने में प्रवीण है। कल जब मैं उस बछड़े को वापस लेकर गया तो वह उसे देख कर हँसी भी और रोई भी। मैंने इस विचित्र बात का कारण पूछा तो बोली कि अब्बा, जिस बछड़े को तुम लौटा कर जिंदा लाए हो वह हमारे मालिक का बेटा है, इसलिए मैं इसे जीता-जागता देखकर प्रसन्न हुई। रोई इसलिए कि इसके पहले इसकी माँ की कुरबानी दे दी गई थी। हमारे स्वामी की पत्नी ने सौतिया डाह के कारण इन माता-पुत्र को जादू के जोर से गाय और बछड़ा बना दिया था। मैंने जो अपनी बेटी के मुँह से सुना, जैसा का तैसा आपको बता दिया।
'हे दैत्यराज, अब आप सोचिए कि यह वृत्तांत सुनकर मेरे हृदय में कितना शोक और संताप उठा होगा। मैं कुछ देर मर्माहत होकर चुप रहा फिर ग्वाले के साथ उसके घर पर चला गया ताकि इस वृत्तांत को उसकी बेटी के मुँह से सुनूँ। सबसे पहले मैं उसकी पशुशाला में गया ताकि अपने बछड़ा बने हुए पुत्र को देखूँ। मैं उस पर हाथ फेरूँ इसके पहले ही वह मेरे पास आकर इतना लाड़ करने लगा कि मुझे विश्वास हो गया कि यह मेरा पुत्र ही है।
'मैंने लड़की के पास जाकर ग्वाले के मुँह से सुना हुआ हाल दुबारा सुना और लड़की से कहा कि क्या तुम इस बछड़े को फिर से मनुष्य का रूप दे सकती हो। उसने कहा, निश्चय ही मैं उसे दुबारा मनुष्य बना सकती हूँ। मैंने कहा, अगर तुम ऐसा कर दो तो मैं तुम्हें अपनी सारी धन-संपदा दे दूँगा। लड़की ने मुस्करा कर कहा कि हम लोग आप के सेवक हैं, आप हमारे मालिक हैं, आपकी आज्ञा शिरोधार्य है; किंतु बछड़े को मनुष्य रूप मैं दो शर्तों पर दूँगी - एक तो यह कि उसके मनुष्य बन जाने पर आप उसका विवाह मेरे साथ कर दें और दूसरा यह कि जिसने इसे मनुष्य से पशु बनाया है उसे भी थोड़ा दंड दिया जाए।
'मैंने उत्तर दिया, मुझे तुम्हारी पहली शर्त बिल्कुल मंजूर है, मैं तुम्हारा विवाह उसके साथ कर दूँगा और तुम दोनों को इतना धन-धान्य दूँगा कि जीवन पर्यंत तुम्हें किसी चीज की कमी नहीं रहेगी। दूसरी शर्त में निर्णय मैं तुम्हारे ही हाथ छोड़ता हूँ, तुम जो भी दंड उसके लिए उचित समझोगी वही

दंड मेरी पत्नी को दिया जाएगा, हाँ यह जरूर कहूँगा कि यद्यपि वह दुष्ट दंडनीय है किंतु उसे प्राणदंड न दे देना।
'लड़की ने कहा कि जैसा उस ने आप के पुत्र के साथ किया है वैसा ही मैं उस के साथ करूँगी। यह कहकर उसने एक प्याले में पानी लिया और उसे अभिमंत्रित कर के बछड़े को सामने लाकर कहा कि ऐ खुदा के बंदे, अगर तू आदमी है और केवल जादू के कारण बछड़ा बना है तो भगवान की दया से अपना पूर्व रूप प्राप्त कर ले। यह कहकर उसने अभिमंत्रित जल उस पर छिड़का और वह तुरंत ही मनुष्य रूप में आ गया। मैंने प्रीतिपूर्वक उसे छाती से लगाया और गदगद स्वर में उससे कहा कि इस लड़की के कारण ही तुमने फिर से मानव देह पाई है, तुम इसका एहसान चुकाओ और इसके साथ विवाह कर लो। पुत्र ने सहर्ष मेरी बात मानी। लड़की ने इसी प्रकार जल को अभिमंत्रित कर के मेरी पत्नी को हिरनी का रूप दे दिया।
'मेरे पुत्र ने उस कन्या के साथ विवाह किया किंतु दुर्भाग्यवश वह थोड़े ही समय के बाद मर गई। मेरे पुत्र को इतना दुख हुआ कि वह देश छोड़कर कहीं चला गया। बहुत दिनों तक मुझे उसका कोई समाचार नहीं मिला। अतएव मैं उसे ढूँढ़ने निकला हूँ। मुझे किसी पर इतना भरोसा नहीं था कि अपनी हिरनी बनी हुई पत्नी को उसके पास छोड़ता, इसलिए मैं उसे अपने साथ लिए हुए देश-देश अपने पुत्र की खोज में घूमता हूँ। यही मेरी और इस हिरनी की कहानी है। अब आप स्वयं निर्णय कर लें कि यह घटना विचित्र है या नहीं।' दैत्य ने कहा, 'निःसंदेह विचित्र है। मैंने व्यापारी के अपराध का एक तिहाई हिस्सा माफ कर दिया।'
फिर शहरजाद ने शहरयार से निवेदन किया कि जब पहला वृद्ध मनुष्य अपनी कहानी कह चुका तो दूसरे बूढ़े ने, जो अपने साथ दो काले कुत्ते लिए था, दैत्य से कहा कि मैं भी अपना और इन दोनों कुत्तों का इतिहास आपके सम्मुख रखता हूँ। यदि यह पहली कहानी से भी अच्छा हो तो आशा करता हूँ कि उसे सुनने के बाद व्यापारी के अपराध का एक तिहाई भाग और क्षमा कर दिया जाएगा। दैत्य ने कहा कि अगर तुम्हारी कहानी पहली कहानी से अधिक विचित्र हुई तो मैं तुम्हारी बात जरूर मानूँगा।

किस्सा दूसरे बूढ़े का जिसके पास दो काले कुत्ते थे

दूसरे बूढ़े ने कहा, 'हे दैत्यराज, ये दोनों काले कुत्ते मेरे सगे भाई हैं। हमारे पिता ने मरते समय हम तीनों भाइयों को तीन हजार अशर्फियाँ दी थीं। हम लोग उन मुद्राओं से व्यापार चलाने लगे। मेरे बड़े भाई को विदेशों में जाकर व्यापार करने की इच्छा हुई सो उसने अपना सारा माल बेच डाला और जो वस्तुएँ विदेशों में महँगी बिकती थीं उन्हें यहाँ से खरीद कर व्यापार को चल दिया। इसके लगभग एक वर्ष बाद मेरी दुकान पर एक भिखमंगा आकर बोला, भगवान तुम्हारा भला करे। मैंने उस पर ध्यान दिए बगैर जवाब दिया, भगवान तुम्हारा भी भला करे। उसने कहा कि क्या तुमने मुझे पहचाना नहीं। मैंने उसे ध्यानपूर्वक देखा और फिर उसे गले लगाकर फूट-फूट कर रोया। मैंने कहा, भैया, मैं तुम्हें ऐसी दशा में कैसे पहचानता। फिर मैं ने उसके परदेश के व्यापार का हाल पूछा तो उसने कहा कि मुझे इस हाल में भी देख कर क्या पूछ रहे हो।
'फिर मेरे जोर देने पर उसने वे सारी विपदाएँ बताईं जो उस पर पड़ी थीं और बोला कि मैंने संक्षेप ही में तुम्हें सब बताया है, इससे अधिक विस्तार से बताऊँगा तो मेरा भी दुख बढ़ेगा और तुम्हारा भी। उसकी बातें सुनकर मैं अपने सभी काम भूल गया। मैंने उसे स्नान कराया और अच्छे वस्त्र मँगाकर उसे पहनाए। फिर मैंने अपना हिसाब देखा तो मालूम हुआ कि मेरे पास छह हजार रुपए हैं।
'मैंने तीन हजार रुपए अपने भाई को देकर कहा कि तुम पिछली हानि भूल जाओ और इस तीन हजार से नए सिरे से व्यापार करो। उसने रुपयों को सहर्ष ले लिया और नए सिरे से व्यापार करने लगा और हम सब लोग पहले की तरह रहने लगे।
'कुछ दिनों बाद मेरे छोटे भाई की इच्छा हुई कि विदेश जाकर व्यापार करे। मैंने उसे बहुत मना किया लेकिन उसने मेरी बात न मानी और अपना सारा माल बेच-बाच कर के वस्तुएँ खरीद लीं जो विदेशों में महँगी मिलती हैं। फिर उस ने मुझ से विदा ली और एक कारवाँ के साथ जो विदेश जा रहा था, रवाना हो गया। एक वर्ष के बाद मेरे बड़े भाई की तरह वह भी अपनी सारी जमा-पूँजी गँवाकर फकीर बनकर मेरे पास वापस आया। मैंने बड़े भाई की तरह छोटे भाई की भी सहायता की और उस वर्ष जो तीन हजार रुपए मुझे व्यापार में लाभ के रूप में मिले थे उसे दिए।

वह भी नगर में एक दुकान लेकर पहले की तरह व्यापार करने लगा और सब कुछ पहले की तरह ठीक-ठाक चलने लगा।
'कुछ समय बीता था कि मेरे दोनों भाइयों ने मुझसे कहा, हम सभी लोग विदेश जाकर व्यापार करें। पहले मैंने इनकार किया और कहा कि तुम लोगों ही को विदेशी व्यापार से क्या लाभ हुआ है जो मुझे भी इस बार चलने को कह रह हो। तब दोनों मेरे साथ बहस करने लगे और कहने लगे कि कौन जाने इस बार तुम्हारे भाग्य और तुम्हारी व्यापार बुद्धि ही से हम दोनों की तकदीर जाग जाए और हमारे सारे सपने पूरे हो जाएँ। मैंने फिर इनकार कर दिया लेकिन ये मेरे पीछे पड़े रहे। यहाँ तक कि इसी बहस में पाँच वर्ष बीत गए और इस अवधि में उन्होंने मेरी जान खा डाली। तंग आकर मैंने उसकी बात मान ली।'
'मैंने व्यापार के लिए आवश्यक वस्तुएँ मोल ले लीं। उसी समय मुझे ज्ञात हुआ कि मेरे भाइयों ने मेरा दिया हुआ धन खर्च कर डाला है और उनके पास कुछ नहीं बचा। मैंने इस पर भी उनसे कुछ नहीं कहा। उस समय मेरे पास बारह हजार रुपए थे। उसमें से आधा धन मैंने दोनों को दे दिया और कहा कि भाइयो, बुद्धिमानी और दूरदर्शिता इसी में है कि हम अपना आधा धन व्यापार में लगाएँ और आधा अपने घर में छोड़ जाएँ। अगर तुम दोनों की तरह इस बार भी हम सब को व्यापार में घाटा हो तो उस समय घर में रखा हुआ धन काम आएगा और हम लोग उसे व्यापार में लगा कर अपना काम चलाएँगे।
'चुनांचे मैंने उन्हें तीन-तीन हजार रुपए दिए और इतनी ही राशि अपने लिए रखी और बाकी तीन हजार रुपए अपने घर में एक गहरा गढ़ा खोदकर उसमें दबा दिया। फिर हमने व्यापार की वस्तुएँ खरीदीं और जहाज पर सवार होकर एक अन्य देश को निकल गए। एक महीने बाद हम कुशलतापूर्वक एक नगर में पहुँचे और व्यापार आरंभ किया। हमें व्यापार में बहुत लाभ हुआ। फिर हमने उस देश की बहुत-सी अच्छी वस्तुएँ अपने देश में बेचने के मंतव्य से मोल लीं।
'जब हम उस स्थान पर लेन-देन कर चुके और जहाज पर वापस आने के लिए तैयार हुए तो एक अत्यंत सुंदर स्त्री फटे-पुराने कपड़े पहने हुए मेरे सामने आई। उसने जमीन पर गिरकर मुझे सलाम किया, मेरा हाथ चूमा और मुझसे निवेदन किया कि मेरे साथ विवाह कर लो। मैंने इस बात को उचित न समझा और इनकार कर दिया। लेकिन वह गिड़गिड़ाती और मिन्नतें करती रही। अंत में मुझे उसकी निर्धनता पर दया आ गई और मैंने उसकी प्रार्थना स्वीकार कर के उसके साथ विधिवत विवाह कर लिया और उसे अपने साथ जहाज पर चढ़ा लिया। मैंने रास्ते में देखा कि वह केवल

सुंदरी ही नहीं, अत्यंत बुद्धिमती भी है। इस कारण मैं उससे बहुत प्रेम करने लगा।
'किंतु मेरे इस सौभाग्य को देखकर मेरे दोनों भाई जल मरे और मेरी जान के दुश्मन हो गए। उनका विद्वेष यहाँ तक बढ़ा कि एक रात जब हम दोनों सो रहे थे उन्होंने हमें समुद्र में फेंक दिया। मेरी पत्नी में जैसे कोई अलौलिक शक्ति थी। ज्यों ही हम दोनों समुद्र में गिरे वह मुझे एक द्वीप पर ले गई। जब प्रभात हुआ तो उसने मुझे बताया कि मेरे कारण ही तुम्हारी जान बची है, मैं वास्तव में परी हँ, जब तुम जहाज पर चढ़ने के लिए तैयार हो रहे थे तो मैं तुम्हारे यौवन और सौंदर्य को देखकर तुम पर मोहित हो गई थी और तुम्हारे साथ प्रणय सूत्र में बँधना चाहती थी; मैं तुम्हारी सहृदयता की परीक्षा भी लेना चाहती थी इसलिए मैं फटे-पुराने कपड़े पहन कर भिखारिणियों की भाँति तुम्हारे सामने आई; मुझे इस बात की बड़ी प्रसन्नता हुई कि तुम ने मेरी इच्छा पूरी की; तुम ने मेरे साथ जो उपकार किया है उस से मैं उॠण होना चाहती हूँ किंतु मैं तुम्हारे भाइयों पर अत्यंत कुपित हूँ और उन्हें जीता न छोड़ूँगी।
'उसकी बातें सुनकर मुझे घोर आश्चर्य हुआ। मैंने उसका बड़ा एहसान माना और अत्यंत दीनतापूर्वक कहा कि तुम मेरे भाइयों को जान से न मारो; यद्यपि उन्होंने मुझे बड़ा कष्ट पहुँचाया है तथापि मैं यह नहीं चाहता कि उन्हें ऐसा कठोर दंड दिया जाए। मैं जितना ही अपने भाइयों की सिफारिश करता था उतना ही परी का क्रोध उन पर बढ़ता जाता था। वह कहने लगी कि मैं यहाँ से उड़कर जाऊँगी और उन दुष्टों समेत उनके जहाज को डुबो दूँगी। मैंने फिर उसकी खुशामद की और उसे परमेश्वर की सौगंध देकर कहा कि तुम उन्हें इतना कड़ा दंड न देना, सज्जनों का काम यही है कि वे बुराई के बदले भलाई करें; तुम अपने क्रोध को ठंडा करो और यदि तुम उन्हें दंड ही देना चाहो तो मृत्यु दंड के अतिरिक्त जो दंड चाहो दे दो।
'मैं उसे इस तरह समझा-बुझा और मना रहा था कि उसने एक क्षण में मुझे उड़ाकर मेरे मकान की छत पर पहुँचा दिया और स्वयं अंतर्ध्यान हो गई। मैं छत से उतरकर घर के अंदर आया। फिर मैंने गढ़े से अपने दबाए हुए तीन हजार रुपए निकाले और दुकान में जाकर फिर कारोबार करने लगा। जब मैं दुकान से घर को वापस आया तो मुझे यह देखकर आश्चर्य हुआ कि मकान के अंदर दो काले कुत्ते

मौजूद हैं। मुझे देखकर वे दुम हिलाते हुए मेरे पास आए और मेरे पाँवों पर सर रख कर लोटने लगे।
'उसी समय वह परी मेरे घर में आई और मुझसे बोली कि इन कुत्तों को देख कर घबराना नहीं, ये तुम्हारे दोनों भाई हैं। यह सुनकर मेरा तो खून ही सूख गया। मैंने दुखी होकर परी से पूछा कि ये कुत्ते कैसे बन गए। उसने कहा, मेरी एक बहन है जिसने मेरे कहने पर तुम्हारे जहाज को माल-असबाब समेत डुबो दिया और तुम्हारे भाइयों को दस वर्ष के लिए कुत्ता बना दिया। यह कहकर परी अंतर्ध्यान हो गई। जब दस वर्ष व्यतीत हो गए तो मैं अपने भाइयों को साथ लेकर इधर आ निकला और इस व्यापारी तथा इस हिरनी वाले वृद्ध को देखकर यहाँ रुक गया। यही मेरी कहानी है। हे दैत्यराज, आप को यह कहानी अद्भुत लगी या नहीं?' दैत्य ने कहा, 'वास्तव में तेरी आपबीती बड़ी अदभुत है; मैंने व्यापारी के अपराध का दूसरा तिहाई भाग भी माफ कर दिया।' इस पर तीसरे बूढ़े ने इन दोनों की तरह दैत्य से कहा कि अब मैं भी अपना वृत्तांत आप से कह रहा हूँ। यदि आप इसे भी अद्भुत पाएँ तो कृपया व्यापारी के अपराध का बाकी तिहाई भाग भी क्षमा कर दें। दैत्य ने यह बात स्वीकार की।

किस्सा तीसरे बूढ़े का जिसके साथ एक खच्चर था

तीसरे बूढ़े ने कहना शुरू किया: 'हे दैत्य सम्राट, यह खच्चर मेरी पत्नी है। मैं व्यापारी था। एक बार मैं व्यापार के लिए परदेश गया। जब मैं एक वर्ष बाद घर लौटकर आया तो मैंने देखा कि मेरी पत्नी एक हब्शी गुलाम के पास बैठी हास-विलास और प्रेमालाप कर रही है। यह देखकर मुझे अत्यंत आश्चर्य और क्रोध हुआ और मैंने चाहा कि उन दोनों को दंड दूँ। तभी मेरी पत्नी एक पात्र में जल ले आई और उस पर एक मंत्र फूँक कर उसने मुझ पर अभिमंत्रित जल छिड़क दिया जिससे मैं कुत्ता बन गया। पत्नी ने मुझे घर से भगा दिया और फिर अपने हास-विलास में लग गई।
'मैं इधर-उधर घूमता रहा फिर भूख से व्याकुल होकर एक कसाई की दुकान पर पहुँचा और उसकी फेंकी हुई हड्डियाँ उठाकर खाने लगा। कुछ दिन तक मैं ऐसा ही करता रहा। फिर एक दिन कसाई के साथ उसके घर जा पहुँचा। कसाई की पुत्री मुझे देखकर अंदर चली गई और बहुत देर तक बाहर नहीं निकली। कसाई ने कहा, तू अंदर

क्या कर रही है, बाहर क्यों नहीं आती? लड़की बोली, मैं अपरिचित पुरुष के सामने कैसे जाऊँ? कसाई ने इधर-उधर देखकर कहा कि यहाँ तो कोई अपरिचित पुरुष नहीं दिखाई देता, तू किस पुरुष की बात कर रही है?
'लड़की ने कहा, यह कुत्ता जो तुम्हारे साथ घर में आया है तुम्हें इसकी कहानी मालूम नहीं है। यह आदमी है। इसकी पत्नी जादू करने में पारंगत है। उसी ने मंत्र शक्ति से इसे कुत्ता बना दिया है। अगर तुम्हें इस बात पर विश्वास न हो मैं तुरंत ही इसे मनुष्य बना कर दिखा सकती हूँ। कसाई बोला, भगवान के लिए सो ही कर। तू इसे मनुष्य बना दे ताकि यह लोक-परलोक दोनों का धर्म संचित करे।
'यह सुन कर वह लड़की एक पात्र में जल लेकर अंदर से आई और जल को अभिमंत्रित करके मुझ पर छिड़का और बोली, तू इस देह को छोड़ दे और अपने पूर्व रूप में आ जा। उसके इतना कहते ही मैं दुबारा मनुष्य के रूप में आ गया और लड़की फिर परदे के अंदर चली गई। मैंने उसके उपकार से अभिभूत होकर कहा, हे भाग्यवती, तूने मेरा जो उपकार किया है उससे तुझे लोक-परलोक का सतत सुख प्राप्त हो। अब मैं चाहता हूँ कि मेरी पत्नी को भी कुछ ऐसा ही दंड मिले।
'यह सुनकर लड़की ने अपने पिता को अंदर बुलाया और उसके हाथ थोड़ा अभिमंत्रित जल बाहर भिजवाकर बोली, तू इस जल को अपनी पत्नी पर छिड़क देना। फिर तू उसे जो भी देह देना चाहे उस पशु का नाम लेकर स्त्री से कहना कि तू यह हो जा। वह उसी पशु की देह धारण कर लेगी। मैं उस जल को अपने घर ले गया। उस समय मेरी पत्नी सो रही थी। इससे मुझे काम करने का अच्छा मौका मिल गया। मैंने अभिमंत्रित जल के कई छींटे उसके मुँह पर मारे और कहा, तू स्त्री की देह छोड़कर खच्चर बन जा। वह खच्चर बन गई और तब से मैं इसी रूप में अपने साथ लिए घूमता हूँ।'
शहरजाद ने कहा - बादशाह सलामत, जब तीसरा वृद्ध अपनी कहानी कह चुका तो दैत्य को बड़ा आश्चर्य हुआ। उसने खच्चर से पूछा कि क्या यह बात सच है जो यह बूढ़ा कहता है? खच्चर ने सिर हिला कर संकेत दिया कि बात सच्ची है। तत्पश्चात दैत्य ने व्यापारी के अपराध का बचा हुआ तिहाई भाग भी क्षमा कर दिया और उसे बंधनमुक्त कर दिया। उसने व्यापारी से कहा, तुम्हारी जान आज इन्हीं तीन वृद्ध जनों के कारण बची है। यदि ये लोग तुम्हारी सहायता न करते तो तुम आज मारे ही गए थे। अब तुम इन तीनों के प्रति कृतज्ञता प्रकट करो। यह कहने के बाद दैत्य अंतर्ध्यान हो गया। व्यापारी उन तीनों के चरणों में गिर पड़ा।

वे लोग उसे आशीर्वाद देकर अपनी-अपनी राह चले गए और व्यापारी भी घर लौट गया और हँसी-खुशी अपने प्रियजनों के साथ रहकर उसने पूरी आयु भोगी।
शहरजाद ने इतना कहने के बाद कहा, 'मैंने जो यह कहानी कही है इससे भी अच्छी एक कहानी जानती हूँ जो एक मछुवारे की है।' बादशाह ने इस पर कुछ नहीं कहा लेकिन दुनियाजाद बोली, 'बहन, अभी तो कुछ रात बाकी है। तुम मछुवारे की कहानी भी शुरू कर दो। मुझे आशा है कि बादशाह सलामत उस कहानी को सुनकर भी प्रसन्न होंगे।' शहरयार ने वह कहानी सुनने की स्वीकृति भी दे दी। शहरजाद ने मछुवारे की कहानी इस प्रकार आरंभ की। मछुवारे की कहानी

किस्सा मछुवारे का

शहरजाद ने कहा कि हे स्वामी, एक वृद्ध और धार्मिक प्रवृत्ति का मुसलमान मछुवारा मेहनत करके अपने स्त्री-बच्चों का पेट पालता था। वह नियमित रूप से प्रतिदिन सवेरे ही उठकर नदी के किनारे जाता और चार बार नदी में जाल फेंकता था। एक दिन सवेरे उठकर उसने नदी में जाल डाला। उसे निकालने लगा तो जाल बहुत भारी लगा। उसने समझा कि आज कोई बड़ी भारी मछली हाथ आई है लेकिन मेहनत से जाल दबोच कर निकाला तो उसमें एक गधे की लाश फँसी थी। वह उसे देखकर जल-भुन गया, उसका जाल भी गधे के बोझ से जगह जगह फट गया था।
उसने सँभाल कर फिर नदी में फेंका। इस बार जो खींचा तो उसमे सिर्फ मिट्टी और कीचड़ भरा मिला। वह रो कर कहने लगा कि मेरा दुर्भाग्य तो देखो, दो-दो बार मैंने नदी में जाल डाला और मेरे हाथ कुछ नहीं आया। मैं तो इस पेशे के अलावा और कोई व्यवसाय जानता भी नहीं, मैं गुजर-बसर के लिए क्या करूँ।
उसने जाल को धो-धा कर फिर पानी में फेंका। इस बार भी उसके हाथ दुर्भाग्य ही लगा, जाल में कंकड़, पत्थर और फलों की गुठलियों के अतिरिक्त कुछ भी नहीं था। यह देखकर वह और भी रोने-पीटने लगा। इतने में सवेरे का उजाला भी फैल गया था। उसने भगवान का ध्यान धरा और विनय की, 'हे सर्व शक्तिमान दीनदयाल प्रभु, तुम जानते हो कि मैं हर रोज सिर्फ चार बार नदी में जाल फेंकता हूँ। आज तीन बार फेंक चुका हूँ और कुछ हाथ नहीं आया और मेरी सारी मेहनत बेकार गई। अब एक बार जाल फेंकना रह गया है। अब तू कृपा कर और नदी से मुझे कुछ दिलवा दे और मुझ पर इस प्रकार दया कर जैसी किसी समय हजरत मूसा पर की थी।'
यह कहकर उसने चौथी बार जाल फेंका और खींचा तो भारी लगा। उसने सोचा इस बार तो जरूर मछलियाँ फँसी होंगी। बड़ा जोर लगा कर उसे बाहर निकालकर देखा कि

उसमें सिवाय एक पीतल की गागर के और कुछ नहीं है। गागर के भार से वह समझा कि उसमें कुछ बहुमूल्य वस्तुएँ होंगी क्योंकि उसका मुँह सीसे के ढक्कन से अच्छी तरह बंद था और ढक्कन पर कोई मुहर लगी थी। मछुवारे ने मन में कहा कि यह अंदर से खाली हुआ तो भी इसे बेच कर पैसे मिल जाएँगे जिससे आज का काम किसी तरह चलेगा।
उसने गागर को उलट-पलट कर और हिला-डुला कर देखा लेकिन उसमें से कोई शब्द नहीं निकला। फिर वह कहीं से एक चाकू लाया और बहुत देर तक मेहनत करके उसका मुँह खोला। अब वह झाँक कर गागर के अंदर देखने लगा लेकिन उसे कुछ नहीं दिखाई दिया। उसी समय उसने देखा कि गागर से धुआँ निकल रहा है। वह आश्चर्य से देखने लगा कि क्या होता है। गागर में से बहुत सा धुआँ निकल कर नदी के ऊपर आकाश में फैल गया। कुछ ही देर में वह धुआँ सिमट कर एक जगह आ गया और उसने एक भी भीषण दैत्य का आकार ले लिया। मछुवारा घबराकर भागने को हुआ लेकिन उसने सुना कि दैत्य हाथ उठाकर कह रहा है कि ऐ सुलेमान, मेरा अपराध क्षमा कीजिए, मैं कभी आपकी आज्ञा का उल्लंघन नहीं करूँगा। मछुवारा यह सुनकर अपना डर भूल गया और बोला, 'अरे भूत, तू क्या बक रहा है? सुलेमान को मरे अठारह सौ वर्षों से अधिक हो गए हैं। तू कौन है, मुझे बता कि तू इस गागर में किस प्रकार बंद हो गया।'
दैत्य ने उसे घृणापूर्वक देखकर कहा, 'तू बड़ा बदतमीज है, मुझे भूत कहता है।' मछुवारा बिगड़ कर बोला, 'और कौन है तू? तुझे भूत न कहूँ तो गधा कहूँ?' दैत्य ने कहा, 'तेरे मरने में अब अधिक समय नहीं है। मैं तुझे शीघ्र ही मार डालूँगा। तू अपनी बकबक बंद कर और मुझसे बात ही करनी है तो जुबान सँभाल कर के कर।'
मछुवारा घबराकर बोला, 'तू मेरी हत्या क्यों करना चाहता है? क्या तू इस बात को भूल गया कि मैंने ही तुझे गागर के बंधन से छुड़ाया है।'
दैत्य बोला, 'मुझे भली प्रकार ज्ञात है कि तूने ही गागर खोली है लेकिन इस बात से तेरी जान नहीं बच सकती। हाँ, मैं तेरे साथ एक रियायत करूँगा। मैं तुझे यह निर्णय करने का अधिकार दूँगा कि मैं किस प्रकार तुझे मारूँ।' मछुवारे ने कहा, 'तेरे हृदय में जरा भी न्यायप्रियता नहीं है। मैंने तेरा क्या बिगाड़ा है कि तू मुझे मारना चाहता है? क्या मेरे इस अहसान का बदला तू इसी प्रकार देना चाहता है कि अकारण मुझे मार डाले।'

दैत्य बोला, 'अकारण नहीं मार रहा। मैं तुझे बताता हूँ कि तुझे मारने का क्या कारण है, तू ध्यान देकर सुन। मैं उन जिन्नों (दैत्यों) में से हूँ जो नास्तिक थे। अन्य दैत्य मानते थे कि हजरत सुलेमान ईश्वर के दूत (पैगंबर) हैं और उनकी आज्ञाओं का पालन करते थे। सिर्फ मैं और एक दूसरा दैत्य, जिसका नाम साकर था, सुलेमान की आज्ञा से विमुख हुए। बादशाह सुलेमान ने क्रुद्ध होकर अपने प्रमुख मंत्री आसिफ बिन वरहिया को आदेश दिया कि मुझे पकड़कर उसके (सुलेमान के) सामने पेश करे। मंत्री ने मुझे पकड़ कर उसके सामने खड़ा कर दिया। सुलेमान ने मुझसे कहा कि तू मुसलमान होकर मुझे पैगंबर मान और मेरी आज्ञाओं का पालन कर। मैंने इससे इनकार कर दिया। सुलेमान ने इसकी मुझे यह सजा दी कि मुझे इस गागर में बंद किया और अभिमंत्रित करके सीसे का ढक्कन इसके मुँह पर जड़ दिया और उस पर अपनी मुहर लगा दी और एक दैत्य को आज्ञा दी कि गागर को नदी में डाल दे। अतएव वह मुझे नदी में डाल गया। उस समय मैंने प्रण किया कि सौ वर्षों के अंदर जो आदमी मुझे निकालेगा उसे मैं इतना धन दे दूँगा कि वह आजीवन सुख से रहे और उसके मरणोपरांत भी बहुत-सा धन उसके उत्तराधिकारियों के लिए रह जाए। इस अवधि में मुझे किसी ने न निकाला। फिर मैंने प्रतिज्ञा की कि अब सौ वर्ष के अंदर जो मुझे मुक्त करेगा उसे मैं सारे संसार के खजाने दिलवा दूँगा। फिर भी किसी ने मुझे न निकाला। फिर मैंने प्रतिज्ञा की कि सौ वर्षों की तीसरी अवधि में जो मुझे मुक्त करेगा उसे मैं बहुत बड़ा बादशाह बना दूँगा और हर रोज उसके पास जाकर उस की तीन इच्छाए पूरी करूँगा। जब इस तीसरी अवधि में भी किसी ने मुझे न निकाला तो मुझे बड़ा क्रोध आया और उसी अवस्था में मैंने प्रण किया कि जो मुझे अब बाहर निकालेगा मैं अत्यंत क्रूरतापूर्वक उसके प्राण लूँगा। हाँ, उसके साथ इतनी रियायत करूँगा कि वह जिस प्रकार से मरना चाहेगा मैं उसे उसी प्रकार से मारूँगा। अब चूँकि तूने मेरी इस प्रतिज्ञा के बाद मुझे निकाला है इसीलिए अब तू बता कि तुझे किस प्रकार मारूँ।'
मछुवारा यह सुन कर आश्चर्यचकित और भयभीत हुआ और सोचने लगा कि दुर्भाग्य ही मेरे पीछे पड़ गया है जो मैं भलाई करके उसके बदले मृत्युदंड पा रहा हूँ। वह गिड़गिड़ाकर दैत्य से बोला, 'भाई, तुम अपनी प्रतिज्ञा भूल जाओ, मेरे छोटे- छोटे बच्चों पर दया करो। यदि तुम्हारी समझ में मैंने कोई अपराध किया है तो भी मुझे क्षमा कर दो। क्या तुमने सुना नहीं कि जो दूसरों के अपराध क्षमा करता है ईश्वर उसके अपराध क्षमा करता है?'

दैत्य ने कहा, 'यह बातें रहने दे। मैं तुझे मारे बगैर नहीं रहूँगा; तू सिर्फ बता कि किस प्रकार मरना चाहता है।'
मछुवारा अब बहुत ही भयभीत हुआ क्योंकि उसने देखा कि दैत्य उसे मारने का हठ नहीं छोड़ रहा है। अपने स्त्री-पुत्रों की याद करके वह अत्यंत दुखी हुआ। उसने एक बार फिर दैत्य का क्रोध शांत करने का प्रयत्न किया और उससे अनुनयपूर्वक कहा, 'हे दैत्यराज, मैंने तो तुम्हारे साथ इतनी भलाई की है, तुम इसके बदले मुझ पर दया भी नहीं कर सकते?' दैत्य बोला, 'इसी भलाई करने के कारण तो तेरी जान जा रही है।' मछुवारे ने फिर कहा, 'कितने आश्चर्य की बात है कि तुम अपने उपकारकर्ता के प्राण लेने पर तुले हो। यह मसल मशहूर है कि अगर कोई बुरों के साथ भलाई करता है तो उसका कुपरिणाम ही उठाता है। यह कहावत तुम्हारे ऊपर पूरी तरह लागू होती है।' दैत्य ने कहा, 'तुम चाहे जितने सवाल-जवाब करो और चाहे जितनी कहावतें कहो, मैं तो तुम्हारी जान लेने के प्रण से हटता नहीं।'
मछुवारे ने अंत में अपनी रक्षा का एक उपाय सोचा। वह दैत्य से बोला, 'अच्छा, अब मैं समझ गया कि तुम्हारे हाथ से मेरी जान नहीं बच सकती। यदि भगवान की यही इच्छा है तो मैं उसे प्रसन्नतापूर्वक स्वीकार करता हूँ। लेकिन मैं तुझे उसी पवित्र नाम की - जिसे सुलेमान ने अपनी मुहर में खुदवाया था - सौगंध देकर कहता हूँ कि जब तक मैं अपने मरने का तरीका सोच कर तय करूँ तुम मेरे एक प्रश्न का उत्तर दो।' दैत्य इतनी बड़ी सौगंध से निरुपाय हो गया और काँपने-सा लगा। उसने कहा, 'पूछ, क्या पूछना चाहता है। मैं तेरे प्रश्न का उत्तर दूँगा।'
मछुवारे ने कहा, 'मुझे तेरी किसी बात पर विश्वास नहीं होता। तू इतना विशालकाय प्राणी है, इतनी छोटी-सी गागर में कैसे समा गया। तू झूठ बोलता है।' दैत्य बोला, 'जिस पवित्र नाम की सौगंध तूने मुझे दिलाई है मैं उस की साक्षी देकर कहता हूँ कि मैं उसी गागर में था।' मछुवारे ने कहा, 'मुझे अब भी विश्वास नहीं है कि तू सच कहता है। इस गागर में तो तेरा एक पाँव भी नहीं आएगा, तू पूरा का पूरा किस प्रकार इसमें समा गया?' दैत्य ने कहा, 'क्या मेरे इतनी बड़ी सौगंध खाने से भी तुझे विश्वास नहीं आता?' मछुवारा बोला, 'तेरे कसम खाने से क्या होता है? मैं तो तभी मानूँगा जब तुझे अपनी आँखों से गागर के अंदर देखूँ और उसमें से आती हुई तेरी आवाज न सुनूँ।'

यह सुन कर दैत्य फिर धुएँ के रूप में परिवर्तित हो गया और सारी नदी पर फैल गया। फिर वह धुआँ रूपी दैत्य एक स्थान पर इकट्ठा हो गया और धीरे-धीरे गागर में जाने लगा। जब बाहर धुएँ का नाम-निशान न रहा तो गागर के अंदर से दैत्य की आवाज आई, 'अब तो तुझे मालूम हुआ कि मैं झूठ नहीं कहता था, इसी गागर में बंद था?' मछुवारे ने इस बात का उत्तर न दिया। उसने गागर का ढकना, जिस पर सुलेमान की मुहर लगी हुई थी, गागर के मुँह पर रखा और उसे मजबूती से बंद कर दिया। फिर वह बोला, 'ओ दैत्य, अब तेरी बारी है कि तू गिड़गिड़ा कर मुझसे अपना अपराध क्षमा करने को कहे। या फिर मुझे यह बता कि तू स्वयं मेरे हाथ से किस प्रकार मरना चाहता है। नहीं, मेरे लिए तो यही उचित होगा कि मैं तुझे फिर इसी नदी में डाल दूँ और नदी के तट पर घर बनाकर रहूँ और जो भी मछुवारा यहाँ जाल डालने आए उसे चेतावनी दे दिया करूँ कि यहाँ एक गागर में एक महाभयंकर दैत्य बंद है, उसे कभी बाहर न निकालना क्योंकि उसने प्रण किया है कि जो भी उसे बाहर निकालेगा उसके हाथ से मारा जाएगा।'
यह सुन कर दैत्य बहुत घबराया। उसने बहुत हाथ-पाँव मारे कि गागर से निकल आए किंतु यह बात असंभव थी क्योंकि गागर के मुँह पर सुलेमान की मुहर लगा हुआ ढकना था और उस मुहर के कारण यह विवश था। उसे क्रोध तो बहुत आया किंतु उसने क्रोध पर नियंत्रण किया और अनुनयपूर्वक बोला, 'मछुवारे भाई, तुम कहीं मुझे फिर नदी में न डाल देना। तुम क्या मेरी बात सच समझते थे? मैं तो केवल परिहासस्वरूप ही तुम्हें मारने की बात कर रहा था। खेद है कि तुमने मेरी बात को सच समझ लिया। अब मुझे निकाल लो।'
मछुवारे ने हँसकर कहा, 'क्यों भाई, जब तुम गागर के बाहर थे तब तो अपने को बड़ा शक्तिशाली दैत्य राज समझते थे और अकड़ते थे, अब क्या हुआ कि गागर के अंदर जाते ही अपने को बड़ा दीन-हीन समझ रहे हो। मैं तो अब तुम्हें नदी में जरूर डालूँगा और प्रलयकाल तक तुम इसी गागर में बंदी बने रहोगे।' दैत्य ने कहा, 'भगवान के लिए मुझे नदी में वापस फेंकने का इरादा छोड़ दे।' इस प्रकार दैत्य ने बड़ी दीनता से छुटकारे की भीख माँगी, बहुत अनुनय-विनय की लेकिन मछुवारा टस से मस न हुआ। फिर दैत्य बोला, 'यदि तुम मुझे इस बार छोड़ दो तो मैं तुम्हारे साथ बड़ा उपकार करूँगा।' मछुवारा बोला, 'तू महाधूर्त है। मैं तेरी बात पर कैसे विश्वास करूँ? अगर मैंने तुझे छोड़ दिया तो तू फिर मुझे मारने पर उद्यत हो जाएगा। तू इस उपकार का भी मुझे ऐसा ही कुफल देगा जैसा

गरीक नामी बादशाह ने हकीम दूबाँ के साथ किया था।' दैत्य ने यह पूछने पर कि यह कहानी क्या है, मछुवारे ने कहना शुरू किया।

किस्सा गरीक बादशाह और हकीम दूबाँ का

फारस देश में एक रूमा नामक नगर था। उस नगर के बादशाह का नाम गरीक था। उस बादशाह को कुष्ठ रोग हो गया। इससे वह बड़े कष्ट में रहता था। राज्य के वैद्य-हकीमों ने भाँति-भाँति से उसका रोग दूर करने के उपाय किए किंतु उसे स्वास्थ्य लाभ नहीं हुआ। संयोगवश उस नगर में दूबाँ नामक एक हकीम का आगमन हुआ। वह चिकित्सा शास्त्र में अद्वितीय था, जड़ी-बूटियों की पहचान उससे अधिक किसी को भी नहीं थी। इसके अतिरिक्त वह प्रत्येक देश की भाषा तथा यूनानी, अरबी, फारसी इत्यादि अच्छी तरह जानता था।
जब उसे मालूम हुआ कि वहाँ के बादशाह को ऐसा भयंकर कुष्ठ रोग है जो किसी हकीम के इलाज से ठीक नहीं हुआ है, तो उसने नगर में अपने आगमन की सूचना उसके पास भिजवाई और उससे भेंट करने के लिए स्वयं ही प्रार्थना की। बादशाह ने अनुमति दे दी तो वह उसके सामने पहुँचा और विधिपूर्वक दंडवत प्रणाम करके कहा, 'मैने सुना है कि नगर के सभी हकीम आप का इलाज कर चुके और कोई लाभ न हुआ। यदि आप आज्ञा करें तो मैं खाने या लगाने की दवा दिए बगैर ही आपका रोग दूर कर दूँ।' बादशाह ने कहा, 'मैं दवाओं से ऊब चुका हूँ। अगर तुम बगैर दवा के मुझे अच्छा करोगे तो मैं तुम्हें बहुत पारितोषिक दूँगा।' दूबाँ ने कहा, 'भगवान की दया से मैं आप को बगैर दवा के ठीक कर दूँगा। मैं कल ही से चिकित्सा आरंभ कर दूँगा।'
हकीम दूबाँ बादशाह से विदा होकर अपने निवास स्थान पर आया। उसी दिन उसने कोढ़ की दवाओं से निर्मित एक गेंद और उसी प्रकार एक लंबा बल्ला बनवाया और दूसरे दिन बादशाह को यह चीजें देकर कहा कि आप घुड़सवारी की गेंदबाजी (पोलो) खेलें और इस गेंद-बल्ले का प्रयोग करें। बादशाह उसके कहने के अनुसार खेल के मैदान में गया। हकीम ने कहा, 'यह औषधियों का बना गेंद-बल्ला है। आप को जब पसीना आएगा तो येऔषधियाँ आप के शरीर में प्रवेश करने लगेंगी। जब आपको काफी पसीना आ जाए और औषधियाँ भली प्रकार आप के शरीर में प्रविष्ट हो जाएँ तो आप गर्म पानी से स्नान करें। फिर आपके शरीर में मेरे दिए हुए कई गुणकारी औषधियों के तेलों की मालिश होगी। मालिश के बाद आप सो जाएँ। मुझे विश्वास है कि दूसरे दिन उठकर आप स्वयं को नीरोग पाएँगे।'

है। वह आपके शत्रुओं का भेजा हुआ है जो चाहते हैं वह छल क द्वारा आपको मार डाले।'
बादशाह ने जवाब दिया, 'मंत्री, तुम्हें हो क्या गया है जो ऐसी निर्मूल बातें कर रहे हो और हकीम को दोषी ठहरा रहे हो?' मंत्री ने कहा, 'सरकार मैं बगैर सोचे-समझे यह बात नहीं कह रहा हूँ। मैंने अच्छी तरह पता लगा लिया है कि यह मनुष्य विश्वसनीय नहीं है। आपको उचित है कि आप हकीम की ओर से सावधान हो जाएँ। मैं फिर जोर देकर निवेदन करता हूँ कि दूबाँ अपने देश से वही इरादा ले कर आया है अर्थात वह छल से आप की हत्या करना चाहता है।'
बादशाह ने कहा, 'मंत्री, हकीम दूबाँ हरगिज ऐसा आदमी नहीं है जैसा तुम कहते हो। तुमने स्वयं ही देखा है कि मेरा रोग किसी और हकीम से ठीक न हो सका और दूबाँ ने उसे एक दिन में ही ठीक कर दिया। ऐसी चिकित्सा को चमत्कार के अलावा क्या कहा जा सकता है? अगर वह मुझे मारना चाहता तो ऐसे कठिन रोग से मुझे छुटकारा क्यों दिलाता? उसके बारे में ऐसे विचार रखना बड़ी नीचता है। मैं अब उसका वेतन तीन हजार रुपए मासिक कर रहा हूँ। विद्वानों का कहना है कि सत्पुरुष वही होते हैं जो अपने साथ किए गए किंचित्मात्र उपकार को आजीवन न भूलें। उसने तो मेरा इतना उपकार किया है कि अगर मैं उसे थोड़ा इनाम और मान-सम्मान दे दिया तो तुम उससे जलने क्यों लगे। तुम यह न समझो कि तुम्हारी निंदा के कारण मैं उसका उपकार करना छोड़ दूँगा। इस समय मुझे वह कहानी याद आ रही है जिसमें बादशाह सिंदबाद के वजीर ने शहजादे को प्राणदंड देने से रोका था।' मंत्री ने कहा, 'वह कहानी क्या है? मैं भी उसे सुनना चाहता हूँ।' बादशाह गरीक ने कहा, 'बादशाह सिंदबाद की सास किसी कारण सिंदबाद के बेटे से नाराज थी। उसने छलपूर्वक शहजादे पर ऐसा भयंकर अभियोग लगाया कि बादशाह ने शहजादे को प्राण-दंड देने का आदेश दे दिया। सिंदबाद के वजीर ने उससे निवेदन किया कि महाराज, इस आदेश को जल्दी में न दें। जल्दी का काम शैतान का होता है। सभी धर्मशास्त्रों ने अच्छी तरह समझे बूझे-बगैर किसी काम को करने से मना किया है। कहीं ऐसा न हो कि आप का उस भले आदमी जैसा हाल हो जिसने जल्दबाजी में अपने विश्वासपात्र तोते को मार दिया और बाद में हमेशा पछताता रहा। बादशाह के कहने से वजीर ने भद्र पुरुष और उसके तोते की कहानी इस तरह सुनाई।'

[redacted]

[redacted]

अमात्य की कहानी

प्राचीन समय में एक राजा था उसके राजकुमार को मृगया का बड़ा शौक था। राजा उसे बहुत चाहता था, राजकुमार की किसी इच्छा को अस्वीकार नहीं करता था। एक दिन राजकुमार ने शिकार पर जाना चाहा। राजा ने अपने एक अमात्य को बुलाकर कहा कि राजकुमार के साथ चले जाओ; तुम्हें सब रास्ते मालूम हैं, राजकुमार को नहीं मालूम, इसलिए एक क्षण के लिए भी राजकुमार का साथ न छोड़ना।
राजकुमार अमात्य और कई अन्य लोगों को लेकर आखेट के लिए वन में गया। कुछ देर में एक बारहसिंघा सामने से निकला। राजकुमार ने घोड़ा उसके पीछे डाल दिया। अमात्य ने सोचा कि राजकुमार का घोड़ा तेज है और शीघ्र ही बारहसिंघे को मार लिया जाएगा। इसलिए उसने कुछ ढील डाल दी। लेकिन बारहसिंघा दौड़ता ही रहा। राजकुमार कई कोस तक उसके पीछे गया लेकिन उसे पा न सका। वह रास्ता भी भूल गया। उसने चाहा कि वापस अपने अमात्य और अन्य शिकारी साथियों से जा मिले लेकिन वह बिल्कुल भटक गया।
भटकते-भटकते उसने एक स्थान पर देखा कि एक अति सुंदर स्त्री विलाप कर रही है। राजकुमार ने अपने घोड़े को रोका और स्त्री से पूछा कि तू क्यों रो रही है। स्त्री ने बताया कि मैं एक देश की राजकुमारी हूँ, मैं विशेष परिस्थिति वश अकेली अपने घोड़े पर सवार होकर इधर से जा रही थी कि मुझे नींद आ गई और मैं घोड़े से गिर पड़ी और मेरा घोड़ा भी जंगल में भाग गया, मुझे यह भी नहीं मालूम वह किधर को गया है। राजकुमार को उस पर दया आई। उसने अपने आगे अपने घोड़े पर बिठा लिया और जिस ओर स्त्री ने अपनी राजधानी बताई थी उधर चल दिया। कुछ समय पश्चात स्त्री ने कहा मैं घोड़े पर थक गई हूँ, पैदल चलना चाहती हूँ। राजकुमार ने उसे उतार दिया और उसके साथ पैदल चलने लगा। लेकिन उसे यह देखकर बड़ा आश्चर्य हुआ कि एक परकोटे के पास पहुँच कर उसने पुकार कर कहा, 'बच्चों प्रसन्न हो जाओ। मैं तुम्हारे लिए बड़ा मोटा ताजा आदमी शिकार के लिए लाई हूँ।' जवाब में आवाज आई, अम्मा कहाँ है वह आदमी। हमें जल्दी से दे। हम बहुत भूखे हैं। राजकुमार यह सुन कर बड़ा भयभीत हुआ। वह समझ गया कि यह स्त्री नरभक्षी वनवासियों की जाति की है और मुझे मार कर खा जाने के लिए यहाँ धोखे से लाई है। वह घोड़े पर बैठ कर मुड़ने लगा। स्त्री ने देखा कि शिकार हाथ से निकला जाता है तो पलट कर कहने लगी, 'तुम परेशान क्यों हो, यह तो तुम्हारे साथ मजाक हो रहा था। राजकुमार ने कहा, 'खैर, तुम अपने घर आ गई

सुनना होगा तेरे कटे हुए सिर ही से सुनूँगा। तेरे रोने पीटने का कोई लाभ नहीं है।'
यह कहकर बादशाह ने पुस्तक अपने हाथ में ले ली और जल्लाद को हकीम के मारने की आज्ञा दी। फिर उसने सोने के थाल पर पुस्तक का आवरण वस्त्र रखवाया और जब सिर से खून बहना बंद हो गया तो उसे और दरबारियों को बड़ा आश्चर्य हुआ। अब उस कटे सिर ने आँखें खोलकर बादशाह से कहा, 'पुस्तक का छठा पन्ना खोल।' बादशाह ने ऐसा करना चाहा लेकिन पुस्तक के पृष्ठ एक दूसरे से चिपके हुए थे। इसलिए उसने उँगली में थूक लगा कर पन्नों को अलग करना शुरू किया। जब छठा पन्ना खुला तो बादशाह ने बाएँ पृष्ठ की तीसरी पंक्ति पढ़नी चाही किंतु उसने देखा कि उस पृष्ठ पर कुछ नहीं लिखा है। उसने यह बात बताई तो कटे सिर ने कहा, 'आगे के पृष्ठ देख, शायद उनमें लिखा हो।' बादशाह उँगली में थूक लगा- लगाकर पृष्ठों को अलग करने लगा।
वास्तव में हकीम ने पुस्तक के प्रत्येक पृष्ठ पर विष लगा रखा था। थूक लगी उँगली के बार बार पृष्ठों पर रगड़े जाने और फिर मुँह में जाने पर उन पृष्ठों में लगा विष बादशाह के शरीर में प्रवेश कर गया। बादशाह की हालत खराब होने लगी किंतु उसने कटे सिर से प्रश्नों के उत्तर पाने के शौक में इस पर कुछ ध्यान न दिया। अंततः उसकी दृष्टि भी मंद पड़ गई और वह राजसिंहासन से नीचे गिर गया। हकीम के सिर ने जब देखा कि विष पूरी तरह चढ़ गया और बादशाह क्षण दो क्षण का मेहमान है तो हँस कर बोला, हे क्रूर अन्यायी तूने देखा कि निर्दोष की हत्या का क्या परिणाम होता है।' यह सुनते ही बादशाह के प्राण निकल गए। इस प्रकार उसे अपने किए का फल मिल गया।
रानी शहरजाद ने शहरयार से कहा कि मछुवारे ने दैत्य को हकीम दूबाँ और बादशाह गरीक की जो कहानी सुनाई थी वह तो खत्म हो गई, अब मैं मछुवारे और दैत्य की कहानी आगे बढ़ाती हूँ।
मछुवारा यह कहानी सुनाकर दैत्य से कहने लगा, 'यदि गरीक बादशाह हकीम दूबाँ की हत्या न करता तो भगवान उसे ऐसा दंड न देता। दैत्य तेरा हाल भी उस बादशाह की तरह है। तू अगर बंधन से छूटकर मेरे मारने की इच्छा न करता तो दुबारा बंधन में न पड़ता। अब मैं तुझ पर दया करके तुझे फिर से स्वतंत्र क्यों करूँ? मैं तो गागर समेत तुझे फिर नदी में डाल रहा हूँ जहाँ तू अनंतकाल तक पड़ा रहेगा।

दैत्य बोला, 'मेरे मित्र, तू ऐसा न कर मैं अब तुझे मारने का इरादा कभी न करूँगा। बुराई के बदले में भी भलाई करनी चाहिए। तू भी मेरे साथ ऐसी ही भलाई कर जैसी इम्मा ने अतीका के साथ की थी।' मछुवारे ने कहा, 'मुझे वह कहानी नहीं मालूम है, तू बता तो मैं सुनूँ।' दैत्य बोला, 'यदि तू यह कहानी सुनना चाहे तो मुझे बंधन मुक्त कर क्योंकि मैं गागर में अच्छी तरह नहीं बोल पाऊँगा। मुझे मुक्त कर दो तो यही नहीं, और भी बहुत सी अच्छी कथाएँ सुनाऊँगा।' मछुवारा बोला, 'मुझे नहीं सुननी तेरी कहानी' दैत्य ने कहा, 'तू मुझे छोड़ दे तो मैं तुझे अति धनी होने का उपाय बताऊँगा।' मछुवारे को कुछ लालच आ गया। वह बोला, 'मुझे तेरी बात का विश्वास तो नहीं है, किंतु अगर तू इस्मे-आजम (महामंत्र) की सौगंध खाकर कहे कि तू मेरे साथ धोखा नहीं करेगा और अपने वचन पर दृढ़ रहेगा तो मैं तुझे छोड़ दूँ।' दैत्य ने ऐसा ही किया।
ज्यों ही मछुवारे ने गागर का ढकना खोला उसमें से धुँआ निकला और फैल गया। कुछ देर में उसने दैत्य का रूप धारण कर लिया। दैत्य ने ठोकर मार कर गागर को नदी में डुबो दिया। मछुवारा यह देखकर बहुत डरा और बोला, 'हे दैत्य तूने यह क्या किया। क्या तू अपने वचन पर स्थिर नहीं रहना चाहता? मैंने तो तेरे साथ वही किया है जो हकीम दूबाँ ने बादशाह गरीक के साथ किया था।' मछुवारे के भयभीत होने पर दैत्य हँस कर बोला, 'तू डर मत मैं अपने वचन पर दृढ़ हूँ। अब तू अपना जाल उठा और मेरे पीछे-पीछे चला आ।
नितांत वे दोनों चले और एक नगर के अंदर से निकल कर एक पहाड़ की चोटी पर चढ़ गए। फिर वहाँ से उतर कर एक लंबे चौड़े महल में गए। उस महल में एक तालाब दिखाई दिया जिसके चारों ओर चार टीले थे। तालाब के पास पहुँच कर मछुवारे से दैत्य ने कहा, 'तू इस तालाब में जाल डाल और मछलियाँ पकड़।' मछुवारा खुश हो गया क्योंकि तालाब में बहुत सी मछलियाँ थीं। उसने तालाब में जाल डाल कर खींचा तो उसमें चार मछलियाँ आई जो चार रंग की थीं - सफेद, लाल, पीली और काली।
दैत्य ने कहा, 'तू इन मछलियों को लेकर यहाँ के बादशाह के पास जा। वह तुझे इतना धन देगा जो तूने कभी देखा भी नहीं होगा। किंतु एक बात का ध्यान रखना। तालाब में एक दिन में एक ही बार जाल डालना।' यह कहकर दैत्य ने जमीन में जोर से ठोकर मारी। जमीन फट गई और दैत्य उसमें समा गया। दैत्य के उस गढ़े में समाने के बाद धरती फिर बराबर हो गई जैसे उसमें कभी गढ़ा हुआ ही न हो।
मछुवारा उन चारों मछलियों को बादशाह के महल में ले गया।

लिए आएँ तो उनसे कह दो कि बादशाह कुछ बीमार हो गए हैं और कुछ दिन यहीं पर शांतिपूर्वक रहना चाहते हैं। यह कह कर सारे दरबारियों और रक्षकों को राजधानी वापस भेज देना और तुम इस डेरे में अकेले ही उस समय तक प्रतीक्षा करना जब तक मैं लौट न आऊँ।'
मंत्री ने बादशाह को बहुत समझाया 'महाराज आप यह न करें। इस काम में बड़ा खतरा है। यह भी संभव है कि इतना सब करने के बाद भी आपको कोई रहस्य ज्ञान न हो पाए। फिर बेकार में क्यों इतना कष्ट उठा रहे हैं और इतना खतरा मोल ले रहे हैं।' बादशाह पर उसके समझाने-बुझाने का कोई असर नहीं हुआ। उसने बादशाही पोशाक उतारी और एक साधारण सैनिक के वस्त्र पहन लिए। जब सब लोग गहरी नींद सोए हुए थे तब वह तलवार लेकर अपने खेमे से निकला और एक ओर चलता हुआ एक पहाड़ पर चढ़ गया। कुछ ही देर में वह उसकी चोटी पर पहुँच कर दूसरी ओर उतर गया। आगे उसे एक गहन वन दिखाई दिया। वह उसी के अंदर चलने लगा। कुछ दूर जाने पर पूरा सवेरा हो गया और उसे दूर जाने पर एक सुंदर प्रासाद दिखाई दिया। वह यह भवन देख कर बड़ा प्रसन्न हुआ और उसे आशा बँधी कि उसे इस जगह तालाब के रहस्य का पता चलेगा।
भवन के निकट पहुँच कर उसने देखा कि वह बड़ा विशाल है और काले पत्थरों का बना है। उसकी दीवारों पर साफ किए हुए इस्पाती पत्तर जड़े थे जो दर्पण की भाँति चमकते थे। बादशाह को विश्वास हो गया कि यहाँ उसे मनोवांछित सूचना मिलेगी। वह बहुत देर तक खड़ा हुआ भवन की शोभा निहारता रहा फिर उसके पास चला गया। वह देख रहा था कि भवन का द्वार खुला है, फिर भी शिष्टता के नाते उसने ताली बजाई कि उसकी आवाज सुनकर कोई अंदर से आ जाए। जब कोई न आया तो उसने साँकल को खड़खड़ाया, यह सोच कर कि शायद उसकी ताली की आवाज अंदर तक नहीं पहुँची होगी।
साँकल खड़खड़ाने पर भी जब कोई नहीं निकला तो बादशाह को क्रोध आया कि अजीब घर है जहाँ बुलाने पर भी कोई आकर नहीं पूछता। वह अंदर चला गया और डयोढ़ी में पहुँच कर जोर से पुकारा कि क्या इस भवन के अंदर कोई मनुष्य है जो एक अतिथि के रहने के लिए थोड़ा स्थान दे। फिर भी उसे कोई उत्तर न मिला तो उसका आश्चर्य और बढ़ा। ड्योढ़ी से आगे बढ़ कर वह घर में घुसा तो देखा कि अंदर से और भी लंबा चौड़ा मकान है किंतु उसके अंदर कोई नहीं है। अब वह एक लंबे चौड़े आँगन को पार करके एक दालान में पहुँचा। उसमें रेशमी कालीन बिछा हुआ था। अंदर का मकान और भी सजा हुआ था। दरवाजों पर जड़ाऊ मखमल के परदे पड़े थे

जिनमें सुनहरे और रुपहले फूल बूटे कढ़े थे। अंदर एक बारहदरी थी जिसमें एक हौज था जिसके चारों ओर सोने से चार शेर बने हुए थे। शेरों के मुँह से पानी के फव्वारे छूटते थे और जब उनका पानी नीचे संगमरमर के फर्श पर गिरता था तो मालूम होता था लाखों हीरे-जवाहरात उछल रहे हैं। हौज के बीच में एक फव्वारा था जिस पर अरबी अक्षरों में कुछ खुदा हुआ था और उसका पानी उछल कर बारहदरी की छत को छूता था।
इसके अलावा उस विशाल भवन में तीन बाग थे जिनमें बड़े सुघड़पन के साथ भाँति- भाँति के सुगंधित फूलों और उत्तम फलों के पेड़ लगे थे। बागों में हर चीज ऐसी तरतीब से लगी थी कि उन्हें देख कर दुखी मनुष्य भी आनंद में डूब जाए। वृक्षों पर नाना प्रकार के सुंदर पक्षी कलरव कर रहे थे।
वे पक्षी उन्हीं वृक्षों पर रहते थे, उड़कर नहीं जा सकते थे क्योंकि वृक्षों के ऊपर जाल पड़े हुए थे। बादशाह एक कमरे से दूसरे कमरे और एक बाग से दूसरे बाग में घूम-घूमकर हर वस्तु से आनंदित होता रहा। घूमते-घूमते वह थक गया और एक मकान में बैठ कर आराम करने लगा और सामने वाले बाग की शोभा देखने लगा।
इतने में उसे एक कातर वाणी सुनाई दी जैसे कोई बड़े दुख में कराह रहा हो। उसने कान धर कर सुना तो मालूम हुआ कि कोई मनुष्य रो-रो कर अपनी करुण कथा कह रहा है और अपने दुर्भाग्य को कोस रहा है। बादशाह ने उस कमरे का परदा उठाया जिसमें से यह आवाज आ रही थी। उसने देखा कि एक नवयुवक सिंहासन जैसी किसी ऊँची चीज पर राजसी वस्त्र पहने बैठा है और करुण स्वर में विलाप कर रहा है। बादशाह ने उसके निकट जाकर सलाम किया तो युवक बोला, 'मुझे क्षमा कीजिए मैं उठकर आपका स्वागत करने में असमर्थ हूँ इसीलिए मैं आपके पास न आ सका। बादशाह ने कहा, 'मैं आपके शीलवान व्यवहार से बड़ा प्रभावित हुआ हूँ। वास्तव में कोई ऐसा अपरिहार्य कारण होगा कि आप उठ न सके। किंतु आपके दुख को देख कर मुझे अति क्लेश हुआ है।
आप मुझे बताएँ कि मैं आपका कष्ट किस प्रकार दूर कर सकता हूँ। कृपया मुझे अपनी कठिनाई बताने में तनिक भी न हिचकें। कृपया यह बताएँ कि आप यहाँ इस मजबूरी की हालत में कैसे पड़े हैं। यह भी बताएँ कि यह भव्य प्रासाद किसका है और ऐसा निर्जन क्यों है। साथ ही यह भी बताएँ - क्योंकि मैं यही जानने के लिए निकला हूँ - कि पास के तालाब का रहस्य क्या है और उसकी मछलियाँ कौन हैं।'

जवान आदमी यह सुनकर फिर रोने लगा और बोला, 'मेरा हाल सुनने के पहले देख लीजिए। यह कह कर उसने अपना कपड़ा उठाया तो बादशाह ने देखा कि वह नाभि के ऊपर तो जीवित मनुष्य है और नीचे काले पत्थर का बना हुआ है। उसकी आँखें फटी रह गई और वह बोला, 'मुझे तो वैसे यहाँ की प्रत्येक वस्तु देख कर आश्चर्य हो रहा था किंतु आपका यह हाल देख कर मेरा आश्चर्य और उत्सुकता बहुत बढ़ गई है। भगवान के लिए अपना ब्योरेवार हाल कहिए। मुझे विश्वास हो रहा है कि तालाब की रंग-बिरंगी मछलियों के रहस्य का भी आपसे संबंध है। आप मुझे अपनी व्यथा- कथा शीघ्र कहिए क्योंकि दूसरे को सुनाने से आदमी का कुछ दुख तो दूर होता ही है।' जवान आदमी ने कहा कि मुझे अपनी दशा के वर्णन से भी कष्ट होता है किंतु आपका आदेश है इसलिए कहता हूँ।

काले द्वीपों के बादशाह की कहानी

उस जवान ने अपना वृत्तांत कहना आरंभ किया। उसने कहा 'मेरे पिता का नाम महमूद शाह था। वह काले द्वीपों का अधिपति था, वे काले द्वीप चार विख्यात पर्वत हैं। उसकी राजधानी उसी स्थान पर थी जहाँ वह रंगीन मछलियों वाला तालाब है। मैं आपको ब्योरेवार सारी कहानी बता रहा हूँ जिससे आपको सारा हाल मालूम हो जाएगा। जब मेरा पिता सत्तर वर्ष का हुआ तो उसका देहांत हो गया और उसकी जगह मैं राजसिंहासन पर बैठा। मैंने अपने चाचा की बेटी के साथ विवाह किया। मैं उसे बहुत चाहता था और वह भी मुझे बहुत चाहती थी।
'पाँच वर्ष तक हम लोग सुखपूर्वक रहे फिर मुझे आभास हुआ कि उसका मेरे प्रति पहले जैसा प्रेम नहीं है। एक दिन दोपहर के भोजन के पश्चात वह स्नानगृह को गई और मैं अपने शयन कक्ष में लेटा रहा। दो दासियाँ जो रानी को पंखा झला करती थीं मेरे सिरहाने-पैंतानें बैठ गईं और मुझे आराम देने के लिए पंखा झलने लगीं। वे मुझे सोता जान कर धीमे-धीमे बातचीत करने लगीं। मैं सोया नहीं था किंतु उनकी बातें सुनने के लिए सोने का बहाना करने लगा। एक दासी बोली कि हमारी रानी बड़ी दुष्ट है कि ऐसे सुंदर और सुशील पति को प्यार नहीं करती। दूसरी बोली तू ठीक कहती है; रात में बादशाह को अकेला सोता छोड़ कर रानी न जाने कहाँ जाती हैं और बेचारे बादशाह को कुछ पता नहीं चलता। पहली ने कहा यह बेचारा जाने भी कैसे, रानी रोज रात को उसके शर्बत में कोई नशा मिलाकर उसे दे देती है, यह नशे से बिल्कुल बेहोश हो जाता है और रानी जहाँ

चाहती है चली जाती है और प्रातः काल के कुछ पहले आकर इसे होश में लाने की सुगंधि सुँघा देती है।
'मेरे बुजुर्ग दोस्त, मुझे यह सुनकर इतना दुख हुआ कि उसे वर्णन करना मेरी सामर्थ्य के बाहर है। उस समय मैंने अपने क्रोध को सँभालना उचित समझा और, कुछ देर में इस तरह अँगड़ाइयाँ लेता हुआ उठा जैसे सचमुच सो रहा था। कुछ देर में रानी भी स्नान करके वापस आ गई। उस रात को भोजन के उपरांत में शयन करने के लिए लेटा तो रानी हमेशा की तरह मेरे लिए शर्बत का प्याला लाई। मैंने प्याला ले लिया और उसकी आँख बचा कर खिड़की से बाहर फेंक दिया और खाली प्याला उसके हाथ में ऐसे दे दिया जैसे कि मैंने पूरा शर्बत पी लिया है। फिर हम दोनों पलँग पर लेट गए। रानी ने मुझे सोता समझ कर पलँग से उठकर एक मंत्र जोर से पढ़ा और मेरी तरफ मुँह फेर कर कहा कि तू ऐसा सो कि कभी न जागे।
'फिर वह भड़कीले वस्त्र पहन कर कमरे से निकल गई। मैं भी पलँग से उठा और तलवार लेकर उसका पीछा करने लगा। वह मेरे केवल थोड़ा ही आगे थी और उसकी पग ध्वनि मुझे सुनाई दे रही थी। लेकिन मैं ऐसे धीरे-धीरे पाँव रख कर उसके पीछे-पीछे चल रहा था कि उसे मेरे आने का कोई आभास न मिले। वह कई द्वारों से होकर निकली। उन सभी में ताला लगे थे किंतु उसकी मंत्र-शक्ति से सभी ताले खुलते जा रहे थे। आखिरी दरवाजे से निकलकर जब वह बाग में गई तो मैं दरवाजे के पीछे छुप कर देखने लगा कि क्या करती है। वह बाग से आगे बढ़कर एक छोटे से वन के अंदर चली गई जो चारों ओर झाड़ियों से घिरा हुआ था। मैं भी एक अन्य मार्ग से होकर उस वन के अंदर चला गया और इधर-उधर आँखें घुमाकर उसे ढूँढ़ने लगा।
'कुछ देर में मैंने देखा कि वह एक पुरुष के साथ, जो हब्शी गुलाम लग रहा था, हाथ में हाथ दिए टहल रही है और शिकायत कर रही है कि मैं तो तुम्हें प्राणप्रण से प्रेम करती हूँ और रात-दिन तुम्हारे ही ध्यान में मग्न रहती हूँ और तुम्हारा यह हाल है कि मुझसे सीधे मुँह बात नहीं करते, हमेशा मुझे बुरा-भला कहा करते हो। आखिर तुम क्या चाहते हो? क्या तुम मेरे प्रेम की परीक्षा लेना चाहते हो? तुम मेरी शक्ति जानते हो। मेरे अंदर इतनी शक्ति है कि कहो तो सूर्योदय के पहले ही इन सारे महलों को भूमिगत कर दूँ और यह सारा ठाट-बाट बिल्कुल वीरान कर दूँ और यहाँ भेड़िये और उल्लुओं के अलावा कोई नहीं दिखाई दे और जो पत्थर यहाँ महलों में लगे हैं वह काफ पर्वत पर वापस

उड़कर चले जाएँ। इतनी शक्ति रखते हुए भी मैं प्रेम के कारण तुम्हारे पैरों पर गिरी रहती हूँ और तुम्हें मेरी परवा ही नहीं।
'रानी यह बातें करती हुई अपने हब्शी प्रेमी के हाथ में हाथ दिए टहलती आ रही थी। जब वे लोग उस झाड़ी के पास पहुँचे जहाँ मैं छुपा हुआ था तो मैंने बाहर निकल कर हब्शी की गर्दन पर पूरे जोर से तलवार का वार किया। वह लड़खड़ा कर गिर गया। मैंने समझा कि वह मर गया और मैं अँधेरे में वहाँ से खिसक गया। मैंने रानी को छोड़ दिया क्योंकि वह मुझे प्यारी भी थी और मेरे चचा की बेटी भी। रानी अपने प्रेमी को गिरता देख कर विह्वल हो गई। उसने मंत्र बल से अपने प्रेमी को स्वस्थ करना चाहा किंतु वह केवल उसे मरने से बचा सकी। उस हब्शी की हालत ऐसी हो गई थी कि उसे न जीवित कहा जा सकता था न मृत। मैं धीरे-धीरे महल को लौटा। लौटते समय भी मैंने सुना कि रानी अपने प्रेमी के घायल होने पर करुण क्रंदन कर रही है। मैं उसे उसी तरह रोता-पीटता छोड़कर अपने शयन कक्ष में आया और पलँग पर लेट कर सो रहा।
'प्रातःकाल जागने पर मैंने रानी को फिर अपनी बगल में सोता पाया। यह स्पष्ट था कि वह वास्तव में सो नहीं रही थी केवल सोने का बहाना कर रही थी। मैं उसे यूँ ही छोड़ कर उठ खड़ा हुआ मैं अपने नित्य कर्मों को पूरा करके राजसी वस्त्र पहन कर अपने दरबार को चला गया। जब दिन भर राजकाज निबटाने के बाद मैं अपने महल में आया कि रानी ने शोक संताप सूचक काले वस्त्र पहन रखे हैं और बाल बिखराए हुए हैं और उन्हें नोच रही है। मैंने उससे पूछा कि यह तुम कैसा व्यवहार कर रही हो, यह संताप प्रदर्शन किस कारण है। वह बोली बादशाह सलामत, मुझे क्षमा करें मैंने आज तीन शोक समाचार पाए हैं इसीलिए काले कपड़े पहन मातम कर रही हूँ। मैंने पूछा कि वे कौन से समाचार हैं तो उसने बताया कि मेरी माता का देहांत हो गया, मेरे पिताजी एक युद्ध में मारे गए और मेरा भाई ऊँचाई से गिर कर मर गया। मैंने कहा समाचार बुरे हैं लेकिन तुम्हारे इस प्रकार मातम करने के लायक नहीं हैं, फिर भी वे तुम्हारे संबंधी थे और तुम्हें उनकी मृत्यु का शोक होना ही चाहिए।
'इसके बाद वह अपने कमरे में चली गई और मुझसे अलग होकर उसी प्रकार रोती- पीटती रही मैं उसके दुख का कारण जानता था इसलिए मैंने उसे समझाने बुझाने की चेष्ट भी न की। एक वर्ष तक यही हाल रहा। फिर उसने कहा कि मुझसे दुख नहीं सँभलता, मैं एक मकबरा बनवाकर उसमें रात दिन रहना चाहती हूँ। मैंने उसे ऐसा करने की भी अनुमति दे दी। उसने एक बड़ा भारी गुंबद वाली मकबरे जैसी इमारत

बनवाई जो यहाँ से दिखाई देती है और उसका नाम शोकागार रखा। जब वह गृह बन चुका तो उसने अपने घायल प्रेमी हब्शी को वहाँ लाकर रखा और स्वयं भी वहाँ रहने लगी। वह दिन में उसे एक बार कोई औषधि खिलाती थी और जादू-मंत्र भी करती थी। फिर भी उसे ऐसा प्राणघातक घाव लगा था कि औषधि और मंत्रों के बल पर उसके केवल प्राण अटके हुए थे। वह न चल पाता था, न बोल पाता था, सिर्फ रानी की ओर टुक-टुक देखा करता था।
'रानी के प्रेम को जीवित रखने के लिए इतना ही यथेष्ट था। वह उससे घंटों प्रेम की बातें करके अपने चित्त को सांत्वना दिया करती थी। दिन में दो बार उसके समीप जाती थी और देर तक उसके पास बैठी रहती थी। मैं जानता था कि वह क्या करती है फिर भी सारे कार्य कलाप ऐसे साधारण रूप से करता रहा जैसे मुझे कोई बात विदित नहीं है। किंतु एक दिन मैं अपनी उत्सुकता नहीं रोक सका और मैंने जानना चाहा कि वह अपने प्रेमी के साथ क्या करती है। मैं उस मकबरे में ऐसी जगह छुप कर बैठ गया जहाँ से रानी और उसके प्रेमी की सारी बातें दिखाई-सुनाई दें लेकिन उनमें से कोई मुझे न देख सके।
'रानी अपने प्रेमी से कहने लगी कि इससे बड़ा दुर्भाग्य क्या हो सकता है कि मैं तुम्हें ऐसी विवशता की अवस्था में देखती हूँ। तुम सच मानो, तुम्हारी दशा देखकर मुझे इतना कष्ट होता है कि जितना स्वयं तुम्हें भी नहीं होता होगा। मेरे प्राण, मेरे जीवनधार, मैं तुम्हारे सामने घंटों बैठी बातें करती हूँ और तुम मेरी एक बात का भी उत्तर नहीं देते। अगर तुम मुझसे एक बात भी करो तो मेरे चित्त को बड़ा धैर्य मिले बल्कि मुझे बड़ी प्रसन्नता हो। खैर, मैं तो तुम्हें देखकर ही धैर्य धारण किए रहती हूँ।
'रानी इसी प्रकार अपने प्रेमी के सम्मुख बैठ कर प्रलाप करती रही। मुझ मूर्ख से अपने रानी की यह दशा न देखी गई और उसका प्रेम मेरे हृदय में फिर उमड़ आया। मैं चुपचाप अपने महल में आ गया। कुछ देर में वह किसी काम से महल में आई तो मैंने कहा कि अब तुम ने अपने सगे संबंधियों के प्रति बहुत शोक व्यक्त कर लिया, अब साधारण रूप से रानी जैसा जीवन बिताओ। वह रोकर कहने लगी कि बादशाह सलामत मुझसे यह करने के लिए न कहें। मैं उसे जितना समझाता- बुझाता था उतना ही उसका रोना-पीटना बढ़ता जाता था। मैंने उसे उसके हाल पर छोड़ दिया।
'वह इसी अवस्था में दो वर्ष और रही। मैं एक बार फिर शोकागार में गया कि रानी और हब्शी का हाल देखूँ। मैं फिर छुप कर बैठ गया और सुनने लगा। रानी कह रही

थी कि प्यारे, अब तो दो वर्ष बीत गए हैं और तीसरा वर्ष लग गया है तुमने मुझसे एक बात भी नहीं की। मेरे रोने-चिल्लाने और विलाप करने का तुम्हारे हृदय पर कोई प्रभाव नहीं होता। जान पड़ता है कि तुम मुझे बात करने के योग्य नहीं समझते। इसीलिए तुम अब मुझे देखकर आँखें भी बंद कर लेते हो। मेरे प्राणप्रिय, एक बार आँखें खोल कर मुझे देखो तो। मैं तुम्हारे प्रेम में कितनी विह्वल हो रही हूँ।
'रानी की यह बातें सुनकर मेरे तन बदन में आग लग गई। मैं उस मकबरे से बाहर निकल आया और गुंबद की तरफ मुँह करके कहा ओ गुंबद तू इस स्त्री और उसे प्रेमी को जो मनुष्य रूपी राक्षस है निगल क्यों नहीं जाता। मेरी आवाज सुनकर मेरी रानी जो अपने हब्शी प्रेमी के पास बैठी थी क्रोधांध हो कर निकल आई और मेरे समीप आकर बोली अभागे दुष्ट तेरे कारण ही मुझे वर्षों से शोक ने जकड़ रखा है, तेरे ही कारण मेरे प्रिय की ऐसी दयनीय दशा हो गई है और वह इतनी लंबी अवधि से घायल पड़ा है। मैंने कहा हाँ मैंने ही इस कुकर्मी राक्षस को मारा है, यह इसी योग्य था और तू भी इस योग्य नहीं कि जीवित रहे क्योंकि तूने मेरी सारी इज्जत मिट्टी में मिला दी है।
'यह कहकर मैंने तलवार खींच ली और चाहा कि रानी की हत्या कर दूँ किंतु उसने कुछ ऐसा जादू किया कि मेरा हाथ उठ ही न सका। फिर उसने धीरे-धीरे कोई मंत्र पढ़ना आरंभ किया जिसे मैं बिल्कुल न समझ पाया। मंत्र पढ़ने के बाद वह बोली अब मेरे मंत्र की शक्ति देख, मैं आज्ञा देती हूँ कि तू कमर से ऊपर जीवित मनुष्य रह और कमर से नीचे पत्थर बन जा। उसके यह कहते ही मैं वैसा ही बन गया जैसा उसने कहा था अर्थात मैं न जीवित लोगों में रहा न मृतकों में। फिर उसने शोकागार से उठवाकर मुझे इस जगह लाकर रख दिया। उसने मेरे नगर को तालाब बना दिया और वहाँ एक भी मनुष्य नहीं रहने दिया। मेरे सभी दरबारी, प्रजाजन मेरे प्रति निष्ठा रखते थे अतएव उसने उन सबको अपने जादू से मछलियों में बदल दिया। इन में जो सफेद रंग की मछलियाँ हैं वे मुसलमान हैं, लाल रंग वाली अग्निपूजक, काली मछलियाँ ईसाई और पीले रंग वाली यहूदी हैं।
'मैं जिन चार काले द्वीपों का नरेश था उन्हें उस स्त्री ने चार पहाड़ियाँ बनाकर तालाब के चारों ओर स्थापित कर दिया। मेरे देश को उजाड़ और मुझे आधा पत्थर का बनाकर भी उसका क्रोध शांत नहीं हुआ। वह यहाँ रोज आती है और मेरे कंधों और पीठ पर सौ कोड़े इतने जोर से मारती है कि हर चोट पर मेरे खून छलछला आता है। फिर वह बकरी के बालों की बनी एक खुरदरी काली कमली मेरे कंधों

कि बादशाह को अत्यंत आश्चर्य हुआ। फिर वह उस स्थान पर गया जहाँ घायल अवस्था में रानी का हब्शी प्रेमी पड़ा हुआ था। वहाँ जाकर उसने तलवार का ऐसा हाथ मारा कि वह अधमरा आदमी तुरंत मर गया। बादशाह ने उसका शव घसीट कर पिछवाड़े बने हुए एक कुएँ में डाल दिया और शोकागार में वापस आकर नंगी तलवार अपने पास छुपाकर उस हब्शी की जगह खुद लेटा रहा ताकि रानी के आने पर उसे मार सके।
थोड़ी देर में जादूगरनी उसी भवन में पहुँची जहाँ काले द्वीपों का बादशाह पड़ा हुआ था। उसने उसे इस बेदर्दी से मारना शुरू किया कि सारी इमारतें उसकी चीख पुकार और आर्तनाद से गूँजने लगीं। वह चिल्ला-चिल्ला कर हाथ रोकने और दया करने की प्रार्थना करता रहा किंतु वह दुष्ट उसे बगैर सौ कोड़े मारे न रही। इसके बाद सदा की भाँति उस पर खुरदरी कमली और उसके उपर जरी का भारी लबादा डाल कर शोकागार में आई और बादशाह के सन्मुख, जिसे वह अपना प्रेमी समझी थी, बैठकर विरह व्यथा कहने लगी।
वह बोली, 'प्रियतम मैं कितनी अभागी हूँ कि तुझे प्राणप्रण से चाहती हूँ और तू है मुझ से तनिक भी प्रेम नहीं करता। मेरा दिन रात चैन हराम है। तू अपने कष्टों का कारण मुझे ही समझा करता है।
यद्यपि मैंने तेरे लिए अपने पति पर कैसा अत्याचार और अन्याय किया है। फिर भी मेरा क्रोध शांत नहीं हुआ है और मैं चाहती हूँ कि उसे और कठोर दंड दूँ क्योंकि उसी अभागे ने तेरी ऐसी दशा की है। लेकिन तू तो मुझसे कुछ कहता ही नहीं, हमेशा होठ सिए रहता है। शायद तू चाहता है कि अपनी चुप्पी से ही मुझे इतना व्यथित कर दे कि मैं तड़प कर मर जाऊँ। भगवान के लिए अधिक नहीं तो एक बात तो मुझसे कर ले कि मेरे दुखी मन को सांत्वना मिले।'
बादशाह ने उनींदे स्वर में कहा, 'लाहौल बला कुव्वत इला बिल्ला वहेल वि अली वल अजीम (सर्वोच्च और महान परमात्मा के अलावा कोई न शक्तिमान है न डरने योग्य) बादशाह ने घृणा पूर्वक यह आयत पढ़ी थी क्योंकि इस्लामी विश्वास के अनुसार इस आयत को पढ़ने से शैतान भाग जाता है; किंतु रानी के लिए कुछ भी सुनना सुखद आश्चर्य था। वह बोली कि प्यारे यह सचमुच तू बोला था कि मुझे कुछ धोखा हुआ है। बादशाह ने हब्शियों के से स्वर में घृणा पूर्वक कहा, 'तुम इस योग्य नहीं हो कि तुम से बात करूँ या तुम्हारे किसी प्रश्न का उत्तर दूँ।' रानी बोली 'प्राण प्रिय, मुझसे ऐसा क्या अपराध हुआ है जो तुम ऐसा कह रहे हो।' बादशाह ने कहा, 'तुम बहुत जिद्दी हो, किसी की नहीं सुनती इसलिए मैंने

कुछ नहीं कहा। अब पूछती हो तो कहता हूँ। तुम्हारे पति के रात दिन चिल्लाने से मेरी नींद हराम हो गई है। अगर उसकी चीख पुकार न होती तो मैं कब का अच्छा हो गया होता और खूब बातचीत कर पाता। लेकिन तूने एक तो उसे आधा पत्थर का बना दिया है और फिर उसे रोज इतना मारा भी करती है। वह कभी सो नहीं पाता और रात दिन रोया और कराहा करता है और मेरी नींद भी नहीं लगने देता। अब तू खुद ही बता क्या तुझसे बोलूँ और क्या बात करूँ।
जादूगरनी ने कहा कि तुम क्या यह चाहते हो कि मैं उसे मारना बंद कर दूँ और उसे पहले जैसी स्थिति में ले आऊँ। अगर तुम्हारी खुशी इसी में है तो मैं अभी ऐसा कर सकती हूँ। हब्शी बने हुए बादशाह ने कहा कि मैं सचमुच यही चाहता हूँ कि तू इसी समय जाकर उसे दुख से पूरी तरह छुड़ा दे ताकि उसकी चीख पुकार से मेरे आराम में विघ्न न पड़े। रानी ने शोकागार के एक कक्ष में जाकर एक प्याले में पानी लेकर उस पर कुछ मंत्र फूँका कि वह उबलने लगा। फिर वह उस कक्ष में गई जहाँ उसका पति था और उस पर वह पानी छिड़क कर बोली, 'यदि परमेश्वर तुझसे अत्यंत अप्रसन्न है और उसने तुझे ऐसा ही पैदा किया है तो इसी सूरत में रह किंतु यदि तेरा स्वाभाविक रूप यह नहीं है तो मेरे जादू से अपना पूर्व रूप प्राप्त कर ले।' रानी के यह कहते ही वह बादशाह अपने असली रूप में आ गया और प्रसन्न होकर उठ खड़ा हुआ। रानी ने कहा कि तू खैरियत चाहता है तो फौरन यहाँ से भाग जा, फिर कभी यहाँ आया तो जान से मार दूँगी। वह बेचारा चुपचाप निकल गया और एक और इमारत में छुप कर देखने लगा कि क्या होता है।
रानी वहाँ से फिर शोकागार में आई और हब्शी बने हुए बादशाह से बोली कि जो तुम चाहते थे वह मैंने कर दिया अब तुम उठ बैठो जिससे मुझे चैन मिले। बादशाह हब्शियों जैसे स्वर में बोला, 'तुमने जो कुछ किया है उससे मुझे आराम तो मिला है लेकिन पूरा आराम नहीं। तुम्हारा अत्याचार अभी पूरी तरह से दूर नहीं हुआ है और मेरा चैन अभी पूरा नहीं लौटा है। तुमने सारे नगर को उजाड़ रखा है और उसके निवासियों को मछली बना दिया है। हर रोज आधी रात को सारी मछलियाँ पानी से सिर निकाल निकाल कर हम दोनों को कोसा करती हैं इसी कारण मैं निरोग नहीं हो पाता। तुम पहले शहर और उसके निवासियों को पहले जैसा बना दो फिर मुझसे बात करो। यह करने के बाद तुम अपनी बाँह का सहारा देकर मुझे उठाना।'

मुँह पर जाली का नकाब पड़ा हुआ था, वहाँ आई और मुस्करा कर मजदूर से कहने लगी कि अपना टोकरा उठा और मेरे साथ चल। मजदूर अच्छी मजदूरी मिलने की आशा और स्त्री के मधुर व्यवहार से प्रसन्न होकर उसके साथ चल दिया। वह इस बात से बहुत ही प्रसन्न हुआ कि सुबह-सुबह ही अच्छा काम मिल गया था। कुछ दूर जाकर स्त्री ने एक मकान के सामने खड़े होकर ताली बजाई। कुछ देर में एक सफेद लंबी दाढ़ी वाले ईसाई ने द्वार खोला। स्त्री ने उसे कुछ रुपए दिए और ईसाई बूढ़े ने उसका आशय समझ कर घर के अंदर से उत्तम मदिरा का एक घड़ा उसे दे दिया। स्त्री ने घड़ा मजदूर के टोकरे में रखवाया और बाजार में आ गई।
बाजार में उसने बहुत-सी वस्तुएँ खरीदीं। इनमें स्वादिष्ट फल यथा सेब, नाशपाती आदि तथा भाँति-भाँति के सुंदर सुगंध वाले फूल, इत्र, स्वादिष्ट अचार, चटनियाँ और मुरब्बे, माँस, सूखे मसाले आदि घूम-घूम कर कई दुकानों से खरीदे। इतनी चीजें उसने लीं कि टोकरे में बिल्कुल जगह न रही। मजदूर कहने लगा, अगर मुझे मालूम होता कि आप इतना सामान खरीदेंगी तो मैं अपने साथ एक घोड़ा बल्कि ऊँट रख लेता।
खैर, मजदूर टोकरा उठाकर स्त्री के साथ चला। काफी दूर जाने के बाद वे दोनों एक विशाल भवन के पास पहुँचे जिसके शिखर बड़े सुंदर बने थे और दरवाजे हाथी दाँत से निर्मित थे। स्त्री ने दरवाजे के आगे खड़े हो कर ताली बजाई। दरवाजा जब तक खुले तब तक मजदूर सोचता रहा कि न मालूम यह स्त्री घर की नौकरानी है या मालकिन, इसके साज-सिंगार से तो यह नहीं मालूम होता कि यह नौकरानी होगी। कुछ ही देर में एक स्त्री ने दरवाजा खोला। मजदूर उसका अनुपम सौंदर्य और मनोहारी भाव देख कर बेसुध-सा होने लगा और सामान से लदा टोकरा उसके सिर से गिरने-गिरने को होने लगा। जो स्त्री उसे बाजार से लाई थी वह कौतुकपूर्वक उसकी बदहवासी का तमाशा देखने लगी लेकिन घर के अंदर से आई हुई स्त्री ने उससे कहा, 'तू खड़ी-खड़ी क्या देख रही है, यह बेचारा सामान के भार से दबा जा रहा है। तू जल्दी से इसे अंदर ले जा और इसका सामान उतरवा।'
मजदूर अंदर गया तो दोनों स्त्रियों ने अंदर से दरवाजा बंद कर लिया और उसे ले कर एक बड़े मकान में आई। इसके खंभे कीमती लकड़ी के बने थे और एक बड़ा कक्ष था जिसके चारों ओर दालान थे। दालान में एक और बैठने का स्थान था जहाँ पर बहुत-से मूल्यवान नर्म आसन बिछे थे और सुविधा के भाँति-भाँति के मूल्यवान पात्र रखे हुए थे। सब के बीच में चंदन और अगर की लकड़ी का बना एक बड़ा सिंहासन था। उस पर एक बहुत ही मूल्यवान आसन पड़ा था जिसमें चारों ओर

मोतियों और माणिकों की झालर लटक रही थी। इसके अलावा उस विशाल कक्ष में एक संगमरमर का बना हौज था जिसमें फव्वारे छूट रहे थे।
मजदूर यद्यपि दूर तक भारी बोझ लेकर चलने के कारण बहुत थक गया तथापि उस कमरे की सामग्री और सजावट देख कर अपना श्रम भूल गया और वह प्रसन्न चित से इस शोभा को देखने लगा। विशेषतः उसे सिंहासन पर बैठी हुई अतीव सुंदर स्त्री ने बहुत आकृष्ट किया। उसे बाद में मालूम हुआ कि सिंहासन पर बैठी स्त्री का नाम जुबैदा है, वह उस घर की मालकिन है। जिस स्त्री ने दरवाजा खोला था उसका नाम साफी था और जो स्त्री बाजार से उस पर सामान लदवाकर लाई थी उसका नाम अमीना था।
जुबैदा ने कहा, 'बीबियो, इस बेचारे मजदूर के सर से सामान तो उतारो। यह बोझ के मारे मरा जा रहा है।' साफी और अमीना ने मिलकर उसके सिर से टोकरा उतरवाया और उसमें से सामान निकालने लगीं। जुबैदा ने उसे इतना पैसा दिया जो उसकी साधारण मजदूरी से कहीं अधिक था। वह आशा से अधिक मजदूरी पाकर खुश तो बहुत हुआ लेकिन उसका मन वहाँ की वस्तुओं में इतना लगा था कि वह वापस न हुआ। इतने में ही अमीना ने अपने चेहरे से नकाब उतार दिया। मजदूर ने अब तक तो झलक भर देखी थी, अब तो उसे पूरी नजर भर देखा तो ठगा-सा खड़ा रह गया। उसे यह देखकर भी आश्चर्य हुआ कि यद्यपि घर में तीन स्त्रियाँ ही थीं तथापि खाने-पीने की सामग्री इतनी थी जो तीस व्यक्तियों को काफी होती।
मजदूर वहाँ से न हटा तो जुबैदा ने पहले तो सोचा कि वह कुछ देर और सुस्ताना चाहता है, लेकिन जब उसे बहुत देर हो गई तो उसने कहा कि 'क्या बात है, तू जाता क्यों नहीं? क्या तुझे मजदूरी कम मिली है? अमीना, इसे कुछ और पैसे देकर विदा करो।' मजदूर ने कहा, 'मालकिन, मैंने मजदूरी आशा से अधिक पाई है किंतु आपके सम्मुख कुछ निवेदन करना चाहता हूँ। मैं जानता हूँ कि जो मैं कहना चाहता हूँ वह मेरी उद्दंडता है किंतु मुझे आशा है आप मुझे क्षमा करेंगी और मेरी बातों पर नाराज नहीं होंगी। मुझे यहाँ बहुत-सी बातें आश्चर्यजनक लग रही हैं। मैंने आप जैसी रूपवती कोई भी महिला नहीं देखी। मुझे यह देख कर भी बड़ा आश्चर्य हुआ है कि यहाँ कोई पुरुष नहीं है। बगैर पुरुष के स्त्रियों का रहना और बगैर स्त्रियों के पुरुषों का रहना दोनों ही बहुत अजीब बातें हैं।'
मजदूर बातूनी तो था ही इसलिए बोलता चला गया। उसने बगदाद नगर में प्रचलित तरह-तरह की कहावतें सुनाईं। इनमें से एक यह थी कि जब तक चार व्यक्ति एक साथ

भोजन न करें भोजन में स्वाद नहीं आता और खाने वाले तृप्त नहीं होते। उसका आशय यह था कि उन स्त्रियों के बीच में वही पुरुष और दूसरे उन तीन के अलावा चौथा व्यक्ति भी वही है, इसलिए भोजन के समय उसे भी खाने के लिए बिठा लिया जाय। जुबैदा उसकी बातें सुन कर हँसने लगी और बोली, 'तू अपनी बेकार की बातें और सलाहें अपने पास रख, हम तीनों स्त्रियाँ बहिनें हैं और अपने सारे काम खुद ही अच्छी तरह चलाती हैं और इस तरह चलाती हैं कि किसी को पता नहीं चलता। हम लोग नहीं चाहते कि कोई हमारे भेद को जाने।'
मजदूर ने कहा, 'मेरी मालकिन, आप तो अत्यंत चतुर और बुद्धिमती हैं लेकिन आप मुझे भी निरक्षर और गँवार न समझें। यह तो भाग्य की बात है कि मुझे पेट पालने के लिए मजदूरी करनी पड़ती है वरना मैंने बहुत-सी इतिहास और ज्ञान की पुस्तकें पढ़ी हैं। आप कहें तो आपको एक कहावत आपकी सेवा में उपस्थित करूँ। यह कहावत है कि बुद्धिमान को चाहिए कि चतुर व्यक्ति से अपना भेद न छुपाए क्योंकि चतुर व्यक्ति को किसी का भेद छुपाए रखना आता है। अगर आप मुझ पर अपना कोई भेद प्रकट करेंगी तो वह ऐसा ही होगा जैसे कोई चीज किसी कमरे में बंद करके ताला लगा दिया जाए और ताले की चाबी खो जाए।
जुबैदा समझ गई कि यह मजदूर बुद्धिमान और पढ़ा-लिखा है और इसका साथ करने में कोई बुराई नहीं और इसे अपने साथ बिठा कर खाना भी खिलाया जा सकता है। फिर भी उसने उसकी बुद्धि की परीक्षा लेने के लिए मजाक में कहा, 'देखो भाई, हमने तो पैसा और मेहनत लगा कर इस भोजन को तैयार किया है, तुमने तो इस पर कुछ खर्च नहीं किया। फिर तुम्हें अपने खाने में क्यों सम्मिलित करें?' साफी ने भी उससे कहा, 'तुमने यह कहावत तो सुनी होगी कि छूछा किन पूछा।'
इन बातों का बेचारे मजदूर के पास कोई उत्तर न था और उसने कहा कि आप लोग ठीक कहती हैं, मैं जा रहा हूँ। लेकिन अमीना ने अपनी बहनों से उसकी वकालत की और कहा, 'इसे यहीं रहने दो। यह अपनी बातों से हमारा मनोरंजन करेगा और अपने विनोदी स्वभाव के कारण हमें हँसाता रहेगा। तुम्हें नहीं मालूम यह जबर्दस्त किस्म का मसखरा है। बाजार में यहाँ तक सारे रास्ते यह हँसी-मजाक की बातों से मुझे हँसाता आया है।' मजदूर को अमीना की बातें सुनकर बड़ा संतोष हुआ। उसने कहा, 'आप लोगों की बड़ी कृपा होगी अगर मुझे अपने साथ रहने दें। मैं गरीब हूँ किंतु किसी का उपकार मुफ्त में नहीं लेना चाहता। और तो मेरे पास कुछ नहीं लेकिन अपनी कृपा के बदले यह मजदूरी जो आपने मुझे दी है

हम तुम पर कोई नई शर्त नहीं लगा रहे हैं, उधर देखो क्या लिखा है। मजदूर ने एक दरवाजे के अंदर जाकर देखा तो मोटे-मोटे सुनहरे अक्षरों में लिखा था, 'इस भवन के अंदर जाने वाला कोई व्यक्ति यदि ऐसी बातों के बारे में पूछेगा जिनसे उसका कोई संबंध नहीं है तो उसे बड़ी क्लेशकारक बातें सुनने को मिलेंगी, उसे बड़ा कष्ट होगा और वह बहुत पछताएगा।' मजदूर ने कहा, आप चिंता न करें, मैं अपना मुँह बंद रखूँगा।
फिर अमीना रात का भोजन लाई और चारों ओर दीपक और सुगंधियाँ जलाईं। इससे सारा भवन आलोकित और सुवासित हो गया। इसके बाद तीनों स्त्रियाँ और मजदूर भोजन करने लगे और मदिरा पीकर अपने-अपने क्षेत्र की भाषाओं के गीत गाने लगे और राग-रागिनियाँ छेड़ने लगे। थोड़ी ही देर में ज्ञात हुआ जैसे कोई दरवाजा खोलने को कह रहा है। यह शब्द सुन कर साफी खड़ी हो गई क्योंकि दरवाजा खोलने वही जाती थी। उसने जाकर दरवाजा खोला और कुछ देर में वापस आकर कहा, 'दरवाजे पर एक ही जैसे लगने वाले तीन फकीर खड़े है जुबैदा, तुम उन्हें देख कर बहुत हँसोगी। वे तीनों ही दाहिनी आँख से काने हैं और सभी के सिर, दाढ़ी, मूछें यहाँ तक कि भवें भी मुड़ी हुई हैं। वे इसी समय बगदाद में प्रविष्ट हुए हैं और चाहते हैं कि उन्हें एक रात ठहरने के लिए जगह दे दी जाए, सुबह वे चले जाएँगे। बहन, मेरी प्रार्थना है कि उन्हें यहाँ रहने की अनुमति दे दो। वे रात को यहाँ रह कर हम लोगों का कुछ भला ही करेंगे, हमें किसी प्रकार कष्ट न पहुँचाएँगे।'
जुबैदा ने साफी से कहा, अगर तुम यही चाहती हो तो उन्हें ले आओ लेकिन उन्हें भी हमारे घर पर मेहमानी की शर्त बता देना और कह देना कि अंदर दीवार पर जो कुछ लिखा है उसे पढ़ लें। साफी बहन की अनुमति पाकर प्रसन्नतापूर्वक दौड़ी गई और तीनों फकीरों को लेकर अंदर आ गई। फकीरों ने जुबैदा और अमीना को झुककर सलाम किया। दोनों ने सलाम का जवाब देकर उनकी कुशल-क्षेम पूछी। इसके बाद उन्होंने फकीरों से भोजन करने को कहा।
फकीरों ने मजदूर को देखकर कहा कि यह तो अरब का मुसलमान मालूम होता है। अरब के लोग धर्म के बड़े पक्के होते हैं किंतु यह तो धर्म-विरुद्ध मदिरा पान कर रहा है। मजदूर यह सुनकर बड़ा क्रुद्ध हुआ और बोला, 'तुम लोग कौन बड़े धर्माचारी हो। तुम लोगों ने दाढ़ी-मूँछें मुड़ाकर इस्लाम के नियमों का उल्लंघन नहीं किया? तुम्हें मेरे व्यवहार पर आपत्ति करने और मुझे नसीहत देने का क्या अधिकार है?' स्त्रियों ने कहा कि तुम लोग यह बेकार की बहस

यह कहकर जाफर ने कहा, 'हम लोग इस शहर में किसी को नहीं जानते, न यहाँ के मार्ग पहचानते हैं। हमें डर लग रहा है कि हम इधर-उधर भटकते हुए सराय पर कैसे पहुँचेंगे। फिर संभव है सराय का दरवाजा बंद हो गया हो और हम रात भर गलियों में भटकते रहें। यह भी संभव है कि वही कोतवाल गश्त लगाता हुआ आ निकले और हम लोगों को बंद कर दे। हमारी दशा बड़ी दयनीय है। सुंदरी, तुम दया करके अनुमति दो तो हम रात भर के लिए तुम्हारे मकान में किसी जगह पड़े रहें। अगर तुम हमें अपनी संगति के योग्य समझो तो हमें अपने गाने-बजाने में शामिल कर लो। हम लोग यह तो समझ गए हैं कि तुम लोग गाने-बजाने में अति निपुण हो। हमें भी संगीत में रुचि है और हम भी अपनी कला से तुम्हारे आमोद-प्रमोद में योग दे सकते हैं।'
साफी ने कहा, मैं इस घर की मालकिन नहीं हूँ; तुम लोग जरा देर यहीं ठहरो, मैं मालकिन से तुम्हारी बात करती हूँ; अगर उसने अनुमति दे दी तो फिर कोई दिक्कत नहीं रहेगी और तुम लोग आराम से यहाँ रात बिता सकोगे। यह कह कर साफी अंदर गई और अपनी बहनों से नए व्यापारियों की दशा और उनकी प्रार्थना की बात की। उन दोनों ने आपस में और साफी के साथ मंत्रणा की और साफी से कहा कि उन्हें भी अंदर ले आओ।
अतएव साफी वहाँ जाकर खलीफा, जाफर और मसरूर को अंदर ले आई। तीनों ने बड़ी शिष्टता और सम्मान से स्त्रियों और फकीरों को प्रणाम किया। उन सब ने उन्हें व्यापारी समझ कर उनके अभिवादन का यथायोग्य उत्तर दिया। जुबैदा ने, जो तीनों बहनों में सब से बड़ी और सब से बुद्धिमान थी, उनसे उनकी कुशल-क्षेम पूछी और कहा कि हम लोग जो कुछ कहें उसका तुम लोग बुरा न मानना। जाफर ने कहा, तुम सुंदरियों के मुँह से ऐसी कौन-सी बात निकल सकती है जिसका किसी को भी बुरा लगे? जुबैदा ने कहा, 'मुझे यह कहना है कि तुम जहाँ तक हो सके चुप रहना और जिस बात का तुम से सीधा संबंध न हो उसके बारे में कोई प्रश्न न करना। अगर तुमने ऐसा न किया तो हम तुमसे क्रुद्ध हो जाएँगे और इसका फल तुम्हारे लिए अच्छा नहीं होगा।' मंत्री ने कहा कि अगर तुम्हारा यही आदेश है तो हम ऐसा ही करेंगे और किसी बात के बारे में प्रश्न नहीं करेंगे। यह वादा लेकर जुबैदा ने उन सब के आगे खाद्य सामग्री रखी और मदिरा पिलाई।
जब मंत्री जुबैदा से बातें कर रहा था उस समय खलीफा आश्चर्यचकित होकर उन स्त्रियों के सौंदर्य और तीक्ष्ण बुद्धि को देख रहा था। उसे इस बात से भी बहुत आश्चर्य हो रहा था कि तीनों फकीर दाहिनी आँख से क्यों काने हैं। उसकी

है। ऐसी दशा में जोर-जबर्दस्ती ठीक नहीं है। फिर आप यह भी देखें कि इन स्त्रियों ने किस शर्त पर हमें अपना अतिथि बनाया है; हमने भी उनकी यह शर्त मानी है कि हम कुछ पूछताछ नहीं करेंगे। अगर हम अपना यह वादा तोड़ेंगे तो यह लोग क्या हमें बेईमान नहीं कहेंगी? और उन्होंने हमारे लिए ऐसा कहा तो हमारे लिए डूब मरने की बात होगी।'
मंत्री ने आगे समझाया, 'आप यह भी विचार कर लें कि जब इन स्त्रियों ने हमारे सामने इतने आत्मविश्वास से चुप रहने की शर्त रखी है तो मालूम होता है कि इनके पास कोई ऐसी शक्ति है जिससे यह लोग शर्त तोड़ने वाले को दंड भी दे सकती हैं। ऐसा हुआ तो हमारे लिए और भी लज्जा की बात हो जाएगी चाहे हम बाद में इन्हें कितना भी दंड दे दें।...मुझे यह भी कहना है कि अब रात बीता ही चाहती है। इस समय आप कुछ न कहें। सवेरा होने पर मैं इन सारी स्त्रियों को पकड़कर आपके दरबार में ले आऊँगा और आप जो चाहे इनसे पूछ लीजिएगा।'
खलीफा को ऐसी जिद सवार हुई कि उसने ऐसे सत्परामर्श पर कान न दिया और मंत्री को झिड़क दिया कि तुम चुप रहो, मैं सुबह तक प्रतीक्षा नहीं कर सकता। उसने फकीरों से कहा कि तुम इस बात को जुबैदा से पूछो। उन्होंने इनकार कर दिया कि हमारा साहस नहीं है। फिर उन सबने जोर देकर मजदूर को यह पूछने पर राजी कर लिया।
जुबैदा ने इन लोगों को खुसर-पुसर करते देखा तो उनसे पूछा कि तुम लोग आपस में क्या बात कर रहे हो। मजदूर ने कहा, 'सुंदरी, मेरे साथी जानना चाहते हैं कि आप दोनों कुतियों को निर्दयतापूर्वक पीटकर क्यों रोई और जो स्त्री अपनी सुध-बुध खो बैठी उसके कंधों और बाँहों पर काले दाग कैसे हैं।' जुबैदा यह सुनकर आग-बबूला हो गई। उसने सब लोगों से पूछा कि क्या तुम सब ने मजदूर से कहा था कि यह बातें मुझसे पूछे। सबने एकमत होकर कहा कि जाफर को छोड़कर हम सभी यह बातें जानना चाहते थे और हमने मजदूर से कहा था कि आपसे यह बातें पूछे। जुबैदा ने कहा, 'तुम सभी लोग बेईमान हो। तुम सब ने प्रतिज्ञा की थी कि यहाँ की किसी बात के बारे में कुछ न पूछोगे और तुम अपनी उत्सुकता पर बिल्कुल संयम न कर सके। हमने दया करके तुम सबको रात का ठिकाना दिया और तुम एक साधारण-सी प्रतिज्ञा न निभा सके। अब तुम्हारा सत्कार मेरे लिए बिल्कुल आवश्यक नहीं है और तुम लोगों को अपने किए का फल भुगतना चाहिए।'
यह कह कर जुबैदा ने धरती पर पाँव पटक कर तीन बार ताली बजाई और जोर से कहा, 'तुरंत आओ।' उसके यह कहते ही एक द्वार खुल गया और उसमें से सात बलवान हब्शी

नंगी तलवारें लिए निकले और एक-एक हब्शी ने एक-एक आदमी को जमीन पर पटक दिया और उनके सीने पर चढ़ बैठे और सब की तलवारें म्यान से बाहर निकल आईं। खलीफा क्षोभ और लज्जा के मारे मरा जा रहा था, उसे ऐसे व्यवहार की क्या आशा हो सकती थी।
हब्शियों के मुखिया ने जुबैदा से पूछा, 'श्रेष्ठ सुंदरी, आपकी क्या आज्ञा है? क्या हम इन लोगों को यहीं खत्म कर दें?' जुबैदा ने कहा, 'नहीं, कुछ देर ठहर जाओ। पहले इन लोगों से यह तो पूछ लें कि यह कौन हैं और क्यों आए थे।' यह कहकर उसने सातों मेहमानों से कहा कि तुम लोग अपना-अपना हाल बताओ।
मजदूर ने रो कर कहा, 'भगवान के लिए मुझे छोड़ दो। मेरा कोई दोष नहीं है। मैं तो इन लोगों के बहकावे में आ गया। काने फकीर जहाँ जाएँगे वहीं दुर्भाग्य लाएँगे।' जुबैदा को यह सुनकर हँसी आ गई। वह बोली, 'ऐसे कोई नहीं छूटेगा। पहले हर आदमी अपना हाल बताए कि वह वास्तव में कौन है, कहाँ से आया है, उसमें क्या-क्या गुण हैं और यहाँ आने का क्या कारण है। इन बातों में जरा-सा भी झूठ हुआ तो फौरन उसकी गर्दन मारी जाएगी।'
परेशान तो सभी थे लेकिन खलीफा हारूँ की व्याकुलता स्वभावतः ही सबसे अधिक बढ़ी-चढ़ी थी। उसने एक बार सोचा कि वैसे तो इस स्त्री के पंजे से निकला नहीं जा सकता किंतु यदि वह अपना ठीक-ठीक परिचय तुरंत दे दे तो जरूर मेरा सम्मान करेगी। उसने धीमे से मंत्री से सलाह ली। उसने कहा कि आपके सम्मान की रक्षा के लिए यह आवश्यक है कि अभी हम लोग चुप रहें। जुबैदा ने तीनों फकीरों से पूछा कि क्या तुम तीनों भाई हो? एक ने उत्तर दिया कि हम भाई नहीं हैं; एक-से कपड़े जरूर पहनते हैं और साथ रहते हैं। जुबैदा ने फिर पूछा कि क्या तुम लोग जन्मतः ही एकाक्ष हो। उनमें से एक ने कहा कि ऐसा नहीं है; हम पर ऐसी विपत्तियाँ पड़ीं जो न केवल जानने बल्कि इतिहास में लिखे जाने योग्य हैं, उन्हीं से हमारी आँखें जाती रहीं और उन्हीं के कारण हमने अपनी दाढ़ी-मूँछ और भवें मुँडवा डाली और फकीर बन गए।
जुबैदा ने एक-एक करके शेष दो फकीरों से भी यही प्रश्न किए और दोनों ने वही उत्तर दिए जो पहले फकीर ने दिए थे। तीसरे ने यह भी कहा, 'आप अनुमति दें तो हम लोग अपना वृत्तांत विस्तृत रूप से कहें। हम तीनों की भेंट आज ही शाम को इस नगर में हुई है क्योंकि हम तीनों बाहर से आए हैं। विश्वास मानिए कि हम तीनों ही राजकुमार हैं और हमारे पिता बड़े और प्रख्यात बादशाह हैं। हम सब चाहते हैं कि अपना वृत्तांत विस्तृत रूप से कहें।'

उन लोगों की बातों से जुबैदा का क्रोध कम हुआ। उसने हब्शियों से कहा, 'तुम लोग इनके सीने से उतर आओ। यह लोग बैठकर अपना-अपना हाल कहेंगे। जो-जो अपना पूरा हाल और इस घर में आने का कारण बताता जाए उसे छोड़ते जाओ ताकि वह जहाँ चाहे चला जाए। जो ऐसा न करे तुम उसका सिर उड़ा दो। अभी तुम इन लोगों के पीछे नंगी तलवारें लिए खड़े रहो।' चुनांचे उसी दालान में खलीफा और अन्य 6 लोगों को एक कालीन पर बिठा दिया गया। हर आदमी के पीछे एक हब्शी नंगी तलवार लेकर खड़ा हो गया ताकि जुबैदा का इशारा होते ही उसका वध कर दे। सबसे पहले मजदूर ने अपनी बात कही।

मजदूर का संक्षिप्त वृत्तांत

मजदूर बोला, 'हे सुंदरी, मैं तुम्हारी आज्ञानुसार ही अपना हाल कहूँगा और यह बताऊँगा कि मैं यहाँ क्यों आया। आज सवेरे मैं अपना टोकरा लिए काम की तलाश में बाजार में खड़ा था। तभी तुम्हारी बहन ने मुझे बुलाया। मुझे लेकर पहले वह शराब बेचने वाले के यहाँ गई। फिर कुँजड़े की दुकान पर उसने ढेर-सी तरकारियाँ खरीदीं और फल वाले के यहाँ से बहुत-से फल लिए। गोश्त वाले के यहाँ से उसने तरह-तरह का मांस खरीदा और अन्य दुकानों से भी बहुत कुछ लिया। फिर सारा सामान मेरे सर पर लदवाकर आपके घर में लाई। आपने कृपा कर के मुझे अब तक ठहरने दिया और खानपान दिया जिसके लिए मैं आपका आजीवन आभारी रहूँगा। यही मेरी राम कहानी है।'
मजदूर की बातें सुनकर जुबैदा ने कहा, 'तेरी बातें ठीक मालूम होती हैं। अब तू तुरंत यहाँ से चला जा और खबरदार आगे कभी मेरे सामने न आना।' मजदूर यद्यपि बड़ी मुसीबत से छूटा था किंतु उसकी चपलता न गई। उसने कहा कि यदि अनुमति दें तो मैं इन शेष लोगों की कहानियाँ भी सुन लूँ, फिर घर चला जाऊँगा। जुबैदा ने अनुमति दे दी और कहा, दालान के एक कोने में खड़े होकर चुपचाप सुन ले, कुछ बोलना-चालना नहीं। मजदूर ने ऐसा ही किया। फिर जुबैदा ने फकीरों को आत्मकथाएँ सुनाने का इशारा किया।

किस्सा पहले फकीर का

पहले फकीर ने अदब से घुटनों के बल खड़े होकर कहा 'सुंदरी, अब ध्यान लगाकर सुनो कि मेरी आँख किस प्रकार गई और मैं क्यों फकीर बना। मैं एक बड़े बादशाह का बेटा था। बादशाह का भाई यानी मेरा चचा भी एक समीपवर्ती राज्य का स्वामी

था। मेरे चचा का एक बेटा मेरी उम्र का था और दूसरी संतान एक पुत्री थी। मैं अपने पिता के आदेशानुसार प्रति वर्ष अपने चचा के यहाँ जाया करता था और महीने-दो महीने वहाँ रहा करता था। कई बार इस प्रकार आने-जाने से मेरी अपने चचेरे भाई से मैत्री और प्रीति बहुत बढ़ गई।
'एक दिन मैंने देखा कि मेरा चचेरा भाई असाधारण रूप से प्रसन्न है। उसने सदा से अधिक मेरा सत्कार किया, स्वादिष्ट भोजन कराया और भाँति-भाँति के खेल-तमाशों से मेरा मनोरंजन किया। फिर मुझसे कहने लगा, 'पिछली बार तुम्हारे जाने के बाद मैने बड़ी जल्दी और बहुत ही सुंदर ढंग से एक महल बनवाया है। अब रात हो गई है, मैं सोना चाहता हूँ फिर तुम्हे नया महल दिखाऊँगा। लेकिन शर्त यह है कि तुम कसम खाओ कि यह भेद किसी से नही कहोगे।'
'मैने ऐसा करने से सौंगध खाई। वह उठकर गया और कुछ ही देर में एक सुंदरी स्त्री को साथ लेकर आ गया। न उसने बताया कि यह स्त्री कौन है न मैंने उसके बारे में पूछा। हम तीनों बैठ कर इधर-उधर की बातें करने लगे और पात्रों में भर-भर कर मदिरा पीने लगे। कुछ देर बाद मेरे चचेरे भाई ने कहा कि चलो यहाँ से चलें। उसने मुझसे कहा कि तुम इस स्त्री को लेकर कब्रिस्तान जाओ और कब्रिस्तान में जहाँ कहीं भी गुंबद वाली नई कब्र देखो तो समझ लो कि यह उसी महल का प्रवेश मार्ग है। तुम दोनों गुंबद के अंदर जाकर मेरी राह देखना। 'मैं उसी स्त्री के हाथ में हाथ देकर बाहर निकला और कब्रिस्तान की ओर चल दिया। चाँदनी रात थी इसलिए हम लोगों को गुंबद वाली नई कब्र ढूँढने में कोई कठिनाई नहीं हुई। हम गुंबद के अंदर गए तो देखा कि राजकुमार अकेला ही एक चूने की टोकरी, पानी की गागर और जरूरी औजार लिए खड़ा है। हमारे पहुँचने पर उसने फावड़े से जमीन खोदी। मिट्टी के नीचे पत्थरों की सिलें थीं जिन्हें निकाल कर उसने एक ओर रखा। पत्थरों के नीचे एक दरवाजा दिखाई दिया। दरवाजे का किवाड़ ऊपर उठाया तो नीचे जाने के लिए एक लकड़ी की सीढ़ी दिखाई दी। 'मेरे चचेरे भाई ने अब उस स्त्री से कहा कि इसी रास्ते पर चलकर वह द्वार मिलेगा जिसका मैंने तुमसे उल्लेख किया था। वह स्त्री यह सुनकर सीढ़ी से नीचे उतर गई। राजकुमार भी उसके पीछे चला गया। जाने के पहले मुझसे बोला कि तुमने हम लोगों के लिए जो परिश्रम किया है उसके लिए मैं तुम्हारा आभारी हूँ, लेकिन अब मैं तुमसे विदा लेता हूँ। हाँ, भगवान के लिए इस बात को गुप्त रखना। मैंने बहुत पूछा कि तुम कहाँ जा रहे और यह सब क्या हो रहा है किंतु

उसने कुछ न बताया, केवल इतना कहा कि दरवाजे पर मिट्टी डालकर भूमि समतल कर देना और जिस रास्ते से आए हो उसी से वापस चले जाना।
'विवशतः मैं दरवाजे पर मिट्टी डालकर अपने चचा के महल को वापस हुआ। मुझे नशा उतरने के बाद खुमार की दशा थी और मेरे सिर में पीड़ा हो रही थी इसलिए मैं अपने कमरे में जाकर सो रहा। सुबह उठने पर रात के वृत्तांत का स्मरण कर के मैं बड़ा चिंतित था और यह भी सोचता था कि मैंने रात को जो देखा वह स्वप्न था या सत्य था। मैंने एक सेवक से कहा कि तू जाकर देख कि मेरे भाई ने उठकर कपड़े बदले हैं या सो ही रहा है। उसने लौट कर बताया कि वे तो रात को अपने शयन कक्ष में थे ही नहीं और किसी को यह भी नहीं मालूम है कि वे कहाँ गए हैं इसलिए उनके सेवक और संबंधी सब को बड़ी चिंता है और किसी की समझ में नही आ रहा है कि क्या करें।
'मुझे भी इस बात पर बड़ी चिंता हुई और मैं फिर कब्रिस्तान को गया। मैंने सारा दिन गुंबद वाली कब्र के खोजने में लगाया किंतु वह कब्र नहीं मिली। इसी प्रकार चार दिन तक मैं कब्रिस्तान जा कर अपने भाई की तलाश करता रहा लेकिन उसका या उसके मकान का कुछ पता न चला।
'सुंदरियो, यहाँ यह बता देना भी आवश्यक है कि उन दिनों मेरा चचा यानी वहाँ का बादशाह कई दिन से राजधानी में नहीं था क्योंकि वह शिकार पर गया था। उसकी वापसी में भी देर थी इसलिए मैं अत्यंत व्याकुल हुआ। मेरी इच्छा हुई कि अपने पिता के राज्य में वापस जाऊँ। मैंने मंत्री से कहा कि अब की बार मैं साधारण समय से अधिक यहाँ पर रहा और मेरे पिता को मेरी चिंता होगी इसलिए मैं जा रहा हूँ, आप बादशाह के आने पर उनसे यही कह दें। मंत्री स्वयं बड़ी चिंता में था क्योंकि शहजादे की कोई खोज- खबर नहीं मिल रही थी। मैं स्वयं उसे कुछ न बता सकता था क्योंकि शहजादे ने मुझे कुछ न कहने की कसम दिला रखी थी।
'जब मैं अपने पिता की राजधानी में आया तो महल के चारों ओर सेना की बड़ी जमात देखी। सैनिकों ने मुझे देखते ही बंदी बना लिया। मैंने बिगड़कर पूछा कि यह क्या करते हो, तो एक सरदार ने कहा, 'शहजादे, यह सेना तुम्हारी नहीं, तुम्हारे शत्रु की है। तुम्हारे पिता के मरने के बाद मंत्री ने तुम्हारे राज्य पर अधिकार कर लिया है। उसने तुम्हें गिरफ्तार करने की आज्ञा दी है और कहा है कि तुम जहाँ भी मिलो तुम्हें पकड़ लिया जाए। अब तुम हमारे भाग्य से स्वयं ही हमारे पास आ गए।

'यह कह कर वह सरदार मुझे अत्याचारी मंत्री के पास ले गया जो अब राज सिंहासन पर बैठा हुआ था। मुझे कितना दुख और कितनी ग्लानि हुई होगी यह आसानी से समझा जा सकता है। वह दुरात्मा आरंभ ही से मेरा शत्रु था। इसका कारण यह था कि बचपन में मुझे गुलेल चलाने का बड़ा शौक था। एक दिन मैं महल की छत पर गुलेल लिए खड़ा था कि एक चिड़िया सामने से उड़ती हुई निकली। मैंने गुलेल से उस पर पत्थर मारा। संयोगवश वह पत्थर का टुकड़ा उसी मंत्री की आँख पर लगा क्योंकि वह भी अपने निकटवर्ती भवन की छत पर टहल रहा था। उसकी आँख फूट गई। मुझे मालूम हुआ तो मैं स्वयं ही उसके पास गया और अनजाने में हुए अपराध के लिए उससे क्षमा माँगी। वह कुछ बोला नहीं किंतु उसने मुझे कभी क्षमा नहीं किया और बराबर इस ताक में रहता था कि कब अवसर पाए और मुझ से बदला ले। इसलिए जब मुझे असहाय और अशक्त देखा तो पुरानी बात याद करके क्रोध में भर कर सिंहासन से उतरा और झपट कर मेरे पास आया और मेरी दाहिनी आँख में उँगली घुसेड़ दी। 'उसने इतने ही पर बस नहीं की। उसने मुझे एक पिंजरे में बंद कर दिया और जल्लाद को आज्ञा दी कि इसे नगर के बाहर ले जा कर इसका वध कर दे और इसके शरीर के टुकड़े करके पशु-पक्षियों को खिला दे। जल्लाद घोड़े पर बैठकर शहर के बाहर आया और दूसरे घोड़े पर वह पिंजरा रखकर ले गया जिसमें मैं बंद था। उसकी सहायता को अन्य सेवक भी थे। जंगल में जाकर मेरे हाथ-पाँव बाँध कर मुझे मारने के लिए तलवार निकाली। मैं अत्यंत दीनता से रोने और प्राण भिक्षा माँगने लगा और जल्लाद को याद दिलाया कि उसने बरसों मेरे पिता का नमक खाया है। अंत में जल्लाद को मुझ पर दया आ गई। उसने मुझे छोड़ दिया और कहा, 'तुम तुरंत ही यह देश छोड़कर चले जाओ। इधर की तरफ भूलकर भी मुँह न करना। अगर तुम यहाँ आए तो तुम तो मारे ही जाओगे, मुझे भी प्राणदंड मिलेगा।'
'मैंने जल्लाद का बड़ा एहसान माना और भगवान को लाख-लाख धन्यवाद दिया कि भले ही आँख गई; लेकिन जान तो बच गई, काना होना मुर्दा होने से तो अच्छा है। मेरी भूख-प्यास और आँख की तकलीफ से बुरी हालत थी। मैं चलने-फिरने के लायक न था। दिन में जंगल की झाड़ियों में छुपा रहा। रात को धीरे-धीरे छुपता-छुपाता अनजाने रास्तों पर धीरे-धीरे चलता हुआ कई दिनों में अपने चाचा की राजधानी में पहुँचा। जब मैंने चाचा को अपने दुर्भाग्य का पूरा हाल बताया तो वह जैसे पछाड़ें खाने लगा और बोला, 'मुझ से अधिक अभागा कौन होगा। मैं अपने पुत्र के लापता होने से क्या कम दुखी था कि मुझे अपने भाई के, जिसे मैं

पाँव से जूती निकाल कर कई बार शहजादे के मुँह पर मारी। मैंने क्रोध में आकर कहा, एक तो मुझे वैसे ही भाई के मरने का दुख है, फिर आप मरने पर उसका अपमान कर रहे हैं। ऐसा क्या अपराध उसने किया है जिससे आपकी क्रोधाग्नि इतनी भड़की है?
'बादशाह बोला, 'बेटे, तुम नहीं जानते कि क्या किस्सा है। यह आदमी इससे कहीं अधिक भर्त्सना और दंड का भागी है। यह शहजादा बचपन ही से अपनी सगी बहन पर आसक्त था। जब दोनों छोटे थे तो मैंने बच्चा समझ कर उनकी बातों पर कुछ ध्यान नहीं दिया। किंतु जब दोनों बड़े हो गए तब भी दोनों में घनिष्टता रही बल्कि बढ़ गई। अब मैंने उनके संबंध को रोकना चाहा। मैंने कड़े पहरे बिठाए कि भाई-बहन एक दूसरे के सामने न आएँ। शहजादा अकेला ही कुमार्गगामी होता तो बात आगे न बढ़ती लेकिन यह अभागी लड़की उससे भी अधिक नीच निकली। यह अपने भाई से मिलने के लिए तड़पती रहती थी। यद्यपि मेरी सख्ती के कारण खुलकर एक दूसरे के सामने न आते थे किंतु उनके हृदयों में एक दूसरे के प्रति आकर्षण कम नहीं होता था।
'अतएव बहन से सलाह करके शहजादे ने अपने लिए खास तौर से यह गुप्त आवास बनवाया ताकि अवसर मिलते ही दोनों विहार करें। जब मैं शिकार पर गया तो शहजादे को अवसर मिला और वह किसी तरह अपनी बहन को महल से निकाल कर यहाँ ले आया ताकि उसके साथ हमेशा यहाँ रहे। इसीलिए उसने बहुत अधिक मात्रा में खाद्य सामग्री भी यहाँ ला रखी। कुछ दिनों यह लोग एक-दूसरे के साथ आनंद से रहे होंगे, फिर उन पर ईश्वरीय प्रकोप हुआ और दोनों ने अपने पाप का समुचित फल पाया।'
'यह कहकर बादशाह का क्रोध दुख में बदल गया और वह अपने बेटे-बेटी की मृत्यु पर विलाप करके रोने लगा। मैं भी उसके साथ रोने लगा। हम लोग बहुत देर तक रोते रहे। फिर उसने मुझे अपने सीने से लगाकर कहा, 'अच्छा हुआ कि ये पापी मर गए। अब तुम ही मेरे पुत्र और मेरे उत्तराधिकारी हो।'
'फिर मैं और मेरा चाचा मृतक शहजादे की याद करके रोने लगे। कुछ देर बाद हम लोग सीढ़ी से ऊपर चढ़ आए और दरवाजा बंद करके उस पर मिट्टी डालकर बाहर आ गए। जब हम लोग राजमहल के पास पहुँचे तो हमने देखा कि फौजियों के घोड़ों के दौड़ने से उड़ी हुई धूल से आकाश अटा जा रहा है और युद्ध के बाजों की ध्वनि से कान फटे जा रहे हैं। मालूम हुआ कि मेरे पिता का वही मंत्री जिसने मेरा राज्य हड़प लिया था एक बड़ी सेना लेकर मेरे चाचा के राज्य पर भी चढ़ आया

है। मेरे चाचा की सेना उसकी सेना से कम थी। उसकी सेना ने बगैर किसी कठिनाई के राजधानी और महल पर अधिकार कर लिया। मेरे चाचा ने अपने अधिकार की रक्षा का भरसक प्रयत्न किया और युद्ध क्षेत्र में कूद पड़ा। फिर भी वह सफल न हुआ और युद्ध में मारा गया। उसके मरने के बाद भी मैं शत्रु का सामना करता रहा और कुछ समय तक युद्ध भूमि में डटा रहा किंतु जब देखा कि बिल्कुल घिर गया हूँ तो निकल भागने की सोची। मंत्री की सेना के एक सरदार ने मुझे पहचाना और पुराने बादशाह की नमकहलाली के खयाल से मुझे बच निकलने का अवसर दे दिया। 'मैंने युद्धभूमि से निकलकर पहला काम तो यह किया कि दाढ़ी-मूँछें और भवें सफाचट करवा दीं ताकि दुश्मन मुझे पहचान न सके और फकीर के कपड़े पहन लिए। फिर बड़े कष्ट उठाता हुआ अनजाने रास्तों से होकर अपने चाचा के राज्य के बाहर निकला। फिर कई नगरों में फकीर बन कर घूमता रहा। घूमता-घामता मैं अति प्रतापी, दयावान, दीनवत्सल, न्यायप्रिय खलीफा हारूँ रशीद की राजधानी में आ पहुँचा। मेरा इरादा था कि मैं उदारमना खलीफा की सेवा में पहुँच कर अपनी व्यथा कथा सुनाऊँ। किंतु जब इस नगर में पहुँचा तो शाम ढल चुकी थी। मैं इस चिंता में आगे बढ़ा कि कहीं ठिकाना मिले तो रात व्यतीत करने का प्रबंध करूँ।
'कुछ दूर जाने पर मुझे यह दूसरा फकीर मिला। उसने मेरा अभिवादन किया। मैंने उसके अभिवादन का उत्तर देकर कहा कि तुम भी मेरी तरह परदेसी लगते हो। उसने कहा कि हाँ, मैं भी अभी-अभी इस नगर में आया हूँ। हम लोग बातें कर ही रहे थे कि यह तीसरा फकीर भी आ गया और हम दोनों का अभिवादन करके पास बैठ गया। उसने भी कहा कि मैं परदेसी हूँ और इस नगर में अभी आया हूँ। हम लोग चूँकि एक ही वेश में थे और तीनों की एक-सी दशा थी इसलिए हमने तय किया कि भाइयों की तरह मिल कर रहें और जहाँ जाएँ एक साथ ही जाएँ।
'हम लोग इस चिंता में निमग्न हो गए कि रात कहाँ बिताएँ क्योंकि हम तीनों में कोई भी यहाँ के किसी निवासी को नहीं जानता था न कभी पहले यहाँ आया था। अपने सौभाग्य से हम लोग घूमते-फिरते तुम्हारे दरवाजे पर आ निकले। तुमने भोजन और मनोरंजन से हमारा चित्त प्रसन्न किया इसके लिए हम सदा के लिए तुम्हारे आभारी रहेंगे। यही मेरा वृत्तांत है जिसे मैंने पूरी तरह बता दिया है।'
जुबैदा ने कहा कि हमने तुम्हें क्षमा किया और तुम जा सकते हो। किंतु फकीर ने कहा कि अगर तुम अनुमति दो तो मैं भी एक ओर बैठकर अपने दोनों साथियों की

राम कहानी सुन लूँ, और इन तीन व्यापारियों की आप बीती भी सुन लूँ। इसके बाद मैं आपके घर से चला जाऊँगा। जुबैदा ने उसे एक ओर बैठकर दूसरों का वृत्तांत सुनने की अनुमति दे दी। वह मजदूर के पास जा बैठा।

किस्सा दूसरे फकीर का

अभी पहले फकीर की अद्भुत आप बीती सुनकर पैदा होने वाले आश्चर्य से लोग उबरे नहीं थे कि जुबैदा ने दूसरे फकीर से कहा कि तुम बताओ कि तुम कौन हो और कहाँ से आए हो। उसने कहा कि आपकी आज्ञानुसार मैं आप को बताऊँगा कि मैं कौन हूँ, कहाँ से आया हूँ और मेरी आँख कैसे फूटी। मैं एक बड़े राजा का पुत्र था। बाल्यकाल ही से मेरी विद्यार्जन में गहरी रुचि थी। अतएव मेरे पिता ने दूर-दूर से प्रख्यात शिक्षक बुलाकर मेरी शिक्षा के लिए रखे। थोड़े ही समय में मैंने न केवल लिखना-पढ़ना सीख लिया बल्कि कुरान शरीफ भी कंठस्थ कर लिया। इसके अतिरिक्त नबी के कथनों यानी हदीसों और धर्म और दर्शनशास्त्र की शिक्षा भी प्राप्त कर ली। इसके अतिरिक्त भाँति-भाँति के कला- कौशल भी सीख लिए और इतिहास, पहेली और मनोरंजन वार्ता में भी पारंगत हो गया। मैंने काव्यशास्त्र और गणित में भी अच्छा अभ्यास कर लिया जैसा एक राजकुमार होने के नाते मुझसे आशा की जाती थी। इन सबके साथ ही मैंने सुलेखन में भी दक्षता प्राप्त कर ली और अरबी लिपि की सातों लेखन पद्धतियों का मुझे ऐसा अभ्यास हो गया कि मेरे जैसा सुलेखक दूर-दूर तक नहीं पाया जाता था।
इतने गुणों और कौशलों को प्राप्त करने पर भी मैं अपने दुर्भाग्य के लेख को न मिटा सका और इस दुरवस्था में पहुँच गया जो तुम लोग देख रही हो। हुआ यह कि मेरे विद्यार्जन और कला-कौशल में पारंगत होने की ख्याति जब दूर-दूर पहुँची तो हिंदोस्तान के बादशाह ने मुझे देखने की इच्छा प्रकट की। उसने मुझे भेंट करने के लिए एक दूत के हाथ बहुत-सी बहुमूल्य वस्तुएँ भेजीं और संदेशा भिजवाया कि मैं जाकर उससे मिलूँ। मेरे पिता इस बात से बड़े प्रसन्न हुए क्योंकि एक तो एक महान सम्राट से उनके संबंध बन रहे थे, फिर राजकुमार होने के नाते मुझे देश-देश की जानकारी और राजाओं-महाराजाओं से मेल-जोल बढ़ाना ही चाहिए था।
अतएव मैं अपने पिता की आज्ञानुसार थोड़ी-सी यात्रा की सामग्री और कुछ चुने हुए सेवक लेकर हिंदोस्तान की ओर रवाना हुआ क्योंकि बड़ी सेना ले आने की न तो आवश्यकता ही थी न यह बात उचित ही होती। कुछ दिन तक चलने के बाद हम लोगों

कि सामने एक बारादरी है जिसके पाए संगे-मूसा के बने हुए हैं और खंभे नीचे से ऊपर तक खालिस सोने के बने हैं। बारादरी में एक अत्यंत रूपवती स्त्री बैठी थी। मैंने उसे देखा तो ठगा-सा रह गया। मैंने उसके निकट जाकर अभिवादन किया।
स्त्री ने मुझ से पूछा, 'तुम कौन हो, मनुष्य या जिन्न?' मैंने सिर उठा कर कहा, 'हे सुंदरी, मैं मनुष्य हूँ, जिन्न नहीं हूँ।' वह स्त्री शोकयुक्त स्वर में बोली, 'तुम मनुष्य हो तो यहाँ मरने के लिए क्यों आए हो; मैं यहाँ पच्चीस वर्षों से रह रही हूँ और इस काल में तुम्हारे सिवाय और कोई मनुष्य नहीं देख सकी हूँ।' उस स्त्री के अनुपम रूप के साथ ही उसके स्वर की मधुरता का मुझ पर ऐसा प्रभाव पड़ा कि कुछ देर तक मेरे मुँह से कोई बात नहीं निकली।
कुछ देर में स्वस्थ हो कर मैंने उस स्त्री से कहा, 'सुंदरी, मुझे तुम्हारा कुछ हाल नहीं मालूम किंतु तुम्हारे दर्शन मात्र से मुझे अतीव सुख मिला है और मैं अपना सारा दुख-दर्द भूल गया हूँ। मेरी अतीव इच्छा है कि तुम्हें यहाँ से छुड़ा दूँ क्योंकि यह स्पष्ट है कि तुम यहाँ सुखी नहीं हो।' और मैंने अपना सारा जीवन वृत्त उस स्त्री के समक्ष वर्णन किया। मेरा पूरा हाल सुनने के बाद वह स्त्री ठंडी साँस भर कर बोली, 'शहजादे, तुम ठीक कहते हो। यह मकान जादू का है और यहाँ प्रचुर धन और समस्त सुविधाएँ उपलब्ध हैं फिर भी मुझे यहाँ रहना तनिक भी पसंद नही। तुमने आबनूस के द्वीपों के बादशाह अबू तैमुरस का नाम सुना होगा। मैं उसकी बेटी हूँ। मेरे पिता ने मेरा विवाह अपने भतीजे के साथ कर दिया। जब मैं शादी के बाद अपने पति के घर जाने लगी तो रास्ते में मुझे एक दुष्ट जिन्न ने उड़ा लिया। मैं भय के कारण लगभग तीन पहर तक अचेत रही। जब मुझे होश आया तो मैंने अपने को इस मकान में पाया। अब केवल उसी जिन्न के साथ मेरा उठना-बैठना है। यह सारा धन और सुख-सामग्री जो यहाँ दिखाई देती है मुझे कुछ भी संतोष नहीं दे पाती। हर दसवें दिन जिन्न यहाँ आता है और मेरे साथ रात बिताता है। उसका विवाह पहले तो उसी की जाति की एक स्त्री से हो चुका है और वह अपनी स्त्री के भय से मेरे पास इससे अधिक नहीं रह पाता। दस दिन के अंदर यदि किसी दिन मैं उसे बुलाना चाहूँ तो उसका भी प्रबंध उसने कर दिया है। यदि मैं यह इधर रखा हुआ जादू का यंत्र छू दूँ तो उसे खबर हो जाती है और वह आ जाता है।'
स्त्री ने आगे कहा, 'उस जिन्न को यहाँ से गए चार दिन हो गए है। वह छह दिन बाद फिर यहाँ आएगा। यदि तुम्हें यहाँ की सुख-सुविधाएँ और मेरा साथ पसंद है तो

पाँच दिनों तक यहाँ आराम से रह सकते हो, मैं तुम्हारा हर प्रकार से आदर-सत्कार करूँगी और तुम्हे सुख पहुँचाऊँगी।'
मैं उसकी बातें सुनकर बड़ा प्रसन्न हुआ। मुझे इसमें क्या आपत्ति हो सकती थी कि ऐसी सुंदरी के साथ रहूँ। मैंने बड़ी प्रसन्नता से यह बात स्वीकार कर ली। वह मुझे एक स्नानागार तक ले गई। मैंने अंदर जाकर अच्छी तरह स्नान किया और बाहर निकला। वह मेरे पहनने के लिए जरी के वस्त्र ले आई। मैंने वह शाही पोशाक पहनी तो वह मुझे देखकर मुझ पर और भी कृपालु हो गई। फिर एक सजे हुए दालान में उसने मुझे एक सुनहरे कमख्वाब की मसनद पर बिठाया। फिर वह नाना प्रकार के स्वादिष्ट व्यंजन लाई और हम दोनों ने साथ बैठकर भोजन किया। दिन भर हम लोग इधर-उधर की बातें करते रहे। रात के भोजन के बाद उसने अपने साथ मुझे सुलाया। सुबह होने पर उसने और भी स्वादिष्ट व्यंजन बनाए और मेरे विशेष सत्कार के लिए पुरानी शराब की बोतलें ले आई। मैं बहुत-सी शराब पीकर मदमस्त हो गया।
मैंने उससे कहा, 'प्रिये, तुम पच्चीस वर्षों से इस मकान में जिसे कब्र कहना चाहिए बंद हो। यह बात ठीक नहीं है। तुम मेरे साथ यहाँ से निकल चलो और बाहर की ताजा हवा खाओ। इस दिखावे के ऐश-आराम को छोड़ो क्योंकि यह जादू से अधिक कुछ नहीं है। तुम मेरे साथ चलो।'
वह सुंदरी बोली, 'ऐसी बातें जिह्वा पर भी न लाना। तुम जिसे सूर्य का प्रकाश कहते हो वह मैं भूल चुकी हूँ। मुझे यहीं रहने की आदत पड़ गई है, मुझे यहीं रहने दो। एक दिन छोड़कर जबकि वह जिन्न यहाँ आता है, तुम बाकी नौ दिन यहाँ आराम से रह सकते हो।'
मुझे नशा चढ़ गया था। मैंने कहा, 'तुम उस जिन्न से इतना क्यों डरती हो। मैं तुम्हारे लिए अपनी जान भी दे सकता हूँ। मैं इस जादू के यंत्र को मय उसकी जादुई लिखावट के तोड़-फोड़ कर बराबर कर दूँगा। अपने जिन्न को आने दो। मैं भी तो देखूँ उसमें कितनी ताकत हैं। मैंने निश्चय कर लिया है कि संसार के सारे जिन्नों का अंत कर दूँगा और सबसे पहले इसी जिन्न को मारूँगा जिसने तुम्हें कैद कर रखा है।'
वह स्त्री भली भाँति जानती थी कि मेरी मूर्खता का क्या फल होगा। उसने मुझे बहुत समझाया, हर तरह रोका, कसमें दीं कि यंत्र को छुआ तो हम दोनों मारे जाएँगे क्योंकि उस जिन्न की शक्ति को मैं जानती हूँ, तुम नहीं जानते।

फिर मैंने पिछले दिन की जमा की हुई लकड़ियाँ किसी तरह बाँधीं और नगर में आकर लकड़ी का गट्ठा बेच दिया। फिर भी मैं बराबर सोच रहा था कि न जाने उस सुंदर स्त्री पर क्या बीत रही होगी। लकड़ी बेचकर जब मैं अपने निवास स्थान पर आया तो लिपिक मुझे देखकर अत्यंत प्रसन्न हुआ। उसने कहा कि तुम कल नहीं आए तो मुझे बड़ी चिंता हो गई थी, मैंने सोचा कि कहीं ऐसा तो नही है कि यहाँ के बादशाह को तुम्हारे यहाँ पर रहने की बात मालूम हो गई हो और उसने तुम्हें पकड़वा मँगाया हो, भगवान का लाख-लाख धन्यवाद है कि तुम सकुशल वापस गए हो। मैंने उसकी बातों पर उसे हृदय से धन्यवाद दिया किंतु यह न बताया कि कल मेरे साथ क्या बीती थी। मैं अपने कमरे में चला गया और फिर उसी शोक में निमग्न हो गया कि मैंने अपने दुराग्रह से अपनी उपकारिणी स्त्री को कैसा दुख पहुँचाया और अगर मैं वह यंत्र न तोड़ डालता तो उस राजकुमारी पर भी दुख न पड़ता और मैं पाँच दिन बड़े सुख से रहता। मैं यह सोच ही रहा था कि लिपिक मेरे पास आकर कहने लगा कि एक बूढ़ा एक कुल्हाड़ी और रस्सा लेकर आया है और कहता है कि तुम शायद इन्हें जंगल में भूल आए थे। लेकिन वह इन चीजों को तभी वापस करेगा जब तुम बाहर चलकर उसे इनकी पहचान बताओंगे।
यह सुनकर मेरा चेहरा पीला पड़ गया और मैं भय के कारण सिर से पाँव तक थर-थर काँपने लगा। लिपिक ने मुझ से पूछा, यह तुम्हें क्या हो रहा है। मैं अभी उसे उत्तर भी नहीं दे सका था कि कमरे की धरती फट गई और बूढ़ा जिन्न मेरे बाहर आने की राह न देखकर कुल्हाड़ी और रस्सी लिए वहीं आ गया। उसने मुझ से कहा, 'तू जानता है मैं कौन हूँ? मैं ऐसा-वैसा जिन्न नहीं हूँ, स्वयं इबलीस (शैतान) का दौहित्र हूँ। तू जानता है कि इबलीस सारे जिन्नों और दैत्यों का सरताज है। बोल, यह कुल्हाड़ी और यह रस्सा तेरे है या नहीं?
मैं उसे देखकर ऐसा भयभीत हुआ कि मेरी वाक शक्ति ही समाप्त-सी हो गई और मैं अचेत होकर गिरने लगा। जिन्न ने मेरे होश में आने की प्रतीक्षा नहीं की। वह मुझे कमर से पकड़ कर ले उड़ा और दो क्षण में ही मैं इतने ऊँचे पर्वत पर ले जा कर रख दिया जिस पर चढ़ने में महीनों लगते। फिर उसने पहाड़ की चोटी पर पाँव पटका। इससे धरती फट गई। जिन्न मुझे लेकर उस गड्ढे में उतर गया और पलक झपकते ही मुझे उठाए हुए उस मकान में आ गया जहाँ मैंने राजकुमारी के साथ पिछला दिन बिताया था।
यह देख कर मेरे दुख का पाराबार न रहा कि राजकुमारी अब भी जमीन पर पड़ी तड़प रही थी और अधमरी-सी अवस्था में चीख-पुकार कर रही थी। उस जिन्न ने कहा, देख,

या जो भी पशु-पक्षी बनना चाहे बता दे, मैं तुझे वही बना दूँगा। मैंने उसका क्रोध कुछ कम देखा तो बोला, 'जिन्नों के सरताज, मेरी प्रार्थना है कि एक भले आदमी ने अपने बुरा करने वाले के साथ जैसे उपकार किया था वैसे ही तू मुझे क्षमा कर दे और मुझे आदमी ही रहने दे।' जिन्न ने कहा, यह भले आदमी का क्या किस्सा है। मैंने बताना शुरू किया।

किस्सा भले आदमी और ईर्ष्यालु पुरुष का

किसी नगर में दो आदमियों का घर एक दूसरे से लगा हुआ था। उनमें से एक पड़ोसी दूसरे के प्रति ईर्ष्या और द्वेष रखता था। भले मानस ने सोचा कि मकान छोड़कर कहीं जा बसूँ क्योंकि मैं इस आदमी के प्रति उपकार करता हूँ और यह मुझ से वैर ही रखे जाता है। अतएव वह वहाँ से कुछ दूर पर बसे दूसरे नगर में एक अच्छा मकान खरीद कर जिसमें एक अंधा कुआँ भी था, रहने लगा। उसने फकीरों का बाना भी ओढ़ लिया और रात-दिन भगवान के भजन में समय बिताने लगा। उसने अपने मकान में कई कक्ष बनवाए जिनमें वह साधु-संतों को ठहराता और भोजन दिया करता था। इससे वह नगर में बहुत प्रसिद्ध हो गया और लोग उससे मिलने को आने लगे।
उसकी प्रसिद्धि शीघ्र ही बढ़ गई। दूर-दूर से लोग आते और अपनी मनोकामना की पूर्ति के लिए भगवान से प्रार्थना करने के लिए उससे निवेदन करते। उसके चमत्कारों की ख्याति उस नगर में भी पहुँची जहाँ वह पहले रहा करता था। उसके पुराने पड़ोसी को यह सुनकर और भी ईर्ष्या हुई। उसने निश्चय किया कि उसी के मकान में जाकर उसे मार डालूँ। वह जाकर उसके घर पर मिला। संत पुरुष ने अपने पुराने पड़ोसी की बड़ी अभ्यर्थना की। ईर्ष्यालु व्यक्ति ने यह झूठ कहा कि मुझ पर एक विपत्ति पड़ी है जिसके निवारण के लिए मैं तुम से प्रार्थना करने आया हूँ, किंतु मैं इस कठिनाई को गुप्त रखना चाहता हूँ और तुम अपने चेलों तथा अन्य साधुओं से कह देना कि जिस समय मैं और तुम बातें कर रहे हो कोई अन्य व्यक्ति पास में भी न आए। संत पुरुष ने ऐसा ही आदेश दे दिया।
अब उस दुष्ट आदमी ने एक झूठ-मूठ का लंबा किस्सा बनाया और संत पुरुष से कहने लगा। फिर उसने कहा कि हम लोग टहलते हुए ही इस किस्से का कहना-सुनना पूरा करें। संत ने वह भी मान लिया। बात करते-करते जब वे कुएँ के पास आए तो दुष्ट

अत्यंत प्रसन्न हुए। उसने उनसे कहा कि मैं संयोगवश कुएँ में गिर गया था लेकिन मुझे चोट नहीं आई।
फिर वह अपने घर में आकर बैठ गया। थोड़ी ही देर में काली बिल्ली घूमती-फिरती उसके पास से निकली। संत पुरुष को कुएँ में सुनी बातें याद थीं। इसलिए उसने बिल्ली को पकड़ कर उसकी खाल के श्वेत भाग से सात बाल उखाड़ लिए और अपने पास रखे। कुछ काल के पश्चात नगर का बादशाह वहाँ आया। उसने अपनी सैनिक टुकड़ी बाहर छोड़ी और कुछ सरदारों के साथ मकान के अंदर आ गया। संत पुरुष ने आदरपूर्वक उसका स्वागत किया।
बादशाह ने कहा, 'हे योगीराज, आप तो सबके दिलों का हाल जानते हैं। आप तो समझ ही गए होंगे कि मैं क्यों यहाँ आया हूँ।' संत पुरुष ने कहा, 'शायद आपकी बेटी अस्वस्थ है और उसके स्वास्थ्य लाभ की आशा ही से आपने मुझ अकिंचन की कुटिया को पवित्र किया है।' बादशाह ने कहा, 'आपने बिल्कुल ठीक कहा, मैं इसी कारण यहाँ आया हूँ। अगर आपके आशीर्वाद से मेरी बेटी स्वस्थ हो जाए तो मेरी सबसे बड़ी चिंता दूर हो जाए।'
संत पुरुष ने उत्तर दिया, 'आप अपनी बेटी को यहीं बुलवा लें। मैं भगवान से प्रार्थना करूँगा कि वह स्वस्थ हो जाए और आशा है कि मेरी प्रार्थना स्वीकार होगी।' बादशाह यह सुनकर अत्यंत प्रसन्न हुआ। उसके आदेश पर राजकुमारी को उसकी सेविकाओं के साथ वहाँ ले आया गया। शहजादी का चेहरा चादर से अच्छी तरह ढँका हुआ था ताकि उसे कोई देख न सकें। संत पुरुष ने नीचे से चादर का इतना भाग उठाया कि नीचे रखी हुई अँगीठी से उठने वाला धुआँ बाहर न जाए। फिर उसने सात बाल अँगीठी में डाले। धुएँ का राजकुमारी की नाक में पहुँचना था कि मैमून जिन्न का बेटा दिमदिम बड़े जोर से चिल्लाया और तुरंत भाग गया।
जिन्न के जाते ही शहजादी होश में आ गई। वहाँ सँभल कर बैठ गई और अपने को भली- भाँति छिपा कर पूछने लगी कि मैं कहाँ हूँ और यहाँ मुझे कौन लाया है। बादशाह खुशी से फूला न समाया। उसने अपनी बेटी को छाती से लगा लिया और उसकी आँखें चूमने लगा। फिर उसने सम्मानस्वरूप संत पुरुष के हाथ चूमे और अपने सभासदों से राय ली कि इस संत पुरुष के उपकार का बदला किस प्रकार चुकाऊँ। सभासदों ने एकमत होकर कहा कि राजकुमारी का विवाह इसी संतपुरुष के साथ कर देना चाहिए। बादशाह को सभासदों की सलाह पसंद आई और उसने शहजादी का विवाह उसके उपकार कर्ता के साथ कर दिया।

कुछ दिनों बाद बादशाह का प्रमुख अंग मंत्री मर गया और बादशाह ने उसकी जगह अपने दामाद को नियुक्त कर दिया। इसके कुछ समय बाद बादशाह मर गया और चूँकि उस राजकुमारी के अतिरिक्त बादशाह के और कोई संतान नहीं थी अतएव सभी सभासदों और सामंतों की सहमति से उसका दामाद ही राज्य का अधिकारी और नया बादशाह बन गया।
एक दिन वह अपने सरदारों के साथ कहीं जा रहा था कि कुछ दूरी पर उसे अपना पुराना शत्रु दिखाई दिया। नए बादशाह ने अपने मंत्री से चुपके से कहा कि उस आदमी को सहजतापूर्वक मेरे पास ले आओ ताकि वह भयभीत न हो। बादशाह ने उससे कहा, 'मेरे मित्र, तुम्हें इतने दिनों बाद देखकर प्रसन्न हुआ हूँ, तुमने मुझे पहचाना?' वह दुष्ट उसे पहचान कर थर-थर काँपने लगा किंतु बादशाह तो संत पुरुष ही था, उसने उसे एक हजार अशर्फियाँ और कीमती कपड़ों की बीस गाँठें भेंट में देकर उसे सुरक्षापूर्वक उसके घर पहुँचा दिया।
मैंने अपनी कहानी पूरी करके जिन्न से कहा कि उस नेक बादशाह ने तो अपने जानी दुश्मन के साथ यह सलूक किया और तुम मुझ पर तनिक भी दया नहीं करते। किंतु मेरी अनुनय का उस पर कोई प्रभाव न हुआ। उसने कहा मैं तुझे जान से नहीं मार रहा हूँ लेकिन दंड दिए बगैर नहीं छोड़ूँगा, अब मेरा जादू का खेल देख। यह कहकर उसने मुझे पकड़ा और मुझे लेकर आकाश में इतना ऊँचा उड़ गया कि वहाँ से पृथ्वी एक बादल के टुकड़े जैसी लगती थी। फिर एक क्षण ही में मुझे एक ऊँचे पर्वत के शिखर पर ले गया। वहाँ उसने एक मुट्ठी मिट्टी उठाकर उस पर कोई मंत्र पढ़ा और 'बंदर हो जा' कह कर वह मिट्टी मेरे ऊपर छिड़क दी और गायब हो गया।
मैं अपने को बंदर के रूप में पाकर अत्यंत दुखित हुआ। मुझे यह भी मालूम न था कि मैं कहाँ हूँ और वहाँ से मेरा देश किस दिशा में और कितनी दूर है। खैर मैं धीरे-धीरे पहाड़ से उतर कर मैदान में आया और वहाँ भी मैंने सारा प्रदेश निर्जन देखा। अटकल से एक ओर को चलने लगा। एक मास के अंत में मैं समुद्र तट पर पहुँच गया। समुद्र बिल्कुल शांत था और तट से कुछ दूरी पर एक जहाज लंगर डाले खड़ा था।
मैंने जहाज पर जाना ही उचित समझा। किनारे के एक पेड़ से दो टहनियाँ तोड़ीं और उन्हीं के सहारे तैरता हुआ जहाज पर पहुँच गया। जहाज की रस्सी के सहारे मैं जहाज के अंदर पहुँच गया।

मंत्री का पद देगा जो उसकी भाँति सुलेखन कर सकेगा। और अभी तक बहुत ढूँढ़ने पर भी उसे अपने देश में कोई ऐसा गुणी व्यक्ति नहीं मिल पाया है।
यह सुनकर मैंने बादशाह के सरदार के हाथ से झपटकर वह कागज ले लिया। इस पर जहाज के सभी लोग, विशेषतः पढ़े-लिखे व्यापारी चीख-पुकार करने लगे कि यह बंदर अभी इस कागज को चीर-फाड़ कर समुद्र में फेंक देगा। किंतु जब उन्होंने देखा कि मैंने कागज बड़े ढंग से पकड़ा है तो सब चुप होकर देखने लगे। मैंने संकेत से कहा कि मैं इस पर लेखन कर सकता हूँ। उन लोगों को मेरी बात पर क्या विश्वास होता और सब प्रयत्न करने लगे कि मुझे पकड़ कर मेरे हाथ से कागज ले लें।
किंतु जहाज के कप्तान ने उन्हें रोका और कहा, 'हमें इसकी परीक्षा लेनी चाहिए। अगर इसने कागज को खराब किया तो मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि इसे कड़ा दंड दूँगा। अगर उसने लिख लिया तो मैं अपने पुत्र की भाँति इसे रखूँगा। मुझे मालूम है कि यह कागज को खराब नहीं करेगा। मैंने बराबर देखा कि यह दूसरे बंदरों जैसा नहीं है अपितु अत्यंत बुद्धिमान है।' कप्तान की इस बात पर सब लोग रुक गए और मैंने कलम लेकर चार कविता पंक्तियाँ इतने सुंदर ढंग से लिखीं जैसे कोई व्यापारी या अन्य नागरिक न लिख पाता।
सरदार मेरा लिखा कागज बादशाह के पास ले गया। बादशाह ने मेरे सुलेख को भी पसंद किया और मेरी कविता को भी। उसने सरदारों से कहा कि एक भारी खिलअत (सम्मान परिधान) ले जाओ और उस आदमी को पहनाओ जिसने यह लिखा है और एक बढ़िया घोड़ा भी घुड़साल से ले जाओ और उसे सम्मानपूर्वक सवार कराकर यहाँ ले आओ। सरदार यह आज्ञा सुन कर हँस पड़ा। बादशाह को बड़ा क्रोध आया। उसने कड़क कर कहा, 'यह क्या बदतमीजी है, तुम्हें दंड का भय नहीं है?' सरदार हाथ जोड़कर बोला, 'महाराज, क्षमा करें। यह लेख किसी मनुष्य ने नहीं लिखा। एक बंदर ने इसे लिखा है।'
बादशाह ने कहा, 'क्या बक रहे हो? बंदर भी कहीं लिखता है?' सरदार ने अपने साथियों की ओर देखा। उन्होंने भी हाथ जोड़ कर कहा, 'जहाँपनाह, हम सबने अपनी आँखों से देखा है कि इस कागज पर एक बंदर ही ने लिखा है।' बादशाह का आश्चर्य और बढ़ा और उसने आज्ञा दी, 'मैंने ऐसा बंदर देखा क्या, सुना भी नहीं था। तुम लोग फौरन जाओ और उस बंदर को सम्मानपूर्वक सवार कराकर ले आओ।' चुनांचे सरदार और राज सेवक फिर जहाज पर गए और कप्तान को उन्होंने राजा की आज्ञा सुनाई। कप्तान मुझे भेजने को सहर्ष तैयार हो गया। उसने मुझे जरी के वस्त्र

अब बादशाह ने चाहा कि मुझे अपनी रानी और अपनी पुत्री को भी दिखा दे। उसने खोजों के सरदार को आज्ञा दी कि आदमियों को हटाकर बेगम साहबा और शहजादी को यहाँ ले आओ। बेगम तो साधारण रूप से आई लेकिन शहजादी ने जो मुँह खोले आई थी, मुझे देखकर नकाब डाल लिया और बाप से बिगड़ कर बोली कि आपको क्या हो गया है कि अपरिचित पुरुष के सामने मुझे मुँह खोले हुए बुला लिया।
बादशाह ने कहा, 'तुम्हारे होश-हवास तो ठिकाने हैं? यहाँ कौन मर्द है सिवाय मेरे? और मैं तुम्हारा बाप हूँ, मेरे सामने तो तुम्हें मुँह खोल कर आना चाहिए। और तुम हो कि खुद गलती पर हो और मुझे दोष देती हो।' शहजादी ने हाथ जोड़ कर कहा, 'अब्बा हुजूर, मेरी कोई गलती नहीं है। यह एक बड़े बादशाह का पुत्र है और जादू के कारण इस दशा को पहुँचा है। इबलीस के धेवते ने, जो एक शक्तिशाली जिन्न है, पहले आबनूस के द्वीप के बादशाह अबू तैमुरस की बेटी की हत्या कर दी फिर इस शहजादे को अपने जादू से बंदर बना दिया।'
बादशाह को यह सुनकर बड़ा आश्चर्य हुआ। उसने मुझ से पूछा कि क्या यह बात ठीक है। मैंने सर पर हाथ रख कर इशारे से कहा कि शहजादी ने जो कुछ कहा है बिल्कुल ठीक कहा है। अब बादशाह ने शहजादी से पूछा कि तुम्हें यह सब किस्सा कैसे मालूम हुआ। उसने कहा, 'आपको याद होगा कि जब मेरा दूध छुड़ाया गया था तो मेरी देख-रेख और पालन-पोषण के लिए एक बुढ़िया रखी गई थी। वह जादू-टोनों में पारंगत थी। उसने मुझे इस विद्या के सत्तर अंग सिखा दिए। अब मुझ में इतनी शक्ति है कि चाहूँ तो आपका सारा देश उठाकर समुद्र में फेंक दूँ। जो व्यक्ति जादू के जोर से मनुष्य के बजाय किसी अन्य जीव को देह धारण कर लेते हैं मैं उन्हें तुरंत पहचान लेती हूँ और मुझे यह भी मालूम हो जाता है कि किसके जादू से यह हुआ है। इसीलिए मैंने इसे पहली ही नजर में पहचान लिया कि यह बंदर नहीं है बल्कि राजकुमार है।'
बादशाह ने कहा, 'बेटी, तुम इतनी गुणी हो, यह मुझे मालूम ही नहीं था। लेकिन क्या तुम में इतनी शक्ति भी है कि इसे अपनी पहली देह में दोबारा पहुँचा दो?' राजकुमारी ने, जिसका नाम मलिका हसन था, कहा, 'निःसंदेह मुझ में ऐसी शक्ति है।' बादशाह ने कहा, 'अगर तुमने ऐसा किया तो मैं तुम्हारा बड़ा आभार मानूँगा और इस राजकुमार को अपना मंत्री बनाकर तुम्हारे साथ इसका विवाह कर दूँगा।'
शहजादी ने पिता की आज्ञा शिरोधार्य कर अपने सामान में से एक छड़ी मँगवाई जिस पर हिब्रू और मिस्री भाषा में कुछ अक्षर खुदे थे। फिर उसने अपने पिता

युद्ध करता रहा। मैंने उसे जलाकर भस्म तो कर दिया लेकिन इस आग से स्वयं को मुक्त नहीं कर पाऊँगी।'
बादशाह ने रोकर कहा, 'बेटी, तुम कैसी बातें करती हो। तुम्हारे बगैर हम लोग क्या करेंगे। देखती नहीं कि खोजा मर गया है, मेरा मुँह झुलस गया है और यह शहजादा जिसका तुमने इतना उपकार किया है दाईं आँख से काना हो गया है?' बादशाह इस तरह सिर धुन रहा था और मैं भी रो-पीट रहा था कि शहजादी ने चिल्लाना शुरू किया, 'हाय जली, हाय मरी।' और देखते ही देखते वह भी जल कर जिन्न की तरह राख का ढेर हो गई।
दूसरे फकीर ने आँसू बहाते हुए जुबैदा से कहा कि हे सुंदरी, उस समय मुझे जितना दुख हुआ वह वर्णन के बाहर है। मैं सोच रहा था कि अगर मैं बंदर तो क्या कुत्ता भी हो जाता और आजीवन वैसा ही रहता तो भी इस बात से अच्छी बात होती कि ऐसी गुणवती राजकुमारी, जिसने मुझ पर इतना एहसान किया, इस तरह जान से हाथ धोए। बादशाह भी अपनी बेटी के दुख में इतना रोया-पीटा कि बेहोश हो गया। मुझे भय लगने लगा कि ऐसा न हो कि इस दारुण दुख से उसकी जान चली जाए। चारों और हाहाकार होने लगा और राजमहल में प्रलय का-सा दृश्य उपस्थित हो गया।
राजमहल के सारे सेवक और बादशाह के सरदार दौड़े आए और भाँति-भाँति के यत्न करके उसे होश में लाए। मैंने सभी लोगों के आगे पूरा वृत्तांत रखा। फिर राज सेवक बादशाह को उठाकर उसके शयन कक्ष में ले गए। सारे नगर में यह समाचार फैल गया और हर जगह रोना-पीटना मच गया और हाहाकार के सिवाय कुछ नहीं सुनाई दिया। उन लोगों ने सात दिन तक शहजादी के लिए शोक किया और उनके देश में मातम की जो जो रस्में होती थीं सभी पूरी कीं। अंत में जिन्न की राख के ढेर को हवा में उड़ा दिया गया। शहजादी की भस्म को एक बहुमूल्य रेशमी थैले में भर कर दफन कर दिया गया और उस पर समाधि बना दी गई।
बादशाह शहजादी के दुख में बीमार पड़ गया। एक महीने में वह स्वस्थ हुआ। फिर उसने मुझे बुलाया और कहा, 'शहजादे, तेरे कारण मुझ पर असहनीय दुख पड़े हैं। मेरी प्यारी बेटी तेरे ही कारण भस्म हो गई, मेरा विश्वासी खोजों का सरदार जल कर मर गया और मैं भी मरते-मरते बचा। तेरा स्वयं इसमें कोई दोष नहीं है इसलिए मैं तुझे दंड नहीं देता। किंतु तेरा आगमन दुर्भाग्यपूर्ण रहा है और तू जहाँ रहेगा मुसीबत आएगी। इसलिए मैं तुझे यहाँ रहने की अनुमति नहीं दे सकता। तू तुरंत यहाँ से मुँह काला कर। अगर तू यहाँ थोड़ी देर तक भी दिखाई

xxxxx xx xxx xxxxxx xx x xxxxxx xxxxxxx xx xxxxx xxxxx xxx xxxxxxx' xxx xxxxxxx xx xxxxx xxx xx xxxxx-xxxxx xxxxx

xxx xxx xxxxx xx xx xxx xxxxxx xxxxx xxx xx xx xxxxx xxxxx xx? xxxxxxx xx xxx xxxxx xx xxx xxxxx xxxxxx xx xx xxx xx xxx xx xxxxx xxxxx xxxxx xxx xxx xx xxxxx xxx x xxxxxx xxx xxxxxxx xxxxxxx xx xxx xxx xxxxxxx xx xx xxxxx xx xxxxx xxxxxxx xx xxxxx xxx xx xxxxx xxxxx xxxxxxxx xxxxx xxxxxx xx xxx xxxxxx xxx xxxxxx xxxxx xxxxx xxxxx xxx xxxxxx xx xxx xxxxxx, xxxxxxx xx xxxxx xxxxxxxx xxxxxx xx xxxxxxx xx- xx xxxxxxx xxx xxx xx xxxxx xx xx xxxxxx xxx xx xxxxx xxx xx xxx xxxxxxxxxxxx xx xx xxx xxxxxx xxxxx xxx xx xxxxx xxxxx xx xxxxxxxxxx xxx xxxxxx xxxxx xx-xx xxxxxx xxxxxxxxxxxxx xxx xxxxxx xxxxxx xxx xxx xxx xxx xxxxx xxx xx xxx-xxx xxxxxx xxx xxxxxx xxxxx xxxxxxx xxxxx x xxxxx xxx xxx xxxxxx xxxxx xx xxxxxx xxx xxx xxxxx xx xxx xxxxxxx xxxxxx xxxxxx xxxxx xx xxxxx xxxxxx xxxxx xx xxxxxx xxxxx, xxxxx xx xx xxx xx xxx xxxxx xxxxx xxx xxx xxxxx xxxxxxx xx xxxxx xxx xx xxx xx xx xx xxx xxx xxxxxxxx xxxxx xxxxx xx xxxxx xx, xxxxxx xxx-xxx xxxxx xxx xxx xx, xxxxx xxxxx xxxxx xxxxx xxxxx xx xxxxx xx xx xxxxxx xxxxx xxxxxx xxxxx xx xxxxxxxx xx xxxxx xxxxx xxx xx xxxxx xxx

xx xxxxxx xxxxx xx xxxxx xxxxxxxxx xxxxx xx xxxxx xx xxxxxxx xx xxxxx xxx xx xxxxx xxxxx xx xxxxxx xxxxx, xx xxxxx xxxxx xxxxx xxxxx xx xxx xxxxxxxxx xxx xx xxxxxx xxxxx xx xx xxxxxx xxxxxx xx xx xxxxx xxxxxx xxxxx xx xxxxx xxxxx xx xxxxxx xxxxxx xxxxx xx xx xxxxxxx xx xxx, xxxxxx, xxx xx xxxxxx xx xxxxx xxxxx xx xxx xxxxx xxxxxxx xxx xxxxx xxxxx xxx xx xxxxxx xxxxxxx xx xx xxxxxx xxxxx xx xxxxx xxxxxx xxxxxxx xx xxx xx xxxxx xxxxxxx xx xxxxxx xxx xx xxxxx xxxxx xxxxxx

xxxxxx xxxxx xxxx xx

xx xxxxxx xxxxxxx, xxxxx xxxxxx xxxxx xx xxxxxxxxxxxx xxx xx xxxxxx xxxxxxxx xx xxxxxxx xxxxxx xxxxxxxxxxxx xxx xxxxxx xxxxx xxx xxxxx xx xxxxxxxx xx xxxxx xx xxxxxx xx xxxxx xxxxxx xxx xxxxx xxxxxxxx xxxxxx xxxxx xxxxx xxxxx xxx xxx xx xx xxx xxx xxxxxxxxxxxxx xxxxxxx xxxxx xx xxxxx xxxxx xxxxx xx xxxxxxxxxx xx xxx xxx xxxxxxxxxxxxx xxx xx xxx xxx xxx xxxxx xxx xxxxx xxxxx xxxxx xx xxxxx xxxxxxxx xxxxxx xxx xxxxx xxxxxxxx xxxxxxx xx xxxxxxx xxx xxx xxxxx xxxxxx xx xxx xxxxx xx xxxxxx xxx xxxxxx xxxxx xxx xxxxx xxxxxx xxxxxxx xxxxxxxx xx xxx

यहाँ तक कि तुम्हारे पास आ जाएगा और एक छोटी नाव से तुम एक अन्य समुद्र में पहुँच जाओगे और फिर अपने नगर को पहुँच जाओगे। लेकिन खबरदार, इस सारे समय में भगवान का नाम बिल्कुल नहीं लेना।'
इसके बाद मेरी आँख खुल गई। मैं अपने छुटकारे का उपाय जान कर अति प्रसन्न हुआ। बूढ़े के कहने के अनुसार धरती को खोदा तो उसमें से तीन बाण और धनुष निकले। मैंने कमान से तीनों तीर पीतल के घुड़सवार पर छोड़े। तीसरे तीर के लगते ही सवार की मूर्ति समुद्र में गिर गई और घोड़े की मूर्ति मेरे पाँवों के पास आ गिरी। मैंने उसे उसी जमीन में गाड़ दिया जहाँ से धनुष और बाण निकाले थे। अब समुद्र चढ़ने लगा और चढ़ते-चढ़ते पीतल के घेरे के पास आ गया। जहाँ मैं था वहाँ एक नाव भी आ लगी जिसमें पीतल का माँझी बैठा था। मैं नाव पर बैठ गया।
वृद्ध पुरुष की हिदायत को ध्यान में रखकर मैंने भगवान का नाम न लिया, बल्कि अपना मुँह बंद ही रखा। पीतल का माँझी नौ दिन तक नाव चलाता रहा और ऐसी जगह पहुँच गया जहाँ आसपास कई द्वीप दिखाई दे रहे थे। मैं बहुत खुश हुआ कि अब कठिनाइयों से उबर जाऊँगा और इसी दशा में भगवान को धन्यवाद दे बैठा। तुरंत ही माँझी समेत वह नाव समुद्र में डूब गई।
अब मैं फिर तैरने लगा और एक द्वीप की ओर जाने लगा। कई घंटे तक तैरता रहा। यहाँ तक कि शाम होने लगी और मेरे हाथ-पाँव भी थकन से ऐसे भारी हो गए कि तैरा ही नहीं जाता था। ऐसे ही में एक बड़ी भारी लहर आई और उसने मुझे तट पर ला फेंका। मैं दौड़कर आगे चला गया कि कहीं दूसरी लहर आकर मुझे वापस समुद्र में न खींच ले जाए। मैंने अपने कपड़े उतार कर निचोड़ा और हवा में हिलाकर सुखाए। फिर मैं इधर-उधर घूमकर देखने लगा। कई फल वाले पेड़ दिखाई दिए लेकिन वहाँ आदमी कोई नहीं दिखाई दिया। मैंने कई फल खाए और इस तरह अपनी भूख और थकान दूर की। इसके बाद मैंने अपनी चिंता छोड़ दी और सोचा कि जो भगवान करेगा ठीक ही होगा।
थोड़ी देर बाद देखा कि एक छोटा-सा जहाज पाल उड़ाता हुआ उस द्वीप की ओर आ रहा है। पहले मैंने सोचा कि वह तट पर आए तो मैं उसके पास जाऊँ। फिर सोचा कि अच्छी तरह देख लेना चाहिए, ऐसा तो नहीं कि उसमे लुटेरे हों या मेरे शत्रु हों। इसलिए मैं एक घने और ऊँचे पेड़ पर चढ़ गया और छुपकर बैठ गया और ध्यानपूर्वक देखने लगा कि जहाज के लोग क्या करते हैं।

सैकड़ों नौकर-चाकर और बहुत-सी कोठियाँ हैं। वह अपने जहाजों पर सवार होकर देश-देश घूमता है। हर स्थान पर उसके गुमाश्ते हैं जो उसकी ओर से रत्नों का क्रय-विक्रय करते हैं।
'इतना प्रचुर धन होने पर भी मेरे पिता के यहाँ बहुत दिनों तक कोई संतान नहीं हुई। एक रात उसने स्वप्न में देखा, कोई कह रहा है कि तुम्हारे यहाँ एक पुत्र होगा किंतु उसकी आयु बहुत कम होगी। यह स्वप्न देख कर मेरे पिता को बड़ा दुख और चिंता व्याप्त हुई। उसके कुछ दिनों बाद मेरी माता ने मेरे पिता को बताया कि मुझे गर्भ रह गया है। उसके नौ महीने बाद मैं पैदा हुआ। मेरे जन्म पर सारे परिवार वालों और नातेदारों को अतीव प्रसन्नता हुई किंतु मेरे पिता को अपना स्वप्न याद करके दुख ही बना रहता था। अतएव उसने ज्योतिषी लोगों से सलाह ली। उन्होंने कहा, इस बालक को चौदहवें वर्ष में मृत्यु का भय है। अगर उस समय बच गया तो फिर यह बहुत दिन जिएगा और इसकी आयु काफी लंबी होगी।
'उन्होंने कहा कि हमें ग्रहों से यह भी ज्ञात हुआ है कि अजब नाम का बादशाह एक पीतल के घुड़सवार को, जो एक चुंबक के पर्वत की चोटी पर मौजूद हैं, समुद्र में गिरा देगा, उसके पचास दिन के बाद अजब बादशाह इस लड़के को मार डालेगा। मेरा पिता तो पहले ही से स्वप्न देखकर दुखी था, अब ज्योतिषियों से यह सुनकर और भी चिंता में पड़ गया और रात-दिन यह सोचता रहता कि इस लड़के की जान कैसे बचाई जाए। इसीलिए उसने यह तहखाने का मकान बनवाया। मुझे चौदहवाँ वर्ष लगा तो दूसरे ही दिन ज्योतिषियों ने आकर कहा कि दस दिन हुए बादशाह अजब ने पीतल के घुड़सवार को समुद्र में गिरा दिया है। यह सोचकर मेरे पिता की चिंता और बढ़ी और वह घंटों तक सोचता रहा कि मेरे सर से ग्रह कैसे टले। अंततः उसने इस निर्जन द्वीप में पहले से बनाए हुए भूमिगत आवास में मुझे बंद करने का निश्चय किया। उसने सोचा कि बादशाह अजब जैसा शक्तिशाली इस निर्जन द्वीप में क्यों आएगा और आएगा भी तो यह तहखाना कैसे पाएगा। इसलिए चालीस दिन तक मुझे इस मकान में बंद कर दिया जाए जिससे न मैं किसी को देखूँ न कोई मुझे देखे। यही कारण है मेरे इस स्थान पर लाए जाने का।'
जब वह बालक अपनी बात कह चुका तो मैं मन ही मन ज्योतिषियों को त्रिकालदर्शी होने के दावे पर हँसने लगा। मैं सोचने लगा ऐसे प्यारे निर्दोष बालक की मैं क्यों हत्या करने लगा। उसे दिलासा देने के खयाल से मैंने उसे अपना नाम तो न बताया किंतु उससे कहा, 'तुम्हें अब डरने की बिल्कुल आवश्यकता नहीं है, मैं

किया है तो वह आपका अत्यंत कृतज्ञ होगा और आपको सुरक्षापूर्वक आपके देश में पहुँचा देगा।'
फिर उस लड़के ने मुझसे कहा कि मेरे लिए कुछ जल गर्म कर दीजिए ताकि मैं अच्छी तरह नहाकर नए कपड़े पहनूँ क्योंकि मेरा पिता आज मुझे लेने के लिए आएगा। मैंने पानी गर्म करके उसके नहाने-धोने का प्रबंध कर दिया। नहाने के बाद वह बिस्तर में आ लेटा। मैंने उसे लिहाफ उढ़ा दिया और वह कुछ देर के लिए सो गया। सोकर उठने पर उसने कहा कि महोदय, मेरा जी करता है कि खरबूजा खाऊँ, आप एक खरबूजा और थोड़ी-सी मिश्री मेरे लिए ले आइए। मैंने जाकर खरबूजों के ढेर में से एक अच्छा खरबूजा छाँटा और उसे चीनी की तश्तरी में रखकर उसके पास लाया। फिर मैंने उससे पूछा कि इसे काटने के लिए छुरी चाहिए, छुरी कहाँ है। उसने कहा, मेरे सिरहाने की तरफ जो आला है उसमें छुरी रखी है।
ताक ऊँचा था, मैं उस तक नहीं पहुँच सका। इसलिए मैंने उछलकर छुरी उठाना चाहा। फिर भी यह न हो सका। इसलिए मैं एक मोखे का सहारा लेकर ऊँचा हुआ और छुरी मेरे हाथ में आ गई। मैं चाहता था कि धीरे से उतर जाऊँ लेकिन संयोग से मेरा पाँव फिसल गया और मैं सँभल ही न सका। मैं उस जौहरी के बेटे के ऊपर ही गिरा और मेरे हाथ की छुरी उसके हृदय में घुस गई और वह तड़प कर वहीं ठंडा हो गया।
मुझे अत्यंत शोक हुआ। मैंने अपने कपड़े फाड़ डाले और सिर और छाती पीटने लगा और पछाड़ें खाकर जमीन पर गिरने लगा। मैं बराबर रो-रोकर कहता था कि इस अभागे दिन में कुछ घड़ियाँ रह गई थीं। यह समय भी टल जाता तो लड़के की जान बच जाती। ज्योतिषियों का कहना ठीक ही निकला और मैं अभागा ही इस प्यारे बच्चे की मृत्यु का कारण बना। मैंने आकाश की ओर मुख किया और दोनों हाथ उठाकर कहने लगा कि हे सर्वशक्तिमान परमेश्वर, तू सब कुछ देख रहा हे और तू सब कुछ जानता है। तुझे ज्ञात है कि इस बालक को मैंने जानबूझकर नहीं मारा है, यदि इसकी मृत्यु में मेरा तनिक भी दोष हो तो तू इसी समय मेरे प्राण ले ले। इसी प्रकार मैं बहुत देर तक जौहरी के पुत्र की लाश के पास बैठकर रोता- कलपता रहा।
जब दिन थोड़ा-सा ही बाकी रहा तो मैंने सोचा कि अब इसका बाप इसे लेने को आता होगा। मेरी इतने दिनों की सेवा व्यर्थ गई। अब मैं क्या मुँह लेकर उससे मिलूँ। अब मेरा यहाँ ठहरना ठीक नहीं। यह सोचकर मैं मकान से निकला और जीने पर पत्थर रखकर उस पर मिट्टी डालकर बराबर कर दी। बाहर निकल कर देखा तो जौहरी

यहाँ पर मनुष्य रहते होंगे क्योंकि बगैर मनुष्यों के आग कैसे जलेगी। पास जाने पर पता चला कि वह आग नहीं है बल्कि ताँबे का बना एक घर है जिस पर सूर्य की किरणें पड़ रही हैं। मैं सोच ही रहा था कि यह मकान किसका हो सकता है कि उसमें से दस नौजवान बाहर निकले और उनके साथ लंबे कद का एक वृद्ध मनुष्य भी था। सारे जवान दाहिनी आँख से काने थे। मैं सोच ही रहा था कि ये लोग कौन हैं, इतने में उन्होंने स्वयं ही आकर मुझ से नम्रतापूर्वक पूछा कि आप कौन हैं और कहाँ से आए हैं।
मैंने कहा कि मेरी कहानी बड़ी विचित्र और बड़ी लंबी है। यदि आप धैर्यपूर्वक सुन सकें तो मैं सुनाऊँ। वे सब सुनने को बैठ गए और मैंने अपना वृत्तांत आद्योपांत सुना दिया। उन्हें यह सुनकर बड़ा आश्चर्य हुआ। फिर वे लोग मुझे उस मकान के अंदर ले गए। उस मकान में कई बड़ी-बड़ी दालानें और बारह दरियाँ पार करके फिर एक बड़ा-सा नीला घर दिखाई दिया। उसके चारों ओर दस कमरे नीले रंग के बने हुए थे जिनमें एक- एक मनुष्य आराम से रह सकता था। कमरों के घेरे के बीच में एक दालान था जो उससे कुछ ऊँचा था। वृद्ध मनुष्य दालान में जा बैठा और चारों ओर के कमरों में दसों जवान कालीनों पर बैठ गए। एक जवान ने मुझ से कहा, 'हे मित्र, तुम भी घर के बीच में बिछे हुए कालीन पर बैठ जाओ लेकिन हम कुछ भी करें उसका कारण न पूछना, न यह पूछना कि तुम लोग दाहिनी आँख से काने क्यों हो।'
कुछ देर में वह बूढ़ा उठा और दसों काने जवानों के लिए खाना लाया। उसने हर एक को खाने में से उसका भाग दिया और एक भाग मुझे भी दिया जिसे मैंने खा लिया। भोजनोपरांत वृद्ध पुरुष ने हम लोगों को एक-एक प्याला सुगंधित मदिरा का दिया। फिर उन लोगों ने मेरे वृत्तांत को जो उन्हें अद्भुत और रोचक लगा था दुबारा सुना। इसके बाद हम इधर-उधर की बहुत-सी बातें करते रहे।
जब काफी रात बीत गई तो एक जवान ने बूढ़े से कहा कि हमारे सोने का समय हो गया है, अभी तुम हमारे दैनिक नियम की चीजें नहीं लाए। बूढ़ा एक कोठरी के अंदर जाकर वहाँ से दस थाल नीले ढक्कनों से ढके हुए लाया और हर जवान के सामने उसने एक-एक थाल रख दिया। ढक्कन खोलने पर हर थाल में राख और काली स्याही थी। उन्होंने राख और स्याही को मिलाकर अपने-अपने चेहरे पर मल लिया जिससे वे सब कुरूप ही नहीं भयानक भी दिखाई देने लगें। फिर वे सब चिल्ला-चिल्ला कर रोने लगे और मुँह और सीना पीट-पीट कर कहने लगे कि हाय, हमने कैसी भयानक मूर्खता की है और उसका हमें कैसा कुफल मिला है। बहुत देर तक वे जवान इसी प्रकार

रोते-पीटते रहे। जब उन्होंने विलाप बंद किया तो वही बूढ़ा एक-एक करके सभी के पास पानी और चिलमची ले गया। सभी ने अपना मुँह धोया और जो कपड़े फाड़ डाले थे उन्हें उतार कर बदला और अपने-अपने कक्ष में जाकर सो रहे।
उन लोगों की यह दशा देखकर मैं अत्यंत उत्कंठित हुआ। मैंने वचन दिया था कि उनसे कुछ न पूछूँगा किंतु मुझे उत्सुकता के कारण रात भर नींद न आई। दूसरे दिन सुबह हम सभी लोग सैर के लिए बाहर निकले तो मैंने उनसे कहा, 'सज्जनो, आप लोग हर तरह ज्ञानवान और बुद्धिमान हैं किंतु कल रात आप लोगों ने जो कुछ किया वह उन्मत्तों के अलावा कोई भी नहीं करेगा। मैं बड़ा परेशान हूँ। मैंने आपको वचन दिया है कि मैं आपके कार्य कलाप के बारे में या आपके काने होने का कारण न पूछूँगा किंतु यह भी सत्य है कि अब यह बातें पूछे बगैर मुझसे रहा नहीं जाता है। इसलिए मैं आप से पूछता हूँ कि आप लोगों ने अपना मुँह क्यों काला किया और क्यों मातम किया और यह भी कि आप सभी दाहिनी आँख से काने क्यों हैं। किंतु उन्होंने कहा कि हम तुम्हें यह सब बातें नहीं बता सकते, अगर तुम्हें हमारे साथ रहना हो तो इन प्रश्नों को भूल जाओ।
वह दिन भी बीता। रात को हम लोगों ने फिर अलग-अलग भोजन किया। उसके बाद बूढ़े ने फिर उन लोगों के सामने स्याही और राख से भरे थाल रखे और उन्होंने रोज की रस्म के तौर पर अपने मुँह काले किए और वही रोना-पीटना शुरू किया। दूसरी बार यह सब देखकर मेरी उत्सुकता और बढ़ गई। अगले दिन मैंने उनसे कहा, 'हे मित्रो, अब मुझे आप लोगों की यह दशा चुपचाप बैठकर नहीं देखी जाती। आप कृपया अपनी बातें मुझे बताएँ और कोई ऐसा भी उपाय बताएँ जिससे मैं अपने देश में पहुँच जाऊँ।'
उनमें से एक जवान ने मुझ से कहा, 'तुम हमारी दशा देखकर दुखी न हो। हम लोग तुम्हारे मित्र और हितचिंतक हैं इसीलिए हम तुम्हें यह बातें नहीं बताते, कही ऐसा न हो कि तुम्हारी दशा भी हम लोगों जैसी हो जाए। वैसे तुम बहुत जोर देते हो तो हम बता भी सकते हैं किंतु उसका फल अच्छा नहीं होगा।' मैंने कहा, मैं यह सब जानना चाहता हूँ, फल चाहे जो कुछ हो। वह जवान बोला, 'देखो, हम तुम्हें एक बार फिर समझाते हैं कि इन बातों को जानने की जिद छोड़ दो। हमारा कहना मानो और इस बारे में कुछ न पूछो वरना हमारी तरह तुम भी काने हो जाओगे।' मैंने कहा, इस बात के फलस्वरूप मुझे जो भी दुख पहुँचे मैं उसे सहने के लिए तैयार हूँ, मैं इसे अपना ही दुर्भाग्य समझूँगा और आप लोगों में से किसी को इसके लिए दोष नहीं दूँगा। उस जवान ने कहा, 'देखो, अगर किसी कारणवश तुम्हारी

मैं वहाँ से बताए हुए मार्ग पर चल दिया और तीसरे पहर के लगभग महल तक पहुँच गया। जैसा सुना था उससे भी अधिक अच्छा उसे पाया। खुले दरवाजे से अंदर पहुँचा तो अंदर एक और शानदार चौकोर मकान देखा जिसके चारों ओर सौ द्वार थे, एक द्वार स्वर्ण का था और निन्यानबे चंदन की लकड़ी के थे। अंदर कई सुसज्जित वाटिकाएँ और गृह थे। सामने एक बड़ी बारहदरी थी जिसमें चालीस सुंदरी नवयौवनाएँ उत्तमोत्तम वस्त्रालंकारों से सुसज्जित बैठी थीं। मुझे देखकर वे उठ खड़ी हुई। उन्होंने हँस कर मेरा स्वागत किया और कहने लगीं कि हम बहुत देर से आप की प्रतीक्षा में थे। फिर मुझे उन्होंने कुछ ऊँचे स्थान पर बिठाया। मैंने बहुत कहा कि मैं आप लोगों से ऊँचे पर बैठने का अधिकारी नहीं हूँ किंतु वे नहीं मानीं। वे बोलीं, 'आप हम सभी के पति और स्वामी हैं और हम सब आपकी पत्नियाँ और दासियाँ हैं।'
उन्हें देखकर और उनकी बातें सुनकर जो प्रसन्नता मुझे हुई उसका वर्णन संभव नहीं है। कोई सुंदरी मेरे पाँव धोने को गरम पानी लाई, किसी ने सुगंधित जल से मेरे हाथ धुलाए, किसी ने बहुमूल्य वस्त्र लाकर मुझे पहनाए, कोई नाना प्रकार के स्वादिष्ट व्यंजन मेरे सामने ले आई और उन्हें मेरे सामने सजा दिया। कोई नवयौवना सुगंधित मदिरा की सुराही और प्याला लेकर मुझे पिलाने के लिए आ गई। इसी प्रकार वे देर तक हँसी-खुशी तरह-तरह से मेरी सेवा करती रहीं। मैं यह सब देखकर इतना अभिभूत हुआ कि अब तक के अपने सारे दुख-दर्द भूल गया और स्वयं को सारे संसार का अधिपति समझने लगा।
मैंने उन सभी सुंदरियों के साथ बैठकर भोजन और मदिरा पान किया। भोजन के बाद वे मेरे चारों ओर बैठ गईं और उन्होंने मुझ से मेरी यात्रा का वृत्तांत पूछना आरंभ किया और मैंने बताना। इतने में रात हो गई। उन स्त्रियों ने मकान में बड़ी सुंदर रोशनी की और कुछ स्त्रियों ने मुझसे मनोहर ढंग से बातचीत करनी शुरू कर दी ।
फिर उन्होंने भोजन के पात्र हटाकर फल, मिठाई, शर्बत आदि शीशे के सुंदर पात्रों में लेकर सामने रख दिए और मुझे ऊँचे आसान पर बिठाकर मेरे चारों तरफ बैठ कर गाने-बजाने लगीं और उनमें जो नृत्य में प्रवीण थीं वे नृत्य भी करने लगीं। इसी में आधी रात बीत गई। फिर उनमें से एक ने कहा कि आज आप बहुत दूर से आए हैं, अब आराम करें। उसने कहा कि शयन कक्ष तैयार हैं, और सोने से पहले आप हममें से एक को चुन लें तो वह आपके साथ सो रहे। मैंने कहा, 'यह काम तो बड़ा कठिन और अनुचित होगा क्योंकि सौंदर्य में तुम लोग एक से एक बढ़कर

हो, मैं किसे चुनूँ। फिर जिसे चुनूँगा उसके अलावा क्या दूसरों को बुरा नहीं लगेगा और क्या वे मेरी धृष्टता पर क्रुद्ध नहीं होगी?' उस सुंदरी ने कहा, 'यह बात नहीं है। हम सब की हार्दिक इच्छा है कि आप को प्रसन्न करें। हममें परस्पर ईर्ष्या नहीं है। आप हम में से जिसका चाहे हाथ पकड़ कर ले जाएँ, कोई दूसरा बुरा नहीं मानेगा क्योंकि हम सभी चाहते हैं कि आप एक-एक करके हम सभी का भोग करें। आप हमसे प्रत्येक का आनंद उड़ाएँगे ही, किसी का आज तो किसी का कल। इसलिए हमें बुरा लगने का प्रश्न ही नहीं है। अब आप बगैर झिझक हम में से जिसे चाहें उसे अपने साथ ले जाएँ। हम सब शहजादियाँ हैं किंतु आपकी सेवा के लिए हैं।'
यह सुनकर मैंने उसी सुंदरी की ओर हाथ बढ़ाया जिसने मुझसे ऐसी बुद्धिमानी की बातें की थीं। उसने तुरंत अपना हाथ मेरे हाथ में दे दिया। मैं उसके साथ अपने शयन कक्ष में आ गया और अन्य उनतालिस स्त्रियाँ अपने-अपने शयनगार में चली गईं। दूसरे दिन सवेरे मैं अच्छी तरह उठ भी नहीं पाया था कि शेष उनतालिस स्त्रियों ने मेरे पास आकर अभिवादन किया और पूछा कि रात को आराम से तो सोए। हाँ, उनके आने के पहले मैंने वे सुंदर वस्त्र और रत्न पहन लिए थे जो मेरे सिरहाने रख दिए गए थे। कुछ देर बातचीत करने के बाद वे स्त्रियाँ मुझे स्नानागार में ले गईं और तरह-तरह की मालिश करके मुझे स्नान कराया। मेरे नहा चुकने के बाद उन्होंने दूसरे वस्त्राभूषण जो पहले वस्त्र आदि से भी उत्तम थे मुझे पहनाया। इसके बाद सारे दिन, बल्कि आधी रात तक पहले दिन की तरह हास-परिहास, किस्सा-कहानी, खाना-पीना और राग-रंग चलता रहा। आधी रात हुई तो उन्होंने कहा कि आप हममें से जिसे चाहें चुन लें कि वह आपके साथ जाकर सो जाए। मैंने एक और सुंदरी का हाथ पकड़ा और उसे लेकर अपने शयन कक्ष में चला गया। सुबह उठकर फिर उन लोगों के साथ स्नानागार में चला गया।
फकीर ने जुबैदा से कहा कि हे सुंदरी, मैं तुमसे किस प्रकार और कहाँ तक बताऊँ कि कैसे आनंद और संतोष में मेरा समय बीतता रहा। दिन भर नाना प्रकार की खाने- पीने और अन्य विलास सामग्री का उपभोग करता और रात को उन चालीस में से किसी एक सुंदरी को अपने शयन कक्ष में ले जाता। इसी प्रकार लगभग एक वर्ष आनंदपूर्वक उस राजमहल में बीत गया। जब वर्ष पूरा होने में एक दिन रह गया तो सुबह को वे सुंदरियाँ जो हमेशा प्रसन्नवदन होकर मुझसे मेरा रात का हाल पूछने आया करती थीं, आँखों में आँसू भरे हुए आईं और कहने लगी कि ऐ शहजादे,

हम सब आपसे विदा होने के लिए आए हैं, आपको हम भगवान को सौंपते हैं, वही आपकी रक्षा करेगा।
मुझे उनकी इस बात से बड़ा आश्चर्य और दुख हुआ। मैंने उनसे पूछा, 'ऐसा क्या हो गया कि तुम लोग इतनी दुखी हो और यहाँ से विदा होने की बात क्यों कर रही हो? तुम्हें कहाँ जाना है और क्यों जाना है? भगवान के लिए मुझ से सारी बातें कहो। अगर तुम किसी संकट में हो और तुम्हें मेरी सहायता की आवश्यकता हो तो मुझ से जो भी सहायता बन पड़ेगी वह मैं करूँगा।' उन्होंने कहा, 'कुछ नहीं हो सकता। भगवान की यही इच्छा है कि हम लोग हमेशा के लिए अलग हो जाएँ और आज के बाद न आप कभी हमें देखें न हम आपको देखें। आपकी तरह पहले भी यहाँ कई लोग आए और फिर ऐसे अलग हुए कि हमें आज तक उनका कोई हाल मालूम नहीं हुआ। वही बात आपके साथ होने वाली है।'
यह कहने के बाद उन सभी ने विलाप करना आरंभ कर दिया। मैं और घबरा उठा और मैंने उनसे कहा कि तुम लोग साफ-साफ बताती क्यों नहीं कि तुम्हारे दुख-संताप का कारण क्या है। उन्होंने कहा कि हम आप को क्या बताएँ क्यों दुखी हैं। यह समय हमारे आप से सदा के लिए बिछुड़ने का है, हाँ एक बात है कि अगर आपको हमसे मिलने की उत्कट इच्छा हो और उसके लिए जो प्रतिज्ञा करें उस पर दृढ़ रहें तो हम लोगों का आपसे फिर मिलन हो भी सकता है।
मैंने कहा, 'मेरी समझ में कुछ भी नहीं आया कि तुम्हारी बातों का क्या अर्थ है। मैं तुम्हें ईश्वर की सौगंध दिलाता हूँ कि सारी बात को साफ समझा कर कहो।' अब उनमें से एक ने कहा, 'सबसे पहले तो आप यह समझ लीजिए कि हम चालीसों शहजादियाँ हैं। हम लोग इस स्थान पर एक वर्ष तक आमोद-प्रमोद के लिए आया करते हैं। इसके बाद चालीस दिन के लिए अपने आवश्यक कार्यों के लिए अपने-अपने देश चले जाते हैं। चालीस दिन बाद फिर एक वर्ष के लिए इस महल में आ जाते हैं। कल हमारा यह वर्ष पूरा हो गया इसलिए आज हम लोग आपसे विदा ले रहे हैं। यही कारण है हमारे शोक और विलाप का। हम यहाँ से जाने के पहले आपको यहाँ के सौ कोठों की कुंजियाँ सौंप जाएँगे। हमारे पीछे आप सभी में घूम-फिर कर अपना जी बहलाएँ। लेकिन हम आपको अपनी सौगंध देते हैं कि इस स्वर्णद्वार को न खोलना। अगर आपने इसे खोला तो हमारा-आपका मिलन फिर कभी न हो सकेगा। लेकिन हमें मालूम है कि आप में इतना आत्मसंयम नहीं है कि उस द्वार को न खोलें। आप उसे जरूर खोलेगें और हमेशा के लिए हमसे बिछुड़ जाएँगे। यही कारण है कि हम सारी शहजादियाँ दुखी हैं। अगर भगवान ने आपको सद्बुद्धि दी और आपने उस

स्वर्णद्वार को न खोला तो आपको कभी कोई दुख न होगा, आप संपूर्ण आयु चैन से बिताएँगे और हमारे साथ हमेशा आनंद करेंगे। लेकिन अगर आपने हमारे कहने के विपरीत किया तो आपको बहुत अधिक शोक और कष्ट होगा और आपके कष्ट से हमें भी दुख और कष्ट होगा। हम फिर आप से सौगंध देकर कहते हैं कि इस स्वर्णद्वार को न खोलना। हमसे वादा कीजिए कि आप ऐसा नहीं करेंगे कि आप हमसे हमेशा के लिए बिछुड़ जाएँ।
'हम वैसे इस स्वर्णद्वार की चाबी अपने साथ भी ले जा सकते हैं किंतु यह अच्छा नहीं मालूम होता कि आप जैसे जिम्मेदार और बड़े आदमी पर अविश्वास करें और चाबी आपके हाथ में न दें। हाँ एक बार फिर यह कहते हैं कि अगर आपने यह स्वर्णद्वार खोला तो हमें और आपको अतीव कष्ट होगा।'
उनकी बातें सुनकर मैं भी दुखी हुआ। मैंने उनसे कहा, 'मुझे तुम लोगों से अलग होने का अत्यंत दुख है। खैर, किसी प्रकार यह चालीस दिन काटूँगा।तुम्हारी इस नसीहत को हमेशा याद रखूँगा कि यह स्वर्णद्वार न खोलूँ। मुझे तो नहीं मालूम होता कि मुझ में इतना अधैर्य है कि तुम से किया हुआ वादा तोड़ दूँ। इससे अधिक साधारण बात क्या होगी कि मैं सौ दरवाजों को खोल कर घूमूँ-फिरूँ और एक को खोलने से बाज रहूँ। अगर तुम लोग इससे कठिन काम करने को कहती हो उसे भी मैं स्वीकार कर लेता। तुम्हारी बात मानने में तो मेरा ही लाभ है। मैं भला ऐसी बात क्यों करूँगा जिससे मेरी गहरी हानि हो और तुम लोगों से भी हमेशा के लिए अलग होना पड़ जाए। मैं ऐसी बात कभी नहीं करूँगा।'
यह कहकर मैंने उन सभी को एक-एक करके गले लगाया। इसके बाद वे सब चली गईं और मैं उस लंबे-चौड़े राजमहल में अकेला ही रह गया। मुझे अत्यंत शोक हो रहा था। यद्यपि वे केवल चालीस दिन बाद आने वाली थीं तथापि उनके वियोग में मुझे एक-एक घड़ी भारी पड़ रही थी। फिर मैंने अपना जी बहलाने को सोचा कि जिन दरवाजों की चाबियाँ मेरे पास हैं उन्हें खोल कर देखूँ। मैंने सोचा कि निषेध तो केवल एक द्वार के खोलने का है, सो उसे नहीं खोलूँगा।
इसलिए मैंने पहला दरवाजा खोला। अंदर गया तो देखा कि एक बड़ा भारी फलों का बाग है। ऐसा शानदार फलों का बाग संसार में शायद ही कोई और हो। उसमें सहस्रों सघन और सुंदर वृक्ष उचित दूरियों पर लगे थे। उनमें नाना प्रकार के सुस्वादु और आकर्षक रंगों के फल लगे हुए थे। उनमें से बहुत-से फल ऐसे थे जिनका मैं नाम भी नहीं जानता था। उन वृक्षों में सिंचाई का प्रबंध इस प्रकार किया गया था कि एक बड़ी और पक्की नहर से काट काटकर छोटी-छोटी नहरें

देर में वे लोग बूढ़े आदमी के साथ वहाँ आए। उन्होंने न मेरी ओर कुछ ध्यान दिया न मेरी आँख फूटने पर सहानुभूति प्रकट की। उन्होंने कहा, 'देखो भाई, हम लोग तो तुम्हारे दुर्भाग्य का कारण नहीं सिद्ध हुए।' मैंने कहा, 'आप लोग ठीक कहते हैं। मुझ पर जो मुसीबत पड़ी वह अपनी ही मूर्खता के कारण पड़ी किंतु मैं जानना चाहता हूँ कि इस मुसीबत को दूर करने का भी उपाय है या नहीं।'
उन्होंने कहा, 'अगर हम ऐसा उपाय जानते तो अपनी मुसीबत को दूर न कर लेते? तुम्हारी तरह हम लोग भी एक-एक वर्ष तक उन शहजादियों के साथ आनंदपूर्वक रहे। अगर हम वह स्वर्णद्वार न खोलते तो हम उनके साथ आनंदपूर्वक रहते। तुम हम लोगो से अधिक बुद्धिमान दिखाई देते थे फिर भी तुम वह सोने का दरवाजा खोलने से बाज न आ सके और अपने को ऐसी मुसीबत में डाल बैठे। अच्छा; यह तो हम तुम्हें पहले ही बता चुके हैं कि अब यहाँ ग्यारहवें आदमी के रहने के लिए स्थान नहीं है। तुम्हारे लिए यही उचित होगा कि तुम यहाँ से बगदाद जाओ जहाँ का रास्ता हम बता देंगे। वहाँ तुम्हें ऐसा व्यक्ति मिलेगा जो तुम्हारे दुख दूर करेगा।' उनकी सलाह मानकर मैं बगदाद पहुँचा। रास्ते में दाढ़ी-मूँछ और भवें मुँडवा दीं और फकीरों के वस्त्र पहन लिए। चलते-चलते बहुत दिन बाद आज शाम को बगदाद पहुँचा। परकोटे पर इन दोनों साथियों से भेंट हुई। फिर तुम्हारे घर आए जहाँ तुमने हमारा बड़ा सत्कार किया।
जब तीसरा फकीर अपना हाल कह चुका तो जुबैदा ने उससे और उसके दोनों साथियों से कहा कि मैंने तुम तीनों का अपराध क्षमा किया, अब तुम लोग यहाँ से चले जाओ। एक फकीर ने कहा कि आप कृपा करके हमे इतनी अनुमति दें कि हम यहाँ रुक कर इन बाकी तीन आदमियों की कहानी भी सुन लें। जुबैदा ने खलीफा, जाफर और मसरूर की ओर देखकर अपना-अपना हाल कहने का इशारा किया। वह यह तो जानती ही न थी कि यह लोग कितने उच्च पद के हैं, इसीलिए उसने उन्हें अपना-अपना हाल सुनाने की आज्ञा दी।
खलीफा के मंत्री जाफर ने निवेदन किया, 'हे सुंदरी, हम लोग इस महल में प्रवेश करने के समय ही अपना-अपना हाल कह चुके हैं। अब तुमने फिर पूछा है तो कहते हैं कि हम लोग मोसिल से आए हुए व्यापारी हैं। हम अपनी व्यापार की वस्तुएँ बेचने यहाँ आए थे और एक सराय में उतरे थे। आज रात के लिए एक व्यापारी ने हमें खाने का निमंत्रण दिया। जब हम उसके घर पहुँचे तो उसने हम लोगों को अत्यंत स्वादिष्ट भोजन कराया और बढ़िया शराब पिलाई। फिर देर तक उसके यहाँ

संगीत और नृत्य का कार्यक्रम चला। वहाँ का शोर इतना बढ़ा कि गश्त पर निकले सिपाही आ गए। उन्होंने कई लोगों को गिरफ्तार कर लिया। हम लोग भाग्यशाली थे कि किसी प्रकार बचकर निकल आए। लेकिन रात अधिक बीत जाने के कारण हमारी सराय का द्वार बंद हो गया था। हम लोग परेशान थे कि रात कहाँ बिताएँ। इधर-उधर भटकते हुए तुम्हारी गली में आ गए। तुम्हारे घर में हँसने-बोलने और गाने- बजाने की आवाजें आ रही थीं। इसीलिए हमने दरवाजा खुलवाया। तुमने कृपा कर हम लोगों का आदर-सत्कार किया। यही हमारी कहानी है।
मंत्री ने यह बात इतने आत्मविश्वास और इतनी कुशलता से कही कि जुबैदा को उसकी सत्यता में विश्वास हो गया। उसने कहा, 'अच्छा, हमने तुम्हारा भी अपराध क्षमा किया और अब तुम सब यहाँ से चले जाओ।' वे लोग उठने में झिझके तो जुबैदा ने क्रोध में भर कर कहा, 'जाते हो या जान देना चाहते हो?' उसकी डाँट सुनकर वे सातों व्यक्ति मजदूर, तीनों फकीर, खलीफा और उसके दोनों साथी - चुपचाप उठकर बाहर आ गए क्योंकि सात हब्शी नंगी तलवारें लिए उनके सर पर खड़े थे। सातों व्यक्तियों के घर से निकलते ही स्त्रियों ने घर का दरवाजा बंद कर लिया। बाहर आकर खलीफा ने इन फकीरों से कहा कि इतनी रात बीत गई है, अब तुम लोग कहाँ जाओगे क्योंकि तुम इस नगर से परिचित भी नहीं हो। उन तीनों ने कहा कि हम लोग भी इसी चिंता में हैं। खलीफा ने कहा, तुम लोग हमारे साथ आओ, हम तुम्हारी सहायता करेंगे। यह कह कर खलीफा ने मंत्री के कान में कहा कि इन तीनों को अपने घर ले जाकर ठहराओ और कल मेरे दरबार में हाजिर करो। अतएव मंत्री जाफर उन तीनों फकीरों को अपने घर ले गया और इधर मसरूर सहित खलीफा भी अपने महल में आ गया।
खलीफा शयन कक्ष में जाकर अपनी शय्या पर लेट गया किंतु उसे सारी रात नींद नहीं आई। उसने जो कुछ देखा-सुना था उस का वैचित्र्य उसके चित्त से उतरता ही नहीं था। वह इसी चिंता में था कि यह बात जान ले कि जुबैदा कौन है और उसने दोनों कुतियों को क्यों मारा और फिर क्यों प्यार किया, साथ ही उसे यह जानने की भी बड़ी इच्छा थी कि अमीना के शरीर पर जो काले निशान पड़े हैं उनका क्या भेद है।
सुबह वह नित्य कर्म, नाश्ता आदि से निश्चिंत होकर दरबार में गया और सिंहासन पर बैठ गया। कुछ देर में मंत्री ने आकर उसे प्रणाम किया। खलीफा ने मंत्री से कहा, 'जब तक मैं उन तीनों स्त्रियों और दोनों काली कुतियों का पूरा हाल न जान लूँगा मुझे चैन न मिलेगा। इसी कारण मुझे रात भर नींद नहीं

आई है। तुम तुरंत जाओ और उन तीनों फकीरों और तीनों स्त्रियों को मेरे सन्मुख उपस्थित करो।' मंत्री ने उस मकान में जाकर पिछली रात की बातों का उल्लेख किए बगैर उन तीनों स्त्रियों से कहा कि खलीफा तुम लोगों से कुछ बात करना चाहते हैं, तुम दरबार में चलो। अतएव वे तीनों अपने ऊपर बुरका डाल कर मंत्री के साथ चल दीं। रास्ते में मंत्री ने अपने घर होते हुए तीनों फकीरों को भी बगैर उन्हें कुछ बताए अपने साथ ले लिया।
खलीफा उन स्त्रियों और फकीरों को देखकर बड़ा प्रसन्न हुआ। उसने तीनों स्त्रियों को अपने पीछे की ओर परदे के पीछे बिठाया ताकि दरबारियों और सेवकों पर प्रकट हो जाए कि ये सम्मानीय महिलाएँ हैं। फिर उसने उन तीनों फकीरों को जो दरअसल राजा और राजकुमार थे, उनकी प्रतिष्ठा के अनुसार अपने समीप आसन दिए। स्त्रियों के आसन ग्रहण करने के बाद खलीफा ने उनकी ओर मुँह करके कहा, 'कल रात मैंने मोसिल के व्यापारी के रूप में तुमसे भेंट की थी। हमारी बातों से तुम लोगों को कुछ दुख हुआ था और इसीलिए तुम हम लोगों से नाराज हुई थीं। मैंने आज जो तुम्हें बुलाया है वह इसलिए नहीं कि मैं तुम लोगों को कोई दंड देना चाहता हूँ। मैंने वह बात तो भुला दी है। मैं तुम्हारे आने से बड़ा प्रसन्न हूँ। तुममें जो सद्बुद्धि है वह यदि बगदाद की सारी स्त्रियों में आ जाए तो कितना अच्छा हो। यद्यपि हमने अपना वादा तोड़ कर तुम्हें दुख पहुँचाया किंतु फिर भी तुमने हम लोगों पर कृपा करके हमें छोड़ दिया।'
खलीफा ने आगे कहा, 'कल रात में मोसिल का व्यापारी था और तुम्हारे आदेश में था। इस समय मैं हारूँ रशीद, अब्बास वंश का सातवाँ खलीफा और हजरत मुहम्मद का वंशज हूँ। मैंने तुम्हें इसलिए बुलाया है कि मैं जानूँ कि तुम कौन हो और तुम तीनों में से एक स्त्री के कंधों पर काले निशान किसलिए हैं।' यद्यपि खलीफा ने यह सब स्पष्ट शब्दों में उनसे कहा था तथापि मंत्री ने एक बार फिर इन बातों को दुहरा दिया। यह सुनकर जुबैदा ने आप बीती आरंभ कर दी।

किस्सा जुबैदा का

जुबैदा ने खलीफा के सामने सर झुका कर निवेदन किया है राजाधिराज, मेरी कहानी बड़ी ही विचित्र है, आपने इस प्रकार की कोई कहानी नहीं सुनी होगी। मैं और वे दोनों काली कुतियाँ तीनों सगी बहिनें हैं और यह दो स्त्रियाँ जो मेरे साथ बैठी हैं मेरी सौतेली बहनें हैं। जिस स्त्री के कंधों पर काले

मैंने उसका भी बड़ी बहन की भाँति स्वागत-सत्कार किया और उसे बड़ा दिलासा दिया। वह भी आराम से रहने लगी। लेकिन कुछ दिनों बाद इन दोनों ने मुझसे कहा कि हमारे रहने से तुम्हें कष्ट भी होता है और हम पर तुम्हारा पैसा भी खर्च होता है इसलिए हम लोग फिर से विवाह करेंगे। मैंने कहा, 'यदि मेरी असुविधा भर से तुम्हें यह खयाल पैदा हुआ कि विवाह कर लेना चाहिए तो यह बेकार बात है क्योंकि भगवान की दया से व्यापार में मुझे इतना लाभ हो रहा है कि हम तीनों बहनें जीवनपर्यंत आनंद और सुख-सुविधा से रह सकती हैं। तुम्हें मेरे पास कोई कष्ट न होगा। तुम्हारे विवाह करने की इच्छा को सुनकर मुझे बड़ा आश्चर्य है। तुम लोगों ने अपने-अपने पतियों के हाथों इतने कष्ट उठाए हैं। फिर भी मुसीबत में पड़ना चाहती हो। अच्छे पतियों का मिलना अत्यंत दुष्कर है। इसलिए तुम विवाह का विचार छोड़ दो।'
इस प्रकार मैंने उन्हें बहुत समझाया। लेकिन वे दोनों अपनी बात पर दृढ़ रहीं। वे मुझसे कहने लगीं, 'तू हमसे अवस्था में कम है किंतु बुद्धि में अधिक है। किंतु जितने दिन रह लिया उससे अधिक हम तेरे घर में न रहेंगे क्योंकि आखिर तू हमें अपनी आश्रिता ही समझती होगी और अपने हृदय में हमारा सम्मान दासियों से अधिक नहीं करती होगी।' मैंने कहा, 'यह तुम लोग क्या कह रही हो? मैं तो तुम्हें वैसा ही अपने से ज्येष्ठ और सम्मानीय समझती हूँ जैसा पहले जमाने में समझती थी। मेरे पास जो भी धन-संपत्ति है वह तुम्हारी ही है।' यह कह कर मैंने उनको गले लगाया और बहुत दिलासा दिया। और हम तीनों मिल कर पहले की तरह रहने लगे।
एक वर्ष के पश्चात भगवान की दया से मेरा व्यापार ऐसा चमका कि मेरी इच्छा हुई कि उसे अन्य नगरों तक बढ़ाऊँ। अतएव मैंने जहाज पर सामान लाद कर किसी अन्य देश में भी व्यापार जमाने की सोची। मैं व्यापार की वस्तुओं और अपनी दोनों बहनों को लेकर बगदाद से बूशहर में आई और एक छोटा-सा जहाज खरीद कर मैंने अपनी व्यापार की वस्तुओं को उस पर लाद दिया और चल पड़ी। वायु हमारे अनुकूल थी इसीलिए हम लोग फारस की खाड़ी में पहुँच गए और वहाँ से हमारा जहाज हिंदोस्तान के लिए चल पड़ा। बीस दिन बाद हम लोग एक टापू पर पहुँचे जिसके पिछले भाग में एक बहुत ऊँचा पर्वत था। द्वीप में समुद्र के किनारे ही एक बड़ा और सुंदर नगर बसा था।
मैं जहाज पर बैठे-बैठे बहुत ऊब गई थी इसलिए अपनी बहनों को जहाज ही पर छोड़कर एक डोंगी पर बैठ कर तट पर गई। नगर के द्वार पर काफी संख्या में सेना

उस युवक ने मुझे कुछ देर प्रतीक्षा करने को कहा। फिर उसने कुरान का निर्धारित पाठ भाग पढ़ना खत्म करके कुरान को एक जरी के वस्त्र में लपेटा और उसे एक आले में रख दिया। इस बीच मैं उस जवान को देखती रही और उसका सुंदर रूप देखकर उस पर मोहित हो गई। उसने मुझे अपने पास बिठाया और कहा, 'तुम्हारी नमाज से ज्ञात होता है कि तुम हमारे सच्चे धर्म पर पूर्णतः विश्वास करती हो। अब मैं तुम्हें अपना पूरा हाल सुनाता हूँ।'
'इस नगर का बादशाह मेरा पिता था। उसका राज्य बड़ा विस्तृत था। किंतु बादशाह और उसके सभी अधीनस्थ लोग अग्निपूजक थे। यही नहीं, वे नारदीन की उपासना भी किया करते थे जो प्राचीन काल में जिन्नों का सरदार था। यद्यपि मेरा पिता और उसके साथी अग्निपूजक थे किंतु मैं बचपन से ही मुसलमान था। कारण यह था कि मेरे लालन-पालन के लिए जो दाई रखी गई थी वह मुसलमान थी। उसने मुझे सारा कुरान कंठाग्र करा दिया। उसने मुझे शिक्षा दी कि केवल एक ईश्वर ही पूज्य है, तुम उसे छोड़कर किसी और को न पूजना। उसने मुझे अरबी भी पढ़ाई और तफ्सीर (कुरान की व्याख्या) की भी शिक्षा दी। यह सारा काम उसने दूसरों से छुपाकर किया।
'कुछ दिन बाद दाई तो मर गई किंतु मैं उसके बताए हुए धर्म पर दृढ़ रहा। मुझे इस बात का बड़ा दुख होता है कि मेरे सारे देशवासी अग्निपूजक और जिन्न के उपासक हैं। दाई की मृत्यु के कई मास बीत जाने पर आकाशवाणी हुई कि हे नगरवासियो, तुम लोग नारदीन और आग की पूजा छोड़ दो और एकमात्र सर्व शक्तिमान परमेश्वर की पूजा करो। यह आकाशवाणी तीन वर्षों तक निरंतर होती रही किंतु न बादशाह ने न किसी अन्य नगर निवासी ने उस पर ध्यान दिया। वे अपने झूठे धर्म पर दृढ़ रहे। तीन वर्षों बाद इस नगर पर ईश्वरीय प्रकोप हुआ और जो व्यक्ति जिस स्थान और जिस दशा में था, वैसे ही पत्थर बन गया। मेरा पिता ही काले संगमरमर का बन गया और मेरी माँ सिंहासन पर बैठी-बैठी ही पत्थर बन गई जैसा तुमने देखा है। एक मैं ही मुसलमान होने के कारण इस दंड से बचा रहा। उस समय से और भी निष्ठापूर्वक मैं इस्लाम को मानने लगा। हे सुंदरी, मैं जानता हूँ कि भगवान ने तुम्हें मुझ पर कृपा करके यहाँ भेजा है क्योंकि मैं यहाँ अकेलेपन से बहुत ऊबा करता था।'
मुझे उसकी बातें सुनकर उससे और प्रेम बढ़ गया। मैंने कहा, 'मैं बगदाद की निवासिनी हूँ। यहाँ किनारे पर बहुत-से माल-असबाब से लदा मेरा जहाज खड़ा

है। जितना माल इसमें है उतना ही बगदाद में अपने घर छोड़ आई हूँ। मैं आपको यहाँ से ले चलूँगी और अपने घर में आराम से रखूँगी।
'बगदाद में खलीफा बड़े न्यायप्रिय हैं। वे आपके सम्मान योग्य कोई पदवी आपको जरूर देंगे। मेरा जहाज आपकी सेवा में है। आप इस स्थान को छोड़िए और मेरे साथ चलिए।'
नौजवान ने मेरा प्रस्ताव सहर्ष स्वीकार कर लिया। मैं सारी रात उस आकर्षक युवक से बातें करती रही। दूसरे दिन सुबह उसे लेकर अपने जहाज पर पहुँची। मेरी बहिनें मेरी चिंता में दुखी थीं। मैंने अपने पिछले दिन के अनुभव सुनाए और उस नौजवान की कहानी भी बताई। फिर मेरी आज्ञा से जहाज के माँझियों ने जहाज से व्यापार वस्तुएँ उतार लीं और उनकी जहाज वे अमूल्य रत्न आदि भर लिए जो मुझे महल में मिले थे। महल का सारा सामान तो एक जहाज में आ नहीं सकता था इसलिए मैंने चुनी-चुनी बहुमूल्य वस्तुएँ ही भरीं और खाने-पीने का सामान भी महल से लेकर जहाज पर लाद लिया। साथ ही शहजादे को भी जहाज पर चढ़ा लिया। इसके बाद, असंख्य धन की स्वामिनी होने के साथ अपने प्रिय शहजादे के सान्निध्य का सुख पाते हुए मैंने स्वदेश की ओर यात्रा आरंभ कर दी।
किंतु मेरी बहनों को प्रसन्नता न हुई। शहजादा अत्यंत रूपवान और मिष्टभाषी था। वे मुझसे ईर्ष्या करने लगीं। एक दिन उन्होंने मुझसे पूछा कि तुम इस शहजादे को ले जाकर कहाँ रखोगी और इसके साथ क्या करोगी। मुझे उनकी दशा देखकर हँसी आई और मैंने उन्हें चिढ़ाने के लिए कहा कि मैं बगदाद में इसके साथ विवाह करूँगी। मैंने शहजादे से कहा कि मैं चाहती हूँ कि आपकी दासियों में हो जाऊँ और जी-जान से आपकी सेवा करूँ। शहजादा भी मेरे परिहास को समझ गया और हँसकर बोला, 'तुम्हारी जो इच्छा हो वह करो। मैं तुम्हारी बहनों के समक्ष प्रतिज्ञा करता हूँ कि तुम्हारी प्रसन्नता के लिए तुम्हें अपनी पत्नी बनाऊँगा। दासी होने की बात न करो, मैं तो स्वयं तुम्हारा दास बन जाऊँगा।'
यह सुनकर मेरी बहनों के चेहरे का रंग उड़ गया और उनके हृदय में मेरे लिए घोर शत्रुता जागृत हो गई। सारी यात्रा उनकी यही दशा रही बल्कि उनका वैर भाव बढ़ता ही गया। जब हमारा जहाज बूशहर के इतना समीप आ गया कि अनुकूल वायु होने पर वहाँ एक दिन में पहुँच जाता तो रात को जब मैं गहरी नींद सो रही थी, मुझे और शहजादे को उठाकर समुद्र में फेंक दिया।

जाएगा। वैसे हम परियाँ तुम्हारी मित्र हो गई हैं और तुम जब भी हमें बुलाओगी हम आ जाएँगे। जुबैदा ने कहा कि मैं उस परी की आज्ञानुसार हर रात को अपनी बहनों को, जो कुतियाँ बनी हुई हैं, सौ-सौ कोड़े मारती हूँ लेकिन खून का जोश भी काम करता है इसलिए रोती हूँ और उनके आँसू पोंछती हूँ। अब अमीना की कहानी उसके मुँह से सुनिए।
खलीफा को यह वृत्तांत सुन कर बड़ा आश्चर्य हुआ। उसने अमीना से पूछा कि तुम्हारे कंधों और सीनों पर काले निशान क्यों है। उसने यह बताया।

किस्सा अमीना का

अमीना ने कहा, 'जुबैदा की कहानी आप उसके मुँह से सुन चुके, अब मैं अपनी कहानी आपके सम्मुख प्रस्तुत करती हूँ। मेरी माँ मुझे लेकर अपने घर में आई कि रँड़ापे का अकेलापन उसे न खले। फिर उसने मेरा विवाह इसी नगर के बड़े आदमी के पुत्र के साथ कर दिया। दुर्भाग्यवश एक ही वर्ष बीता था कि मेरा पति मर गया। किंतु उसकी सारी संपत्ति जिसका मूल्य लगभग नब्बे हजार रियाल था मेरे हाथ आ गई। इतना धन मेरी सारी जिंदगी के लिए काफी था। जब पति को मरे छह महीने हो गए तो मैंने दस बहुत मूल्यवान पोशाकें बनवाईं जिनमें से हर एक का मूल्य एक-एक हजार रियाल था। जब पति को मरे एक वर्ष पूरा हो गया तो मैंने उन पोशाकों को पहनना आरंभ किया।
एक दिन मैं अपने घर में अकेली बैठी थी कि मेरे सेवक ने मुझ से कहा कि एक बुढ़िया आपसे कुछ कहना चाहती है, आज्ञा हो तो उसे अंदर ले आऊँ। मैंने अनुमति दे दी। बुढ़िया अंदर आई और उसने भूमि चूमकर मुझे प्रणाम किया फिर खड़े होकर कहने लगी, 'मैंने आपकी दयालुता की बड़ी प्रशंसा सुनी है इसीलिए आपके सन्मुख कुछ निवेदन करना चाहती हूँ। मेरे पास एक कन्या है जिसके माता- पिता नहीं हैं। आज रात को उसका विवाह है। हम दोनों इस नगर में अपरिचित हैं। जिस लड़के के साथ उसका विवाह होना है वह धनी परिवार का है और उसके संबंधी भी काफी हैं। सुना है कि दूल्हे के साथ बहुत-सी स्त्रियाँ बहुमूल्य वस्त्राभूषण पहन कर आएँगी। यदि आप उस विवाह में शामिल हों तो मेरी प्रतिष्ठा रह जाएगी। हमारी ओर से आप होंगी तो समधियाने वाले हमें अपरिचित और निर्धन न समझेंगे। तुम्हारे जैसी शान-शौकत तो किसी में नहीं होगी और सब लोग यही कहेंगे कि जब इस बुढ़िया की ओर से ऐसी धनाढ्य महिला आई है तो वह भी प्रतिष्ठावान होगी। अगर आप मेरी निर्धनता और दीनता का ख्याल करके मेरे

यहाँ चलने से इनकार करेंगी तो मेरी प्रतिष्ठा धूल में मिल जाएगी। इस नगर में न तो मेरा कोई अपना सगा-संबंधी है जिससे मैं मदद माँगूँ न आपके समान परोपकारी कोई महिला है जो दीन अनाथों पर दया करें।'
यह कहकर बुढ़िया रोने लगी। मैं उसके रोने से द्रवित हो गई। मैंने उसे दिलासा देकर कहा, 'अम्मा, तुम फिक्र न करो, मैं तुम्हारी बेटी के विवाह में अवश्य सम्मिलित होऊँगी। तुम्हें खुद अब यहाँ आने की जरूरत नहीं है, तुम विवाह का प्रबंध करो। मुझे अपने मकान का पता बता दो, मैं स्वयं वहाँ पहुँच जाऊँगी।'
बुढ़िया यह सुनकर बहुत ही प्रसन्न हुई। उसने कहा, जैसे इस समय आपने मुझे प्रसन्नता दी है वैसे ही भगवान सदैव आपको प्रसन्न रखे, लेकिन आप मेरा मकान कहाँ ढूँढ़ती फिरेंगी, मैं स्वयं शाम को यहाँ आकर आप को अपने घर ले जाऊँगी। यह कहकर बुढ़िया चली गई।
मैंने तीसरे पहर से तैयारी की। एक बहुमूल्य जोड़ा कपड़ों का निकालकर पहना। बड़े-बड़े मोतियों की माला पहनी तथा और भी बहुत-से रत्नजटित आभूषण यथा बाजूबंद, करनफूल, अँगूठियाँ आदि पहने। इतने ही में शाम हो गई। बुढ़िया मुझे लेने को आ गई और मेरा हाथ चूम कर बोली कि दूल्हे के माता-पिता तथा अन्य संबंधी मेरे घर आए हुए हैं, यहाँ के कई धनी-मानी और प्रतिष्ठित व्यक्ति और उनकी स्त्रियाँ भी वर पक्ष की ओर से आए हैं; अब आप चल कर मेरे पक्ष की लाज रखिए। मैं बुढ़िया के साथ उसके घर की ओर चल दी और साथ में अपनी कई दासियों को भी अच्छे वस्त्राभूषण पहनाकर अपने साथ ले लिया।
हम लोग चलते-चलते एक चौड़ी और साफ गली में पहुँचे। वृद्धा ने हम लोगों को ले जाकर एक बड़े द्वार के सामने खड़ा कर दिया। दरवाजे के ऊपर एक तख्ती पर लकड़ी से तराशे हुए अक्षरों में लिखा था कि इस घर में सदैव प्रसन्नता का निवास है। वहाँ दीए भी जल रहे थे जिनके प्रकाश में मैंने यह इबारत पढ़ी। बुढ़िया ने ताली बजा कर दरवाजा खुलवाया और मुझे अंदर एक बड़े दालान में ले गई।
अंदर एक अत्यंत रूपवती स्त्री ने मेरा स्वागत किया, मुझे गले लगाया और सम्मानपूर्वक एक कमरे में ले जाकर बिठाया। फिर मैं ने देखा कि वहाँ पर एक रत्न-जटित सिंहासन रखा है। उस सुंदरी ने मुझ से कहा कि तुम सोचती हो कि तुम किसी और का विवाह कराने आई हो, वास्तविकता यह है कि तुम्हें यहाँ तुम्हारे ही विवाह के लिए लाया गया है। मुझे यह सुनकर आश्चर्य हुआ किंतु उस स्त्री

रेशमी थान खरीद कर बेचा करती हैं वैसे ही मैं करना चाहती हूँ। मेरे पति ने इसके लिए अनुमति दे दी। मैं दो दासियों तथा उस बुढ़िया के साथ जो मुझे विवाह के लिए बहाना करके लाई थी नगर के सबसे बड़े बाजार गई जहाँ बड़े-बड़े व्यापारियों की दुकानें थीं। बुढ़िया ने कहा, यहाँ एक नौजवान व्यापारी है जिसे मैं अच्छी तरह जानती हूँ, उसकी दुकान जैसे बहुमूल्य थान कहीं और न मिलेंगे। मैंने भी सोचा था कि एक ही जगह अच्छा माल मिल जाए तो जगह-जगह क्यों भटकें, इसीलिए उस व्यापारी की दुकान पर चली गई।
व्यापारी जवान ही नहीं अत्यंत रूपवान था। बुढ़िया ने मुझ से कहा कि यहाँ बहुत माल है, तुम व्यापारी से जो भी चाहो माँग लो। मैंने उससे कहा कि मैंने पति को वचन दिया है कि मैं परपुरुष से बात न करूँगी, इसलिए मैं तो इससे बात न करूँगी, तुम्हीं बात करो। अतएव उस व्यापारी ने बुढ़िया से पूछताछ कर कि मुझे क्या पसंद है कई अच्छे-अच्छे थान दिखाए। मैं ने उन में से एक थान पसंद किया और उसका दाम पुछवाया। व्यापारी बोला, 'यह थान अमूल्य है। मैं इसे असंख्य अशफियों में भी नहीं बेचूँगा। किंतु यह सुंदरी अगर अपने कपोल का एक चुंबन मुझे दे दे तो यह थान उसका हो जाएगा।'
मैंने बुढ़िया से नाराज होते हुए कहा कि यह व्यापारी बड़ा लंपट और धृष्ट जान पड़ता है, इसकी हिम्मत ऐसी गंदी बात करने की कैसे हुई। किंतु बुढ़िया ने व्यापारी ही का पक्ष लिया और कहा, 'सुंदरी, इसमें कोई विशेष बात तो नहीं है। तुम्हारे पति ने तुम्हें परपुरुष को देखने और उससे बात करने ही को तो मना किया है। वह तुम न करो। तुम केवल एक चुंबन इसे चुपचाप दे दो। इसमें तो कोई कठिनाई तुम्हें नहीं होनी चाहिए।' मैं ऐसी मूर्ख थी और थान मेरी नजर में ऐसा खुप गया था कि मैं इस बुरी बात के लिए तैयार हो गई। अब वह वृद्धा और दोनों दासियाँ सड़क की ओर मेरी आड़ करके खड़ी हो गईं। मैंने अपने मुख पर से वस्त्र हटा कर उस व्यापारी के सामने गाल कर दिया।
दुष्ट व्यापारी ने चुंबन लेने के बजाय मेरे गाल में दाँत गड़ा दिए जिससे गाल लहूलुहान हो गया और मैं तड़प कर अचेत हो गई। इस अरसे में अवसर पाकर व्यापारी ने अपना माल जल्दी से लपेटा और दुकान बंद करके गायब हो गया। कुछ देर बार जब मुझे होश आया तो मैंने अपने गाल को लहूलुहान पाया। बुढ़िया और दासियों ने मेरे गाल को कपड़े से ढँक दिया था और उन लोगों की परेशानी और हाय-हाय को सुन कर जो भीड़ वहाँ जमा हो गई थी उसने समझा कि मैं किसी बीमारी से या कमजोरी के कारण बेहोश हो गई। मेरे होश में आने पर बुढ़िया और दासियों

को संतोष हुआ और वे मुझे धैर्य देने लगीं। विशेषतः बुढ़िया को बहुत दुख हुआ। उसने कहा, 'सुंदरी, मैं तुम्हारी अपराधिनी हूँ, मुझे क्षमा करो। तुम्हारे ऊपर यह सारी मुसीबत मेरे कारण ही आई। इस कमीने व्यापारी की दुकान पर तुम मेरे कहने से आई। अब घर चलो। जो हुआ सो हुआ अब तुम और चिंता न करो। मैं तुम्हारे घाव पर ऐसी दवा लगा दूँगी कि तीन दिन के अंदर न केवल घाव भर जाएगा बल्कि उसका कोई चिह्न भी नहीं रहेगा।'
मैं किसी तरह गिरती-पड़ती उन लोगों के साथ अपने घर पहुँची और अपने कमरे में जाकर पीड़ा, निर्बलता और थकन से फिर अचेत हो गई। बुढ़िया मुझे होश में लाई। फिर मैं अपने पलंग पर लेट गई। रात में जब मेरा पति आया, मुझे लेटे देखा तो बोला कि तुम्हें क्या हो गया, क्यों लेटी हो। मैंने बहाना किया कि मेरे सिर में बड़ा दर्द हो रहा है। मैंने सोचा था कि इसके बाद वह मुझसे अपना ध्यान हटा लेगा। किंतु उसने मेरा हाथ अपने हाथ में लिया और नाड़ी आदि देखने के बाद सर पर हाथ फेरने के लिए मेरे मुँह से कपड़ा हटाया। गाल के घाव को देखकर वह भड़क गया और मुझ से पूछने लगा कि तुम्हारे गाल पर यह खरोंच कैसे लगी। वैसे मेरा कोई कसूर न था और मैं उसकी अनुमति लेकर ही बाजार गई थी किंतु उससे सच्ची बात कहने का मुझे साहस नहीं हुआ। मैंने बहाना बनाया कि जब मैं बाजार जा रही थी तो एक लकड़हारा लकड़ी का गट्ठा लेकर मेरे पास से निकला और गट्ठे से बाहर निकली एक लकड़ी गाल में चुभ गई।
मेरे पति ने क्रोध में भरकर कहा कि अगर यह बात सच है तो मैं कल सारे लकड़हारों को फाँसी पर चढ़वा दूँगा। मैं घबराई कि मेरे इस झूठ से सारे लकड़हारे बेकसूर ही मारे जाएँगे। मैंने अपने पति से कहा कि आप ऐसा अन्याय हरगिज न करें, बेकसूर लकड़हारों को क्यों मरवाएँगे, अगर मेरा अपराध पाएँ तो उसका दंड मुझे दें, औरों को नहीं।
मेरे पति ने कहा, तुम सच-सच क्यों नहीं बताती गाल में घाव कैसे लगा। मेरी हिम्मत सच्ची बात कहने की अब भी नहीं हुई और मैंने दूसरा बहाना बनाया कि जब मैं जा रही थी तो एक कुम्हार गधे पर बर्तन ले जाता हुआ निकला और गधे का मुझे ऐसा धक्का लगा कि मैं पृथ्वी पर गिर पड़ी और वहाँ पड़ा हुआ एक काँच का टुकड़ा मेरे गाल में चुभ गया। मेरे पति ने कहा, अगर तुम्हारी बात सच है तो मैं सुबह ही राजा के मंत्री जाफर से कह कर सारे कुम्हारों को नगर से निकलवा दूँगा। मैं फिर घबराई और मैंने कहा कि मेरे कारण निर्दोष कुम्हारों को सजा क्यों दी जाए।

बहनें कब तक कुतियाँ बनी रहेंगी। जुबैदा ने कहा कि मैंने जो वृत्तांत आप से कहा था उसमें यह बताना भूल गई कि परी ने चलते समय मुझे अपने कुछ बाल दिए थे और कहा था अगर तुम इनमें से कोई बाल आग में डालोगी तो मैं संसार के चाहे जिस भाग में हूँ तुम्हारे पास आ जाऊँगी।
खलीफा ने पूछा, वे बाल कहाँ हैं। जुबैदा बोली, मैं वे बाल हर समय अपने पास रखती हूँ। यह कहकर उसने एक डिबिया निकाली। उसमें एक पुड़िया में कुछ बाल बँधे थे। उसने उन्हें खलीफा को दिखाया।
खलीफा ने कहा कि मैं भी उस परी को देखना चाहता हँ। जुबैदा ने पूरी पुड़िया आग में डाल दी। धुआँ उठते ही भूकंप-सा आ गया और कुछ क्षणों में चकाचौंध कर देने वाले वस्त्राभूषण पहने परी सम्मुख आ खड़ी हुई। वह खलीफा से बोली, 'आप पृथ्वी पर ईश्वर के प्रतिनिधि हैं, आपकी जो भी आज्ञा होगी मैं उसका पालन करूँगी। इस जुबैदा ने मेरी प्राण रक्षा की थी इसीलिए मैं इसकी बड़ी आभारी हूँ। मैंने इसकी बहनों को, जिन्होंने इसके उपकारों के बदले में इससे अत्यंत नीचता का व्यवहार किया था, कुतिया बना डाला। अब मुझे क्या आज्ञा है?'
खलीफा ने कहा, 'एक तो यह कि चूँकि यह दोनों अपने किए का काफी दंड पा चुकी हैं इसलिए तुम उन्हें फिर इनके पुराने शरीरों में ले आओ। दूसरी बात यह है कि एक आदमी ने अपनी पत्नी को इतना पिटवाया है कि उसके कंधे और सीना काले दागों से भर गए हैं। उस अन्यायी ने इसका पुराना घर भी खुदवाकर जमीन के बराबर कर दिया, उसको अपने पहले पति से जो संपत्ति मिली थी उस पर भी अधिकार कर लिया। मुझे इस बात पर बड़ा खेद है कि मेरे शासन में कोई ऐसा अन्यायी रहता है। तुम तो जानती होगी कि वह कौन है। उसका पता मुझे बताओ और इन कुतियों को फिर से स्त्री बनाने और उस प्रताड़िता स्त्री का शरीर ठीक करने के लिए जो भी कर सकती हो करो।'
परी ने आश्वासन दिया कि मैं सब ठीक कर दूँगी। खलीफा ने जुबैदा को आज्ञा देकर उसके घर से कुतियों को मँगाया। परी ने एक पात्र में जल लेकर उस पर कुछ मंत्र पढ़ा। फिर उसने वह पानी दोनों कुतियों और अमीना पर छिड़क दिया। तुरंत ही कुतियाँ अपने पुराने शरीरों में आकर सुंदर स्त्रियाँ बन गईं ओर अमीना के सारे काले दाग चले गए और उसका शरीर कुंदन की तरह दमकने लगा। अब परी ने कहा कि मैं जानती हूँ कि अमीना का पति कौन है लेकिन वह आप से बहुत

निकट संबंध रखता है; अगर आप चाहें तो उसका नाम भी बता दूँ। खलीफा ने कहा कि जरूर बताओ।
परी बोली, वह आप का छोटा बेटा अमीन है जो अमीना के सौंदर्य की प्रशंसा सुनकर इसको पाने का इच्छुक हो गया और इसे धोखे से अपने कमरे में बुलवा कर इससे विवाह कर लिया। फिर परी ने बाजार की घटना का वर्णन करके कहा कि यद्यपि अमीना निर्दोष थी किंतु सच्ची बात कहने का साहस न कर सकी और कई कई बयान दिए जिससे इसके पति ने इसे दंड दिया।
यह कहकर परी अंतर्धान हो गई। खलीफा ने अपने पुत्र को बुलवाया किंतु भय और लज्जा के कारण उसे आने का साहस न हुआ। खलीफा ने उसे सामने बुलाने पर जोर न दिया किंतु अमीना को उसके पास भेजा और आदेश दिया कि चूँकि यह निर्दोष है इसलिए तुम इसे पत्नी के रूप में सम्मानपूर्वक रखो। चुनांचे शहजादा अमीन ने ऐसा ही किया। खलीफा ने जुबैदा से स्वयं विवाह कर लिया और साफी तथा अन्य दो बहनों का तीन फकीर बने राजकुमारों से विवाह कर दिया और इन राजकुमारों को उच्च पदों पर आसीन कर दिया।

स्त्री के हत्या की कहानी

शहरयार को सिंदबाद की यात्राओं की कहानी सुन कर बड़ा आनंद हुआ। उसने शहरजाद से और कहानी सुनाने को कहा। शहरजाद ने कहा कि खलीफा हारूँ रशीद का नियम था कि वह समय-समय पर वेश बदल कर बगदाद की सड़कों पर प्रजा का हाल जानने के लिए घूमा करता था। एक रोज उसने अपने मंत्री जाफर से कहा कि आज रात मैं वेश बदल कर घूमँगा, अगर देखूँगा कि कोई पहरेवाला अपने कार्य को छोड़ कर सो रहा है तो उसे नौकरी से निकाल दूँगा और मुस्तैद आदमियों को पारितोषिक दूँगा। मंत्री नियत समय पर जासूसों के सरदार मसरूर के साथ खलीफा के पास आया और वे तीनों साधारण नागरिकों के वेश में बगदाद में निकल पड़े।
एक तंग गली में पहुँचे तो चंद्रमा के शुभ्र प्रकाश में उन्हें दिखाई दिया कि एक लंबे कद और सफेद दाढ़ीवाला आदमी सिर पर जाल और कंधे पर नारियल के पत्तों का बना टोकरा लिए चला आता है। खलीफा ने कहा कि यह बड़ा गरीब मालूम होता है, इससे इसका हाल पूछो। तद्नुसार मंत्री ने उससे पूछा कि तू कौन है और कहाँ जा रहा है। उसने कहा, 'मैं अभागा एक निर्धन मछुवारा हूँ। आज दोपहर को मछली पकड़ने गया था किंतु शाम तक मेरे हाथ एक भी मछली न लगी। मैं अब

खाली हाथ घर जा रहा हूँ। घर पर मेरी स्त्री और कई बच्चे हैं। मैं चक्कर में हूँ कि उन्हें आज खाने को क्या दूँगा।'
खलीफा को उस पर दया आई। उसने कहा, 'तू एक बार फिर नदी पर चल और जाल डाल। तेरे जाल में कुछ आए या न आए मैं तुझे चार सौ सिक्के दूँगा और जो कुछ तेरे जाल में आएगा ले लूँगा।' मछुवारा तुरंत इसके लिए तैयार हो गया। उसने सोचा कि मेरा सौभाग्य ही है कि ऐसे भले आदमी मिले, यह मेरे साथ धोखा करनेवाले तो मालूम नहीं होते। नदी पर जा कर उसने जाल फेंका और थोड़ी देर में उसे खींचा तो उसमें एक भारी संदूक फँसा हुआ आ गया। खलीफा ने मंत्री से मछुवारे को चार सौ सिक्के दिलाए और विदा कर दिया।
खलीफा को बड़ा कौतूहल था कि संदूक में क्या है। मसरूर और जाफर ने उसके आदेशानुसार संदूक खलीफा के महल में रख दिया। उसे खोल कर देखा तो उसमें कोई चीज नारियल की चटाई में लाल डोरे से सिली हुई थी। खलीफा की उत्सुकता और बढ़ी। उसने छुरी से सीवन काट डाली और देखा कि एक सुंदर स्त्री का शव टुकड़े-टुकड़े करके चटाई के अंदर सी दिया गया था।
खलीफा यह देख कर अत्यंत क्रुद्ध हुआ। उसने मंत्री से कहा, 'क्या यही तुम्हारा प्रबंध है? मेरे राज्य में ऐसा अन्याय हो कि किसी बेचारी स्त्री को कोई काट कर संदूक में बंद करके नदी में डाले, यह मैं सहन नहीं कर सकता। या तो तुम इसके हत्यारे का पता लगाओ या फिर तुम्हें और तुम्हारे चालीस कुटुंबियों को फाँसी पर चढ़ा दूँगा' मंत्री काँप गया और उसने कहा, 'सरकार मुझे कुछ समय तो दिया जाए कि मैं हत्यारे का पता लगाऊँ।' खलीफा ने कहा कि तुम्हें तीन दिन का समय दिया जाता है।
मंत्री जाफर अत्यंत शोकाकुल हो कर अपने भवन में आया और सोचने लगा कि तीन दिन में हत्यारे का पता कैसे लग सकता है और पता लगा भी तो इस का प्रमाण कहाँ मिलेगा कि यही हत्यारा है। हत्यारा तो कब का नगर छोड़ भी चुका होगा। क्या करूँ? क्या किसी आदमी पर जो पहले ही कारागार में है इस हत्या का अभियोग लगा दूँ।? किंतु यह बड़ा अन्याय बल्कि मेरा अपराध होगा कि मैं जान-बूझ कर किसी निरपराध को दंड दिलवाऊँ, कयामत में भगवान को क्या मुँह दिखाऊँगा।
मंत्री ने सारे सिपाहियों, हवलदारों को आज्ञा दी कि स्त्री के हत्यारे की तीन दिन में खोज करो वरना मैं मारा जाऊँगा और मेरे साथ मेरे कुटुंब के चालीस व्यक्ति भी फाँसी पाएँगे। वे बेचारे तीन दिन तक घर-घर जा कर हत्यारे

नहीं है, अगर दोनों ही हत्या की जिम्मेदारी ले रहे हैं तो दोनों को फाँसी पर चढ़ा दो। किंतु मंत्री ने कहा कि निश्चय ही उनमें से एक झूठ बोलता है, बगैर खोज-बीन किए किसी निरपराध को मृत्यु दंड देना ठीक नहीं है।
अतएव उन दोनों को भी खलीफा के सामने लाया गया। जवान ने भगवान की सौगंध खा कर कहा कि 'मैंने चार दिन हुए उस स्त्री का वध किया था और उसकी लाश टुकड़े- टुकड़े करके संदूक में बंद नदी में डाल दी थी, अगर मैं झूठ कहता हूँ तो कयामत के दिन मुझे अपमानित होना पड़े और बाद में सदा के लिए नरक की अग्नि में जलूँ।' इस बार बूढ़ा कुछ न बोला। खलीफा को विश्वास हो गया कि जवान ही हत्याकारी है। उसने कहा, 'तूने उस स्त्री को मारते समय न मेरा भय किया न भगवान का। और फिर जब तूने यह कर ही लिया है तो अब अपराध स्वीकार क्यों करता है?' जवान बोला, 'अनुमति मिले तो सारी कहानी सुनाऊँ। यह भी चाहता हूँ कि यह कहानी लिखी जाए ताकि सबको सीख मिले।' खलीफा ने कहा 'ऐसा ही हो।'

मृत स्त्री और जवान हत्यारे की कहानी

उस जवान ने कहा कि 'मृत स्त्री मेरी पत्नी और इन वृद्ध सज्जन की बेटी थी और यह मेरे चचा हैं। ग्यारह वर्ष पूर्व उससे मेरा विवाह हुआ था। हमारे तीन बेटे हैं जो जीवित हैं। मेरी पत्नी अत्यंत सुशील और पतिव्रता थी। हर काम मेरी प्रसन्नता का करती थी और मैं भी उससे बहुत प्रेम करता था। एक महीने पहले वह बीमार हुई। दो-चार दिन की दवा से वह अच्छी हो गई और स्वास्थ्यसूचक स्नान के लिए तैयार हुई। लेकिन उसने कहा मैं बहुत अशक्त हो गई हूँ, अगर तुम कहीं से मुझे एक सेब ला दो तो मैं ठीक हो जाऊँगी वरना फिर बीमार पड़ जाऊँगी। मैं उसके लिए सेब लाने को बाजार गया किंतु वहाँ एक भी सेब दिखाई न दिया। फिर मैं बागों में घूमा किंतु वहाँ भी किसी भी मूल्य पर सेब न मिला। फिर मैंने घर आ कर कहा कि बगदाद में तो कहीं सेब मिले नहीं, मैं बसरा बंदरगाह जा रहा हूँ शायद वहाँ सेब मिल जाएँ।
'मैं बसरा जा कर शाही बागों से चार-चार दीनारों के तीन सेब लाया और उन्हें ला कर अपनी पत्नी को दिया। वह बहुत खुश हुई। उसने उन्हें सूँघ कर अपनी चारपाई के नीचे खिसका दिया और फिर आँख बंद करके लेट रही। मैं बाजार गया और अपनी कपड़े की दुकान पर जा बैठा। कुछ देर में मैंने देखा कि एक हब्शी गुलाम एक सेब उछालता जा रहा है। मुझे आश्चर्य हुआ कि इसे सेब कहाँ से मिला, मैं तो बड़ी मुश्किल से बसरा से तीन सेब लाया हूँ। मैंने हब्शी को बुला कर पूछा

कि तुझे यह सेब कहाँ मिला। वह हँस कर बोला कि यह मुझे मेरी प्रेमिका ने दिया है, उसका पति दो सप्ताह की यात्रा करके बसरा के शाही बाग से तीन सेब लाया था जिनमें से एक उसने मुझे दे दिया।
'हब्शी ने यह भी कहा कि मैंने और सुंदरी ने मिल कर भोजन आदि भी किया। हब्शी तो यह कह कर चला गया। यहाँ क्रोध से मेरी बुरी हालत हो गई। मैं दुकान बंद करके घर गया और अपनी पत्नी के पास पहुँचा। वहाँ देखा कि चारपाई के नीचे दो ही सेब हैं। मैंने उससे पूछा कि तीसरा सेब क्या हुआ। उसने झुक कर सेबों को देखा और उपेक्षा से बोली कि मुझे नहीं मालूम कि तीसरा सेब कहाँ गया। यह कह कर वह आँखें बंद करके लेट रही। मुझे विश्वास हो गया कि हब्शी सच कहता था, इसका उससे अनुचित संबंध है और यह अचानक मुझे यहाँ देख कर बहाना भी नहीं बना पा रही है। मैं क्रोध और अपमान भावना से अंधा हो गया और मैंने तलवार निकाल कर अपनी पत्नी को टुकड़े-टुकड़े कर डाला।
'मैंने इस डर से कि कोई मुझे हत्या के अभियोग में पकड़ न ले उसके शव को एक नारियल के पत्तों की बनी चटाई में लपेट दिया और लाल डोरे से उस चटाई को बाँध दिया। फिर एक संदूक में उसे रख कर पीछे के दरवाजे से संदूक ले कर निकला और उसे नदी में डाल दिया क्योंकि तब तक अँधेरा हो गया था। लौट कर घर आया तो देखा कि बड़ा लड़का दरवाजे पर बैठा रो रहा है और दो लड़के एक कोठरी में सो रहे हैं। मैंने लड़के से पूछा कि तू क्यों रो रहा है तो उसने कहा कि आज दिन के समय आपके लाए हुए तीन सेबों में से एक को मैं चुपके से उठा लाया था और दरवाजे पर आ कर उसे खाना ही चाहता था कि उधर से निकलते हुए एक हब्शी गुलाम ने मेरे हाथ से सेब छीन लिया। मैंने उससे बहुत कहा कि यह सेब मेरी बीमार माँ के लिए है, मेरा पिता दो सप्ताह की यात्रा कर बसरा के शाही बागों से उसके लिए तीन सेब लाया है। उन्हीं में से यह है। गुलाम ने मेरी बात अनसुनी कर दी और चल दिया। मैंने दौड़ कर उसे रोकने का प्रयत्न किया लेकिन उसने मुझे मारपीट कर भगा दिया और स्वयं एक ओर भाग गया। मैं फिर उसके पीछे लगा लेकिन इस बार उसे न पा सका। घंटों उसे ढूँढ़ने के बाद अभी वापस आया हूँ। आपको आते देखा तो इस डर से रोने लगा कि सेब न मिलने पर आप मेरी माँ से नाराज होंगे। मैं आपसे हाथ जोड़ कर कहता हूँ कि माँ से कुछ न कहिएगा, वह कुछ नहीं जानती। यह कह कर लड़का फूट-फूट कर रोने लगा।
'यह सुन कर मेरे तो जैसे प्राण ही निकल गए। मैंने अपनी सती-साध्वी पत्नी को झूठे संदेह पर मार डाला था। मैं दुख और पश्चात्ताप के कारण अचेत हो गया। जब

सचेत हुआ तो मैंने लड़के से कोठरी में जा कर सो जाने को कहा और स्वयं एक एकांत स्थान पर बैठ कर दुख में निमग्न हो गया। मैं कभी सिर पीटता कभी आँसू बहाता। मैं अपने को लाख बार धिक्कारता कि मूर्ख, तेरी बुद्धि क्या बिल्कुल भ्रष्ट हो गई थी कि तूने अपनी सुशीला और पतिव्रता पत्नी को एक अनजान हब्शी गुलाम की बात पर विश्वास करके मार डाला और इतना भी धैर्य न दिखाया कि इस बारे में पूछताछ कर लेता।
'मैं इसी शोक और पश्चात्ताप की दशा में बैठा था कि उसी समय मेरा चचा अपनी पुत्री के स्वास्थ्य का हाल जानने के लिए आया। मैंने उसे पूरा हाल बताया। उसने अपनी पुत्री की हत्या के बारे में मुझ से कहा-सुनी या लानत-मलामत नहीं की बल्कि इसे विधि का विधान समझ कर केवल शोकाकुल हो गया और रोने पीटने लगा। मैं भी इसके साथ रोने-पीटने लगा। लेकिन रोने-पीटने से क्या होना था, मेरी पत्नी और इनकी पुत्री तो अब दुनिया में नहीं रही। मैं तब से अत्यंत शोक संतप्त हूँ और किसी प्रकार चैन नहीं पा रहा हूँ। मैंने सारा हाल सच्चा- सच्चा आपके आगे रख दिया। अब आप आज्ञा दें कि मुझे फाँसी पर चढ़ाया जाए।' खलीफा को सारा वृत्तांत बड़ा आश्चर्यजनक लगा। किंतु जब बूढ़े आदमी ने भी इस बात की पुष्टि की तो उसने कहा, 'अगर कोई व्यक्ति अनजाने अपराध करे तो वह मेरी और भगवान की दृष्टि में क्षमा योग्य हैं। मैं इस आदमी की सत्यप्रियता और न्यायप्रियता से भी प्रसन्न हूँ कि इसने निरपराधों को मृत्यु से बचाने के लिए स्वयं मृत्यु का आह्वान किया और अपना अपराध स्वीकार किया। मृत्यु दंड का भागी वह गुलाम है जिसके झूठ के कारण ऐसी दुखद घटना हुई। मंत्री महोदय, तुम अभी अपने को मुक्त न समझो। तुम्हें तीन दिन के अंदर उस दुष्टात्मा को खोज लाना है जिसके कारण यह सब हुआ। तीन दिन में ऐसा न कर सके तो तुम्हें फाँसी पर चढ़ना पड़ेगा।'
मंत्री ने सोचा कि एक बार मौत से छुटकारा मिला तो वह दुबारा पीछे पड़ गई। वह रोता-पीटता घर आया। उसे विश्वास था कि अबकी बार जान नहीं बच सकती क्योंकि लाखों गुलाम बगदाद में हैं, अभियुक्त गुलाम कैसे मिलेगा। फिर उसने सोचा कि परमात्मा की दया से निराश न होना चाहिए। जिस प्रकार अकस्मात ही उसने अनजान स्त्री के हत्यारे को प्रकट दिया वैसे ही संभव है कि इस बार भी जान बच जाए।
किंतु इस बार भी निश्चित अवधि में वांछित गुलाम नहीं मिला। मंत्री जाफर फाँसी पर चढ़ाने के लिए बुलाया गया। उसके संबंधी उससे मिल कर रोने लगे।

मंत्री की बच्चे खिलानेवाली सेविका मंत्री की एक पाँच-छह बरस की बेटी को लाई। वह इस बच्ची को बहुत प्यार करता था।
मंत्री ने उन सिपाहियों से कहा कि मैं चलने के पहले अपनी इस बच्ची को प्यार कर लूँ। उन्होंने अनुमति दे दी। मंत्री ने जब बच्ची को उठा कर अपने सीने से लगाया तो उसके सीने में रखी हुई कोई चीज अड़ी। मंत्री ने बच्ची के सीने के ऊपर देखा तो एक बँधी हुई गोल चीज महसूस हुई। मंत्री के पूछने पर बच्ची ने बताया कि यह सेब है जिस पर शाही बाग की मुहर लगी हुई है।
यह पूछने पर कि यह तुम्हारे पास कहाँ से आया बच्ची ने कहा कि मेरा हब्शी गुलाम, जिसका नाम रैहान है, लाया था और मैंने उससे चार सिक्कों में इसे खरीदा है। मंत्री ने सेब को खोल कर देखा और उस पर शाही बाग की मुहर पाई तो गुलाम से डाँट कर पूछा कि तुझे यह सेब कहाँ से मिला, क्या तूने मेरे बादशाह के महल में चोरी की है? गुलाम ने हाथ जोड़ कर कहा, 'मैंने इसे न आपके यहाँ से चुराया है न शाही महल से। मैं आपको सच्ची बात बता रहा हूँ। कुछ दिन पहले मैं एक गली से निकला जहाँ एक घर के सामने तीन-चार बच्चे खेल रहे थे। उनमें सब से बड़े लड़के के हाथ में यह सेब था। मैंने उससे छीन लिया। वह रोता हुआ मेरे पीछे भागा और कहने लगा कि यह सेब मेरे पिता मेरी बीमार माता के लिए बहुत दूर से लाए हैं, मैं इसे माता से बगैर पूछे उठा लाया हूँ, तुम इसे दे दो। लेकिन मैंने सेब नहीं दिया और ला कर आपकी बेटी के हाथ चार सिक्कों में बेच दिया।'
मंत्री को बड़ा आश्चर्य हुआ कि सेब का चोर उसके घर ही का गुलाम है। चुनाँचे चुनाँचे वह अपने साथ उस गुलाम को ले गया और सिपाहियों से कहा कि मुझे खलीफा के पास ले चलो। खलीफा के सामने जा कर उसने गुलाम को खलीफा के सामने खड़ा कर दिया। खलीफा के पूछने पर गुलाम ने वही कहानी दुहराई। खलीफा को यह अजीब किस्सा सुन कर हँसी आई किंतु उसकी अपराधी को मृत्युदंड देने की इच्छा बनी हुई थी। उसने मंत्री से कहा, 'सारी दुखद घटना तुम्हारे गुलाम के कारण हुई इसलिए यही मृत्युदंड का भागी है। इसे फाँसी पर चढ़ाओ ताकि लोगों को शिक्षा मिले।'
मंत्री ने कहा कि आपका आदेश उचित है। यह अभागा इसी योग्य है। किंतु यह हमारा पुराना गुलाम है। मैं आपको मिस्र के बादशाह के मंत्रियों नूरुद्दीन अली और बदरुद्दीन हसन की कहानी सुनाना चाहता हूँ। यदि इससे आपका मनोरंजन

हो तो उसके बदले में कृपया गुलाम को इतना बड़ा दंड देने का आदेश वापस ले लें। खलीफा ने कहानी सुनाने को कहा।

नसरूदिन अली और बदरुद्दीन हसन की कहानी

मंत्री जाफर ने कहा कि पहले जमाने में मिस्र देश में एक बड़ा प्रतापी और न्यायप्रिय बादशाह था। वह इतना शक्तिशाली था कि आस-पड़ोस के राजा उससे डरते थे। उसका मंत्री बड़ा शासन- कुशल, न्यायप्रिय और काव्य आदि कई कलाओं और विधाओं में पारंगत था। मंत्री के दो सुंदर पुत्र थे जो उसी की भाँति गुणवान थे। बड़े का नाम शम्सुद्दीन मुहम्मद था और छोटे का नूरुद्दीन अली। जब मंत्री का देहांत हुआ तो बादशाह ने उसके दोनों पुत्रों को बुला कर कहा कि तुम्हारे पिता के मरने से मुझे भी बड़ा दुख है, अब मैं तुम दोनों को उनकी जगह नियुक्त करता हूँ, तुम मिल कर मंत्रिपद सँभालो। दोनों ने सिर झुका कर उसका आदेश माना। एक मास पर्यंत अपने पिता का शोक करने के बाद दोनों राज दरबार में गए। दोनों मिल कर काम करते थे। जब बादशाह आखेट के लिए जाता तो बारी-बारी से हर एक को अपने साथ ले जाता तो और दूसरा राजधानी में रह कर शासन कार्य को देखता।
एक शाम को, जब दूसरी सुबह को बड़ा भाई बादशाह के साथ शिकार पर जानेवाला था, दोनों भाई आमोद-प्रमोद कर रहे थे। हँसी-हँसी में बड़े भाई ने कहा कि हम दोनों एक मत हो कर इतना बड़ा राज्य चलाते हैं, हम क्यों न ऐसा करें कि एक ही दिन संभ्रांत परिवारों की सुशील कन्याओं से विवाह करें, तुम्हारी क्या राय है? छोटे ने कहा कि मैं आपकी आज्ञा से बाहर नहीं हूँ, जैसा आप कहेंगे वैसा ही होगा।
दोनों को मद्यपान से नशा भी आ रहा था। बड़े भाई ने कहा, 'सिर्फ एक रात में शादी होना ही काफी नहीं है। हमारी पत्नियों को भी एक ही रात में गर्भ रहना चाहिए।' छोटे ने हँस कर कहा कि वह भी हो जाएगा। फिर बड़े ने कहा कि हमारी संतानें भी एक ही दिन जन्में और तुम्हारे यहाँ पुत्र हो मेरे यहाँ पुत्री हो। छोटे ने कहा, बहुत अच्छी बात है। बड़े ने कहा कि जब तुम्हारा बेटा और मेरी बेटी बड़े हो जाएँ उनका विवाह भी कर दिया जाए क्योंकि शुरू से साथ-साथ

रहेंगे तो उन्हें एक-दूसरे से प्रेम हो ही जाएगा। छोटे भाई ने कहा, इससे अच्छी क्या बात हो सकती हैं कि मेरे बेटे के साथ आपकी बेटी की शादी हो। बड़े ने कहा, 'लेकिन एक शर्त है। मैं शादी में तुम से दहेज भरपूर लूँगा। इसमें नौ हजार अशर्फियाँ नकद, तीन गाँव और दुल्हन की सेवा के लिए तीन दासियाँ। छोटे ने मजाक को बढ़ाते हुए कहा, 'यह आप कैसी बातें कर रहे हैं? हम दोनों की पदवी बराबर है। फिर लड़केवाला दहेज कहाँ देता है? वह तो दहेज लेता है। आपको चाहिए कि आप शादी में भरपूर दहेज मुझे दें, न कि मुझसे दहेज लें।'
यद्यापि मजाक ही हो रहा था किंतु बड़ा भाई अत्यंत क्रोधी स्वभाव का था। वह बिगड़ कर बोला, 'तुम समझते हो कि तुम्हारा बेटा मान-सम्मान में मेरी बेटी से अधिक होगा। मैं तो आशा करता था कि तुम मेरी बेटी की मान-प्रतिष्ठा करोगे, लेकिन मालूम होता है तुम उसका बड़ा अपमान करोगे।' दोनों भाई नशे में थे। यह बेकार बहस थी क्योंकि शादी किसी की नहीं हुई थी और संभावित पुत्र और पुत्री के विवाह के दहेज का झगड़ा हो रहा था। लेकिन बहस बढ़ती ही गई और हास-परिहास से गंभीर रूप ले बैठी।
अंत में बड़े ने कहा, 'सवेरा होने दे। मैं तुझे बादशाह के सामने ले जा कर दंड दिलाऊँगा, तब तुझे मालूम होगा कि बड़े भाई से गुस्ताखी करने का क्या फल होता है।' यह कह कर वह अपने शयन कक्ष में चला गया। छोटा भी अपने कमरे में आ कर अपने पलंग पर लेट गया। किंतु उसे रात भर नींद न आई। वह गुस्से में जलता- भुनता रहा और सोचता रहा कि यह भाई जो मजाक की बात पर भी इस तरह बात करता है कोई गंभीर बात पैदा होने पर क्या करेगा।
दूसरे दिन सुबह शम्सुद्दीन मुहम्मद तो बादशाह के साथ शिकार पर चला गया और इधर छोटे भाई ने बहुत-से रत्नाभूषण आदि एक मजबूत खच्चर पर लादे, बहुत-सा खाने-पीने का समान रखा और शहर छोड़ कर चल दिया। सेवकों से कह दिया कि दो-एक दिन के लिए जा रहा हूँ। वह अरब देश की राह पर चल पड़ा। बहुत दिन की कष्टप्रद यात्रा के बाद उसका खच्चर बीमार हुआ और मर गया। वह बेचारा अपना सामान कंधे पर रख कर पैदल ही चलने लगा। हसना नामी शहर से वह बसरा की ओर बढ़ रहा था कि उसे एक घुड़सवार उसी तरफ जाता हुआ मिला। घुड़सवार को उस पर दया आई और उसने नूरुद्दीन अली को अपने पीछे घोड़े पर बिठा लिया और बसरा तक पहुँचा दिया। बसरा पहुँच कर नूरुद्दीन अली ने उसे बहुत धन्यवाद दिया।

बसरा नगर में नूरुद्दीन अली ने देखा कि एक बड़ी सड़क पर भीड़ सड़क के दोनों ओर खड़ी हुई है। वह भी वहीं खड़ा हो गया। कुछ ही देर में एक अमीराना सवारी आई जिसके साथ बहुत से नौकर-चाकर थे। जिस भव्य व्यक्तित्ववाले आदमी की सवारी निकल रही थी उसे लोग झुक-झुक कर सलाम कर रहे थे। वह उस राज्य का मंत्री था। नूरुद्दीन अली के सलाम करने पर मंत्री ने उसे देखा और उसके विदेशी परिधान और उसके चेहरे पर उच्च वंशीयता की छाप देख कर उससे पूछा कि तुम कौन हो, कहाँ से आ रहे हो। नूरुद्दीन अली ने कहा, 'सरकार, मैं मिस्र देश के काहिरा नगर का निवासी हूँ। अपने संबंधियों से मेरा झगड़ा हो गया है इसीलिए देश-देश घूम रहा हूँ।' मंत्री ने कहा, 'इस यायावरी में तुम बहुत दुख उठाआगे। मेरे साथ चलो बड़े आराम से रहोगे।'
अतएव नूरुद्दीन अली मंत्री के साथ रहने लगा। मंत्री उसकी विद्या-बुद्धि देख कर बहुत प्रसन्न हुआ। एक दिन मंत्री ने एकांत में उससे कहा 'बेटे, अब मैं बहुत बूढ़ा हो गया हूँ, अब मुझे अधिक दिनों तक जीने की आशा नहीं है। मेरी संतान केवल एक बेटी है जो बड़ी रूपवती है। वह अब विवाह योग्य है। कई सामंत और धनी-मानी व्यक्ति उससे विवाह करना चाहते हैं। किंतु मैंने यह स्वीकार नहीं किया। मुझे वह बेटी बहुत ही प्रिय है। मैं समझता हूँ कि वह तुम्हारे योग्य है। अगर तुम्हें कोई आपत्ति नहीं तो मैं तुम्हारे साथ उसका विवाह बादशाह से अनुमति ले कर कर दूँ और साथ ही मंत्री पद के लिए तुम्हें अपना उत्तराधिकारी बनाऊँ और सारी संपत्ति भी तुम्हारे नाम कर दूँ।'
नूरुद्दीन अली ने कहा, 'मैं आपको अपना बुजुर्ग मानता हूँ, जो कुछ आपका आदेश होगा मैं वैसा ही करूँगा।' मंत्री ने उसकी स्वीकृति पाई तो बहुत खुश हुआ। उसने विवाह की तैयारियाँ शुरू कर दी और नगर निवासियों में से खास-खास लोगों को यह बात बताने के लिए बुलाया। जब सब लोग एकत्र हुए तो नूरुद्दीन अली ने अलग ले जा कर मंत्री से कहा, 'मैंने अपने कुटुंब के बारे में अभी तक किसी को कुछ नहीं बताया। अब यह बताता हूँ। मेरे पिता मिस्र के बादशाह के मंत्री थे।
'हम दो भाई हैं। दूसरा भाई मुझसे बड़ा है। मेरे पिता की मृत्यु के उपरांत बादशाह ने हम दोनों भाइयों को उनका कार्य भार दे दिया। हम कुछ समय तक शासन कार्य विधिपूर्वक करते रहे। एक दिन मेरी अपने बड़े भाई के साथ एक बात पर बहस हो गई। उसने मुझसे ऐसे कटु शब्द कहे कि मैंने देश छोड़ दिया।'

मंत्री ने जब यह वृत्तांत सुना तो और भी प्रसन्न हुआ। उसने सोचा कि यह तो बहुत अच्छी बात है कि यह भी मंत्री का बेटा निकला। उसने एकत्र हुए नागरिकों से कहा, 'मैं एक बात में आपकी सलाह लेना चाहता हूँ। मेरा एक भाई मिस्र के बादशाह का मंत्री है। उसके केवल एक पुत्र है। उसने मिस्र में अपने बेटे का विवाह न करना चाहा और उसे यहाँ मेरे पास भेज दिया ताकि मैं उसका विवाह करके उसे अपने पास रखूँ। आप क्या कहते हैं? सभी ने एक स्वर से कहा कि बहुत ही अच्छी बात है, भगवान वर-वधू को चिरायु करे। मंत्री ने सब लोगों को भोजन कराया और रस्मी तौर पर शादी की मिठाई बाँटी। काजी ने आ कर विवाह संपन्न किया। फिर सब लोग मंत्री के घर से विदा हो गए।
मंत्री ने सेवकों को आज्ञा दी कि नूरुद्दीन को स्नान कराओ। स्नान के बाद नूरुद्दीन अपने मामूली कपड़े ही पहनना चाहता था किंतु मंत्री के सेवकों ने उसे वे रत्नजड़ित मूल्यवान वस्त्र पहनाए जो मंत्री ने इस अवसर के लिए भेजे थे। उसके शरीर और वस्त्रों पर नाना प्रकार की सुगंध भी लगाई और उसका अन्य साज-श्रृंगार किया। फिर नूरुद्दीन अली अपने श्वसुर यानी मंत्री के पास गया। मंत्री उसे देख कर प्रसन्न हुआ, प्यार से उसे अपने पास बिठाया। फिर उसने पूछा, 'तुम मिस्र के मंत्री के बेटे हो। फिर भी तुमने परदेश में रहना पसंद किया। ऐसी क्या बात हो गई थी कि तुम दोनों भाइयों की ऐसी ठनी कि तुम्हें देश छोड़ने का निर्णय लेना पड़ा। अब तुम मेरे दामाद हो। हम एक हो गए हैं। अब तुम्हें मुझसे कोई भेद छुपाना नहीं चाहिए। तुम साफ बताओ कि घर क्यों छोड़ा।'
नूरुद्दीन अली ने उसे सविस्तार बताया कि किस तरह हँसी हँसी में पैदा हुई एक बात कटु विवाद का रूप ले बैठी। मंत्री यह वृत्तांत सुन कर बहुत हँसा और बोला, 'सिर्फ इतनी-सी बात पर तुम अपने भाई से अलग हो गए और अपना देश छोड़ बैठे? बेकार बात थी कि तुम्हारा और तुम्हारे भाई का एक साथ विवाह होता, एक साथ संतानें होतीं; तुम्हारे यहाँ पुत्र और उसके यहाँ पुत्री होती और उनके विवाह में दहेज का प्रश्न उठता। लेकिन हाँ, तुम्हारे भाई की ज्यादती थी कि हँसी-हँसी में होनेवाली बात को खींच कर इतना कटु बना दिया। तुम्हारा देशत्याग समझदारी की बात तो नहीं थी किंतु मेरे सौभाग्य से यह सब हो गया। खैर, अब यहाँ समय न लगाओ। अपनी दुल्हन के पास जाओ। वह तुम्हारी प्रतीक्षा कर रही है।' नूरुद्दीन अली उसकी आज्ञा मान कर अपनी पत्नी के पास चला गया।

वह कब्र पर जा कर बैठा ही था कि उसकी एक यहूदी व्यापारी से भेंट हुई। यहूदी ने बदरुद्दीन को पहचाना और कहा कि आप यहाँ रात में कैसे आए। बदरुद्दीन ने कहा कि मैंने स्वप्न में अपने पिता को देखा था जो नाराज हो कर मुझ से कह रहे थे कि तू मुझे बिल्कुल भूल गया और मुझे दफन करने के बाद मेरी कब्र पर भी नहीं आया इसीलिए मैं परेशान हो कर तुरंत ही घर से चल पड़ा और यहाँ पहुँच गया। इसीलिए मैंने कोई सेवक आदि भी अपने साथ नहीं लिया।
यहूदी को उसकी बात पर विश्वास न हुआ और वह समझ गया कि बदरुद्दीन पर कोई मुसीबत आई है। उसने कहा, 'आपको शायद नहीं मालूम कि आपके पिता ने व्यापार में भी पैसा लगाया था। कई जहाजों पर उनका हजारों दीनार का माल लदा हुआ है और वे जहाज व्यापार यात्राओं पर हैं। आपके पिता मुझ पर बड़े कृपालु थे और मैं अपने को उनका सेवक समझता था। अब उस माल के मालिक आप हैं। चाहें तो अपने पहले जहाज के माल को मेरे हाथ बेच दें मैं उसे छह हजार मुद्राओं से खरीदने के लिए तैयार हूँ।'
बदरुद्दीन के पास तो कानी कौड़ी न थी। उसने इन मुद्राओं को भगवान की देन समझा और सौदा मंजूर कर लिया। यहूदी ने कहा 'अच्छी तरह सोच लीजिए, छह हजार मुद्राएँ दे कर मैं आपके पहले जहाज के माल का स्वामी हो जाऊँगा चाहे माल कितने ही का हो। क्या आप यह सौदा पूरी रजामंदी से कर रहे हैं?' बदरुद्दीन ने कहा, हाँ मैं पूरी रजामंदी से माल बेच रहा हूँ। यहूदी ने कहा, 'मालिक, मैं आपके ऊपर पूरा विश्वास करता हूँ किंतु दूसरों को दिखाने के लिए जरूरी है कि आप यह क्रय पत्र लिखित रूप में मुझे दें।' यह कह कर उसने कमर से बँधा हुआ कलमदान निकाला। बदरुद्दीन ने लिख कर दे दिया,' मैं बसरा पहुँचनेवाले अपने पहले जहाज का माल इसहाक यहूदी के हाथ छह हजार मुद्राओं में बेचता हूँ।' यह लिख कर नीचे हस्ताक्षर कर दिए। यहूदी ने वह कागज लिया और बदरुद्दीन को छह हजार मुद्राओं की थैली दे कर चला गया।
बदरुद्दीन अब अपने पिता की कब्र से लिपट कर अपने दुर्भाग्य पर रोने लगा और बहुत देर तक रोता रहा। यहाँ तक कि रोते-रोते सो गया। इसी अरसे में एक जिन्न उधर घूमता-फिरता आ निकला। बदरुद्दीन का सुंदर रूप देख कर उसे बड़ा आश्चर्य हुआ, उसने इतना सुंदर कोई मनुष्य नहीं देखा था। उसे देर तक देखने के बाद वह आकाश में पहुँचा। परी से उससे कहा कि 'जमीन पर मेरे साथ चलो। मैं वहाँ पर एक कब्रिस्तान में एक कब्र पर रोता हुआ ऐसा आदमी दिखाऊँगा जिसकी सुंदरता पर तुम भी मोहित हो जाओगी।' परी ने स्वीकार किया। दोनों जमीन पर आए और जिन्न

ने सोते हुए बदरुद्दीन की ओर उँगली उठा कर कहा, 'ऐसा सुंदर मनुष्य कहीं देखा है?'
परी ने बदरूद्दीन को गौर से देखा और बोली, 'वास्तव में यह अत्यंत रूपवान है किंतु मैं काहिरा में जो मिस्र की राजधानी है एक विचित्र बात देख कर आई हूँ। यदि तुम उसे जानना चाहो तो बताऊँ।' जिन्न ने कहा, जरूर बताओ। परी बोली, मिस्र के बादशाह का एक मंत्री है जिसका नाम शम्सुद्दीन मुहम्मद है। उसकी एक बीस बरस की पुत्री है जो अतीव सुंदरी है। बादशाह ने उसके रूप की प्रशंसा सुन कर मंत्री से कहा कि उस कन्या का विवाह मेरे साथ कर दो।
मंत्री ने हाथ जोड़ कर कहा कि महाराज, मुझे इस अनुग्रह से क्षमा करें। कारण पूछने पर उसने कहा कि मेरा छोटा भाई नूरुद्दीन अली भी मेरे साथ आपका मंत्री था, वह बहुत दिन हुए घर छोड़ कर चला गया। सुना है कि वह बसरा का मंत्री हो गया था। और अब जीवित भी नहीं है। लेकिन उसके यहाँ एक बेटा हुआ था जो अब भी होगा। फिर मंत्री ने बादशाह को एक तकरार बताई जो उसके और उसके भाई के बीच हुई थी और कहा कि चूँकि मैंने भाई को वचन दे दिया था कि अपनी पुत्री का विवाह उसके पुत्र के साथ करूँगा इसलिए मैं मजबूर हँ और आपकी आज्ञा का पालन नहीं कर सकूँगा। आपके लिए तो काहिरा में अमीरों की अनगिनत सुंदरी कन्याएँ हैं, जिससे चाहे विवाह करें।
बादशाह मंत्री की बात सुन कर अत्यंत क्रुद्ध हुआ। उसने कहा कि तुम मुझे इतना छोटा समझते हो कि मेरे साथ रिश्तेदारी भी न करो, मैं तुम्हें इस गुस्ताखी की ऐसी सजा दूँगा कि तुम्हें हमेशा याद रहे। अब तुम्हारी कन्या एक बदसूरत गुलाम से ब्याही जाएगी। यह कह कर बादशाह ने घुड़साल में काम करनेवाले एक महाकुरूप कुबड़े हब्शी गुलाम को दूल्हे की तरह सजाने का आदेश दिया। इस गुलाम का पेट भी बहुत बड़ा था और पाँव भी टेढ़े थे। उसने मंत्री से कहा कि जाओ, अपनी पुत्री के उस गुलाम के साथ विवाह करने की तैयारी करो। मंत्री बेचारा अत्यंत दुखी मन से अपने भवन में आया। बादशाह की आज्ञा टाली नहीं जा सकती थी इसलिए उसने विवाह की तैयारियों का आदेश दिया। रात को काहिरा में गुलामों ने बरात सजाई और कुबड़े गुलाम को हम्माम में भेजा और खुद हम्माम के द्वार पर एकत्र हो गए। कुबड़े और बदसूरत गुलाम को नहला-धुला कर अच्छे कपड़े पहनाए गए। उसी समय जिन्न से परी ने कहा, 'कुरूप गुलाम को शादी के कपड़े पहनाए गए हैं और इस समय उसका दूल्हे की तरह श्रृंगार किया जा

रहा है। कितने दुख की बात है कि मंत्री की इतनी सुंदर कन्या इतने कुरूप गुलाम की पत्नी बने।'
यह सुन कर जिन्न बोला, 'अगर हम लोग कुछ ऐसा करें कि उस कन्या का विवाह इस सुंदर युवक से हो जाए तो कैसा रहे?' परी ने कहा, 'मैं तो दिल से चाहती हूँ कि कुछ ऐसा किया जाए कि बादशाह का अन्याय घटित न हो सके, गुलाम को धोखा दे कर उसकी जगह इस युवक को बिठा दिया जाए। इससे बादशाह को भी उनके अनुचित क्रोध का फल मिल जाएगा और मंत्री और उसकी पुत्री का भी गुलाम के साथ रिश्तेदारी करने के अपमान से बचाव हो जाएगा।'
जिन्न ने परी से कहा कि अगर तुम मेरी सहायता करो तो यह काम हो सकता है। मैं इसके जागने के पहिले ही इसे उठा कर काहिरा में पहुँचा दूँगा। चुनाँचे जिन् न और परी एक क्षण ही में बदरुद्दीन हसन को उठा कर काहिरा में हम्माम के पास ले गए।
बदरुद्दीन की आँख खुली तो वह स्वयं को नई जगह पा कर बहुत घबराया और चीत्कार करने ही वाला था कि जिन्न ने उसके कंधे पर हाथ रख कर उससे चुप रहने के लिए कहा। फिर उसे समझाया, 'मैं तुम्हें एक मशाल देता हूँ, उसे ले कर शादी के जुलूस में सम्मिलित हो जाओ, मंत्री के मकान में निडर हो कर चले जाओ और अंदर जा कर कुबड़े के दाहिनी ओर बैठ जाना, इसके पहले गाने-बजानेवालों को जो बरात के साथ होंगे खूब इनाम देना और अंदर जा कर दुल्हन की बंदियों को भी मुट्ठी भर कर सिक्के देना, यह खयाल मत करना कि तुम्हारी थैली खाली हो जाएगी। तुम किसी से न डरना और मेरे बताए पर काम करते जाना।'
अतएव बदरुद्दीन मशाल ले कर भीड़ में शामिल हो गया। कुछ देर में दूल्हा बना गुलाम भी हम्माम से बाहर निकला और शाही घोड़े पर बैठ कर दुल्हन के घर की ओर चला। बदरुद्दीन ने गाने-बजानेवालों को मुट्ठी भर-भर कर रुपए दिए, वे इससे बड़े प्रसन्न हुए। बरात मंत्री के द्वार पर पहुँची तो द्वारपाल ने बरातियों को बाहर रोक दिया। गाने-बजानेवालों को तो अंदर जाना ही था, उन् होंने इस खुले हाथवाले बराती यानी बदरुद्दीन के भी अंदर जाने की अनुमति द्वारपाल से लड़ झगड़ कर दिलवा दी और कहा कि यह गुलाम नहीं, उच्च वर्ग का परदेशी है। उन्होंने उसके हाथ से मशाल भी ले ली और उसे दूल्हे की दाहिनी ओर बिठा दिया, दूल्हे की बाईं ओर दुल्हन बैठी थी। दुल्हन यद्यपि अतीव सुंदरी थी किंतु कुरूप गुलाम से ब्याही जाने पर अत्यधिक शोक संतप्त और मुरझाई हुई थी।

लगी और अंगारे जैसी लाल आँखों से देखने लगी। साथ ही उसने अपना आकार बढ़ाना शुरू किया और गधे जितनी हो गई।
अब कुबड़ा घबड़ाया और भागने को तैयार हुआ। बिल्ली ने और आकार बढ़ाया और भैंस जैसी हो गई और गरज कर बोली, 'ठहर कमीने, तू जा कहाँ रहा है। तेरा अंत निकट है।'
कुबड़ा गुलाम डर के मारे जमीन पर गिर पड़ा। उसने कपड़ों से मुँह छिपा लिया और कहा, 'भैंसे जी महाराज, मुझसे क्या कसूर हुआ है?' भैंसा बना हुआ जिन्न बोला, तेरा यह साहस कि मेरी प्रेयसी से विवाह रचाए? कुबड़े ने कहा, 'मालिक, मुझे क्षमा करें, मुझे मालूम नहीं था कि मंत्री की कन्या आपकी प्रेमिका है।' भैंसा बोला, 'अच्छा तेरी जान नहीं लूँगा लेकिन जैसा कहूँ वैसा कर। तू इसी तरह आँखें बंद करके रात भर यहाँ रह और जब सवेरा हो जाय तो भाग जाना, इधर मुड़ कर भी नहीं देखना वरना मैं सींगों से तेरा पेट फाड़ डालूँगा।' वह भैंसा मनुष्य के रूप में आ गया। उसने कुबड़े को सिर के बल दीवार के सहारे खड़ा कर दिया और कहा, 'अगर तुमने रात में कभी हिलने-डुलने की कोशिश की तो तुझे इसी दीवार से रगड़ कर खत्म कर दूँगा।' फिर परी और जिन्न वहाँ से चले गए।
इधर बदरुद्दीन हँसी-खुशी से दुल्हन के भवन पहुँचा। वहाँ एक वृद्धा परिचारका उसे देख कर बड़ी प्रसन्न हुई और बोली, 'बड़ा अच्छा हुआ कि कुबड़े की जगह तुम आए। अब तुम इस कमरे में जाओ जहाँ दुल्हन तुम्हारी प्रतीक्षा में है। उसके साथ रात भर आनंद करना।' फिर वह बदरुद्दीन को कमरे में भेज कर बाहर से कमरा बंद करके चली गई।
मंत्री की पुत्री ने उससे पूछा कि तुम तो मेरे पति के साथी हो, यहाँ कैसे आए। बदरुद्दीन ने कहा, 'मैं तुम्हारे पति का साथी नहीं, स्वयं तुम्हारा पति हूँ।' बादशाह की आदत हँसी-मजाक करने की है इस लिए उसने कुबड़े की बारात सजाई थी किंतु वास्तव में उसने तुम्हारे साथ मेरी शादी करवाई है। उस कुबड़े से सभी हँसी-ठट्ठा करते हैं सो बादशाह ने भी किया। वह वापस घुड़साल में काम करने के लिए भेज दिया गया है। तुम इत्मीनान रखो, वह अब कभी तुम्हें सूरत नहीं दिखाएगा।'
मंत्री की पुत्री जो पहले बड़ी उदास थी अपने पति को देख कर बड़ी प्रसन्न हुई। वह कहने लगी, 'मैं तो दुख और चिंता के मारे मरी जा रही थी, ऐसे कुरूप

कुबड़े के साथ जीवन कैसे कटेगा। भगवान का लाख-लाख धन्यवाद है कि उसने मुझे कुबड़े से बचा कर तुम जैसा पति दिया है।'
यह कह कर वह बदरुद्दीन से लिपट गई। बदरुद्दीन भी उसके रूप और प्रेम को देख कर भावविभोर हो गया। उसने अपनी पगड़ी और थैली एक चौकी पर रखा और भारी पोशाक उतार दी। सोते समय पहननेवाली टोपी, एक मिर्जई और तंग मुहरी का पाजामा, ही उसके बदन पर रहा। ज्ञातव्य हो कि इतना खर्च करने पर भी उसकी थैली जिन्न के जादू के कारण भरी की भरी रही थी। शयन काल के वस्त्र पहन कर बदरुद्दीन अपनी दुल्हन को बगल में ले कर सो रहा।
रात में जिन्न और परी फिर आए। अब उन्हें शरारत सूझी। उन्होंने तय किया कि बदरुद्दीन को जैसे सोते में बसरा से काहिरा लाए थे वैसे ही कहीं और पहुँचा दिया जाय। चुनाँचे उन्होंने उसे उठा कर दमिश्क नगर की जामा मस्जिद के बाहर लिटा दिया। फिर दोनों वहाँ से चले गए।
सवेरे अजान की आवाज सुन कर दमिश्कवासी जब नमाज पढ़ने आए तो सीढ़ियों पर बदरुद्दीन को सोया देख कर ताज्जुब में पड़े कि यह कौन है और यहाँ क्यूँ सो रहा है। कोई कहता है कि रात में अपनी पत्नी से लड़-झगड़ कर आ गया है और इतना गुस्से में था कि रात के पहननेवाले कपड़े भी नहीं बदले। किसी ने कहा, यह बात नहीं है, यह रात को बहुत देर तक शराब पीता रहा है और घर का रास्ता भूल कर लड़खड़ाता हुआ यहाँ आया और गिर कर सो गया। इसी प्रकार वे लोग भाँति- भाँति की अटकलें लगाने लगे क्योंकि किसी को पता नहीं था कि वह कौन है और क् यों पड़ा है।
बदरुद्दीन कुछ तो सवेरे की ठंडी हवा से और कुछ चारों ओर घिरे लोगों की आवाज से जाग गया और अपने को अपरिचित जगह एक मस्जिद के सामने देख कर बड़े आश्चर्य में पड़ा और उसने लोगों से पूछा कि यह कौन-सी जगह है और मैं यहाँ कैसे आया। लोगों ने कहा, भाई, यह तो हम लोग भी सोच रहे हैं कि तू कौन है और यहाँ कैसे आया। तुझे तो यह भी नहीं मालूम है कि यह कौन-सी जगह है। यह दमिश्क का नगर है और यह यहाँ की जामा मस्जिद है।' बदरुद्दीन ने कहा, 'बड़े आश्चर्य की बात है कि कल रात मैं काहिरा में सोया था और आज सुबह दमिश्क में पहुँच गया।' उसकी बात सुन कर लोगों ने समझा कि यह पागल है और उसकी जवानी और खूबसूरती को देख कर उसके उन्मादग्रस्त होने पर खेद प्रकट करने लगे।
एक बुड्डे ने कहा, 'बेटे, तू क्या बातें कर रहा है। यह कैसे हो सकता है कि रात को तुम काहिरा में हो और सुबह दमिश्क पहुँच जाओ।' बदरुद्दीन ने कहा,

'मैं सच कहता हूँ, पिछली रात मैं काहिरा में था और उससे पिछली रात में बसरे में था।' यह सुन कर आसपास के लोग ठहाका मार कर हँसने लगे और शोरगुल करने लगे। वे कहने लगे, 'तुम बिल्कुल मूर्ख हो या फिर किसी गुप्त कारण से ऐसे बेसिरपैर की बातें कर रहे हो। बड़े ही खेद की बात है कि तुम जैसे भले-चंगे दिखनेवाले आदमी की मानसिक दशा विछिप्त-सी हो जाए।' एक आदमी ने कहा, 'तुम खुद ही बताओ यह कैसे संभव है कि कोई रात को काहिरा में सोए और सुबह दमिश्क में जागे। मालूम होता है तुमने सपना देखा है और अभी तक ठीक तरह से जागे नहीं हो, उसी सपनों की दुनिया में खोए हो।'
बदरुद्दीन हसन ने कहा, 'मैं बिल्कुल ठीक कहता हूँ। कल रात को काहिरा में मेरा विवाह हुआ था।' लोग और हँसे और कहने लगे कि यह वाकई अभी तक सपना देख रहा है। बदरुद्दीन बोला, 'नहीं, सच्ची बात है, सपना नहीं है। रात को मेरी दुल्हन ने सात रागों पर सात जोड़े बदले। उसका विवाह एक कुबड़े गुलाम से किया जा रहा था किंतु फिर मेरे साथ कर दिया गया। मैं अच्छे वस्त्र और भारी पगड़ी पहने था और मुद्राओं से भरी एक थैली भी मेरे पास थी। मालूम नहीं वे चीजें कौन ले गया और मुझे यहाँ छोड़ गया।'
बदरुद्दीन जितना अपनी बात पर जोर देता था उतना ही लोग हँसते और उसे पागल बताते थे। वह तंग आ कर एक ओर चला गया तो भीड़ उसके पीछे हो ली। सभी लोग चिल् ला रहे थे, 'पागल है।' उसके ऊपर पत्थर भी फेंके जाने लगे। बदरुद्दीन घबरा कर एक हलवाई की दुकान में घुस गया। यह हलवाई पहले पश्चिमी क्षेत्रों में लुटेरों का सरदार था और लूटमार से जीवन निर्वाह करता था। कुछ काल से वह इस निंद्य कर्म को छोड़ कर ईमानदारी से रोजी कमाने लगा था। वह बहुत परोपकारी और मिलनसार हो गया था और आम लोग उसके प्रशंसक थे फिर भी उसे क्रुद्ध करना कोई भी नहीं चाहता था क्योंकि उसका अतीत लोगों को मालूम था, उससे लोग भय भी खाते थे।
हववाई ने सब को डाँट-डपट कर भगा दिया और बदरुद्दीन से पूछा कि क्या बात है। उसने फिर अपना पूरा हाल बताया तो हलवाई ने कहा, 'तुम बड़े समझदार लगते हो लेकिन यह कहानी अब और किसी से न कहना वरना लोग तुम्हें पागल ही कर छोड़ेंगे। मेरे कोई संतान नहीं है। मैं तुम्हें गोद ले लूँगा और जब तुम मेरे दत्तक पुत्र बन जाओगे तो तुम्हें छेड़ने का किसी को साहस नहीं रहेगा।' बदरुद्दीन को अपने वर्ग से नीचे के आदमी का दत्तक पुत्र बनने के विचार से दुख तो हुआ लेकिन और कोई चारा भी नहीं था। इसलिए उसने हलवाई की

बात मान ली। हलवाई ने उसे अच्छे कपड़े पहनाए और मित्रों और संबंधियों को बुला कर गोद लेने की रस्म पूरी कर दी। काजी के सामने भी कार्यवाही हो गई। बदरुद्दीन ने हलवाई का काम सीखा और हसन हलवाई के नाम से मशहूर हो गया। उधर काहिरा में क्या हुआ यह भी सुनिए। मंत्री शम्सुद्दीन की पुत्री जब सवेरे सो कर उठी तो उसने अपने पति को अपने पास न पाया। वह समझी कि वह शौच आदि के लिए गया होगा और वह उसकी प्रतीक्षा करने लगी। इतने में मंत्री शम्सुद्दीन शोकाकुल दशा में वहाँ आया क्योंकि वह समझता था कि कुबड़ा गुलाम ही उसका दामाद हो गया है। उसने दुखी स्वर में अपनी पुत्री को पुकारा। उसने जब दरवाजा खोला तो बड़ी प्रसन्नबदन थी। मंत्री को आश्चर्य हुआ क्योंकि गुलाम की पत्नी होने पर उसे दुखी होना चाहिए था। उसने पूछा, तुम इतनी खुश कैसे हो, मैं तो सोचता था तुम रो रही होगी। लड़की बोली, 'पिताजी, मेरा विवाह कुरूप कुबड़े के साथ नहीं हुआ बल्कि एक अति रूपवान नवयुवक के साथ हुआ है।'
मंत्री ने कहा, 'तू क्या बकती है। वह कुबड़ा ही तेरा पति है और वही यहाँ सोया होगा।' पुत्री बोली, 'नहीं पिताजी, कुबड़ा जाए जहन्नम में। मेरा पति तो काली भवोंवाला और बड़ी-बड़ी आँखोंवाला सजीला जवान है। अभी वह शौच आदि के लिए गया है। वही इस कमरे में सोया था। अभी वापस आता होगा, आप स्वयं उसे देखेंगे।' मंत्री चक्कर में पड़ा कि यह सजीला जवान कहाँ से आ गया। वह उसे महल में ढूँढ़ने लगा लेकिन वह कहीं न मिला। हाँ, उसने एक कमरे में यह जरूर देखा कि कुबड़ा गुलाम सर के बल दीवार से सहारे खड़ा है।
मंत्री ने उससे पूछा कि तुम्हें इस प्रकार किसने खड़ा किया। कुबड़ा उसकी आवाज पहचान कर भी वैसे ही उल्टा खड़ा रहा और बोला, 'आपको मेरे साथ ऐसा क्रूर परिहास नहीं करना चाहिए था। आप जानते थे कि भैंसा बना हुआ जिन्न आपकी पुत्री का प्रेमी है तो मुझे दामाद बनाने के लिए क्यों कहा।' मंत्री ने कहा, 'तू पागल तो नहीं हो गया है कि ऐसी ऊटपटाँग बातें कर रहा है?' कुबड़े ने कहा, 'नहीं, मैं सच कह रहा हूँ। सुबह होने तक मैं हिल भी नहीं सकता वरना जिन्न मुझे मार डालेगा। आप जानना ही चाहते हैं तो सुनिए। रात को एक काली बिल्ली मुझे आ कर डराने लगी। मैंने उसे भगाया तो वह बड़ी होने लगी और कुछ देर में भैंसा बन गई। उसने बताया कि वह आप की पुत्री का प्रेमी है। उसने मुझे इस प्रकार खड़ा कर दिया और कहा कि सुबह से पहले अपनी जगह से हिले तो मार डालूँगा।'

रखीं बल्कि विवाह के समय प्रयुक्त सारे कमरों को वहाँ की हर चीज जैसी की तैसी रख कर ताला डलवा दिया। मंत्री की पुत्री को कुछ दिन बाद मालूम हुआ कि उसे गर्भ रह गया। नौ महीने बाद उसने एक पुत्र को जन्म दिया। वह पुत्र अत्यंत सुंदर था। उसके नाना ने उसकी सेवा के लिए बहुत-से नौकर-चाकर रखे। उसका नाम रखा गया अजब। जब अजब सात वर्ष का हुआ तो शम्सुद्दीन ने उसे एक अच् छे मकतब में भेजा जहाँ उसने अत्यंत विद्वान गुरुजनों से शिक्षा लेनी आरंभ की। उसके मकतब में जाने के समय भी दो सेवक उसके साथ रहा करते थे।
अजब को अपने ऐश्वर्य का बड़ा घमंड हो गया क्योंकि उसके सभी सहपाठी उससे सामाजिक और आर्थिक दृष्टि से निम्न स्तर के थे। इसलिए वह अक्सर उन्हें मारा-पीटा करता था और गालियाँ देता रहता था। वे इस बात से दुखी हुए और उन् होंने गुरु से शिकायत की। गुरु ने पहले तो उस से कहा कि बड़े घर का लड़का है, उसकी बातें सह लिया करो, लेकिन जब अजब की ज्यादतियाँ सीमा से बाहर हो गईं और उसने गुरु के समझाने-बुझाने पर भी ध्यान न दिया तो गुरु ने लड़कों से कहा, 'मैं तुम्हें एक उपाय बताता हूँ। तुम सब लोग एक नया खेल शुरू करो जिसमें हर लड़का अपने माता-पिता का नाम बताए। अजब अपने पिता का नाम न बता सकेगा और तुम्हारे साथ खेलना छोड़ देगा।'
लड़कों ने ऐसा ही किया। दूसरे दिन मैदान में इकट्ठे हो कर कहा कि हम नया खेल आरंभ करते हैं जिसमें हर लड़का अपने माँ-बाप का नाम बताएगा। जो न बता सकेगा वह खेल से अलग कर दिया जाएगा। अतएव सभी लड़कों ने एक-एक करके अपने माता-पिता का नाम बताना शुरू किया।
जब अजब की बारी आई तो उसने कहा, 'मेरा नाम अजब है। मेरी माँ का नाम हसना है और मेरे पिता का नाम शम्सुद्दीन मुहम्मद है। मेरा पिता मिस्र के बादशाह का मंत्री है।'
यह सुन कर सब लड़के कह उठे कि यह तू क्या कहता है, तेरे पिता शम्सुद्दीन नहीं हैं। अजब ने उन्हें डपट कर पूछा 'क्यों? मेरे पिता शम्सुद्दीन मुहम् मद क्यों नहीं है।' लड़के ठहाका मार कर हँसे और बोले, 'शम्सुद्दीन तेरा पिता नहीं तेरी, माँ का पिता यानी तेरा नाना है। तू अपने बाप का नाम नहीं बता सका। हम तेरे साथ नहीं खेलेंगे।' और वे सब उसे अकेला छोड़ कर चले गए। उसने जा कर गुरु से कहा कि लड़के यह झूठ कहते हैं कि शम्सुद्दीन मेरा पिता नहीं है। गुरु ने कहा, 'बेटा, वे ठीक कहते हैं। तेरे पिता का नाम तो मुझे भी नहीं मालूम। शम्सुद्दीन तो वास्तव में तेरा नाना है। बादशाह ने क्रुद्ध

बदरुद्दीन ने कहा कि मैं तुम्हारे पीछे नहीं लगा हूँ। मुझे उधर कुछ काम है।
अजब ने भी अपने सेवक से कहा कि वह अपने काम से जा रहा है, इसे जाने दो, तुम किसी को कहीं आने-जाने से कैसे रोक सकते हो। लेकिन जब अजब अपने खेमे के पास पहुँचा और उसने मुड़ कर देखा तो बदरुद्दीन को कुछ पीछे चलते पाया। अब वह डरा कि नाना को मालूम होगा कि मैंने इस हलवाई की मलाई खाई है तो वे नाराज होंगे। उसने घबराहट में एक पत्थर उठाया और खींच कर बदरुद्दीन की ओर फेंका और जल्दी से अपने खेमे में घुस गया।
अजब का फेंका हुआ पत्थर बदरुद्दीन के माथे पर लगा और उसका माथा लहूलुहान हो गया। उसे बड़ा पश्चात्ताप हुआ कि मैं तो अपना काम-काज छोड़ कर इस लड़के के प्रेम में यहाँ तक आया और उसे मेरा कोई न ख्याल हुआ बल्कि पत्थर मार कर उसने मुझे घायल कर दिया। उसने अपनी दुकान पर आ कर घाव की मरहम-पट्टी की और अपने मामूली काम काज में लग गया।
इधर शम्सुद्दीन तीन दिन दमिश्क में दामाद को खोजने के बाद कई प्रमुख नगरों में गया। इनमें हलब, नारदीन, मोसल, सरवर आदि शामिल थे। अंत में वह बसरा पहुँचा और वहाँ के बादशाह से भेंट की। बादशाह ने उसका बड़ा आदर-सत्कार किया और पूछा कि तुम यहाँ कैसे आए। शम्सुद्दीन ने कहा कि मैं अपने भाई नूरुद्दीन अली के पुत्र बदरुद्दीन हसन को ढूँढ़ने निकला हूँ, आप कुछ उसके बारे में जानते हों तो कृपा करके मुझे बताएँ।
बादशाह ने कहा, 'नूरुद्दीन मेरा मंत्री था। बहुत दिन हुए उसका देहांत हो गया और उसका पुत्र बदरुद्दीन भी बाप के मरने के दो महीने बाद कहीं गायब हो गया। मैंने उसकी बहुत खोज कराई किंतु उसका कहीं पता नहीं चला। किंतु उसकी माँ यानी हमारे मंत्री की पत्नी अभी तक जीवित है।'
शम्सुद्दीन बादशाह से विदा ले कर अपनी भावज के निवास स्थान की ओर चला। दूसरे दिन उसने अपनी पुत्री और दौहित्र के साथ उसके महल में प्रवेश किया। एक नाम पट्टिका पर अपने भाई का नाम सुनहरे अक्षरों में लिखा देख कर उसने उसे चुंबन दिया और सेवकों से नूरुद्दीन की विधवा के बारे में पूछा। उन् होंने बताया। 'उसका निवास स्थान यही है किंतु वह अक्सर अपने पति की कब्र पर पड़ी रहती है, वहाँ अपने पुत्र की तस्वीर देख-देख कर रोती रहती है क्योंकि पुत्र भी बहुत दिनों से लापता है। वैसे इस समय वह अपने महल ही में है।'

सेवकों ने खबर की तो नूरुद्दीन की विधवा आई। उसको शम्सुद्दीन ने अपना परिचय दिया और बताया कि तुम्हारे पुत्र और मेरी बेटी का विवाह हुआ है। उसने अपनी पुत्री और दौहित्र को भी अपनी छोटी भाभी से मिलवाया। बेचारी विधवा अपने पुत्र से मिलने की आशा ही छोड़ बेठी थी। वह बहू और पोते को देख कर अति प्रसन्न हुई और उसे आशा बँधी कि मेरा पुत्र भी जीवित होगा। बहू-पोते को गले लगा कर वह रोने लगी। शम्सुद्दीन ने उसे कहा कि यह समय रोने-पीटने का नहीं, तुम बादशाह से अनुमति ले कर मेरे साथ मिस्र देश चलो। यह कह कर उसने विस्तारपूर्वक सारी बातें बताई। नूरुद्दीन की पत्नी इस वृत्तांत को सुन कर आश्चर्य में भी पड़ी और प्रसन्न भी हुई।
फिर शम्सुद्दीन बादशाह के पास गया और उससे निवेदन किया, मैं अपनी भावज को अपने साथ ले जाना चाहता हूँ। बादशाह ने खुशी से यह बात मंजूर कर ली और मिस्र के बादशाह के लिए उत्तमोत्तम भेंट की वस्तुएँ दे कर मिस्र के मंत्री को विदा किया। शम्सुद्दीन सारे लोगों को ले कर फिर दमिश्क की ओर चला। इस बाद उसने फिर नगर के बाहर डेरे डाले और अपने सेवकों और गुमाश्तों को व् यापार करने की आज्ञा दे कर स्वयं वहाँ के बादशाह के पास पहुँचा और उसे मिस्र के बादशाह का पत्र और उसके द्वारा भेजे गए तोहफे दिए। इधर अजब ने जब देखा नाना बहुत देर के लिए गए हैं तो उसने अपने सेवकों से कहा कि मैं फिर नगर की सैर करना चाहता हूँ। सेवक अजब की माँ से अनुमति ले कर उसे ले चले। नगर में चारों ओर घूमते-फिरते वे लोग दोपहर के समय बदरुद्दीन की दुकान पर पहुँचे। अजब को वास्तव में दुख था कि उसने पिछली बार बेकार ही हलवाई पर पत् थर चलाया। उसने बदरुद्दीन से पूछा कि तुम मुझे पहचानते हो या नहीं। बदरुद्दीन ने उसे देखा तो पहली बार ही की तरह फिर उसके हृदय में प्रेम का ज्वार उठने लगा।
बदरुद्दीन उससे बोला, 'मालिक, आप दुकान के अंदर आ जाएँ और थोड़ी-सी मलाई खाएँ। मुझे खेद है कि इतने दिनों तक आपके दर्शन नहीं हुए नहीं तो मैं आपकी बराबर सेवा करता।' अजब ने कहा, 'पहले तुम वादा करो कि उस बार की तरह मेरा पीछा नहीं करोगे। तुमने यह वादा किया तो मैं तुम्हारी दुकान पर आऊँगा बल्कि रोजाना एक बार आऊँगा।' बदरुद्दीन ने कहा कि जैसी आपकी आज्ञा होगी मैं वैसा ही करूँगा, आपके आदेश का उल्लंघन कभी नहीं करूँगा।' अजब उसकी दुकान के अंदर बैठ गया।

बदरुद्दीन ने उसके तथा उसके सेवक के आगे मलाई के प्याले रखे। अजब ने बदरुद्दीन को भी अपने पास बिठाया। सब लोग मलाई खाने लगे। अजब बराबर उसे ताकीद करता रहा कि तुम्हें मुझ से चाहे जितना प्रेम हो तुम किसी से इसके बारे में न कहना। बदरुद्दीन ने वादा किया कि किसी से यह बात नहीं कहूँगा। वह अजब और उसके सेवकों की अभ्यर्थना करता रहा और उन्हें मलाई खिलाता रहा, खुद उसने कुछ नहीं खाया। अजब जब खा चुका तो बदरुद्दीन ने उसके हाथ धुलाए और हाथ पोंछने के लिए एक साफ कपड़ा उसे दिया। फिर उसने चीनी के प्याले में शर्बत बनाया और उसमें बर्फ डाल कर ले आया और अजब से बोला, 'यह गुलाब का शरबत अत्यंत स्वादिष्ट है। ऐसा शरबत आपको मेरी दुकान के अतिरिक्त और कहीं नहीं मिलेगा।' अजब उसे पी कर बहुत खुश हुआ। बदरुद्दीन ने प्रधान सेवक को भी शर्बत दिया जिसे वह एक बार ही में गटागट पी गया।
अब अजब और उसका सेवक बदरुद्दीन को धन्यवाद दे कर अपने डेरी की ओर चले। अजब अपनी दादी के डेरे में गया। वह उसे गले से लिपटा कर रोने लगी कि भगवान मुझे जल्द तुम्हारे साथ तुम्हारे पिता को भी देखने का सुख प्रदान करे। उसने दस् तरख्वान बिछाया और अजब से भी खाने के लिए कहा और पूछने लगी कि तुम शहर में क्या देख आए। अजब उससे बातें तो करता रहा किंतु उसने खाया बिल्कुल नहीं। बुढ़िया ने अजब और उसके अंगरक्षक शाबान को अपने हाथ की बनाई हुई मलाई दी किंतु दोनों बदरुद्दीन की दुकान पर पेट भर मलाई खा चुके थे इसीलिए किसी ने इस मलाई की ओर दृष्टि भी नहीं की।
अजब की दादी ने कहा, 'बड़े आश्चर्य की बात है कि मेरे हाथ की बनाई हुई मलाई भी तुम नहीं खा रहे हो। तुम्हें ज्ञात होना चाहिए कि इस प्रकार की स् वादिष्ट मलाई केवल मैं और मेरा पुत्र बदरुद्दीन ही बना सकते हैं और उसे भी मलाई बनाना मैंने ही सिखाया है।' अजब ने कहा, 'दादी जी, मेरा अपराध क्षमा करें तो बताऊँ कि इस नगर में एक हलवाई है जो इतनी अच्छी मलाई बनाता है कि क्या कहूँ। आपकी मलाई उतनी अच्छी नहीं होगी।'
दादी यह सुन कर अजब के अंगरक्षक शाबान पर बड़ी क्रुद्ध हुई और बोली, 'क्यों निकम्मे, तू मेरे बच्चे की कैसी सुरक्षा करता है कि वह भिखमंगों की तरह हलवाइयों की दुकान पर बैठ कर खाया-पिया करता है?' शाबान ने कहा कि हम लोग थक गए थे इसलिए हलवाई की दुकान पर सुस्ताने को बैठे थे किंतु हमने मलाई वगैरा नहीं खाई। किंतु अजब ने कहा कि यह झूठ कहता है, हलवाई की दुकान पर हम दोनों ने मलाई खाई थी।

अजब की दादी यह सुन कर क्रोध में भर गई और उसी समय उठ कर अजब के नाना के डेरे में पहुँची और उसे सारा हाल बताया। शम्सुद्दीन अपनी भावज की बातें सुन कर उसके साथ उसके डेरे में पहुँचा और शाबान को डाँट कर पूछा कि क्या यह सच है कि तुम दोनों ने हलवाई के यहाँ मलाई खाई थी। शाबान ने फिर इनकार किया किंतु अजब ने कहा कि यह बात सच है, हम दोनों ने हलवाई की दुकान पर मलाई भी खाई थी और बाद में शर्बत भी पिया था। मंत्री ने शाबान से कहा, 'देख, अजब क् या कहता है? क्या तुम दोनों ने हलवाई के यहाँ कुछ खाया-पिया नहीं?' शाबान ने फिर इनकार किया और झूठी कसम भी खा ली कि हम लोगों ने कुछ खाया-पिया नहीं। अब मंत्री ने शाबान को पीटना शुरू किया। काफी ठुकाई हो चुकने के बाद उसने स्वीकार किया कि अजब की बात सच्ची है और हलवाई की मलाई इस मलाई से अधिक स्वादिष्ट थी।
अजब की दादी यह सुन कर भी बिगड़ी। उसने शाबान से कहा, 'तेरा दिमाग फिर गया है क्या? कोई हलवाई मुझ से अच्छी मलाई बना सकता है? और अगर अब भी तू यह कहता है कि तो हलवाई की दुकान पर जा कर थोड़ी-सी मलाई ले आ। मैं भी तो देखूँ कि वह मलाई कैसी है।' शाबान बदरुद्दीन की दुकान पर गया और कुछ पैसे दे कर बोला कि एक प्याले में मलाई दे दो, मेरी मालकिन तुम्हारी मलाई खाना चाहती हैं। बदरुद्दीन ने मलाई दे कर कहा, 'ऐसी मलाई तुम्हें दुनिया भर में कहीं और न मिलेगी। केवल मैं और मेरी माँ ही इस तरह की मलाई बना सकते हैं।'
शाबान ने मलाई ला कर अजब की दादी को दी। उसने उसे खाया तो भावातिरेक में मूर्छित हो गई। शम्सुद्दीन मुहम्मद को उसकी दशा देख कर चिंता हुई। उसने अपनी भावज के मुँह पर गुलाब जल छिड़कवाया तथा अन्य उपचार किए जिससे वह होश में आ गई। फिर उसने कहा कि यह मलाई बदरुद्दीन ही ने बनाई है। शम्सुद्दीन मुहम्मद को भी विश्वास तो हो गया था कि यह बात ठीक है किंतु प्रकटतः उसने कहा, 'ऐसी क्या बात है कि तुम्हारे बेटे के अलावा दुनिया में और कोई आदमी ऐसी मलाई न बना सके।' उसकी भावज ने कहा, 'मैं पूरे विश्वास और जानकारी से कहती हूँ कि बदरुद्दीन के अतिरिक्त कोई और व्यक्ति ऐसी मलाई बना ही नहीं सकता।'
शम्सुद्दीन मुहम्मद ने कहा, 'अच्छा ठहरो। मैं बहाने से उस हलवाई को यहाँ बुलवाता हूँ। तुम और तुम्हारी बहू उसे छुप कर देखें। अगर तुम लोग उसे पहचान लो कि बदरुद्दीन वही है तो हम लोग उसे अपने साथ काहिरा ले चलेंगे। मैंने तो उसे कभी देखा ही नहीं इसीलिए मैं उसे पहचान नहीं सकता, तुम लोग ही

उसे पहचानो।' यह कह कर उसने अपने डेरे में जा कर अपने सिपाहियों को आज्ञा दी कि बदरुद्दीन की दुकान पर जा कर उसका सामान तोड़-फोड़ देना और उसे बाँध कर ले आना, लेकिन खबरदार उसे मारना-पीटना बिल्कुल नहीं और न और किसी तरह का दुख देना।
सेवकों को यह आदेश दे कर शम्सुद्दीन स्वयं बादशाह की सेवा में पहुँचा और उससे कहा कि मेरा दामाद मिल गया है और उसे काहिरा ले जाने की मुझे अनुमति दें। बादशाह ने प्रसन्नतापूर्वक यह अनुमति दे दी। शम्सुद्दीन ने यह भी कहा कि किसी कारणवश मैं अभी असलियत बता नहीं सकता और उसे जोर-जबर्दस्ती का नाटक करके ले जाना चाहता हूँ, आप अपने कोतवाल और सिपाहियों को आदेश करें कि वे मेरे सिपाहियों की इस मामले में रोक-टोक न करें। बादशाह ने यह भी स् वीकार कर लिया।
शम्सुद्दीन के सिपाही बदरुद्दीन की दुकान पर गए और उन्होंने उसके सारे बरतन-भाँडे तोड़ फोड़ डाले और रस्सी के बजाय पगड़ी से उसे बाँध दिया। उसने दुखी हो कर पूछा कि मेरा क्या अपराध है तो सिपाहियों ने पूछा कि मंत्री के डेरे में भेजी गई मलाई तुम्हीं ने बनाई थी। उसकी स्वीकारोक्ति पर उन् होंने बगैर कुछ कहे-सुने उसको दुकान से बाहर घसीट लिया। नगर निवासियों को इससे दुख हुआ। उन्होंने मंत्री के सिपाहियों को रोकना चाहा और शहर के सिपाहियों से सहायता चाही किंतु कोई लाभ न हुआ। दोनों ओर के सिपाहियों को अपने-अपने हाकिमों के आदेश थे।
शम्सुद्दीन के सामने बदरुद्दीन को लाया गया तो उसने रो कर पूछा कि मालिक, मैंने आपका क्या अपराध किया। शम्सुद्दीन ने कहा कि क्या तुम्हीं ने मेरे सेवक के हाथ मलाई बेची थी? बदरुद्दीन ने कहा कि हाँ। मंत्री बोला, 'तुम् हारा यही कसूर है। तुमने ऐसी वाहियात मलाई मेरे लिए भेजी? मैं तुम्हें प्राण दंड दूँगा।' बदरुद्दीन ने हैरान हो कर कहा कि खराब बेचने पर फाँसी दी जाती है? मंत्री बोला, हमारे यहाँ यही नियम है।
उधर परदे के पीछे से बदरुद्दीन की माँ और पत्नी ने उसे देखा तो मूर्छित हो गईं। उन्होंने चाहा कि जा कर उससे लिपट जाएँ किंतु उनसे शम्सुद्दीन ने पहले ही कह रखा था कि जब तक मैं न कहूँ उसके पास न जाना। दूसरे दिन शम्सुद्दीन सब लोगों को ले कर मिस्र की ओर चला। बदरुद्दीन को उसने एक संदूक में बंद करके एक ऊँट पर लाद लिया। दिन भर उसे संदूक में रख कर चलता और रात को पड़ाव करने पर संदूक से बाहर निकाल देता था। इसी तरह जब चलते-

चलते काहिरा के पास पहुँचा तो पड़ाव डाल कर मंत्री ने एक बढ़ई से कहा कि एक आदमी को फाँसी चढ़ाने के लिए एक लकड़ी की टिकटी बनाओ। बदरुद्दीन ने यह देख कर पूछा कि किसे फाँसी पर चढ़ाया जाएगा। मंत्री ने कहा कि कल मैं नगर में प्रवेश करूँगा और तुझे इसी टिकटी से बाँध कर पूरे नगर में फिराऊँगा और तेरे आगे एक आदमी यह मुनादी करता जाएगा कि इस आदमी को इसीलिए फाँसी दी जाएगी कि इसने मलाई में काली मिर्च नहीं डाली, बदरुद्दीन यह सुन कर विलाप करने लगा कि हे भगवान, मैं सिर्फ इस कसूर पर मारा जाऊँगा कि मैंने मलाई में काली मिर्च नहीं डाली।
यह कह कर रानी शहरजाद ने बादशाह शहरयार से कहा कि खलीफा हारूँ रशीद यद्यपि गंभीर प्रकृति का था तथापि अपने मंत्री से इतनी कहानी सुन कर ठट्ठा मार कर कर हँसने लगा। बदरुद्दीन ने कहा, 'हे परमात्मा यह कैसा न्याय है। कहीं ऐसा भी होता है कि केवल इतने से अपराध पर कि मलाई में काली मिर्च नहीं पड़ी किसी हलवाई की दुकान लूट ली जाए, उसे बाँध कर लाया जाय और फिर उसे फाँसी दे दी जाए। यह बात तो सरासर इस्लामी व्यवस्था के विरुद्ध है। धिक्कार है मुझ पर कि मैंने मलाई बनाने का धंधा किया कि इस परेशानी में पड़ा। सारे शहर में बदनाम हो कर फाँसी चढ़ने से बड़ी बदनामी की बात क्या हो सकती है। हे भगवान मैं अभागा पैदा होते ही क्यों न मर गया। अब भी अच्छा है कि मुझे यूँ ही मौत आ जाए, बदनामी से बचूँगा।'
बदरुद्दीन यही कह कर रोता चिल्लाता रहा किंतु मंत्री ने कुछ ध्यान न दिया। कुछ ही देर में मंत्री के सामने फाँसी की टिकटी पेश की गई जिसके ऊपर लोहे की सलाख लगी हुई थी। बदरुद्दीन ने उसे देखा तो बहुत घबराया और चिल्लाने लगा, 'मैंने न किसी की चोरी की, न किसी धार्मिक आदेश का उल्लंघन किया, न किसी की हत्या की। फिर भी मुझे सिर्फ इतनी-सी बात पर प्राणदंड मिल रहा है कि मैंने मलाई में काली मिर्च नहीं डाली।'
मंत्री शम्शुद्दीन ने उससे कहा कि रोने-चिल्लाने से कुछ नहीं होगा, कल तो मैं तुझे नगर में ले जा कर फाँसी पर चढ़ाऊँगा ही। यह कह कर उसने बदरुद्दीन को दुबारा संदूक में बंद करवा दिया। सुबह उसने उसे ऊँट पर लदवाया और स्वयं अपनी सवारी पर बैठ कर समारोहपूर्वक अपनी राजधानी में प्रवेश किया। अपने महल में पहुँच कर उसने आज्ञा दी कि इस संदूक को उतार कर रखो किंतु इसे खोलना नहीं। सारा असबाब घर पर रख दिया गया तो शम्सुद्दीन ने अपनी बेटी को एकांत में ले जा कर उससे कहा, 'भगवान का लाख-लाख धन्यवाद है कि तुम्हारा पति

तुम्हें मिल गया है। अब तुम अपने कमरे को ठीक वैसे ही सजाओ जैसा वह तुम् हारे विवाह की रात को सजाया गया था, हर चीज ठीक उसी जगह पर होनी चाहिए जैसे उस समय पर थी।'
मंत्री की पुत्री ने अपने पिता के आदेशानुसार काम किया और कमरे को बिल्कुल उसी तरह सजा दिया जैसे कि वह विवाह की रात को सजाया गया था। जहाँ उसे कोई बात भूल गई उसने अपने पिता से पूछ ली। ठीक उसी तरह तख्त बिछाया गया और सारी मोमबत्तियाँ भी ठीक उसी प्रकार रखी गईं। पूरा कमरा बल्कि आसपास के कमरे भी ठीक वैसे ही दिखने लगे जैसे शादी की रात को दिखते थे। शम्सुद्दीन मुहम्मद ने स्वयं वहाँ आ कर बदरुद्दीन के कपड़े और रुपयों की थैली ठीक वहीं रखी जहाँ से उसने उठाई थी। फिर उसने अपनी पुत्री से कहा कि तुम उसी रात की तरह सोने के कपड़े पहनो और पति के आने पर इस तरह का भाव प्रकट न करना जैसे उससे बहुत दिनों बाद मिल रही हो, ऐसा बरताव करना जैसे वह कभी तुमसे अलग ही नहीं हुआ था।
कहानी यहाँ तक पहुँची तो सवेरा हो गया और मलिका शहरजाद चुप हो रही। बादशाह को कहानी का अंत सुनने की इतनी उत्कंठा थी कि अगली रात को उसे ठीक तरह नींद भी नहीं आई। अगली रात को अंतिम पहर में मलिका शहरजाद ने नियमानुसार कहानी प्रारंभ की।
उसने कहा कि मंत्री शम्सुद्दीन ने आज्ञा दी कि उस भवन में दो या तीन दासियाँ ही रहें। जब एक पहर रात बीती तो मंत्री ने बदरुद्दीन को संदूक में बंद ही बंद उस भवन के समीप भिजवाया। सेवकों ने वहाँ उसे संदूक से निकाला तो वह लगभग अचेत था। उन्होंने जल्दी से उसे रात्रिकालीन वस्त्र मिर्जई आदि पहना दिए। फिर उसे मकान के अंदर छोड़ कर उन्होंने बाहर से दरवाजे में कुंडी लगा दी।
कुछ देर में बदरुद्दीन को हाथ पाँव फैलने से चेत हुआ तो उसने अपने को विवाह के लिए सजे हुए कमरे में पाया। उसे याद आया कि यह उसकी सुहागरात वाला कक्ष है। पासवाले कमरे को देख कर भी उसने पहचाना कि यही उस कुबड़े गुलाम के पास मैं बैठा था। उसका ताज्जुब और बढ़ा। दो क्षणों के बाद उसने देखा कि उसके विवाह के वस्त्र और थैली उसी तरह वहाँ रखी है जैसी सुहागरात को रखी थी। इससे आश्चर्य के मारे उसका सिर चकरा गया। वह सोचने लगा कि समझ में नहीं आता कि मैं जाग रहा हूँ या स्वप्न देख रहा हूँ।

इतमें ही में उसकी पत्नी ने मसहरी से सिर उठा कर कहा, 'प्रियतम, तुम द्वार पर क्यों खड़े हो। यहाँ पलंग पर आ कर आराम करो। तुम दिन भर कहाँ रहे? आज सुबह मेरी आँख खुली तो मैंने तुम्हें पलंग पर नहीं देखा। बहुत देर तक प्रतीक्षा करने पर भी तुम न आए तो मैं दिन भर बहुत दुखी रही। खैर अब तुम मेरे पास आओ।'
बदरुद्दीन को यह सुन कर बड़ा हर्ष हुआ। वह आश्चर्य और उसके बाद पैदा हुए उल्लास के कारण यह भी भूल गया कि मंत्री ने उसे कैद किया था और मृत्यु दंड दिया था। उसका चेहरा चमकने लगा और निराशा की काली छाया उसके चेहरे से हट गई। उसने देखा कि उसकी पत्नी अब भी वैसी सुंदर और मनोहारणी है जैसी विवाह की रात को थी।
कमरे के अंदर जा कर उसने प्रत्येक वस्तु को फिर अच्छी तरह देखा और उसे मालूम हुआ कि सारी चीजें बिल्कुल वैसी ही हैं जैसी दस बरस पहले विवाह की रात को थीं। चौकी पर उसके वस्त्र और द्रव्य की थैली भी जैसी की तैसी थी। वह उच्च स्वर में कहने लगा, 'हे भगवान, यह क्या लीला है। मेरी तो कुछ समझ में नहीं आ रहा कि मैं कहाँ हूँ।' उसकी पत्नी बोली, 'यह क्या कह रहे हो? क्या खड़े-खड़े अजीब बातें कर रहे हो।' बदरुद्दीन ने कहा, 'सच बताओ तुम कब से मुझ से अलग हो?' उसने कहा, 'आज सुबह ही तो तुम उठ कर गए थे।'
बदरुद्दीन बोला, 'तुम्हारी बात मेरी समझ में नहीं आती। मैंने तुम्हारे साथ सुहागरात बिताई जरूर थी किंतु इस बात को हुए दस बरस हो गए। इस सारे समय मैं दमिश्क में रहा। मेरी अक्ल चक्कर खा रही है कि अपने विवाह का समय कौन-सा मानूँ, वर्तमान समय या दस बरस पहले का। मेरी तो कुछ समझ में नहीं आ रहा, तुम्हीं बताओ कि मैं दस बरस तुम से अलग रहने को सवप्न समझूँ या इस समय तुमसे होनेवाली बातचीत को।
उसकी पत्नी ने कहा, 'तुम कैसी पागलों की सी बातें करते हों। स्पष्ट बताओ कि यह दमिश्क बीच में कहाँ से आ गया।' बदरुद्दीन ने हँस कर कहा, 'मालूम नहीं मैं पागल था या अब हूँ। दस बरस पहले मैं यही शयनकालीन वस्त्र पहने दमिश्क की मस्जिद के द्वार पर पड़ा था। वहाँ के निवासी मुझे देख कर हँस रहे थे और मेरा मजाक उड़ा रहे थे। मैं वहाँ से उठ कर भागा और एक हलवाई की दुकान में जा छुपा। उसने मुझे गोद लिया और अपना धंधा सिखाया। जब वह मरा तो सारी संपत्ति मुझे दे गया। मैं दस बरस तक उसी दुकान पर हलवाई का व्यवसाय करता रहा।

'एक दिन कहीं का मंत्री दमिश्क में आया। उसका लड़का बड़ा भोला भाला और सुंदर था। उसे देख कर मेरे हृदय में बहुत प्यार उमड़ा। एक दिन वह अपने नौकर के साथ मेरी दुकान पर आया और वहाँ बैठ कर मलाई खाई। तब वह वापस अपने डेरे में गया तो उसके पिता ने मेरी दुकान से मलाई मँगवाई। इसके बाद मुझे पकड़वा बुलाया और यह कह कर कि तूने बगैर काली मिर्च की मलाई क्यों बनाई, मेरी दुकान लुटवा दी और मुझे संदूक में बंद ऊँट पर रखवा कर अपने देश को लाया। फिर कल रात उसने फाँसी की टिकटी बनवाई और आज के लिए कहा कि तुझे नगर में घुमाने के बाद फाँसी दी जाएगी। मैं यह सुन कर भय से अचेत हो गया। जब होश आया तो देखा तुम्हारे पास मौजूद हूँ।'
उसकी पत्नी यह सुन कर हँसने लगी और मजाक में बोली, 'यह तो नहीं हो सकता कि इतनी-सी बात पर किसी को फाँसी दे दी जाए, तुमने कोई बड़ा अपराध किया होगा।' बदरुद्दीन ने कहा, 'मैं सच कहता हूँ इसके अलावा मेरा कोई अपराध नहीं था कि मलाई में काली मिर्च नहीं पड़ी थी।'
अब यह अजीब-सी बहस चल पड़ी। उसकी पत्नी हँस-हँस कर कहती जाती थी कि तुमने जरूर कोई बड़ा अपराध किया होगा। और बेचारा बदरुद्दीन बार-बार सफाई दिए जाता था कि मेरा अपराध बगैर काली मिर्च डाले मलाई भेजने के अलावा कुछ नहीं था और इतनी ही बात पर मंत्री ने मुझे फाँसी चढ़ाने के लिए टिकटी बनवा ली जिसके ऊपर मुझे लटकाने के लिए लोहे की मजबूत सलाख लगाई गई थी।
बादशाह शहरयार यहाँ तक कहानी सुन कर हँसने लगा और बहुत देर तक हँसता रहा। उसने कहा, 'मंत्री शम्सुद्दीन ने अपने दामाद के साथ अच्छा मजाक किया और आश् चर्य यह है कि उसकी भावज ने भी बेटे के इस तरह तंग किए जाने पर कुछ न कहा। खैर कल कहानी पूरी होगी तो आशा है उसका अंत अच्छा होगा।'
दूसरी रात के अंतिम पहर मलिका शहजाद ने कहानी फिर शुरू की। उसने कहा कि रात भर बदरुद्दीन इसी चक्कर में रहा कि मैं अपनी पत्नी के पास वास्तव में हूँ या सपना देख रहा हूँ। वह बार-बार पलँग से उठता और घूम-घूम कर भवन को देखता। उसे हर चीज वैसी ही दिखाई देती जैसी विवाह की रात को थी। उधर पिछले दस बरसों की घटनाओं की अनदेखी भी वह नहीं कर पाता था। सारी रात उसने उसी उधेड़बुन में काटी।
सुबह हुई तो शम्सुद्दीन ने बेटी के शयन कक्ष के द्वार पर आ कर ताली बजाई। उसकी बेटी ने द्वार खोला तो शम्सुद्दीन ने अंदर जा कर स्वयं अपनी ओर से बदरुद्दीन को प्रणाम किया। बदरुद्दीन ने कहा, 'आपने तो मुझे फाँसी देने का

प्रबंध किया था। उसके विचार से मैं अब तक काँप रहा हूँ और मेरा अपराध क्या था, सिर्फ यह कि मैंने मलाई में काली मिर्च नहीं डाली थी।'
मंत्री ने मुस्करा कर कहा, 'तुम मेरे भतीजे हो और मैंने अपनी बेटी का विवाह तुम्हारे साथ किया था। बादशाह के हुक्म से उसका विवाह कुबड़े गुलाम से होनेवाला था।' यह कह कर उसने नूरुद्दीन का लिखा हुआ वृत्तांत उसे दिखाया और कहा, 'तुम्हारी खोज में ही मैं बसरा, दमिश्क और न जाने कौन-कौन-सी जगह-जगह मारा-मारा फिरता रहा। मैंने तुम पर प्रकट में जो अन्याय किया है उसे भूल जाओ। मैं सिर्फ यह चाहता था कि बगैर झंझट के दमिश्क से तुम्हें यहाँ लाऊँ, साथ ही यह ख्याल था कि अगर तुम्हारी भेंट अचानक तुम्हारी माँ और पत् नी से हो जाय तो कहीं तुम आनंदातिरेक मे मर न जाओ।' यह कह कर उसने दामाद को सीने से लगा लिया।
बदरुद्दीन यह सुन कर अत्यंत प्रसन्न हुआ। उसने रात के कपड़े उतार कर दिन के कपड़े पहने। फिर उसने अपनी माँ से भेंट की। इस अवसर पर सारे परिवार में आनंद की कैसी लहर आईं उसका वर्णन नहीं हो सकता। उसकी माँ उसे सीने से लगा कर बहुत देर तक रोती रही और बताती रही कि तेरे लापता होने पर यह दस बरस कितने कष्ट से काटे। इतने ही में अजब, जिसे उसके नाना ने असलियत बता दी थी, अपने बाप से आ कर लिपट गया। बदरुद्दीन ने कहा, 'अरे तूने ही तो मेरे यहाँ मलाई खाई थी।' यह कह कर उसने अपने बेटे को छाती से लगा लिया। शम्सुद्दीन ने दामाद को बादशाह के सामने पेश किया और सारी कहानी सुनाई। बादशाह ने इस वृत्तांत को लिखने का आदेश दिया और बदरुद्दीन को भी सम्मानित किया। हारूँ रशीद से उसके मंत्री जफर ने यह कहानी सुना कर कहा कि आप भी उदारता दिखाएँ और मेरे गुलाम रैहान का अपराध क्षमा कर दें। हारूँ रशीद ने ऐसा ही किया और उस आदमी को, जिसने भ्रमवश अपनी पत्नी को मार डाला था, अपनी एक दासी दे दी कि विवाह कर ले और सुखपूर्वक रहे।
यह कहानी पूरी करके मालिक शहरजाद ने कहा, 'स्वामी, अब सवेरा हो गया, अगर आज मुझे आज प्राणदान मिले तो मैं और अच्छी कहानी सुनाऊँ।' बादशाह चुपचाप दरबार को चला गया किंतु कहानी के लालच में उसने शहरजाद के वध का आदेश मुल् तवी रखा।

दरजी और बादशाह के कुबड़े सेवक के हत्या की कहानी

दूसरी रात को मलिका शहरजाद ने पिछले पहर अपनी बहन दुनियाजाद के कहने से यह कहानी सुनाना आरंभ किया। पुराने जमाने में तातार देश के समीपवर्ती नगर काशगर में एक दरजी था जो अपनी दुकान में बैठ कर कपड़े सीता था। एक दिन वह अपनी दुकान में काम कर रहा था कि एक कुबड़ा एक दफ (बड़ी खंजरी जैसा बाजा) ले कर आया और उसकी दुकान के नीचे बैठ कर गाने लगा। दरजी उसका गाना सुन कर बहुत खुश हुआ। उसने कुबड़े से कहा, अगर तुम्हें आपत्ति न हो तो यहाँ से कुछ ही दूर मेरा घर है, वहाँ चलो और आराम से गाओ-बजाओ। कुबड़ा राजी हो गया और दरजी के साथ उसके घर आ गया।
घर पहुँच कर दरजी ने हाथ-मुँह धोया और रूपवती पत्नी से, जिसे वह बहुत प्यार करता था, बोला कि मैं इस आदमी को लाया हूँ ताकि तुम्हें इसका सुंदर गायन सुना पाऊँ। उसने यह भी कहा कि यह मेरे साथ खाना भी खाएगा। पत्नी ने थोड़ी ही देर में स्वादिष्ट भोजन बना कर परोस दिया। फिर वे दोनों भोजन करने लगे और कुबड़े को भी अपने साथ बिठा लिया। दरजी की पत्नी ने मछली बनाई थी और बड़ी स्वादिष्ट बनाई थी। कुबड़ा लालच के मारे काँटा निकाले बगैर ही मछली का एक बड़ा टुकड़ा खा गया। टुकड़े का एक बड़ा काँटा उसके गले में ऐसा चुभा कि वह दर्द के मारे तड़पने लगा। कुछ ही देर में उसकी साँस रुकने लगी। दरजी और उसकी पत्नी ने बहुत कोशिश की कि उसके गले से काँटा निकले किंतु कोई उपाय सफल न हुआ। दरजी बहुत घबराया कि कोतवाल को पता चलेगा तो हत्या के अभियोग में मुझे पकड़ लिया जाएगा।
अतएव वह कुबड़े को अचेतावस्था में उठा कर एक यहूदी हकीम के दरवाजे पर ले गया। उसे नीचे रख कर दरजी ने दरवाजे पर ताली बजाई तो हकीम की नौकरानी ने दरवाजा खोला। दरजी ने उसे पाँच मुद्राएँ दे कर कहा कि वह अपने स्वामी से कहे कि शीघ्र ही आ कर मेरे मित्र का उपचार करें। नौकरानी अपने मालिक को खबर करने ऊपरी मंजिल में गई और दरजी ने फिर कुबड़े को देखा तो समझा कि वह मर गया है। उसने उसे उठाया और हकीम के दरवाजे के सहारे खड़ा कर दिया। इसके बाद वह चुपके से खिसक गया।

खराब हुई तो मैं इसे ले कर हकीम के पास गया। हकीम के आने में देर हुई। इतनी देर में मैंने इसे देखा तो मरा पाया। मैं डर के मारे इसकी लाश हकीम के दरवाजे के सहारे खड़ी करके भाग गया।' काजी ने कहा कि जब हत्या हुई है तो किसी न किसी को फाँसी देनी ही है, इसी दरजी को फाँसी चढ़ा दो।
लेकिन फाँसी न दी जा सकी क्योंकि बादशाह के खास सिपाहियों ने आ कर फाँसी रुकवा दी और सभी को बादशाह के सामने चलने को कहा। हुआ यह था कि कुबड़ा बादशाह का विदूषक था और उसका मनोरंजन किया करता था। उस दिन दरबार में न पहुँचा तो उसने पूछा कि कुबड़ा क्यों नहीं आया। उसके नौकरों ने बताया, 'कल शाम को वह शराब पी कर निकल गया था। आज हमने उस चौराहे पर उसकी लाश देखी और वहीं काजी ने उसकी हत्या के अपराध पर एक ईसाई को फाँसी चढ़ाने को कहा। एक अन्य व्यक्ति ने यह अपराध अपने सिर लिया। उसकी जगह भी फाँसी पाने के लिए एक और व्यक्ति ने कहा। अंत में एक दरजी ने यह जुर्म अपने सिर लिया और अब दरजी को फाँसी दी जानेवाली है।'
बादशाह ने चारों अभियुक्तों को अपने सामने बुलाया। उसकी समझ में किसी को फाँसी नहीं मिलनी चाहिए थी किंतु उसने उन सब का बयान लिया और यह बयान इतिहास पुस्तक में लिखने की आज्ञा दे कर इन लोगों से बोला, 'तुम लोगों की कहानी बड़ी अजीब है। अगर तुम लोग एक-एक कहानी इस से अधिक रुचिकर सुना दोगे तो तुम्हें प्राणदान दे दिया जाएगा, वरना प्राणदंड दिया जाएगा। सब से पहले ईसाई ने कहा कि मुझे एक अति विचित्र कहानी आती है, अनुमति हो तो उसे सुनाऊँ। बादशाह ने अनुमति दे दी और उसने सुनाना शुरू किया।

सिंदबाज जहाजी की कहानी

जब शहरजाद ने यह कहानी पूरी की तो शहरयार ने, जिसे सारी कहानियाँ बड़ी रोचक लगी थीं, पूछा कि तुम्हें कोई और कहानी भी आती हैं। शहरजाद ने कहा कि बहुत कहानियाँ आती हैं। यह कह कर उसने सिंदबाद जहाजी की कहानी शुरू कर दी। उसने कहा कि इसी खलीफा हारूँ रशीद के शासन काल में एक गरीब मजदूर रहता था जिसका नाम हिंदबाद था। एक दिन जब बहुत गर्मी पड़ रही थी वह एक भारी बोझा उठा कर शहर के एक भाग से दूसरे भाग में जा रहा था। रास्ते में थक कर उसने एक गली में, जिसमें गुलाब जल का छिड़काव किया हुआ था और जहाँ ठंडी हवा आ रही थी, उतारा और एक बड़े-से घर की दीवार के साए में सुस्ताने के लिए बैठ गया। उस घर से इत्र, फुलेल और नाना प्रकार की अन्य सुगंधियाँ आ रही थीं, इसके

स्वादिष्ट खाद्य और मदिरा पात्र रखा। जब सिंदबाद ने देखा कि सभी उपस्थित जन भोजन कर चुके हैं तो उसने हिंदबाद की ओर फिर ध्यान दिया।
बगदाद में जब किसी का सम्मानपूर्वक उद्बोधन करना होता था तो उसे अरबी कहते थे। सिंदबाद ने हिंदबाद से कहा, 'अरबी, तुम्हारा नाम क्या है। मैं और यहाँ उपस्थित अन्य जन तुम्हारी यहाँ पर उपस्थिति से अति प्रसन्न हैं। अब मैं चाहता हूँ कि तुम्हारे मुँह से फिर वे बातें सुनूँ जो तुमने गली में बैठे हुए कही थीं।' सिंदबाद जहाँ बैठा था वह भाग गली से लगा हुआ था और खुली खिड़की से उसने वह सब कुछ सुन लिया था जो हिंदबाद ने रोष की दशा में कहा था।
हिंदबाद ने लज्जा से सिर नीचा कर लिया और कहा, 'सरकार, उस समय मैं थकन और गरमी के कारण आपे में नहीं था। मेरे मुँह से ऐसी दशा मे कुछ अनुचित बातें निकल गई थीं। इस सभा में उन्हें दुहराने की गुस्ताखी मैं नहीं करना चाहता। आप कृपया मेरी उस उद्दंडता को क्षमा कर दें।'
सिंदबाद ने कहा, 'भाई, मैं कोई अत्याचारी नहीं हूँ जो किसी की कुछ बातों के कारण ही उस की हानि करूँ। मुझे तुम्हारी बातों पर क्रोध नहीं बल्कि दया ही आई थी और तुम्हारी दशा देखकर और भी दुख हुआ। लेकिन मेरे भाई, तुमने गली में बैठकर जो कहा उस से तुम्हारा अज्ञान ही प्रकट होता है। तुम समझते हो कि यह धन-दौलत और यह ऐश-आराम मुझे बगैर कुछ किए-धरे ही मिल गया है। ऐसी बात नहीं है। मैंने संसार में जितनी विपत्तियाँ पड़ सकती हैं लगभग सभी झेली हैं। इसके बाद ही भगवान ने मुझे आराम की यह सामग्री दी है।'
यह कहकर सिंदबाद ने दूसरे मेहमानों से कहा, 'मुझ पर विगत वर्षों में बड़ी- बड़ी मुसीबतें आईं और बड़े विचित्र अनुभव हुए। मेरी कहानी सुनकर आप लोगों को घोर आश्चर्य होगा। मैंने धन प्राप्त करने के निमित्त सात बार बड़ी-बड़ी यात्राएँ कीं और बड़े दुख और कष्ट उठाए। आप लोग चाहें तो मैं वह सब हाल सुनाऊँ।' मेहमानों ने कहा कि जरूर सुनाइए। सिंदबाद ने अपने सेवकों से कहा कि वह बोझा, जो हिंदबाद बाजार से अपने घर लिए जा रहा था, उसके घर पहुँचा दें। उन्होंने ऐसा ही किया। अब सिंदबाद ने अपनी पहली यात्रा का वृत्तांत कहना आरंभ किया।

[redacted]

[redacted]

आकर सो गई थी। जब व्यापारियों ने खाना बनाने के लिए उस पर आग जलाई तो पहले तो वह हिली फिर समुद्र में गोता लगा गई। सारे व्यापारी नाव पर या तैरकर जहाज पर आ गए किंतु बेचारा सिंदबाद वहीं डूब गया। ये गठरियाँ उसकी ही हैं। अब मैंने इरादा किया है इस गठरी का माल बेच दूँ और इसका जो दाम मिले उसे बगदाद में सिंदबाद के परिवार वालों के पास पहुँचा दूँ।
मैंने उससे कहा कि जिस सिंदबाद को तुम मरा समझ रहे हो वह मैं ही हूँ और यह गठरी तथा इसके साथ की गठरियाँ मेरी ही हैं। उसने कहा, 'अच्छे रहे, मेरे आदमी का माल हथियाने के लिए खुद सिंदबाद बन गए। वैसे तो शक्ल-सूरत से भोले लगते हो मगर यह क्या सूझी है कि इतना बड़ा छल करने को तैयार हो गए। मैंने स्वयं सिंदबाद को डूबते देखा है। इसके अतिरिक्त कई व्यापारी भी साक्षी हैं कि वह डूब गया है। मैं तुम्हारी बात पर कैसे विश्वास करूँ।
मैंने कहा, भाई कुछ सोच-समझ कर बात करो। तुमने मेरा हाल तो सुना ही नहीं और मुझे झूठा बना दिया। उसने कहा, अच्छा बताओ अपना हाल। मैंने सारा हाल बताया कि किस प्रकार लकड़ी के सहारे तैरता रहा और चौबीस घंटे समुद्र में तैरने के बाद निर्जन द्वीप में पहुँचा और किस तरह से बादशाह के साईसों ने मुझे वहाँ से लाकर बादशाह के सामने पेश किया।
कप्तान को पहले तो मेरी कहानी पर विश्वास न हुआ। फिर उसने ध्यानपूर्वक मुझे देखा और अन्य व्यापारियों को भी मुझे दिखाया। सभी ने कुछ देर में मुझे पहचान लिया और कहा कि वास्तव में यह सिंदबाद ही है। सब लोग मुझ नया जीवन पाने पर बधाई और भगवान को धन्यवाद देने लगे।
कप्तान ने मुझे गले लगाकर कहा, ईश्वर की बड़ी दया है कि तुम बच गए। अब तुम अपना माल सँभालो और इसे जिस प्रकार चाहो बेचो। मैंने कप्तान की ईमानदारी की बड़ी प्रशंसा की और कहा कि मेरे माल में से थोड़ा-सा तुम भी ले लो। किंतु उसने कुछ भी नहीं लिया, सारा माल मुझे दे दिया।
मैं ने अपने सामान में से कुछ सुंदर और बहुमूल्य वस्तुएँ बादशाह को भेंट कीं। उसने पूछा, तुझे यह मूल्यवान वस्तुएँ कहाँ से मिलीं? मैंने उसे पूरा हाल सुनाया। वह यह सुनकर बहुत खुश हुआ। उसने मेरी भेंट सहर्ष स्वीकार कर ली और उसके बदले में उनसे कहीं अधिक मूल्यवान वस्तुएँ मुझे दे दीं। मैं उससे विदा होकर फिर जहाज पर आया और अपना माल बेचकर उस देश की पैदावार यथा चंदन, आबनूस, कपूर, जायफल, लौंग, काली मिर्च आदि ली और फिर जहाज पर सवार हो गया। कई देशों और टापुओं से होता हुआ हमारा जहाज बसरा के बंदरगाह पर

पहुँचा। वहाँ से स्थल मार्ग से बगदाद आया। इस व्यापार में मुझे एक लाख दीनार का लाभ हुआ। मैं अपने परिवार वालों और बंधु-बांधवों से मिलकर बड़ा प्रसन्न हुआ। मैं ने एक विशाल भवन बनवाया और कई दास और दासियाँ खरीदीं और आनंद से रहने लगा। कुछ ही दिनों में मैं अपनी यात्रा के कष्टों को भूल गया। सिंदबाद ने अपनी कहानी पूरी करके गाने-बजाने वालों से, जो उसके यात्रा वर्णन के समय चुप हो गए थे, दुबारा गाना-बजाना शुरू करने को कहा। इन्हीं बातों में रात हो गई। सिंदबाद ने चार सौ दीनारों की एक थैली मँगाकर हिंदबाद को दी और कहा कि अब तुम अपने घर जाओ, कल फिर इसी समय आना तो मैं तुम्हें अपनी यात्राओं की और कहानियाँ सुनाऊँगा। हिंदबाद ने इतना धन पहले कभी देखा न था। उसने सिंदबाद को बहुत धन्यवाद दिया। उसके आदेश के अनुसार हिंदबाद दूसरे अच्छे और नए वस्त्र पहन कर उसके घर आया। सिंदबाद उसे देखकर प्रसन्न हुआ और उसने मुस्कराकर हिंदबाद से उसकी कुशल-क्षेम पूछी।
कुछ देर में सिंदबाद के अन्य मित्र भी आ गए और नित्य के नियम के अनुसार स्वादिष्ट व्यंजन सामने लाए गए। जब सब लोग खा-पीकर तृप्त हो चुके तो सिंदबाद ने कहा, दोस्तो, अब मैं तुम लोगों को अपनी दूसरी सागर यात्रा की कहानी सुनाता हूँ, यह पहली यात्रा से कम विचित्र नहीं है। सब लोग ध्यान से सुनने लगे और सिंदबाद ने कहना शुरू किया।

सिंदबाद जहाजी की दूसरी यात्रा

मित्रो, पहली यात्रा में मुझ पर जो विपत्तियाँ पड़ी थीं उनके कारण मैंने निश्चय कर लिया था कि अब व्यापार यात्रा न करूँगा और अपने नगर में सुख से रहूँगा। किंतु निष्क्रियता मुझे खलने लगी, यहाँ तक कि मैं बेचैन हो गया और फिर इरादा किया कि नई यात्रा करूँ और नए देशों और नदियों, पहाड़ों आदि को देखूँ। अतएव मैंने भाँति-भाँति की व्यापारिक वस्तुएँ मोल लीं और अपने विश्वास के व्यापारियों के साथ व्यापार यात्रा का कार्यक्रम बनाया। हम लोग एक जहाज पर सवार हुए और भगवान का नाम लेकर कप्तान ने जहाज का लंगर उठा लिया और जहाज पर चल पड़ा।
हम लोग कई देशों और द्वीपों में गए और हर जगह क्रय-विक्रय किया। फिर एक दिन हमारा जहाज एक हरे-भरे द्वीप के तट से आ लगा। उस द्वीप में सुंदर और मीठे फलों के बहुत से वृक्ष थे। हम लोग उस द्वीप पर सैर के लिए उतर गए। किंतु वह द्वीप बिल्कुल उजाड़ था यानी वहाँ किसी मनुष्य का नामोनिशान भी नहीं था,

मैं पहले परेशान था कि इस कब्र जैसी घाटी से कैसे निकलूँगा क्योंकि पिछले दिन बहुत घूमने-फिरने पर भी निकलने की कोई राह नहीं दिखाई दी थी। किंतु उन मांस पिंडों को देख कर मुझे बाहर निकलने की कुछ आशा बँधी। मैंने पुराने उपाय से काम लिया। मैंने अपने को एक मांस पिंड के नीचे की ओर बाँध लिया। कुछ ही देर में एक विशाल गिद्ध उतरा और मांस पिंड को और उसके साथ मुझे लेकर उड़ गया। मैंने वह चमड़े की थैली भी मजबूती से अपनी कमर में बाँध ली जिसमें पहले मेरा भोजन था। और जिसमें बाद में मैंने हीरे भर लिए थे। गिद्ध ने मुझे पहाड़ की चोटी पर बने अपने घोंसले में पहुँचा दिया। मैंने तुरंत स्वयं को मांस खंड से अलग कर लिया।
उसी समय बहुत-से व्यापारी शोरगुल करते हुए आए और बड़ा गिद्ध डरकर भाग गया। उन व्यापारियों में से एक की दृष्टि मुझ पर पड़ी। वह मुझे देख कर मुझ पर क्रोध करने लगा कि तू यहाँ क्यों आया। उसने समझा कि मैं हीरे चुराने के लिए गिद्ध के घोंसले में चला आया था। अन्य व्यापारियों ने भी मुझे घेर लिया। मैंने कहा कि भाइयो, आप लोग मेरी कहानी सुनेंगे तो मुझ पर क्रोध करने के बजाय मुझ पर दया ही करेंगे, मेरे पास बहुत-से हीरे इस थैली में हैं, वे सारे हीरे मैं आप लोगों को दे दूँगा। यह कहकर मैंने अपनी सारी कहानी उन लोगों को सुनाई और उन सभों को मेरी विचित्र कथा और संकटों से बचकर निकलने पर बड़ा आश्चर्य हुआ।
व्यापारियों का नियम था कि एक-एक गिद्ध के घोंसले को एक-एक व्यापारी चुन लेता था। वहाँ से मिले हीरों पर उसके सिवा किसी का अधिकार नहीं होता था। इसीलिए वह व्यापारी, जिसके हिस्से में वह घोंसला था, मुझ पर क्रोध कर रहा था। मैंने अपनी थैली उलट दी। सब लोगों की आँखें आश्चर्य से फट गईं क्योंकि मैंने कई बहुत बड़े-बड़े हीरे भी भर लिए थे। मैंने उस व्यापारी से, जिसके हिस्से में वह घोंसला था, कहा कि आप यह सारे हीरे ले लीजिए। उसने कहा कि यह हीरे तुम्हारे हैं, मैं इनमें से कुछ न लूँगा। किंतु जब मैंने बहुत जोर दिया तो उसने एक बड़ा हीरा और दो-चार छोटे हीरे ले लिए और कहा कि इतना धन मुझे सारी जिंदगी आराम से रहने को काफी है और मुझे दोबारा यहाँ आने और हीरे प्राप्त करने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी।
रात मैंने उन्हीं व्यापारियों के साथ गुजारी। उन्होंने मुझसे विस्तार से मेरी कहानी जाननी चाही और मैंने सारे अनुभवों का उनसे वर्णन किया। मुझे अपने सौभाग्य पर स्वयं जैसे विश्वास नहीं हो रहा था। दूसरे दिन उन्हीं

शुरू कर दी। मैंने बगदाद से व्यापार की वस्तुएँ लीं और कुछ व्यापारियों के साथ बसरा के बंदरगाह पर जाकर एक जहाज पर सवार हुआ। हमारा जहाज कई द्वीपों में गया जहाँ व्यापार करके हम लोगों ने अच्छा लाभ कमाया।
किंतु एक दिन हमारा जहाज तूफान में फँस गया। इसके कारण हम लोग सीधे मार्ग से भटक गए। अंत में एक द्वीप के पास जाकर जहाज ने लंगर डाल दिया और पाल खोल डाले। कप्तान ने ध्यान देकर द्वीप को देखा फिर उसकी आँखों में आँसू बहने लगे। हमने इसका कारण पूछा तो उसने कहा, 'अब हम लोगों का भगवान ही रक्षक है। क्योंकि इस द्वीप के समीप ही जंगली लोगों के द्वीप हैं। उनके शरीर पर लाल-लाल बाल होते हैं। इन वन-वासियों से भटके हुए जहाजियों पर बड़े-बड़े संकट आए हैं। वे हम लोगों से आकार में छोटे है किंतु हम उनके आगे विवश हैं। यदि उनमें से एक भी हमारे हाथ से मारा जाए तो वे हमें चीटियों की तरह चारों ओर से घेर लेंगे और हमारा सफाया कर देंगे।'
हम सब लोग इस बात को सुनकर बहुत घबराए किंतु कर ही क्या सकते थे। कुछ देर में जैसा कप्तान ने कहा था वैसा ही हुआ। जंगली लोगों का एक बड़ा समूह, जिनके शरीर छोटे-छोटे थे और लाल रंग के बालों से भरे हुए थे, तट पर आए और तैर कर जहाज के चारों ओर आ गए। वे अपनी भाषा में कुछ कहने लगे किंतु वह हमारी समझ में नहीं आया। वे बंदरों की तरह आसानी से जहाज पर चढ़ आए। उन्होंने पालों को लपेट दिया और लंगर की रस्सी काटकर जहाज को किनारे पर खींच लाए। उन्होंने हमें जहाज से उतार लिया और घसीटते हुए अपने द्वीप में ले गए। उस द्वीप के निकट कोई जहाज उनके डर से नहीं आता था किंतु हमारी तो मौत ही हमें घसीट लाई थी।
उन्होंने हमें एक घर के अंदर बंद कर दिया। हमने देखा कि आँगन में मनुष्यों की हड्डियों का एक ढेर जमा है और बहुत-सी मोटी लोहे की छड़ें रखी हैं। हम यह देख कर भय के कारण अचेत हो गए। बहुत देर के बाद हमें होश आया तो हम अपनी दशा को विचारकर रोने लगे। अचानक एक दरवाजा खुला और अंदर से एक अत्यंत विशालकाय आदमी हमारे आँगन में आया। उसका शरीर ताड़ की तरह था और मुँह घोड़े की तरह। उसके केवल एक ही आँख थी जो माथे के बीच में थी और अंगारे की तरह दहक रही थी। उसके दाँत बहुत बड़े और नुकीले थे और उसके मुख से बाहर निकले हुए थे। उसका निचला होंठ इतना बड़ा था कि उसकी छाती तक लटकता था। उसके कान हाथी जैसे थे और उसके कंधों को ढँके हुए थे और उसके नाखून बड़े

कड़े और घुमावदार थे, जैसे शिकारी जानवरों के होते हैं। हम सब उस राक्षस को देख कर एक बार फिर गश खा गए।
जब हम होश में आए तो देखा कि राक्षस हम लोगों के पास ही खड़ा है और हमें देख रहा है। फिर वह हमारे और निकट आया और हममें से एक-एक को उठाकर हाथ में घुमा- फिरा कर देखने लगा। जैसे कसाई लोग बकरियों और भेड़ों को उनकी मोटाई का अंदाज लगाने के लिए देखते हैं। सबसे पहले उसने मुझे पकड़ा लेकिन दुबला- पतला देख कर रख दिया। फिर उसने हर एक को इसी तरह देखा और अंत में कप्तान को सब से मोटा-ताजा पाकर उसे एक हाथ से पकड़ा और दूसरे हाथ से एक छड़ उसके शरीर में आर-पार कर दी और फिर आग जला कर कप्तान को भून कर खा गया। फिर अंदर जा कर सो गया। उसके खर्राटे बादल की गरज की तरह आते रहे और रात भर हमें भयभीत करते रहे। दिन निकलने पर वह जागा और घर से बाहर चला गया।
हम सब अपनी दशा पर रोने लगे। हमारी समझ ही में नहीं आ रहा था कि उस भयंकर राक्षस से किस प्रकार प्राण बच सकते हैं। हम सबने अपने को ईश्वर की इच्छा पर छोड़ दिया। घर से बाहर निकल कर हमने फल-फूल खाकर भूख बुझाई। हमने चाहा कि रात को उस घर में न जाएँ किंतु और कोई स्थान था ही नहीं जहाँ रात बिताते, फिर राक्षस तो हमें ढूँढ़ निकालता ही। अतएव हम उसी मकान में आ गए। कुछ रात बीतने पर वह राक्षस फिर आया। उसने फिर हम लोगों को पहले की तरह उठा-उठा कर देखा और हमारे एक साथी को अन्य लोगों की अपेक्षा अधिक मोटा-ताजा पाकर उसके शरीर में छड़ घुसेड़कर भूनकर खा गया।
सवेरे जब वह बाहर गया तो हम लोग बाहर निकले। हमारे कई साथियों ने कहा कि इस प्रकार की कष्टदायक मृत्यु से अच्छा है हम लोग समुद्र में डूब मरें। किंतु हममें से एक ने कहा कि हम लोग मुसलमान है और हमारे लिए आत्महत्या बड़ा पाप है। हमें यह न करना चाहिए कि राक्षस से बचने के लिए स्वयं अपनी हत्या कर लें। उसकी बात मानकर हम आत्महत्या से रुक गए और सोचने लगे कि कैसे जान बच सकती हैं।
मुझे एक उपाय सूझा। मैंने कहा, 'देखो, यहाँ सागर तट पर बहुत-सी लकड़ियाँ और रस्सियाँ मौजूद हैं। हम लोग इनकी चार-पाँच नावें बना लें और किसी जगह छुपाकर रख दें। यदि किसी प्रकार अवसर मिले तो हम उन पर निकल भागेंगे। अधिक से अधिक यही तो होगा कि नावें डूब जाएँगी। किंतु राक्षस के हाथों मरने से तो वह मौत कहीं अच्छी होगी।'

उन्हें यह मालूम भी न था कि मैं कहाँ सो रहा हूँ। जब मेरी आँख खुली ओर मैं समुद्र तट पर पहुँचा तो देखा कि तुम्हारा जहाज दूर चला गया है।'
कप्तान ने यह सुनकर मुझे ध्यानपूर्वक देखा और मुझे पहचान गया। उसने मुझे गले लगाया और भगवान को धन्यवाद दिया कि मैं जीवित हूँ हालाँकि मुझे मरा हुआ समझ रहा था। उसने कहा, 'तुम्हारे माल को भी मैंने हर जगह व्यापार में लगाया और इस पर हर सौदे में मुनाफा हुआ है। अब मैं तुम्हारे माल को तुम्हारे मुनाफे के साथ तुम्हें सौंपता हूँ।' यह कहकर उसने मुझे मेरी गठरियाँ सौंप दीं और वह नगद राशि भी दे दी जो मेरे माल के व्यापार के लाभ के रूप में उसके पास थी। मुझे यह सब मिलने की कोई आशा नहीं थी और मैंने भगवान को लाख-लाख धन्यवाद दिया।
फिर हमारा जहाज सिलहट द्वीप से अन्य द्वीपों में गया जहाँ से हमने लौंग, दारचीनी आदि खरीदा। हमने दूर-दूर की यात्रा की। एक जगह हमने इतने बड़े कछुए देखे जिनकी लंबाई चौड़ाई पचास-पचास हाथ की थी और अजीब मछलियाँ भी जो गाय की तरह दूध देती हैं। कछुओं का चमड़ा बहुत कड़ा होता है, उसकी ढालें बनाई जाती हैं। हमने एक और अजीब किस्म की मछलियाँ देखीं। इसका रंग और मुँह ऊँट जैसा होता है। घूमते-फिरते हमारा जहाज बसरा के बंदरगाह में आया। वहाँ से मैं बगदाद आ गया।
मैं कुशल-क्षेम से अपने घर आने पर भगवान को लाख-लाख धन्यवाद दिया। इस खुशी में मैंने बहुत-सा धन भिखारियों को तथा निर्धनों के सहायतार्थ दिया। इस यात्रा में मुझे इतना लाभ हुआ कि जिसकी गिनती नहीं की जा सकती। मैंने दान आदि करने के अतिरिक्त कई सुंदर भवन तथा आराम-आसाइश की चीजें भी खरीदीं। तीसरी समुद्र यात्रा का वर्णन करने के बाद सिंहबाद ने हिंदबाद को चार सौ दीनारें दीं। उससे यह भी कहा कि कल तुम फिर इसी समय आना और तब मैं तुम्हें अपनी चौथी यात्रा का हाल सुनाऊँगा। चुनांचे सिंदबाद तथा अन्य उपस्थित लोग सिंदबाद के घर से विदा हुए। दूसरे दिन निश्चित समय पर सब लोग आए और भोजनोपरांत सिंदबाद ने कहना शुरू किया।

सिंदबाद जहाजी की चौथी यात्रा

सिंदबाद ने कहा, कुछ दिन आराम से रहने के बाद मैं पिछले कष्ट और दुख भूल गया था और फिर यह सूझी कि और धन कमाया जाए तथा संसार की विचित्रताएँ और देखी जाएँ। मैंने चौथी यात्रा की तैयारी की और अपने देश की वे वस्तुएँ

चढ़ाया। एक लोहार से रकाबे बनाने को कहा और लगाम का सामान भी बनवाया। जब सारा सामान तैयार हो गया तो मैं उसे घोड़े पर सजाकर घोड़ा बादशाह के सामने ले गया। वह उस पर सवार हुआ तो उसे बहुत प्रसन्नता और संतोष हुआ। उसने मुझे बहुत इनाम-इकराम दिया और पहले से भी अधिक मुझे मानने लगा। फिर मैंने बहुत-सी जीनें और लगामें बनवा कर राज्य परिवार के सदस्यों, मंत्रियों आदि को दीं। उन्होंने उनके बदले हजारों रुपए तथा अन्य बहुमूल्य वस्तुएँ मुझे प्रदान कीं। राज दरबार में मेरा मान बढ़ा तो नगरवासी भी मेरा बहुत सम्मान करने लगे।
एक दिन बादशाह ने मेरे साथ एकांत बातचीत की। वह बोला, 'मैं तुमसे बहुत प्रसन्न हूँ और तुम पर अधिकाधिक कृपा करना चाहता हूँ। मेरे दरबार के लोग और साधारण प्रजाजन भी तुम्हारी बुद्धिमत्ता के कारण तुम्हें बहुत मानते हैं। मैं चाहता हूँ कि तुम एक काम करो। मुझे पूर्ण विश्वास है कि जो मैं कहूँगा तुम उससे इनकार नहीं करोगे।' मैंने कहा, 'आप जो भी आज्ञा करेंगे वह मेरे हित में होगी क्योंकि आपकी मुझ पर कृपा रहती है। मैं क्यों आपकी आज्ञा का उल्लंघन करूँगा?' उसने कहा, 'मैं चाहता हूँ कि तुम स्थायी रूप से यहाँ बस जाओ और अपने देश जाने का विचार छोड़ दो। इसलिए मैं यहाँ की एक सुंदर और सुशील कन्या से तुम्हारा विवाह करना चाहता हूँ।' मैंने सहर्ष इसे स्वीकार किया।
उसने एक अत्यंत रूपवती और गुणवती नव यौवना से मेरा विवाह करा दिया। मैं उसे पाकर बगदाद में बसे अपने परिवार को भूल-सा गया। कुछ दिनों बाद मेरे पड़ोसी की पत्नी बीमार हो गई और कुछ दिन बाद मर गई। पड़ोसी से मेरी अच्छी दोस्ती थी इसलिए मातमपुर्सी को उसके घर गया। वह आदमी अत्यंत शोक में डूबा था और उसके आँसू ही नहीं थमते थे। मैंने उसे समझाया कि वह धैर्य रखे, भगवान चाहेगा तो दूसरी शादी के बाद और अच्छा जीवन बीतेगा। उसने कहा, 'तुम कुछ नहीं जानते इसीलिए ऐसी तसल्ली दे रहे हो। मैं तो दो-चार घंटे का ही मेहमान हूँ।'
मैंने परेशान होकर उससे स्थिति स्पष्ट करने को कहा तो वह बोला, 'आज मुझे मृत पत्नी के साथ जीते जी दफन किया जाएगा। हमारे यहाँ बहुत पुराने जमाने से यह रस्म चली आ रही है कि पति मरता है तो पत्नी उसके साथ दफन कर दी जाती है और पत्नी मरती है तो पति को उसके साथ गाड़ दिया जाता है। अब मेरी जान

बचने की कोई सूरत ही नहीं है। यहाँ के निवासी एकमत हो कर इस रिवाज को स्वीकार करते हैं। कोई इसके विरुद्ध कुछ नहीं कर सकता।'
इस भयंकर रिवाज की बात सुनते ही मेरे होश उड़ गए। मैं उसी समय से अपने बारे में चिंता करने लगा क्योंकि मेरा भी विवाह हो चुका था। थोड़ी देर में उसके सगे संबंधी एकत्र हो गए। उन्होंने कफन आदि का प्रबंध किया। उन्होंने औरत की लाश को नहला-धुलाकर बहुमूल्य वस्त्र पहनाए और एक खुली अर्थी पर रख कर ले चले। उसका पति भी शोकसूचक वस्त्र पहने रोता-पीटता उनके पीछे चला।
सब लोग एक बड़े पहाड़ पर पहुँचे। वहाँ पर उन्होंने एक बड़ी चट्टान हटाई तो उसके नीचे बड़ा गहरा और अँधेरा गड्ढा दिखाई दिया। सब लोगों ने रस्सी के द्वारा अर्थी को गड्ढे की तह तक उतार दिया। उसके बाद मृत स्त्री के पति को भी गड्ढे में उतार दिया। उन्होंने उसके साथ सात रोटियाँ और जल से भरा पात्र भी रख दिया और उसे उतारने के बाद गढ्ढे का मुँह चट्टान से बंद कर दिया। वह पहाड़ बहुत लंबा-चौड़ा था। उसके दूसरी ओर समुद्र था और उस ओर का क्षेत्र दुर्गम और निर्जन था। चट्टान को यथावत रख कर और पति-पत्नी के लिए शोक करके सब लोग वापस हुए।
मैं बहुत ही डर गया था और सोचता था कि ऐसी अमानुषिक रीति जो दुनिया के किसी देश में नहीं है यहाँ क्यों मानी जाती है। किंतु जिससे भी बात करता वह इस रिवाज का समर्थन करता और मेरी बात को गलत कहता था। यहाँ तक कि जब मैंने बादशाह से बात की तो उसने कहा, 'सिंदबाद, यह हमारे बुजुर्गों की बहुत पुरानी चलाई गई रस्म है। मैं अगर चाहूँ भी तो इसे रोक नहीं सकता। यह रस्म मुझ पर भी लागू होती है। भगवान न करे अगर रानी का देहांत हो जाय तो मुझे भी उसके साथ जीते जी दफन कर दिया जाएगा।' मैंने पूछा कि यह रस्म क्या उन अन्य देशवासियों पर भी लागू होती है जो यहाँ पर रहने लगे हैं। बादशाह मुस्कराने लगा और बोला, 'यह रस्म देशी-विदेशी सब के लिए है। इससे कोई व्यक्ति बाहर नहीं समझा जाता।'
इसके बाद मैं बहुत घबराया रहने लगा। मैं बराबर सोचता था कि कहीं मेरी पत्नी मर गई तो मुझे भी ऐसी भयानक मौत मरना पड़ेगा। मैं इसीलिए अपनी पत्नी के स्वास्थ्य की बहुत देखभाल करने लगा। किंतु ईश्वर की इच्छा कौन टाल सकता है। कुछ समय के बाद मेरी पत्नी सख्त बीमार हुई और कुछ दिनों में काल कवलित हो गई। मुझ पर दुख का पहाड़ टूट पड़ा। मैं सर पीटता था और कहता था कि मैं

जहाज पर कप्तान से भी मैंने यही बात कही और उसकी कृपा के बदले उसे कुछ रत्न देने लगा किंतु उसने लेने से इनकार कर दिया। हम वहाँ से चल कर कई द्वीपों में गए। हम सरान द्वीप से दस दिन की राह पर स्थित नील द्वीप गए। वहाँ से हम कली द्वीप पहुँचे जहाँ सीसे की खाने हैं और हिंदुस्तान की कई वस्तुएँ ईख, कपूर आदि भी होती हैं। कली द्वीप बहुत बड़ा है और वहाँ व्यापार बहुत होता है। हम लोग अपनी चीजें खरीदते-बेचते कुछ समय के बाद बसरा पहुँचे जहाँ से मैं बगदाद आ गया। मुझे असीमित धन मिला था। मैंने कई मसजिदें आदि बनवाईं और आनंदपूर्वक रहने लगा। यह कहकर सिंदबाद ने हिंदबाद को चार सौ दीनारें और दीं और दूसरे रोज भी आने को कहा। अगले दिन सब लोग फिर एकत्र हुए और भोजनोपरांत सिंदबाद ने अपनी पाँचवीं यात्रा का वर्णन शुरू किया।

सिंदबाद जहाजी की पाँचवीं यात्रा

सिंदबाद ने कहा कि मेरी विचित्र दशा थी। चाहे जितनी मुसीबत पड़े मैं कुछ दिनों के आनंद के बाद उसे भूल जाता था और नई यात्रा के लिए मेरे तलवे खुजाने लगते थे। इस बार भी यही हुआ। इस बार मैंने अपनी इच्छानुसार यात्रा करनी चाही। चूँकि कोई कप्तान मेरी निर्धारित यात्रा पर जाने को राजी नहीं हुआ इसलिए मैंने खुद ही एक जहाज बनवाया। जहाज भरने के लिए सिर्फ मेरा माल काफी न था इसीलिए मैंने अन्य व्यापारियों को भी उस पर चढ़ा लिया और हम अपनी यात्रा के लिए गहरे समुद्र में आ गए।
कुछ दिनों में हमारा जहाज एक निर्जन टापू पर लगा। वहाँ रुख पक्षी का एक अंडा रखा था जैसा कि एक पहले की यात्रा में मैंने देखा था। मैंने अन्य व्यापारियों को उसके बारे में बताया। वे उसे देखने उसके पास गए। उस अंडे में से बच्चा निकलने वाला था। जब जोर की ठक-ठक की आवाज के साथ बच्चे की चोंच अंडा तोड़ कर निकली तो व्यापारियों को सूझा कि रुख के बच्चे को भूनकर खा जाएँ। वे कुल्हाड़ियों से अंडा तोड़ने लगे। मेरे लाख मना करने पर भी वे न माने और बच्चा निकालकर उसे काट-भून कर खा गए।
कुछ ही देर में चार बड़े-बड़े बादल जैसे आते दिखाई दिए। मैंने पुकारकर कहा कि जल्दी से जहाज पर चलो, रुख पक्षी आ रहे हैं। हम जहाज पर पहुँचे ही थे कि बच्चे के माता-पिता वहाँ आ गए और अंडे को टूटा और बच्चे को मरा देख कर क्रोध में भयंकर चीत्कार करने लगे। कुछ देर में वे उड़कर चले गए। हमने तेजी से जहाज एक ओर भगाया कि रुख पक्षियों के क्रोध से बचें किंतु कोई लाभ

ढीले किए जिससे मैं साँस लेने लगा और कुछ देर में होश आ गया। अब बूढ़े ने मुझे उठने का इशारा किया और मेरे न उठने पर उसने एक पाँव मेरे पेट में गड़ाया और दूसरा मुँह पर मारा। इससे मैं विवश हो गया कि उसके कहने के अनुसार काम करूँ। मैं उसे लिए घूमने लगा। वह पेड़ों के नीचे मुझे ले जाता और फल तोड़ता, खुद खाता और कुछ मुझे भी खाने को दे देता।
रात होने पर मैं लेटने की तैयारी करने लगा। बूढ़ा अब भी मेरी गर्दन से न उतरा। वैसे ही अपनी गर्दन के चारों ओर उसके पाँवों का घेरा लिए हुए लेट गया और सो गया। वह भी इसी दशा में सो गया। सुबह उसने ठोकर मारकर मुझे जगाया और उसी तरह मुझ पर सवार होकर वह द्वीप में घूमता फिरा। मैं क्रोध और दुख से अधमरा हो गया किंतु कुछ कर ही नहीं सकता था क्योंकि वह मुझे एक क्षण के लिए भी नहीं छोड़ता था और रुकने पर एड़ियों को ठोकरें मारता था जिससे मुझे अतीव कष्ट होता था।
एक दिन मैंने वहाँ पर कद्दू के सूखे खोल पड़े देखे। मैंने उन्हें साफ किया और उनमें पके अंगूरों का रस निचोड़ कर भर दिया। कुछ दिनों बाद फिर घूमता हुआ वहाँ गया तो देखा कि रस से खमीर उठ गया है और वह मदिरा बन गया है। मैं बहुत कमजोर हो गया था इसीलिए स्वयं को शक्ति देने का यह उपाय किया था। मैंने थोड़ी- सी शराब पी और मुझ में शक्ति आ गई। मैं तेजी से चलने लगा और गाने भी लगा। बूढ़े को यह देखकर आश्चर्य हुआ। उसने इशारे से एक कद्दू की शराब देने के लिए कहा।
मैं तो दो-चार घूँट ही लेता था। उसे थोड़ी मदिरा पीकर आनंद आया तो वह एकदम से पूरे कद्दू की शराब पी गया। इससे उसे तेज नशा चढ़ आया। वह गाने लगा और झूमने और डगमगाने लगा। जब मेरी गर्दन पर उसकी पकड़ ढीली हो गई तो मैंने उसे पृथ्वी पर पटक दिया। उसके गिरते ही मैंने एक पत्थर से उसका सिर कुचल - कुचलकर उसे मार डाला। मुझे उसी पकड़ से छूट कर बड़ा सुख मिला और मैं समुद्र तट पर आ गया।
संयोग से उसी समय एक जहाज के कुछ लोग जहाज में मीठा पानी भरने उस द्वीप में उतरे। उन्हें मेरी कहानी सुनकर बड़ा आश्चर्य हुआ। उन्होंने कहा, 'क्या तुम सचमुच इस बूढ़े के हाथ पड़े थे? उसने तो न जाने कितनों को इसी तरह दौड़ाकर और गला घोंटकर मार डाला है। उसके हाथ से कोई नहीं बचा। तुम वास्तव में बहुत भाग्यशाली हो। इस द्वीप के अंदर कोई नहीं जाता, सभी इससे भय खाते हैं।' फिर वे मुझे अपने जहाज पर ले आए। कप्तान ने भी मेरा हाल सुनकर मुझ पर दया की और

काली मिर्च, चंदन और मोतियों को बेचा तो मेरी आशा से कहीं अधिक लाभ हुआ। मैंने उसका दसवाँ भाग दान में दे दिया और अपने सुख सुविधा की वस्तुएँ खरीदकर बगदाद में अपने घर पर आकर रहने लगा।
पाँचवी यात्रा का वृत्तांत सुनाकर सिंदबाद ने हिंदबाद को फिर चार सो दीनारें दीं और उसे तथा अन्य मित्रों को विदा करके अगले दिन फिर नया यात्रा वृत्तांत सुनने के लिए आमंत्रित किया। अगले दिन सब आए और खाना पीना होने के बाद यात्रा वृत्तांत आरंभ हो गया।

सिंदबाद जहाजी की छठी यात्रा

सिंदबाद ने हिंदबाद और अन्य लोगों से कि आप लोग स्वयं ही सोच सकते हैं कि मुझ पर कैसी मुसीबतें पड़ीं और साथ ही मुझे कितना धन प्राप्त हुआ। मुझे स्वयं इस पर आश्चर्य होता था। एक वर्ष बाद मुझ पर फिर यात्रा का उन्माद चढ़ा। मेरे सगे-संबंधियों ने मुझे बहुत रोका किंतु मैं न माना। आरंभ में मैंने बहुत-सी यात्रा थल मार्ग से की और फारस के कई नगरों में जाकर व्यापार किया। फिर एक बंदरगाह पर एक जहाज पर बैठा और नई समुद्र यात्रा शुरू की। कप्तान की योजना तो लंबी यात्रा पर जाने की थी किंतु वह कुछ समय बाद रास्ता भूल गया। वह बराबर अपनी यात्रा पुस्तकों और नक्शों को देखा करता था ताकि उसे यह पता चले कि कहाँ है। एक दिन वह पुस्तक पढ़ कर रोने-चिल्लाने लगा। उसने पगड़ी फेंक दी और बाल नोचने लगा। हमने पूछा कि तुम्हें यह क्या हो गया है, तो उसने कुछ देर में बताया कि यहाँ एक समुद्री धारा हमें एक ओर लिए जाती हैं, वह हमें एक तट पर ऐसा पटकेगी कि हमारा जहाज टूट जाएगा और हम सब उसी तट पर मर जाएँगे। यह कहकर उसने जहाज के पाल उतरवा दिए।
उससे कुछ न हुआ। धारा के वेग से उछल कर जहाज पहाड़ी से टकराया और शीशे की तरह बिखर गया। चूँकि तट ही पर यह हुआ था इसीलिए हम लोग खाद्य सामग्री और अन्य सामान किनारे पर ले आए। कप्तान ने कहा 'भाग्य पर किसी का वश नहीं है। अब हम सब लोग एक-दूसरे के गले लगकर रो लें और अपनी-अपनी कब्रें खोद लें क्योंकि यहाँ से कोई बचकर नही गया है।' यह सुनकर हम लोग एक-दूसरे के गले लगकर रोने लगे क्योंकि हमने देखा कि किनारे पर दूर-दूर तक जहाजों के टुकड़े और मानव कंकाल बिखरे पड़े थे। मालूम होता था कि हजारों यात्री वहाँ आकर मर गए हैं। चारों ओर उनके व्यापार की वस्तुएँ बिखरी पड़ी थीं।

सोने के पानी से लिखा जाए ताकि यह हमारे यहाँ के इतिहास की तथा अन्य ज्ञानवर्धक पुस्तकों में भी जगह पर सके।
उसने मेरी गठरियाँ खोलने की आज्ञा दी। उनमें के बहुमूल्य रत्नों तथा चंदनादि अन्य वस्तुओं को देखकर उसे और भी आश्चर्य हुआ। मैंने कहा, 'महाराजाधिराज, यह सब आप ही का है, आप इसमें से जितना चाहें ले लें बल्कि सब कुछ लेना चाहें तो वह भी करें।' उसने मुस्कराकर उत्तर दिया, 'नहीं, यह सब तेरा हैं, हम इसमें से कुछ नहीं लेंगे।' फिर उसने आज्ञा दी कि इस मनुष्य को इसके माल-असबाब के साथ एक अच्छे घर में ठहराओ, इसकी सेवा के लिए अनुचर रखो और हर प्रकार इसकी सुख-सुविधा का खयाल रखो। उसके सेवकों ने ऐसा ही किया और मुझे एक शानदार मकान में ले जाकर उतारा। मैं रोज राज दरबार जाया करता था और वहाँ से छुट्टी मिलने पर इधर-उधर घूम-फिर कर राज्य की देखने योग्य चीजें देखा करता था।
सरान द्वीप भूमध्य रेखा के किंचित दक्षिण में है। इसीलिए वहाँ सदैव ही दिन और रात बराबर होते हैं। उस द्वीप की लंबाई चालीस कोस है और इतनी ही उसकी चौड़ाई है। राजधानी के चारों ओर ऊँचे-ऊँचे पहाड़ हैं। वहाँ से समुद्र तट तीन दिन की राह पर है। वहाँ लाल (मणि) तथा अन्य रत्नों की कई खानें हैं और वहाँ कोरंड नामी पत्थर भी पाया जाता है जिससे हीरों और अन्य रत्नों को काटते और तराशते हैं। वहाँ नारियल के तथा अन्य कई फलों के वृक्ष भी बहुतायत से हैं। वहाँ के समुद्र में मोती भी बहुत मिलते हैं। हजरते आदम, जो कुरान और बाइबिल के अनुसार मनुष्यों के आदि पुरुष हैं, जब स्वर्ग से उतारे गए थे तो इसी द्वीप के एक पहाड़ पर लाए गए थे।
जब मैं वहाँ खूब घूम-फिर कर देख चुका तो मैंने बादशाह से निवेदन किया कि अब मुझे मेरे देश जाने की अनुमति दीजिए। उसने मुझे अनुमति ही नहीं बल्कि कई बहुमूल्य वस्तुएँ इनाम के तौर पर भी दीं। उसने खलीफा हारूँ रशीद के नाम एक पत्र और बहुत-से उपहार भी मुझे दिए कि मैं उन्हें खलीफा तक पहुँचा दूँ। मैंने सिर झुका कर यह स्वीकार किया। बादशाह ने मेरे ले जाने के लिए एक मजबूत जहाज का प्रबंध किया और कप्तान और खलासियों को ताकीद की कि सिंदबाद को बड़े सम्मान से उसके देश में पहुँचाना, रास्ते में इसे किसी प्रकार की असुविधा न हो।
सरान द्वीप के बादशाह ने जो पत्र खलीफा के नाम दिया था वह पीले रंग के नरम चमड़े पर लिखा था। यह चमड़ा किसी पशु विशेष का था और बहुत ही मूल्यवान था।

उस पर बैंगनी स्याही से पत्र लिखा था। पत्र का लेख इस प्रकार था, 'यह पत्र सरान द्वीप के बादशाह की ओर से भेजा जा रहा है। उस बादशाह की सवारी के आगे एक हजार सजे-सजाए हाथी चलते हैं, उसका राजमहल ऐसा शानदार है जिसकी छतों में एक लाख मूल्यवान रत्न जड़े हैं और उसके खजाने में अन्य वस्तुओं के अतिरिक्त बीस हजार हीरे जड़े मुकुट रखे हैं। सरान द्वीप का बादशाह खलीफा हारूँ रशीद को निम्नलिखित उपहार भातृभाव से भेज रहा है। वह चाहता है कि खलीफा और उसके दृढ़ मैत्री संबंध हो जाएँ और एक-दूसरे का अहित हम दोनों न चाहें। मैं सरान द्वीप का बादशाह खलीफा की कुशल-क्षेम चाहता हूँ।'
जो उपहार बादशाह ने खलीफा को भेजे थे उनमें मणि का बना हुआ एक प्याला था जिसका दल पौन गिरह (लगभग पौने दो इंच) मोटा था और उसके चारों ओर मोतियों की झालर थी। झालर के मोतियों में प्रत्येक तीन माशे के वजन का था। एक बिछौना अजगर की खाल का, जो एक इंच से अधिक मोटा था। इस बिछौने की विशेषता यह थी कि उस पर सोने वाला आदमी कभी बीमार नहीं पड़ता था। तीसरा उपहार एक लाख सिक्कों के मूल्य की चंदन की लकड़ी थी। चौथा उपहार तीस दाने कपूर के थे जो एक-एक पिस्ते के बराबर थे। पाँचवाँ उपहार एक दासी थी जो अत्यंत ही रूपवती थी और अति मूल्यवान वस्त्राभूषणों से सुसज्जित थी।
हमारा जहाज कुछ समय की यात्रा के बाद सकुशल बसरा के बंदरगाह में पहुँच गया। मैं अपना सारा माल और खलीफा के लिए भेजा गया पत्र और उपहार लेकर बगदाद आया। सब से पहले मैंने यह किया कि उस दासी को - जिसे मैंने परिवार के युवकों से सुरक्षित रखा था - तथा अन्य उपहार और पत्र लेकर खलीफा के राजमहल में पहुँचा। मेरे आने की बात सुनकर खलीफा ने मुझे तुरंत बुला भेजा। उस के सेवकगण मुझे सारे सामान के साथ खलीफा के सम्मुख ले गए। मैंने जमीन चूमकर खलीफा को पत्र दिया। उसने पत्र को पूरा पढ़ा और फिर मुझ से पूछा, 'तुमने तो सरान द्वीप के बादशाह को देखा है, क्या वह ऐसा ही ऐश्वर्यशाली है जैसा इस पत्र में लिखा है?
मैंने कहा, 'वह वास्तव में ऐसा ही है जैसा उसने लिखा है। उसने पत्र में बिल्कुल अतिशयोक्ति नहीं की, मैंने उसका ऐश्वर्य और प्रताप अपनी आँखों से देखा है। उसके राजमहल की शान-शौकत का शब्दों में वर्णन नहीं हो सकता। जब वह कहीं जाता है तो सारे मंत्री और सामंत अपने-अपने हाथियों पर सवार होकर उसके आगे-पीछे चलते हैं। उसके अपने हाथी के हौदे के सामने अंग रक्षक सुनहरे काम के बरछे लिए चलते हैं और पीछे सेवक मोरछल हिलाता रहता है। उस

मोरछल के सिरे पर एक बहुत बड़ा नीलम लगा हुआ है। सारे हाथियों के हौदे और साज-सामान ऐसे सुसज्जित हैं जिसका वर्णन मेरे वश की बात नहीं है।
'जब बादशाह की सवारी चलती है तो एक उद्घोषक उच्च स्वर में कहता है कि शानदार बादशाह की सवारी आ रही है जिसके महल में एक लाख रत्न जड़े हैं और जिसके पास बीस हजार हीरक जटित मुकुट हैं और जिसके सामने कोई राजा नहीं ठहर सकता चाहे वह हिंदू हो या मुसलमान।'
'पहले उद्घोषक के बोलने के बाद दूसरा उद्घोषक कहता है कि बादशाह के पास चाहे जितना ऐश्वर्य हो मरना तो इसके लिए प्रारब्ध है। इस पर पहला कहता है कि इसे सब लोगों का आशीर्वाद मिलना चाहिए कि यह अनंत जीवन पाए।
'यह बादशाह इतना न्यायप्रिय है कि इसके राज्य में न कोई न्यायाधीश है न कोतवाल। उसकी प्रजा ऐसी सुबुद्ध है कि कोई न किसी पर अन्याय करता है न किसी को दुख पहुँचाता है। चूँकि सब लोग बड़े मेल-मिलाप से रहते हैं इसीलिए कोई जरूरत ही नहीं पड़ती कि व्यवस्था ऊपर से कायम की जाए। इसीलिए सरान द्वीप के राज्य में न पुलिस या कोतवाल रखे गए हैं न न्यायाधीश।'
खलीफा ने यह सुनकर कहा कि तुम्हारे वर्णन और इस पत्र से जान पड़ता है कि वह बादशाह बड़ा ही समझदार और होशियार है, इसीलिए इतनी अच्छी व्यवस्था कर पाता है कि पुलिस आदि की आवश्यकता ही न हो। यह कहकर खलीफा ने मुझे खिलअत (सम्मान परिधान) दी और विदा किया।
यह कहानी कहकर सिंदबाद ने कहा कि आप लोग कल फिर आएँ तो मैं अपनी सातवीं और अंतिम समुद्र यात्रा का वर्णन करुँगा। यह कहकर उसने चार सौ दीनारें हिंदबाद को दीं। दूसरे दिन भोजन के समय हिंदबाद आया और सिंदबाद के मुसाहिब भी आए। भोजनोपरांत सिंदबाद ने कहानी शुरू की।

सिंदबाद जहाजी की सातवीं यात्रा

सिंदबाद ने कहा, दोस्तो, मैंने दृढ़ निश्चय किया था कि अब कभी जल यात्रा न करूँगा। मेरी अवस्था भी इतनी हो गई थी कि मैं कहीं आराम के साथ बैठ कर दिन गुजारता। इसीलिए मैं अपने घर में आनंदपूर्वक रहने लगा। एक दिन अपने मित्रों के साथ भोजन कर रहा था कि एक नौकर ने आ कर कहा कि खलीफा के दरबार से एक सरदार आया है, वह आपसे बात करना चाहता है। मैं भोजन करके बाहर गया तो सरदार ने मुझसे कहा कि खलीफा ने तुम्हें बुलाया है। मैं तुरंत खलीफा के दरबार को चल पड़ा।

खलीफा के सामने जा कर मैंने जमीन चूम कर प्रणाम किया। खलीफा ने कहा, 'सिंदबाद, मैं चाहता हूँ कि सरान द्वीप के बादशाह के पत्र के उत्तर में पत्र भेजूँ और उसके उपहारों के बदले उपहार भेजूँ। तुम यह सब ले जा कर सरान द्वीप के बादशाह को पहुँचा दो।'
मुझे यह आदेश पा कर बड़ी परेशानी हुई। मैंने हाथ जोड़ कर कहा, 'हे समस्त मुसलमानों के अधिपति, मुझ में आपकी आज्ञा का उल्लंघन करने का साहस तो नहीं है किंतु मैंने समुद्र की कई यात्राएँ की हैं और हर एक में ऐसे ऐसे जानलेवा कष्ट झेले हैं कि अब दृढ़ निश्चय किया है कि कभी जहाज पर पाँव नहीं रखूँगा।' यह कह कर मैंने खलीफा को संक्षेप में अपनी छहों यात्राओं की विपदा सुनाई। खलीफा को यह सब सुन कर आश्चर्य बहुत हुआ किंतु उसने अपना निर्णय न बदला। उसने कहा, 'वास्तव में तुम पर बड़े कष्ट पड़े हैं लेकिन मेरे कहने से एक बार और यात्रा करो क्योंकि इस काम को तुम्हारे अतिरिक्त कोई नहीं कर सकता। फिर तुम कभी यात्रा न करना।'
मैंने देखा कि खलीफा अपने निश्चय से हटनेवाला नहीं है और तर्क-वितर्क से कोई लाभ न होगा इसीलिए मैंने यात्रा पर जाना स्वीकार कर लिया। खलीफा ने मुझे राह खर्च के लिए चार हजार दीनार देने को कहा और कहा कि तुम तुरंत ही अपने घर जाओ और घर की व्यवस्था ठीक करके यात्रा की तैयारी शुरू कर दो। मैं घर जा कर अपने काम- काज को समेटने लगा और यात्रा के लिए तैयारी करके कुछ दिनों के बाद खलीफा के दरबार में जा पहुँचा।
मुझे खलीफा के सामने हाजिर किया गया। मैंने रीति के अनुसार धरती चूम कर खलीफा को प्रणाम किया। खलीफा मुझे देख कर प्रसन्न हुआ और उसने मेरी कुशलक्षेम पूछी। मैंने भगवान की अनुकंपा और खलीफा की दया की प्रशंसा की। खलीफा ने मुझे चार हजार दीनार यात्रा व्यय के लिए दिलाए।
मैं खलीफा की आज्ञानुसार उसके दिए हुए उपहार ले कर बसरा बंदरगाह पर आया और वहाँ से एक जहाज ले कर सरान द्वीप को चल दिया। यात्रा निर्विघ्न समाप्त हुई। मैं सूचना दे कर सरान द्वीप के बादशाह के सामने गया और अपना परिचय दिया। उसने कहा, हाँ सिंदबाद, मैंने तुम्हें पहचान लिया। तुम कुशल-मंगल से तो हो। मैंने बादशाह की न्यायप्रियता और मृदु स्वभाव की प्रशंसा की और कहा कि मैं खलीफा की ओर से आपके लिए कुछ भेंट और एक पत्र लाया हूँ।
खलीफा ने जो उपहार भेजे थे उनमें अन्य वस्तुओं के अतिरिक्त एक अत्यंत सुंदर लाल रंग का कालीन था जिसका मूल्य चार हजार दीनार था। उस पर बहुत ही

सुंदर सुनहरा काम किया हुआ था। एक प्याला माणिक का था जिसका दल एक अंगुल मोटा था। प्याले पर एक मनुष्य का चित्र बना था जो तीर-कमान से एक शेर का शिकार कर रहा था। एक राज सिंहासन भी था, जो ऊपर से नीचे तक रत्नों से जड़ा था और हजरत सुलेमान के तख्त को भी मात करता था। इसके अलावा और बहुत-सी मूल्यवान और दुर्लभ वस्तुएँ थीं। उपहारों को देखने के बाद बादशाह ने खलीफा का पत्र पढ़ा।
खलीफा ने अपने पत्र में लिखा था, 'आपको अब्दुल्ला हारूँ रशीद का, जो भगवान की दया से अपने पूर्वजों का उत्तराधिकारी है, प्रणाम पहुँचे। हमें आपका पत्र और आपके भेजे हुए उपहार प्राप्त हुए। हमें इन बातों से बड़ी प्रसन्नता है कि हम आप के उपहारों के बदले में कुछ उपहार आप को भेज रहे हैं। हमें पूर्ण आशा है कि यह पत्र आपकी सेवा में पहुँचेगा और इससे आपको ज्ञात होगा कि आपके लिए हमारे मन में कितना प्रेम हैं।'
सरान द्वीप का बादशाह यह पत्र पढ़ कर बहुत खुश हुआ। अब मैंने विदा माँगी। वह अपनी कृपालुता के कारण मुझे विदा न करना चाहता था किंतु जब मैंने इसके लिए बार - बार अनुनय की तो उसने मुझे खिलअत (सम्मान परिधान) तथा बहुत - सा इनाम दे कर विदा किया। मैं अपने जहाज पर वापस आया और कप्तान से कहा कि मैं शीघ्रातिशीघ्र बगदाद पहुँचना चाहता हूँ। उसने जहाज को तेज चलाया किंतु भगवान की कुछ और ही इच्छा थी। हमारा जहाज चले तीन-चार ही दिन हुए थे कि समुद्री लुटेरों ने आ कर हमें घेर लिया। हम उनका सामना करने में असमर्थ रहे। लुटेरों ने जहाज का सारा सामान भी लूट लिया और हम सब लोगों को भी बंदी बना लिया। हममें से जिन लोगों ने प्रतिरोध करना चाहा उन्हें लुटेरों ने मार डाला। फिर लुटेरों ने हम लोगों के कपड़े उतार कर गुलामों जैसे कपड़े, जो गाढ़े के बने होते हैं, पहनाए और एक दूरस्थ द्वीप में ले जा कर हमें बेच डाला।
मुझे एक मालदार व्यापारी ने खरीद लिया। उसने अपने घर ले जा कर मुझे अपने गुलामों जैसे कपड़े पहनाए और मुझे खाने-पीने को दिया। वह यह तो जानता नहीं था कि मैं कौन हूँ और क्या करता हूँ। उसने एक दिन मुझसे पूछा कि तुम्हें कोई काम आता है या नहीं तब मैंने बताया कि मेरा धंधा व्यापार का था और समुद्री लुटेरों ने हमारा जहाज लूट लिया और हम लोगों को गुलाम बना कर बेच दिया। मालिक ने पूछा कि तुम्हें तीर चलाना आता है या नहीं। मैंने कहा कि बचपन में मैंने इसका अभ्यास किया था और अब भी इसे भूला नहीं हूँगा।

मत मारो बल्कि यहाँ से जितने चाहो हाथी दाँत ले लो। मालूम होता था कि जब कोई हाथी मृत्यु के निकट होता है तो खड्ड में गिर कर मर जाता है।
मैं वहाँ एक क्षण के लिए ही ठहरा और वापस अपने मालिक के यहाँ पहुँचा। रास्ते में मुझे एक भी हाथी नहीं दिखाई दिया। मालूम होता था कि सभी हाथी उस जंगल को छोड़ कर किसी दूर के जंगल में चले गए थे। मेरा मालिक मुझे देख कर बड़ा प्रसन्न हुआ और कहने लगा, 'अरे अभागे सिंदबाद, तू अभी तक कहाँ था? मैं तो तेरी चिंता में मरा जा रहा था। मैं तुझे ढूँढ़ता हुआ उस जंगल में गया तो देखा कि पेड़ उखड़ा पड़ा है और तेरे तीन-कमान जमीन पर पड़े हैं। मैंने बहुत खोजा किंतु तेरा पता न मिला। मैं तेरे जीवन से निराश हो कर बैठ गया था। अब तू अपना पूरा हाल सुना। तुझ पर क्या बीती और तू अब तक किस प्रकार जीवित बचा है?'
मैंने व्यापारी को पूरा हाल सुनाया। वह उस खड्ड की बात सुन कर बहुत प्रसन्न हुआ। मेरे साथ वह उस खड्ड तक पहुँचा और जितने हाथी दाँत उसके हाथी पर लद सकते थे उन्हें लाद कर शहर वापस आया। फिर उसने मुझ से कहा, 'भाई, आज से तुम मेरे गुलाम नहीं हो। तुमने मेरा बड़ा उपकार किया है, तुम्हारे कारण मेरे पास अपार धन हो जाएगा। मैंने तुम से अभी तक एक बात छुपा रखी थी। मेरे कई गुलाम हाथियों ने मार डाले हैं। जो कोई हाथियों के शिकार को जाता था दो या तीन दिन से अधिक नहीं जी पाता था। भगवान ने तुम्हें हाथियों से बचाया। इससे मालूम होता है कि तुम बहुत दिन जिओगे। इससे पहले बहुत-से गुलाम खो कर भी मैं मामूली लाभ ही पाता था, अब तुम्हारे कारण मैं ही नहीं इस नगर के सारे व्यापारी संपन्न हो जाएँगे। मैं तुम्हें न केवल स्वतंत्र करूँगा बल्कि तुम्हें बड़ी धन-दौलत भी दूँगा और अन्य व्यापारियों से भी बहुत कुछ दिलवाऊँगा।'
मैंने कहा, 'आप मेरे स्वामी हैं। भगवान आपको चिरायु करे। मैं आपका बड़ा कृतज्ञ हूँ कि आपने समुद्री डाकुओं के पंजे से मुझे छुड़ा लिया और मेरा बड़ा भाग्य था कि मैं इस नगर में आ कर बिका। अब मैं आपसे और अन्य व्यापारियों से इतनी दया चाहता हूँ कि मुझे मेरे देश पहुँचा दें।' उसने कहा, 'तुम धैर्य रखो। जहाज यहाँ पर एक विशेष ॠतु में आते हैं और उनके व्यापारी हमसे हाथी दाँत मोल लेते हैं। जब वे जहाज आएँगे तो हम लोग तुम्हारे देश को जाने वाले किसी जहाज पर तुम्हें चढ़ा देंगे।' मैंने उसे सैकड़ों आशीर्वाद दिए।

स्त्री-बच्चों का भरण-पोषण करूँगा। हिंदबाद ने ऐसा ही किया और सारी आयु आनंद से बिताई।

ईसाई द्वारा सुनाई गई कहानी

ईसाई ने कहा, मैं मिस्र की राजधानी काहिरा का निवासी हूँ। मेरा बाप दलाल था। उस के पास काफी पैसा हो गया। उस ने मरने के बाद मैं ने भी वही व्यापार आरंभ किया। एक दिन मैं अनाज की मंडी में अपने दैनिक व्यापार के लिए गया तो मुझे अच्छे कपड़े पहने एक आदमी मिला। उस ने मुझे थोड़े-से तिल दिखा कर पूछा कि ऐसे तिल क्या भाव बिकते हैं। मैं ने कहा इनका मूल्य सौ मुद्रा प्रति मन है। उस ने कहा कि तुम इन्हें इस मूल्य पर बेच दो और खरीदनेवाला मिल जाए तो उसे मेरे पास ले आना, मैं फलाँ सराय में ठहरा हूँ।
मैं ने व्यापारियों से मोल-भाव किया तो उन्होंने कहा कि हम एक सौ मुद्रा प्रति मन पर सारे तिल खरीद लेंगे। मैं उस सराय में गया जहाँ का पता मुझे दिया गया था और व्यापारी ने गोदाम खुलवा कर अपना माल तुलवाया। वह एक सौ पचास मन निकला। माल गधों पर लदवा कर मैं ने मंडी के व्यापारियों को दिया और उन से उस का मूल्य ले कर सराय में गया और साढ़े सोलह हजार मुद्राएँ उस के आगे रखीं। उस ने कहा कि दस मुद्रा प्रति मन के हिसाब से डेढ़ हजार मुद्राएँ तो तुम्हारी ही हुईं, तुम इन्हें ले लो और बाकी पंद्रह हजार मुद्राएँ भी अपने पास रखो, जरूरत पड़ने पर मैं तुम से ले लूँगा।
यह कह कर वह अपने नगर को चला गया। एक महीने बाद मेरे पास आ कर बोला कि मेरा रुपया तुम्हारे पास है। मैं ने कहा, 'रुपया तैयार है, कहें तो अभी दे दूँ। लेकिन आप घोड़े से तो उतरिए और कुछ खा-पी कर ताजादम हो जाइए।' उस ने कहा, 'मुझे एक जरूरी काम से फौरन जाना है। तुम रुपए निकलवा रखो। मैं थोड़ी देर में लौट कर तुम से ले लूँगा।'
मैं ने रुपए निकलवा लिए लेकिन वह लौट कर न आया। एक महीने तक उस की प्रतीक्षा करने के बाद मैं ने उस की रकम को सुरक्षापूर्वक तहखाने में रखा। तीन महीने बाद वह मुझे फिर दिखाई दिया। मैं ने उस से कहा कि आप अपनी रकम तो ले लीजिए। उस ने हँस कर कहा, 'जल्दी क्या है, ले लूँगा। मैं जानता हूँ कि मेरा धन ईमानदार आदमी के पास है।' यह कह कर वह फिर चला गया।
एक वर्ष बाद वह फिर दिखाई दिया तो मैं ने कहा, 'अब तो आप अपना पैसा ले ही लीजिए, अगर आप इसे इस बीच व्यापार में लगाते तो अच्छा मुनाफा कमाते। खैर,

बिक जाता। किंतु मेरा घर बाजार से बहुत दूर था और मुझे माल लाने की मजदूरी काफी पड़ जाती थी। इसलिए दलालों ने मुझे सलाह दी कि 'यदि तुम हम पर विश्वास करो तो हम तुम्हें अच्छी तरकीब बताएँ। तुम अपना सारा बेचनेवाला माल इन व्यापारियों की दुकानों में रखवा दो। हर सप्ताह सिर्फ एक दिन सोमवार या गुरुवार को बाजार आया करो और व्यापारियों से अपने बिके हुए माल का दाम ले लिया करो। इसमें तुम्हारी रोज की मजदूरी भी बचेगी और समय भी। इस खाली समय में तुम नील नदी या अन्य सुंदर स्थानों की सैर करके जी बहलाया करना।'
मैं ने यह स्वीकार कर लिया। मैं दलालों को अपने घर ले गया और एक बार ही उन्हें सारा बिकनेवाला माल दे दिया। वे माल को ले कर मेरे साथ बाजार आए और सारा माल व्यापारियों की दुकानों पर रखवा दिया। उन्होंने मुझे मेरे माल की रसीद लिख दी और मैं ने भी लिख कर दे दिया कि मैं महीने-महीने आ कर बिके माल का दाम वसूल किया करूँगा। यह सब कर के मुझे बड़ा संतोष मिला और मैं ने अपने कुछ समवयस्कों से मित्रता कर के उनके साथ घूमना-फिरना शुरू किया। अक्सर मैं उनके साथ बाजार भी जाता और वहाँ के मोल-भाव को देख कर ज्ञान और मनोरंजन प्राप्त करता।
एक दिन मैं बदरुद्दीन व्यापारी की दुकान पर बैठा हुआ था। एक अत्यंत संभ्रांत स्त्री, जो कीमती पोशाक और तरह-तरह के जेवर पहने थी और जिसके साथ कई साफ- सुथरी सेविकाएँ भी थीं, आ कर मेरे पास बैठ गई। मुझे इच्छा होने लगी कि वह अपने चेहरे से नकाब हटाए तो मैं नेत्र सुख उठाऊँ। उस ने मेरी इस इच्छा को समझ लिया और बहाने से दो क्षण के लिए नकाब को झटके से उठा दिया। मैं उस के अनुपम रूप को देख कर ठगा-सा रह गया। उस ने बदरुद्दीन से साधारण कुशल-क्षेम पूछने के बाद एक जरी का थान माँगा। उस ने एक थान दिखाया जो उस सुंदरी को पसंद आया। उस ने पूछा यह थान कितने का है, मैं इसे ले जाऊँगी और कल इसका दाम भिजवा दूँगी।
बदरुद्दीन ने कहा थान छह हजार छह सौ मुद्राओं का है किंतु यह इनका माल है और मैं ने इनसे वादा किया है कि उनके बिके हुए सारे माल की कीमत आज ही इन्हें दूँगा, अगर मेरा माल होता तो मुझे चिंता नहीं थी, आप जब भी चाहतीं इसका दाम दे देतीं। उस स्त्री ने कहा आप एक दिन के लिए भी नहीं ठहर सकते? बदरुद्दीन ने कहा कि मजबूरी है, मुझे आज ही इनके माल की कीमत देनी होगी। वह सुंदरी इस पर नाराज हो गई। उस ने थान बदरुद्दीन के सामने फेंक दिया और बोली, 'तुम व्यापारी लोगों में सभ्यता और शील बिल्कुल नहीं होता, तुम अपने

अलावा किसी का विश्वास नहीं करते।' यह कह कर वह तमक कर उठ खड़ी हुई और दुकान से चल दी।
वह कुछ ही दूर गई थी कि मैं ने पुकार कर कहा कि आप आइए, मैं आप को कष्ट पहुँचाए बगैर सौदा कर लूँगा। वह स्त्री लौट आई क्योंकि उसे यह तो मालूम था कि माल का मालिक मैं हूँ। मैं ने वह थान उसे दे कर कहा कि आप इसे शौक से ले जाएँ, यह आप ही का है - चाहे दाम दें या न दें। वह यह सुन कर प्रसन्न हुई और बोली कि भगवान आप को धनी और सुखी रखे। मैं ने उस से चुपके से कहा, 'लेकिन आप को थान ले जाने के पहले यह करना होगा कि मुझे आप अपने अनूप रूप का रसास्वादन करने दें।' उस ने अपने मुख पर पड़ी हुई जाली की नकाब हटा दी। मैं पहले से भी अधिक चकित दृष्टि से उसे टकटकी बाँध कर देखने लगा। उस ने कुछ क्षणों के बाद नकाब फिर डाल लिया और थान उठा कर चली गई।
मैं कुछ देर तक अवाक और भ्रमित-सा बैठा रहा। फिर मैं ने व्यापारी बदरुद्दीन से पूछा कि यह स्त्री कौन है। उस ने कहा कि वह अमुक व्यापारी की पुत्री है, उसके पिता के पास असंख्य धन था, उस का देहांत हो गया है और वही सारी संपत्ति की स्वामिनी है। मैं कुछ देर में उठ कर अपने निवास स्थान पर पहुँचा किंतु उसी सुंदरी के ध्यान में निमग्न रहा। मैं ने भोजन भी नहीं किया और रात भर उस की मोहिनी छवि मेरी आँखों में समाई रही।
दूसरे दिन मैं फिर बाजार गया और अपने मित्र बदरुद्दीन की दुकान पर जा बैठा। मुझे पहुँचे कुछ ही क्षण बीते थे कि वह अपनी सेविकाओं के समूह के साथ वहाँ पहुँच गई और बोली, 'देखा तुम लोगों ने कि मैं अपने वादे का कितना ध्यान रखती हूँ?' मैं ने कहा कि आप पर मुझे पूरा भरोसा था और आप ने बेकार ही इतनी जल्दी दाम पहुँचाने का कष्ट किया। वह बोली कि यह ठीक है किंतु लेन-देन में खरापन अच्छा रहता है। यह कह कर उस ने छह हजार छ्ह सौ मुद्राओं की थैली मुझे दी और मेरे पास बैठ गई।
मैं ने कुछ क्षणों में, जब बदरुद्दीन तथा अन्य लोगों का ध्यान इधर न था, उस से अपने प्रेम का निवेदन किया। उस ने कुछ उत्तर न दिया और उठ कर चली गई। मैं ने समझा कि मेरे प्रेम निवेदन से यह रुष्ट हो गई है अतएव और दुखी हुआ। कुछ देर बाद मैं भी वहाँ से उठ कर निरुद्देश्य ही एक ओर चल दिया। काफी दूर जा कर जब एक गली में पहुँचा तो किसी ने मेरी पीठ पर हाथ रखा। मैं ने पलट कर देखा तो वह उसी सुंदरी की एक सेविका थी। मुझे उसे देख कर खुशी हुई। उस ने

कुछ देर में वह सुंदरी मेरे आने का समाचार पा कर मेरे पास आई। मैं ने अपना कटा हुआ हाथ अपनी आस्तीन में छुपा लिया। मुझे अशक्त और पीड़ा से तिलमलाता देख कर बोली, 'प्रियतम, यह तुम्हारी क्या दशा है?' मैं ने सारी घटना को छुपाने का निर्णय किया और कहा कि मेरे सिर में बहुत दर्द हो रहा है इसीलिए तड़प रहा हूँ। वह बोली, 'यह तुम बहाना बना रहे हो। तुम्हें कोई और कष्ट है। केवल सिर दर्द से तुम ऐसे तड़पनेवाले नहीं हो। कुछ दिन पहले तक तो तुम हट्टे-कट्टे थे। यह तुम्हें क्या हो गया है।'
मैं ने उस की बात का कुछ उत्तर न दिया लेकिन मुझे अपनी दशा पर रोना आ गया। उस ने कहा, 'देखो, तुम्हें सारा हाल सच-सच बताना पड़ेगा। अगर झूठ बोलेगे या हाल छुपाओगे तो मैं समझूँगी कि तुम्हें मुझ से बिल्कुल प्रेम नहीं है और अभी तक जो प्रेम प्रदर्शन करते थे वह केवल ढोंग था।' मैं ने और रो कर कहा, 'प्रियतमे, तुम मुझ से मेरा हाल न पूछो। मेरा हाल ऐसा नहीं है कि बताया जा सके। कम से कम मैं अपने मुँह से अपनी दशा के वर्णन करने का साहस नहीं जुटा पा रहा हूँ।'
इस पर वह चुप हो गई, और मेरे सिर पर हाथ फेरने लगी। इसी भाँति काफी समय बीत गया। शाम हुई तो उस ने कहा, 'चलो हम लोग भोजन कर लें।' मैं ने सोचा कि दाहिना हाथ तो है ही नहीं, भोजन कैसे करूँगा। इसलिए मैं ने कहा कि मुझे भूख नहीं है। उसने कहा, 'बड़े खेद की बात है कि तुम इतने पीड़ित और दुखित हो कि भोजन भी नहीं करते और फिर भी मुझ से अपना हाल छुपा रहे हो। अच्छा, यह शराब पियो।' मैं ने शराब का प्याला बाएँ हाथ से पकड़ा और आँसू बहाते हुए शराब पीने लगा। मेरी प्रेमिका ने पूछा, 'तुम क्यों ठंडी साँसें ले रहे हो और क्यों तुम्हारी आँखों में आँसू हैं?' मैं ने कहा कि मेरे हाथ में सूजन हो गई है, उसमें बहुत दर्द हो रहा है। उस ने कहा कि मैं देखूँ क्या हो गया है तुम्हारे हाथ में। इस पर मैं ने कुछ न कहा और प्याले की सारी मदिरा एक ही बार में पी ली। प्याले में शराब बहुत थी। पीड़ा और थकान के अलावा शराब के तेज नशे ने जो असर किया तो मैं लगभग बेहोश-सा हो कर सो गया। उस सुंदरी ने मुझे सोता जान कर मेरी पीड़ा का भेद जानना चाहा और आस्तीन उलट कर देखा तो मेरा दाहिना हाथ कटा हुआ पाया। उसे बहुत ताज्जुब और दुख हुआ।
मैं जागा तो उसे बहुत उदास और दुखी देखा। उस ने मुझ से यह नहीं कहा कि मैं तुम्हारा हाथ देख चुकी हूँ। शायद वह सोच रही थी कि मैं इस बात से बुरा मानूँगा। लेकिन उस ने अपने सेवकों से कहा कि तुरंत मुर्ग की गाढ़ी यखनी

तैयार करो। उन्होंने थोड़ी ही देर में यखनी बना दी। उसे पी कर मेरे शरीर में शक्ति आई और मैं वहाँ से चलने के लिए उठ खड़ा हुआ। मेरी प्रेमिका ने मेरा दामन पकड़ लिया। वह कहने लगी, 'मैं तुम्हें इस दशा में जाने न दूँगी। तुम मुझ से अपने दुर्भाग्य और दुख का कारण नहीं बताते। फिर भी मैं जानती हूँ कि तुम्हारी यह दशा मेरे ही कारण हुई है। मुझे इस से जो पश्चात्ताप हो रहा है उसे तुम नहीं समझ सकते। मैं इस सदमे को झेल नहीं सकूँगी और मेरा अंत समय निकट ही समझो। अब तुम वही करो जो करने को मैं तुम से कहूँ।'
यह कह कर उस ने अपने सेवकों से कहा कि मुहल्ले के पुलिस दारोगा और कुछ माननीय निवासियों को बुलाओ। उनके आने पर उस स्त्री ने मेरे नाम अपनी सारी संपत्ति लिख दी और कागज पर उनकी गवाही ले ली। इस के बाद उन्हें कुछ भेंट आदि दे कर विदा किया। उस के जाने के बाद उस ने एक संदूक खोला जिसमें मेरी दी हुई सारी अशर्फियों की थैलियाँ रखी थीं। उस ने कहा कि तुम यह थैलियाँ मेरे लिए छोड़ गए थे लेकिन मैं ने उन्हें हाथ भी नहीं लगाया है। यह कह कर उस ने संदूक में ताला डाल दिया और उस की चाबी मुझे दे दी।
उसी दिन से वह स्त्री बीमार पड़ गई। उस का रोग तेजी से बढ़ता गया और वह तीन सप्ताह बाद मर गई। मैं ने उस के सारे अंतिम संस्कार पूरे किए और फिर उस सारी संपत्ति को ले कर, जो उस ने मेरे नाम कर दी थी, बगदाद आ गया। वे तिल जो तुम ने बिकवाए थे, उसी के धन से खरीदे गए थे।
उस बगदाद के व्यापारी ने सारा हाल कह कर मुझ से कहा, 'अब तुम्हें मेरे बाएँ हाथ से खाने का रहस्य मालूम हो गया। मैं तुम्हारा आभारी हूँ कि तुम ने इतना समय लगा कर और कष्ट सह कर मेरी कहानी सुनी और मेरे जी को हलका किया। तुम्हारे शालीन व्यवहार और भद्रता से मुझे बहुत ही आनंद मिला है। मेरे तिलों का जो दाम तुम्हारे पास है वह तुम्हीं रख लो। किंतु मैं तुम से एक बात चाहता हूँ। मैं बहुत दिनों से बगदाद में हूँ और बहुत दिनों से देशाटन छोड़ चुका हूँ। मैं चाहता हूँ कि तुम मेरी सहायता करो ताकि मैं नगर जा कर व्यापार करूँ। साल में जो भी मुनाफा होगा उसमें से हम लोग आधा-आधा बाँट लिया करेंगे। मैं ने कहा, 'आप की कृपा की तो कोई सीमा ही नहीं मालूम होती। आप ने तिलों का सारा मूल्य मुझे दे डाला और अब अपने विशाल व्यापार में मुझे साझीदार बना रहे हैं। मुझे इस बात से हार्दिक प्रसन्नता होगी कि व्यापार में आप की सहायता करूँ।'

इस के बाद एक शुभ मुहूर्त में हम लोगों ने अपनी यात्रा आरंभ की। हम लोग बगदाद से कूच करके कई देशों के प्रमुख नगरों में व्यापार के लिए गए फिर ईरान पहुँचे। वहाँ से आप की राजधानी काशगर आए। हम लोगों को इस तरह का व्यापार करते हुए कई वर्ष हो गए थे। और हमारे पास काफी धन हो गया था। फिर उस आदमी ने कहा कि अब मेरी इच्छा है कि मैं ईरान में स्थायी रूप से रहने लगूँ। चुनांचे हम लोगों ने अपनी सारी धन-संपत्ति आधी-आधी बाँट ली और खुशी- खुशी एक-दूसरे से विदा ली। वह ईरान में जा कर रहने लगा और मैं काशगर में बस गया।
यह कह कर ईसाई व्यापारी ने कहा, 'मेरी यह कहानी कुबड़े की कहानी से विचित्र है या नहीं?' बादशाह ने आँखें तरेर कर कहा, 'बिल्कुल बकवास है। तुम्हारी कहानी में कोई दम नहीं है। मैं तुम चारों को उस कुबड़े के बदले मरवा दूँगा।' अब मुसलमान व्यापारी आगे बढ़ा और बोला, 'सरकार, मुझे भी मौका दिया जाए। मुझे आशा है मेरी कहानी अधिक मनोरंजक होगी।' बादशाह ने उसे कहानी सुनाने की अनुमति दे दी।

अनाज के व्यापारी की कहानी

अनाज का व्यापारी बोला कि कल मैं एक धनी व्यक्ति की पुत्री के विवाह में गया था। नगर के बहुत-से प्रतिष्ठित व्यक्ति उसमें शामिल थे। शादी की रस्में पूरी होने पर दावत हुई और नाना प्रकार के व्यंजन परोसे गए। एक थाल में एक मसालेदार स्वादिष्ट लहसुन का व्यंजन रखा था जिन्हें उठा-उठा कर हर आदमी रुचिपूर्वक खा रहा था। किंतु एक आदमी उसे नहीं खाता था। पूछने पर उस ने बताया कि मैं ने एक बार लहसुन के कारण ऐसा घोर कष्ट उठाया कि अभी तक नहीं भूला। सब लोगों की उत्कंठा और बढ़ी और सब उस व्यंजन को खाने के लिए उस पर जोर डालने लगे। गृहस्वामी ने कहा कि यदि आप इसे नहीं खाएँगे तो मैं समझूँगा कि मेरे अन्न का आप ने निरादर किया है। उस पर बहुत जोर डाला गया तो उस ने कहा, 'मैं इसे चख तो लेता हूँ किंतु इस के बाद मैं चालीस बार फलाँ घास की राख से और सौ बार साबुन से हाथ धोऊँगा। मैं ने यह सौगंध खाई है कि इसी प्रकार से लहसुन खा सकता हूँ। मैं अपनी प्रतिज्ञा को भंग नहीं कर सकता।' गृहस्वामी ने ढेर सारी विशेष राख, साबुन और गर्म पानी का प्रबंध कर दिया। उस आदमी ने एक बार फिर इनकार किया किंतु सबके जोर देने पर एक बार डरते-डरते एक दाना मुँह में रख लिया। हम लोगों को उस की हिचक से भी आश्चर्य हुआ और इस

बात से भी कि उस ने केवल चार उँगलियों से खाया, अँगूठे का प्रयोग नहीं किया। अब हम लोगों को याद आया कि वह पहले भी जब भोजन कर रहा था तो अँगूठे का प्रयोग नहीं कर रहा था। गृहस्वामी ने कहा, 'आप अजीब तरह से खा रहे हैं, खाने में अँगूठे का प्रयोग क्यों नहीं करते, इस से आप को आसानी होगी।'
उस आदमी ने हाथ फैला कर दिखाया तो उसमें अँगूठा था ही नहीं। गृहस्वामी तथा अन्य अतिथियों ने पूछा कि आपके अँगूठे का क्या हुआ तो वह बोला कि मुझ पर एक बार ऐसी मुसीबत पड़ी जिसे कहना मुश्किल है, उसी विपत्ति के कारण मेरे दोनों हाथों और दोनों पैरों के अँगूठे काट लिए गए। लोगों ने उस से वह वृत्तांत सुनाने को कहा। उस ने एक सौ चालीस बार हाथ धोए और फिर अपनी कहानी शुरू की।
उस आदमी की कहानी जिसके चारों अँगूठे कटे थे
उस ने कहा कि दोस्तो, मेरा पिता बगदाद का रहनेवाला था और खलीफा हारूँ रशीद के जमाने में था। मैं भी उसी समय पैदा हुआ। मेरा पिता यद्यपि धनवान तथा बड़े व्यापारियों में गिना जाता था तथापि वह बहुत ही विलासी और व्यसनी था। इसीलिए व्यापार की ठीक तरह देख-भाल नहीं कर पाता था और उसमें काफी गड़बड़ होती थी। जब वह मरा तो मुझे मालूम हुआ कि न जाने कितने लोगों से उस ने ॠण ले रखा था। मुझे कठिनाई तो बहुत हुई किंतु मैं ने परिश्रम से व्यापार बढ़ाया और धीरे-धीरे सारे ॠणदाताओं का रुपया वापस कर दिया।
अब मैं इत्मीनान से अपनी कपड़े की दुकान पर बैठ कर व्यापार किया करता था। एक दिन मैं दुकान पर बैठा था कि एक सुंदरी, जो खच्चर पर सवार थी और जिसके आगे एक नौकर और पीछे दो नौकरानियाँ चल रही थीं, मेरी दुकान के पास आई। उस के नौकर ने उसे हाथ पकड़ कर खच्चर से उतारा और कहा, 'मालकिन, आप बेकार ही इतने सवेरे बाजार में आ गईं। अभी तो कोई दुकान ही नहीं खुली है, आप कहाँ तक प्रतीक्षा करेंगी।' उस ने कहा, 'तुम ठीक कहते हो, केवल एक ही दुकान खुली है। चलो उसी में चलें।'
अतएव वह मेरी दुकान पर आ कर बैठ गई। उस ने देखा कि मेरे और नौकर के अलावा कोई नहीं है तो साफ हवा लेने के लिए नकाब थोड़ा-सा उठाया। मैं ने ऐसा रूप कभी नहीं देखा था। मैं ठगा-सा टकटकी लगा कर उसे बराबर देखता रहा। उस ने मेरी उत्कंठा देख कर पूरा नकाब उलट दिया और मैं जी भर कर उस के सौंदर्य का रसास्वादन करने लगा। कुछ ही देर में अन्य व्यापारी और ग्राहक आ गए और बाजार में भीड़ बढ़ गई तो उस ने नकाब फिर चेहरे पर डाल दिया।

उस ने मुझ से कहा, 'मैं जरी के कपड़े खरीदना चाहती हूँ। आपके पास ऐसे थान हों तो दिखाइए।' मैं ने कहा, 'मैं तो सादा थान बेचता हूँ लेकिन आप कहें तो अन्य दुकानदारों के यहाँ से खुद आपके लिए अच्छे-अच्छे थान ला दूँ, इस से आपका दुकान- दुकान जा कर कपड़े देखने और खरीदने का कष्ट बच जाएगा।' वह इस बात से बहुत प्रसन्न हुई और देर तक मुझ से इधर-उधर की बातें करती रही।
कुछ देर बाद मैं कई दुकानों में गया और बहुत-से जरी के थान मैं ने उस स्त्री के आगे ला कर रख दिए। उस ने उसमें कुछ थान पसंद किए। उनका मूल्य 24,750 मुद्राएँ था। उस ने यह दाम मंजूर कर लिया और मैं ने थान उस के सेवक को दे दिए। उस स्त्री ने विदा ली। मैं उस के सौंदर्य के मोह में इतना किंकर्तव्यविमूढ़ हो गया था कि उस से थानों का मूल्य माँगा ही नहीं और उस ने भी नहीं दिया। मैं ने उस से यह भी नहीं पूछा कि तुम रहती कहाँ हो।
मुझे फिक्र हुई कि उस से रुपया न मिला तो मैं यह पौने पच्चीस हजार कहाँ से भरूँगा। दुकानदारों को दिलासा दे दिया कि मैं उस स्त्री को जानता हूँ और दाम मिल जाएँगे। लेकिन रात भर चिंता में मुझे नींद न आई। दूसरे दिन मैं ने व्यापारियों से एक हफ्ते में अदायगी करने का वादा किया और उन्होंने इसे मंजूर कर लिया। एक हफ्ते तक भी उस स्त्री का पता नहीं लगा।
आठवें दिन वह सुंदरी उसी खच्चर पर उन्हीं सेवकों के साथ मेरी दुकान पर आई और बोली, 'तुम रुपए लेने क्यों नहीं आए। अब मुझे खुद इन्हें ले कर आना पड़ा। अब मैं सारा पैसा ले आई हूँ। सर्राफ से परखवा लो कि सिक्के ठीक हैं या नहीं।' मैं ने सर्राफ को दिखाया तो सब सिक्के खरे निकले। वह सुंदरी देर तक मुझ से बातें करती रही और बातचीत से मालूम हुआ कि वह बहुत बुद्धिमती है। मैं ने वस्त्र व्यापारियों को बुला कर उनका रुपया दे दिया। वे सब बड़े प्रसन्न हुए और मेरे व्यवहार से बाजार में मेरी साख बढ़ गई।
उस सुंदरी ने कई और थान माँगे और मैं ने व्यापारियों से ला कर उसे दे दिए लेकिन फिर भी न उस का नाम पूछा न निवास स्थान। उस के जाने के बाद फिर सोचने लगा कि एक बार तो वह रुपए दे गई, अब अगर न दिए तो मैं बरबाद हो जाऊँगा। फिर सोचता कि यह असंभव है कि वह धोखा करे, वह तो मेरे शील की परीक्षा ले रही है। उसे मेरे हानि-लाभ और प्रतिष्ठा का खयाल जरूर होगा। वह तो जानती ही है कि मेरी साख पर ही व्यापारियों ने कपड़े के थान दिए हैं। कभी मुझे अपनी संभावित हानि का ध्यान आता और कभी उस के सौंदर्य का ध्यान करके सारा दुख भूल जाता।

इस बार उस ने बहुत दिनों तक रुपए न पहुँचाए और बजाज लोग बेसब्र हो कर मुझ से रुपयों का तकाजा करने लगे। मैं अपनी आमदनी में से थोड़ा-थोड़ा उन्हें भिजवा कर उनकी तसल्ली कर देता था। एक महीने बाद वह फिर अपने सेवकों के साथ आई और उस ने पिछली बार के खरीदे कपड़ों का मूल्य दे दिया। फिर उस ने मुझ से पूछा कि तुम्हारा विवाह हो चुका है या नहीं। मैं ने कहा, अभी तक नहीं हुआ। उस ने अपने नौकर को इशारा किया और वह मुस्कुराता हुआ उठा और मुझे एक तरफ ले जा कर बोला, 'तुम क्या समझते हो कि मालकिन तुम से कपड़े खरीदने के लिए आती हैं। मैं जानता हूँ कि तुम उन पर आसक्त हो लेकिन तुम ने सभी से यह बात छुपाई है। अब यह जान लो कि वह भी तुम से प्रेम करती है इसीलिए तुम्हारे विवाह के बारे में पूछा। तुम इतने बुद्धू निकले कि उस का इशारा भी नहीं समझे।' मैं ने कहा, 'भाई, मैं ने तो जब पहली ही बार तुम्हारी मालकिन को देखा तो उस पर मर मिटा। किंतु मुझे यह आशा नहीं थी कि वह भी मुझ से प्रेम करेंगी। अब तुम इस मामले में अगर मेरी सहायता करोगे तो मैं आजीवन तुम्हारा अहसान नहीं भूलूँगा।'
वह मेरे पास से उठ कर अपनी मालकिन के पास पहुँचा और उसे मेरी बात बताई। वह सुंदरी अपनी सेविकाओं को कुछ इशारा कर के उठ खड़ी हुई और फिर मुझ से बोली, 'मैं अपने नौकर को तुम्हारे पास भेजूँगी, वह जैसा कहे वैसा करना।' यह कह कर वह चली गई। मैं कई दिन तक नौकर की बाट देखता रहा। जब वह आया तो मैं ने उस से उस सुंदरी की कुशलक्षेम पूछी। उस ने कहा कि तुम बड़े भाग्यवान आदमी हो, वह तुम पर अत्यधिक मोहित हैं, उनका बस चलता तो अभी तुम्हारे पास पहुँच जातीं। मैं ने कहा, वह बहुत शीलवती जान पड़ती हैं कि इतने संयम से काम लेती हैं। उस ने कहा, 'तुम्हें इसलिए उनके शील पर आश्चर्य हो रहा है कि उन्हें जानते नहीं हो। वह खलीफा हारूँ रशीद की पत्नी जुबैदा की सहेली हैं। बीबी उन्हें बहुत प्यार करती हैं, उन्होंने उनके बचपन ही से उन्हें पाला-पोसा है। वह जनानखाने की सारी व्यवस्था करती हैं। जुबैदा कई बार उन से विवाह करने को कह चुकी हैं। अब उस ने कहा कि एक व्यापारी है, आप अनुमति दें तो उस से विवाह कर लूँ। बीबी ने कहा, अच्छी बात है लेकिन उस व्यापारी को एक बार देखने के बाद ही मैं शादी के लिए अनुमति दूँगी। इसीलिए मैं तुम्हें लेने आया हूँ।' मैं ने कहा, मैं तैयार हूँ, जब भी चाहो मुझे ले चलो। उस ने कहा, 'ठीक है। लेकिन तुम जानते हो कि खलीफा के महल में कोई बाहरी आदमी नहीं जा सकता। मैं तुम्हें और किसी तरकीब से ही ले जाऊँगा। तुम आज शाम को नदी के किनारे बनी

फलाँ मस्जिद में मेरी राह देखना।' मैं ने बड़ी प्रसन्नता से उस की बात स्वीकार की।
शाम को मैं उस मस्जिद में जा कर बैठ गया। थोड़ी ही देर में एक डोंगी आ कर किनारे से लगी। उसमें कई संदूक रखे थे। मल्लाहों ने डोंगी किनारे से बाँधी और एक काफी लंबा संदूक ला कर मस्जिद में रख दिया और नाव पर चले गए। नाव पर आया हुआ एक नौकर वहीं रह गया। कुछ देर में वह सुंदरी वहाँ आई। मैं ने कहा, 'मेरे लिए क्या हुक्म है।' वह बोली, ' बाद में बातें होंगी, इस समय बात करने की फुरसत नहीं है। तुम सिर्फ इस लंबे संदूक में जा कर लेटे रहो।' मैं संदूक में लेट रहा तो उस ने संदूक में ताला लगा दिया और सेवक से कहा कि इसे नाव पर पहुँचा दो। नौकर ने मल्लाहों को पुकारा और वह संदूक, जिसमें मैं था, नाव पर पहुँचा दिया। वह सुंदरी भी नाव पर बैठ गई।
मैं संदूक के अंदर पड़ा-पड़ा अपने भाग्य को कोसने लगा कि अच्छी-खासी जिंदगी छोड़ कर किस मुसीबत में फँस गया। नाव खलीफा के महल के मुख्य द्वार के समीप जा लगी। सारे संदूक द्वार पर पहुँचा दिए गए। द्वारपालों के पास सारी चाबियाँ थीं और देखे-भाले बगैर कोई चीज अंदर नहीं जा सकती थी। प्रधान द्वारपाल उस समय सो रहा था। उसे जगाया गया तो वह बहुत झुँझलाया और कहने लगा कि मैं संदूकों की एक-एक चीज देखूँगा। सुंदरी ने चुपचाप अपने नौकरों से कहा कि सारे संदूक द्वारपाल को दिखाए बगैर अंदर ले जाओ, ऐसा न हो कि वह संदूकों को खोल कर देखे और भेद खुल जाए। किंतु द्वारपालों ने ऐसा नहीं होने दिया। वे सारे संदूक प्रधान द्वारपाल के पास ले गए। सबसे पहले वही संदूक रखा जिसमें मैं था। सुंदरी की प्रधान द्वारपाल से बहस होने लगी। मैं इस बहस को सुन कर अंदर ही अंदर सूखा जाता था। यह तो स्पष्ट ही था कि अगर मुझे संदूक में पाया गया तो खलीफा मुझे अवश्य मृत्युदंड देंगे।
लेकिन मेरी प्रेमिका ने प्रधान द्वारपाल को संदूक नहीं खोलने दिया। वह बोली, 'तुम अच्छी तरह जानते हो कि जुबैदा की आज्ञा के बगैर कोई चीज अंदर नहीं ले जाती। इस संदूक में बड़े व्यापारियों से खरीदा हुआ बहुत-सा कीमती और नाजुक सामान रखा है तुम उसे निकालोगे तो वे चीजें टूट-फूट जाएँगी। इस के अतिरिक्त एक पतले काँच के घड़े में मक्के से लाया हुआ जमजम का पवित्र जल है। वह काँच का घड़ा अगर टूट गया या अन्य वस्तुएँ नष्ट हो गईं तो तुम्हें इसकी जवाबदेही करनी पड़ेगी और जुबैदा के हाथों तुम्हें कठोर दंड मिलेगा।'

प्रधान द्वारपाल इस बात से डर गया। वह चुप हो गया। सुंदरी ने गुलामों से सारे संदूक अंदर पहुँचाने के लिए कहा और उन्होंने ऐसा ही किया। किंतु अंदर जा कर भी मेरी मुसीबत खत्म नहीं हुई। संदूकों के खुलने के पहले ही अचानक वहाँ खलीफा आ गया। उस ने बहुत-से संदूक देख कर पूछा कि इन में क्या है, और न जाने उसे क्या सूझी कि हुक्म दिया कि सारे संदूकों का सामान मुझे दिखाया जाए। सुंदरी ने बड़े बहाने बनाए लेकिन खलीफा टस से मस न हुआ। विवशतः उस ने एक एक संदूक खोल कर दिखाना शुरू किया मेरा संदूक इस आशा में आखिर तक डटा रहा और उस ने अंतिम संदूक, जिसमें मैं बंद था, खोल कर दिखाने का आदेश दिया। मित्रो, आप लोग सोच सकते हैं कि उस समय भय से मेरी क्या दशा हुई होगी। अगर कोई मुझे काटता तो बदन से खून न निकलता। किंतु उस सुंदरी ने बड़ी समझदारी से काम लिया। उस ने हाथ जोड़ कर कहा, 'सरकार, इस संदूक के खुलवाने का आग्रह न करें। इसमें जुबैदा के काम की खास चीजें हैं। जुबैदा की अनुमति के बगैर मैं इसे नहीं खोल सकती।' खलीफा ने हँस कर कहा, अच्छा फिर न खोल इसे।' और यह कह कर वह चला गया। मेरी जान में जान आई।
सुंदरी ने सेवकों से सारे संदूक अपने निवास कक्ष में पहुँचवाए। जब सारे नौकर चले गए तो उस ने मेरा संदूक खोला और मुझे एक जीना दिखा कर कहा कि ऊपर के कमरे में बैठो, मैं थोड़ी ही देर में आऊँगी। मैं ऊपर गया तो उस ने जीने का ताला लगा दिया। ताला लगाए दो क्षण भी नहीं हुए थे कि खलीफा फिर वहाँ आ गया और उसी संदूक पर बैठ कर उस स्त्री से बहुत देर तक नगर के बारे में पूछताछ करने लगा। वह सुंदरी काफी देर तक खलीफा से वार्तालाप करती रही। जब खलीफा अपने शयन कक्ष में चला गया तो वह ऊपर आई और बोली, 'तुम पर मेरे कारण बड़े कष्ट पड़े, किंतु अब तुम आराम से रहो। सुबह तुम्हें जुबैदा के पास ले चलूँगी।' फिर हम दोनों ने भोजन किया और वह चली गई।
मैं बड़े आनंद से उस भव्य प्रासाद में सोया। मुझे बड़ी प्रसन्नता थी कि यद्यपि यहाँ तक पहुँचने में बड़ी कठिनाइयाँ और खतरे उठाए किंतु अब तो किसी बात का खटका ही नहीं है। मुझे यह भी खुशी थी कि इतनी सुंदर और बुद्धिमती स्त्री स्वयं मेरे प्रेम में ग्रस्त है। सुबह वह मेरे पास आई और मुझ से बोली कि चलो मैं तुम्हें जुबैदा के पास ले चलती हूँ। इस के साथ उस ने मुझे खलीफा की पत्नी से बातचीत और व्यवहार करने के तौर-तरीके भी बताए। उस ने वे सभी संभव प्रश्न जो जुबैदा मुझ से पूछ सकती थी बताए और यह भी बताया कि उनका क्या उत्तर दूँ। उस ने मुझे एक स्थान पर ले जा कर खड़ा कर दिया और कहा कि

जुबैदा अपने शयनागार से निकल कर यहीं बैठती है। यह कह कर वह चली गई। वह कमरा इतना शानदार था कि मैं चकराया-सा खड़ा रह गया और आँखें फाड़-फाड़ कर चारों ओर देखने लगा।
सबसे पहले बीस दासियाँ आईं। वे उस तख्त के सामने जो जुबैदा के बैठने के लिए बिछा था दो पंक्तियों में खड़ी हो गईं। फिर बीस अन्य दासियों के मध्य हंस जैसी चाल से चलती हुई जुबैदा आई और तख्त पर बैठ गई। वह गहने और भारी पोशाक से इतनी लदी हुई थी कि मंद गति ही से चल सकती थी। वह उसी रत्नजटित सिंहासन पर बैठ गई। सब दासियाँ अपने-अपने उचित स्थान पर खड़ी हो गईं और मेरी प्रेमिका, जो जुबैदा की खास मुसाहिब थी, बड़ी आन-बान से जुबैदा के दाहिनी ओर खड़ी हो गई।
अब एक दासी ने मुझे इशारा किया कि झुक कर सलाम करो। मैं ने तख्त के आगे जा कर अपने सिर को इतना झुकाया कि वह जुबैदा के पाँव से लग गया। मैं बराबर इसी दशा में रहा और सिर तभी उठाया जब जुबैदा ने मुझ से उठाने के लिए कहा। उस ने मेरा नाम, पेशा, कुटुंब आदि-आदि के बारे में प्रश्न किए जिनका मैं ने यथोचित उत्तर दिया। जुबैदा मेरी शक्ल-सूरत देख कर और मेरी बातें सुन कर प्रसन्न हुई। उस ने कहा, 'मैं चाहती हूँ कि तुम्हारा विवाह अपनी मुँहबोली बेटी से करूँ। मैं विवाह की तैयारियों के लिए आदेश देती हूँ। दस दिन बाद तुम्हारा विवाह हो जाएगा। दस दिन तक तुम इसी तरह होशियारी से रहो। इसी अवधि में मैं खलीफा से तुम्हारे विवाह के लिए अनुमति भी ले लूँगी।' '
मैं जुबैदा से विदा ले कर अपने कमरे में चला गया। मेरी प्रेमिका कई बार मौका निकाल कर मेरे पास आती और बातचीत करके चली जाती। मैं बड़ी सुख-सुविधा से वहाँ रहने लगा। जुबैदा ने इस अवधि में खलीफा से विवाह की अनुमति भी ले ली और शादी के समारोह के लिए बहुत-सा धन दिया। रोज ही वहाँ गाना-बजाना और तरह-तरह के खेल-तमाशे होने लगे। दसवें दिन हम दूल्हा-दुल्हन ने नहा-धो कर मूल्यवान वस्त्र पहने। शाम को दासियों ने हम लोगों के सामने नाना प्रकार के व्यंजन खाने के लिए परोसे। एक रकाबी में वही लहसुन का व्यंजन था जो आप लोगों ने मुझे खिलाया है। मुझे वह बहुत अच्छा लगा और मैं ने अन्य चीजों के बजाय उसे अधिक खाया। दुर्भाग्य से खाने के बाद मैं ने अच्छी तरह से हाथ नहीं धोए, यूँ ही रूमाल से हाथ पोंछ लिए।
रात और बीती तो दासियों ने वहाँ बहुत-से दीए और मोमबत्तियाँ जलाईं और देर तक नाच और गाना बजाना होता रहा। जब रात काफी ढल गई तो दासियों ने हम दोनों

खिन्न भी था। इसलिए मैं मकान को बेच-बाच कर देश-विदेश के व्यापार को निकला। पहले फारस गया, वहाँ से समरकंद पहुँचा और वहाँ से यहाँ आया हूँ। अनाज के व्यापारी ने यह कह कर बादशाह से पूछा कि कहानी कैसी है। उस ने कहा, ईसाई की कहानी से तो अच्छी है किंतु कुबड़े की कहानी को नहीं पहुँचती। अब यहूदी हकीम ने कहानी शुरू की।

यहूदी हकीम द्वारा वर्णित कहानी

यहूदी हकीम ने बादशाह के सामने झुक कर जमीन चूमी और कहा कि पहले मैं दमिश्क नगर में हकीमी किया करता था। अपनी चिकित्सा विधि के कारण वहाँ मेरी बड़ी प्रतिष्ठा हो गई थी। एक दिन वहाँ के हाकिम ने मुझ से कहा कि फलाँ मकान में एक रोगी है, वह यहाँ आ नहीं सकता, उसे वहीं जा कर देखो। मैं वहाँ गया तो देखा एक अत्यंत सुंदर नवयुवक चारपाई पर लेटा है। उस ने मेरे अभिवादन के उत्तर में इशारे से कहा कि आपका यहाँ स्वागत है।
मैं ने उस से नाड़ी दिखाने को कहा तो उस ने बायाँ हाथ बढ़ा दिया। मैं ने समझा कि इसे मालूम नहीं है कि नाड़ी दाहिने हाथ की देखी जाती है किंतु मैं ने बहस बगैर नाड़ी देखी और दवा लिख दी। नौ दिन तक मैं उसे देखने को जाता रहा। नवें दिन मैं ने कहा, अब आप बिल्कुल स्वस्थ हैं, स्नान कीजिए। दमिश्क के हाकिम ने मुझे यथेष्ट पारितोषिक दिया और मुझे शाही दवाखाने का प्रमुख बना दिया। जिस युवक का मैं ने इलाज किया था वह भी मुझे बहुत मानने लगा। उस ने कहा, 'मैं आप की निगरानी ही में स्नान करूँगा।' अतएव मैं स्नानागार में उस के साथ गया।
उस के कपड़े उतारने पर मैं ने देखा कि उस का दाहिना हाथ कटा हुआ है। वह हाथ कटने ही से बीमार पड़ा था और इसी कारण बायाँ हाथ दिखाया करता था। मुझे वह देख कर बड़ा दुख हुआ। उस ने मेरी आँखों की करुणा देख कर कहा, 'आप मेरा दाहिना हाथ कटा देख कर ही आश्चर्य और दुख में डूबे हैं। अगर आप मेरी कहानी सुनेंगे तो और भी आश्चर्य करेंगे। स्नान के बाद जब मैं भोजन करने बैठूँगा तो आप को पूरी कहानी सुनाऊँगा। लेकिन यह बताइए कि क्या इस समय बाग की सैर करने से मुझे कुछ हानि होगी।' मैं ने कहा, 'बाग की सैर करने से तुम्हें फायदा ही होगा, नुकसान नहीं। उस ने कहा, ठीक है, बाग की सैर करते-करते ही मैं आप को सारा किस्सा सुनाऊँगा। फिर उस ने अपने सेवकों को भोजन तैयार

चित्रकारी थी और जिसके अंदर एक सुंदर पुष्प वाटिका थी। मैं ने उसे दो अशर्फी के किराए पर लिया।
मैं ने किफायत से किंतु सुरुचिपूर्वक अपने निवास स्थान को सजाया। उस का मालिक पहले अब्दुर्रहीम नाम का एक व्यक्ति था जिससे उसे उस के तत्कालीन मालिक ने मोल लिया था। यह व्यक्ति एक प्रसिद्ध जौहरी था। मैं ने अपनी प्रतिष्ठा के अनुरूप कुछ दास-दासियाँ भी खरीदीं और माननीय नगर निवासियों से जान-पहचान बढ़ाई। कभी वे लोग मुझे अपने घरों पर खाने के लिए बुलाते कभी में उन लोगों की दावत अपने घर पर किया करता था। मतलब यह कि अपने पिता और चचाओं की अनुपस्थिति में मैं ने बड़ी सुख-सुविधा के साथ दमिश्क नगर में जीवन यापन किया।
एक दिन भोजन करने के बाद मैं अपनी हवेली में बाहर के हिस्से में बैठा था। इतने में एक स्त्री आई जो अति मूल्यवान वस्त्रों और आभूषणों से सुसज्जित थी। उस ने पूछा, क्या तुम कपड़े के व्यापारी हो किंतु मेरे मुँह से कोई उत्तर निकले इस से पहले ही वह मकान के अंदर चली गई। मैं भी उठ कर दरवाजा अंदर से बंद करके उस के पास एक दालान में जा बैठा, मैं ने कहा कि मैं कपड़े का व्यापार अवश्य करता हूँ किंतु खेद है इस समय मेरे पास थान नहीं है। उस ने अपने सुंदर मुख से नकाब लगभग उलट दी और कहा, 'मैं ही कहाँ कपड़े लेने आई हूँ। मैं तो तुमसे मिलने आई हूँ। मैं चाहती हूँ कि सुबह तक यहीं रहूँ। किंतु मुझे भूख लगी है, मुझे कुछ खिलाओ।' मैं ने अपने सेवकों को भोजन आदि लाने को कहा। वे भोजन के साथ फल आदि भी लाए, जिन्हें मैं भी इस रमणी का साथ देने के लिए में खाने लगा। आधी रात तक हम लोग इसी प्रकार बातचीत करते रहे फिर हम एक साथ सोने के लिए चले गए। सुबह मैं ने दस अशर्फियाँ निकाल कर उसे दी किंतु उस ने उन्हें लेने से इनकार ही नहीं किया बल्कि दस अशर्फियाँ मुझे दीं। मैं ने जब कहा कि मैं तुम्हारा धन नहीं लूँगा बल्कि तुम्हें अशर्फियाँ जरूर दूँगा, वह बोली, 'मैं तो रोज तुम्हारे पास आने को सोचती थी किंतु अगर तुम मेरी बात न मानोगे और अपनी बात पर अड़े रहोगे तो मैं न आऊँगी।'
इस बार मजबूर हो कर मुझे उस से अशर्फियाँ लेनी पड़ीं और वह चली गई। शाम को वह फिर आई और हम लोगों ने रात भर राग-रंग किया और दूसरी सुबह वह फिर मुझे दस अशर्फियाँ दे कर कहने लगी कि आज शाम को फिर आऊँगी।

तीसरी रात को जब हम दोनों मदिरा के नशे में आलिंगनबद्ध थे तो उस ने मुझ से पूछा, 'प्यारे, तुम मुझे सुंदर समझते हो या नहीं?' मैं ने कहा, 'तुम कैसी बातें कर रही हो? क्या तुम अपने लिए मेरे प्रेम को नहीं जानती? मैं तुम्हें संसार की सर्वश्रेष्ठ सुंदरी मानता हूँ।' वह हँस कर कहने लगी, 'यह बेकार की बात है। मेरी एक सहेली मुझ से कहीं अधिक सुंदर है। उसे एक बार देखोगे तो मेरी ओर मुँह भी नहीं करोगे। वह मुझ से आयु में भी कम है और बड़ी कोमल है। उसे भी तुम्हें देखने की बड़ी लालसा है। मैं उसे यहाँ लाऊँगी।' मैं ने कहा, 'मैं तो तुम्हें ही चाहता हूँ। तुम चाहो तो उसे ले आओ लेकिन मैं प्रेमी तो तुम्हारा ही रहूँगा।'
उस स्त्री ने कहा, 'तुम ने जो कहा है उस पर दृढ़ रहना। मैं उसे सामने ला कर तुम्हारी परीक्षा लूँगी।' यह कह कर वह स्त्री विदा हुई। उस दिन उस ने मुझे पचास अशर्फिया दीं जो मुझे लेनी पड़ीं। जाते समय वह कहने लगी, 'दो दिन बाद मैं आऊँगी और एक नया मेहमान भी लाऊँगी और उस की अभ्यर्थना के लिए भोजन आदि की अच्छी व्यवस्था रखना।'
जिस दिन की बात तय हुई थी उस दिन मैं ने घर की सफाई करवाई, फर्श बगैरा झड़वाया और नाना प्रकार के फल तथा खाद्य सामग्री घर में तैयार रखी। शाम को दोनों स्त्रियाँ आईं। उन्होंने अपने चेहरों से नकाब उतार लिए। वास्तव में पहली स्त्री से नई स्त्री हर बात में सवाई थी। अगर पहली पर एक बार नजर जाती थी तो दूसरी पर बार-बार जाती थी। उस का सौंदर्य इतना मनमोहक था कि नजर उस पर से हटती ही नहीं थी। जब उस की प्रेमदृष्टि मुझ पर पड़ती मैं अधीर हो जाता था। मैं ने दोनों स्त्रियों के प्रति आभार प्रगट किया कि वे मेरे यहाँ आईं। नई स्त्री ने कहा कि आभारी तो मुझे होना चाहिए कि आप ने मुझे अपने घर तक आने की अनुमति दी।
मैं ने दोनों स्त्रियों को भोजन पर बिठाया। मैं अपनी नई मेहमान के सामने जा बैठा और बराबर उसे देखता रहा। वह स्त्री चाहते हुए भी मेरी तरफ न आँख भर कर देख सकी न हँस-बोल सकी। लगता था जैसे वह पहली स्त्री से भयभीत है। फिर भी कभी-कभी तिरछी नजर से मुझे देख लिया करती थी। जब उस ने देखा कि मेरी निगाहों में प्यार उमड़ रहा है तो उस ने भी प्रेम की दृष्टि से देखना शुरू कर दिया।
यह सब पहली स्त्री की आँखों में छुपा न रहा। वह हँस कर कहने लगी, 'तुम इसे बार-बार क्यों देख रहे हो। तुम ने तो मुझ से प्रतिज्ञा की थी कि मेरे अलावा

इतना पिटवाया कि मुझे लगा मेरी जान ही निकल जाएगी। इसीलिए मैं ने घबरा कर कह दिया कि यह चोरी का है। इस पर कोतवाल ने मेरा दाहिना हाथ कटवा दिया। उस ने हार भी मालखाने में जमा करा दिया।
मैं पीड़ा से व्याकुल गिरता-पड़ता अपने घर आया। नौकर-चाकर पुलिस के डर से भाग गए थे। मैं किसी तरह खुद ही अपना काम चलाता था। चौथे दिन बहुत-से पुलिसवाले मेरे घर में घुस आए और मुझे पकड़ ले गए। उनके साथ मकान मालिक भी था और वह जौहरी भी जिसने मुझ पर चोरी का आरोप लगाया था। उन्होंने मुझे बहुत गालियाँ दीं और कहा कि यह हार शहर के हाकिम का है, यह तीन वर्ष हुए खो गया था, उसी समय से हाकिम की पुत्री भी लापता है। यह कह कर उन्होंने मुझे रस्सी से बाँधा और हाकिम के सामने पेश कर दिया। मैं पहले तो घबराया कि यह और बड़ी मुसीबत गले पड़ी। फिर मैं ने सोचा कि हाकिम अधिक से अधिक मुझे मरवा ही तो देगा और वह भी इस कष्ट, निर्धनता और लज्जा के जीवन से अच्छा है। किंतु हाकिम ने मुझे देख कर कहा, 'यह आदमी चोर नहीं हो सकता। जिसने इस पर चोरी का आरोपी लगाया है वह मारा जाए।' अतएव वह व्यापारी कत्ल कर दिया गया।
अब हाकिम ने समस्त उपस्थित व्यक्तियों को जाने का आदेश दिया, सिर्फ मुझे रोक रखा। एकांत होने पर उस ने मुझ से कहा, 'बेटे, अब तुम बेखटके पूरा हाल बता दो कि यह हार तुम्हारे हाथ किस तरह लगा। यह ध्यान रहे कि मुझ से कोई छोटी से छोटी बात भी न छुपाई जाए।' अतएव मैं ने पूरी तरह बताया कि किस तरह पहली स्त्री दूसरी को मेरे पास लाई थी और किस तरह उस ने उसे विष दे कर मार डाला। मैं ने यह भी बताया कि दूसरी स्त्री की लाश कहाँ गड़ी है।
हाकिम ने यह सब सुन कर ठंडी साँस भरी और कहा, 'भगवान की इच्छा के आगे सब लोग विवश हैं। मैं भी वह सब विनयपूर्वक स्वीकार करता हँ जो उस की इच्छा से हुआ। तुम पर जो कुछ मुसीबत पड़ी उस का मुझे अत्यंत खेद है। अब तुम मेरा हाल सुनो कि मुझ पर कैसे-कैसे दुख पड़े। वे दोनों स्त्रियाँ मेरी बेटियाँ थीं। पहले जो तुम्हारे पास गई वह मेरी बड़ी बेटी थी और बाद में जिसे वह ले गई वह उस की छोटी बहन थी। बड़ी बेटी का विवाह मैं ने अपने भतीजे से कर दिया जो काहिरा में रहता था। वह कुछ दिनों बाद अचानक मर गया। मेरी बेटी कई वर्ष तक वैधव्य की दशा में भी काहिरा में रही और वहाँ उस ने तरह-तरह के दुष्कर्म सीख लिए। फिर वह यहाँ आ गई।'
'दूसरी बेटी जो उस से छोटी थी और जो तुम्हारी बाँहों में मरी बड़ी समझदार और सदाचारिणी थी। उस से मुझे कोई शिकायत नहीं हुई लेकिन उस की बड़ी बहन ने

बादशाह ने कहा, 'तुम्हारी कहानी पहली दोनों से अधिक मनोरंजक है। किंतु तुम लोगों को यह आशा नहीं करनी चाहिए कि उस के कारण तुम्हारी जानें बच जाएँगी। कुबड़े की कथा अब भी तुम लोगों की कथाओं से अधिक विचित्र है। अगर उस से अच्छी कहानी न सुनाई गई तो तुम चारों की मृत्यु निश्चित है।' अब दरजी ने उठ कर सिर नवाया और कहा कि मेरी भी कहानी सुन लीजिए, मुझे पूरा विश्वास है कि आप इसे सुन कर प्रसन्न होंगे।

काशगर के बादशाह के सामने दरजी की कहानी

दरजी ने कहा कि इस नगर के व्यापारी ने एक बार अपने मित्रों को भोज दिया और उनके लिए भाँति-भाँति के व्यंजन बनवाए। मुझे भी बुलाया गया। मैं जब वहाँ पहुँचा तो देखा कि बहुत-से निमंत्रित लोग मौजूद हैं किंतु मकान मालिक नहीं है। थोड़ी देर में हम लोगों ने देखा कि मकान मालिक एक लँगड़े किंतु अति सुंदर व्यक्ति को ले कर यहाँ आया और अतिथियों के बीच बैठ गया। लँगड़ा आदमी वहाँ बैठनेवाला ही था कि उस की दृष्टि वहाँ पर उपस्थित एक नाई पर पड़ी। वह बैठने के बजाय सभा से बाहर जाने लगा। आतिथ्यकर्ता व्यापारी ने आश्चर्य से पूछा कि मित्र, तुम जा क्यों रहे हो, अभी भोजन आनेवाला है, तुम भोजन के बिना कैसे चले जाओगे। किंतु उस लँगड़े ने, जो परेदशी जान पड़ता था, कहा, 'श्रीमान, मुझे आपके घर पर ठहर कर मरने की इच्छा नहीं है। मैं इस मनहूस नाई का मुँह नहीं देखना चाहता जिसे आप ने अपनी दावत में बुलाया है। मुझे जाने ही दीजिए।'
दरजी ने कहा कि उस लँगड़े की यह बात सुन कर हम सब को और भी आश्चर्य हुआ। हमारी समझ में नहीं आ रहा था कि उस नाई से उस लँगड़े को इतनी नाराजगी किस कारण हो सकती है।
हम लोग उत्सुकतावश उस लँगड़े के चारों ओर जमा हो गए और पूछने लगे कि क्या बात है। उस लँगड़े ने कहा, 'मित्रो, मैं इसी कमबख्त नाई के कारण लँगड़ा हुआ हूँ और इस के कारण अन्य विपत्तियाँ भी झेली हैं। मैं ने प्रण किया था कि न केवल इसका मुख न देखूँगा बल्कि यह जहाँ रहेगा वहाँ रहूँगा भी नहीं। मैं बगदाद का रहनेवाला हूँ, मैं ने बगदाद नगर इसीलिए छोड़ा कि यह वहाँ रहता था। अपने नगर को छोड़ कर मैं यहाँ आया, लेकिन यह मेरी जान का दुश्मन यहाँ भी

मौजूद है। इसीलिए अब मैं इस सभा या इस नगर में बिल्कुल नहीं ठहर सकता। मुझे आप लोग क्षमा करें। मुझे यह देश छोड़ना पड़ेगा वरना यह दुष्ट न जाने मेरी क्या-क्या दुर्गति करेगा।'
यह कह कर लँगड़ा अतिथि गृह स्वामी की अनुमति के बगैर ही सभा से बाहर जाने लगा। हम लोगों ने उसे दौड़ कर रोका और दूसरे मकान में ले जा कर भोजन कराया। फिर गृह स्वामी ने कहा कि कृपापूर्वक हमें यह बताएँ कि इस नाई ने आपके साथ क्या दुष्टता की है। वह बड़ी मुश्किल से यह कहानी कहने को तैयार हुआ, लेकिन कहानी सुनाते समय नाई की ओर पीठ करके बैठ गया। नाई भी सिर झुकाए हुए चुपचाप सब कुछ सुनता रहा। लँगड़े ने अपना वृत्तांत इस प्रकार कहा।

लँगड़े आदमी की कहानी

मेरा पिता बगदाद के सम्मानित व्यक्तियों में से था और हम लोग आनंदपूर्वक वहाँ रह रहे थे। मैं अपने पिता का अकेला बेटा था। जिस समय मेरे पिता की मृत्यु हुई उस समय तक मैं न केवल विद्याध्ययन पूरा कर चुका था बल्कि व्यापार के कार्य में भी प्रवीण हो गया था। मेरे पिता ने अपने जीवनकाल ही में अपनी संपत्ति मेरे नाम कर दी थी। मैं धन के व्यय में होशियारी से काम लेता था। नगरनिवासी मुझे बहुत चाहते थे। यद्यपि मेरी यौवन की अवस्था थी तथापि मैं स्त्रियों के व्यवहार और उनकी प्रीति से अनभिज्ञ था। मुझे स्त्रियों से मिलने में लज्जा भी लगती थी।
एक दिन मैं कहीं जा रहा था कि सामने से कई स्त्रियाँ आती दिखाई दीं। मैं उनसे बच कर एक छोटी गली में घुस गया और एक मकान के सामने पड़े तख्त पर बैठ गया कि जब स्त्रियाँ निकल जाएँ तो मैं अपनी राह पकड़ूँ। मेरी आँखों के आगे एक खिड़की थी और उसमें से बहुत-से फूल दिखाई दे रहे थे। वह खिड़की पहले थोड़ी ही खुली थी। अचानक वह पूरी खुल गई और उसमें से एक षोडशी दिखाई दी। मैं उसका सौंदर्य देख कर ठगा-सा रह गया। वह मेरी ओर देख कर मुस्कुराई और कुछ देर पौधों में पानी देने के बाद खिड़की बंद कर के चली गई।
कहाँ तो मैं स्त्रियों से भागता था और कहाँ उस सुंदरी के चले जाने से इतना दुखी हुआ कि अचेत हो गया। जब होश आया तो देखा कि नगर का बड़ा काजी बड़े समारोह के साथ उस मकान में प्रविष्ट हुआ। मैं ने समझ लिया कि वह सुंदरी इसी की पुत्री है। मैं अपने घर वापस आ गया किंतु उस रमणी का ध्यान मुझे बिल्कुल नहीं भूलता था। दो चार दिन में विरह-व्याधि से मैं ऐसा पीड़ित हुआ कि

शाहकुबक। इसमें संदेह नहीं कि यह सब बड़े बकवासी हैं। मैं इन सब से छोटा हूँ और बहुत कम बोलता हूँ।
दरजी ने कहा कि लँगड़े व्यक्ति ने यह कह कर कहा कि मित्रो, अब आप ही लोग न्याय करें कि इतना बकबक करने पर भी यह अपने को अल्पभाषी कहता है। अब मैं ने दूसरे सेवक से जो घर की व्यवस्था देखता था कहा कि इस नाई को तीन अशर्फियाँ दे कर विदा कर दो, मैं आज हजामत नहीं बनवाऊँगा। इस नाई ने कहा, मालिक यह आप क्या कह रहे हैं। मैं कोई अपने आप तो आ नहीं गया, आपने बुलाया है तो आया हूँ। मैं तो अब आपकी हजामत बनाए बगैर जाऊँगा नहीं। आप मेरे गुणों को नहीं जानते इसीलिए मेरी कद्र नहीं करते। मेरा दुर्भाग्य है। आपके पिता मेरी कद्र जानते थे। वे जब मुझे बुलाते तो इतना स्नेह करते जैसे गोद में बिठा लेंगे, अपने साथ ही मुझे भोजन कराते थे और मेरी जानकारी और बुद्धिमत्ता की बातें सुन कर बड़े प्रसन्न होते थे। एक दिन उन्होंने मेरे काम से खुश हो कर मुझे सौ अशर्फी और एक भारी जोड़े का इनाम दिया, यानी एक बार ही फस्द खोजने में मेरे पास इतना धन आ गया जो मेरे सारे जीवन के लिए काफी है। मुझे उनकी कृपा बहुत याद आती है।
यह कह कर भी यह नाई चुप नहीं हुआ और दूसरी कहानी शुरू कर दी। मैं बड़ा दुखी हो गया कि यह तो किसी प्रकार पीछा छोड़ता ही नहीं। मैं ने सोचा कि डाँट-फटकार का तो इस पर कुछ असर होता ही नहीं, इसे मीठी बातों से बहलाना चाहिए। मैं ने कहा, भाई, तुम बहुत अच्छी बातें करते हो लेकिन इस समय चुप रहो, जल्दी से मेरी हजामत बना दो क्योंकि मुझे एक जगह जाना है।
यह हँस कर बोला, निस्संदेह आप को कोई बड़ा जरूरी काम होगा जिसके कारण आप इतनी जल्दी कर रहे हैं। आप यह काम मुझे जरूर बताएँ बल्कि मुझे अपने साथ ले चलें ताकि मैं हर मौके पर आप की सहायता कर सकूँ। मैं तो यह कहूँगा कि हर महत्वपूर्ण काम आप मेरी सलाह से ही करें जैसा कि आपके पिता और पितामह किया करते थे। आप मुझे अपना नौकर बल्कि गुलाम समझिए। आप बेझिझक मुझ से अपने मन की बात कहिए।
मैं ने चीख कर कहा, तू बकबक कर के मेरा मगज चाटे जा रहा है, भाग यहाँ से। यह कह कर मैं उठ खड़ा हुआ और जमीन पर पाँव पटकने लगा। इस बेशर्म नाई ने फिर भी अपनी हरकतें नहीं छोड़ीं। मुझे अति क्रुद्ध देख कर बोला कि आप नाराज न हो, मैं अभी आप की हजामत बनाए देता हूँ। यह कह कर इसने अपनी पेटी खोली और मेरी हजामत शुरू की। बहुत देर तक तो यह मेरे सिर पर पानी ही रगड़ता रहा, फिर

यह कहने के बाद वह लँगड़ा सभा से चला गया। सभी लोग उस की दुर्भाग्यपूर्ण कथा सुन कर बड़े प्रभावित हुए। सब ने उस नाई से पूछा कि इसने जो बातें कहीं क्या वे बातें सच हैं। अगर उसका वृत्तांत सच है तो निस्संदेह तू महामूर्ख और खतरनाक आदमी है और तुझे इसकी अच्छी तरह सजा मिलनी चाहिए। नाई बोला, जो कुछ उस आदमी ने कहा वह बिल्कुल सच है। लेकिन आप ही बताइए कि मेरा क्या कसूर है। मैं तो उस की चीख-पुकार सुन कर उस की सहायता के लिए गया था। वह तो लँगड़ा ही हुआ है, मैं न होता तो उस की जान भी जा सकती थी। वह मुझे उल्टे दोष देता है। मैं तो सात भाइयों में सब से कम बोलनेवाला हूँ। कहो तो अपनी और अपने भाइयों की कहानी कहूँ। यह कह कर उसने बगैर उनकी अनुमति की प्रतीक्षा किए अपनी कहानी शुरू कर दी।

दरजी की जबानी नाई की कहानी

खलीफा हारूँ रशीद के काल में बगदाद के आसपास दस कुख्यात डाकू थे जो राहगीरों को लूटते ओर मार डालते थे। खलीफा ने प्रजा के कष्ट का विचार कर के कोतवाल से कहा कि उन डाकुओं को पकड़ कर लाओ वरना मैं तुम्हें प्राणदंड दूँगा। कोतवाल ने बड़ी दौड़-धूप की और निश्चित अवधि में उन्हें पकड़ लिया। वे नदी पार पकड़े गए थे इसलिए उन्हें नाव पर बिठा कर लाया गया। मैं ने, जो बाद में नाव पर चढ़ा था, समझा कि यह लोग मामूली आदमी हैं। दूसरे किनारे पर अन्य सिपाहियों ने उनके साथ मुझे भी बाँध लिया। मैं ने यह भी न कहा कि मैं डाकू नहीं हूँ, क्योंकि आप जानते हैं कि मैं अल्पभाषी हूँ।
खलीफा के सामने हमें पहुँचाया गया तो उसने जल्लाद को आज्ञा दी कि दसों डाकुओं का सिर काट लो। भाग्यवश मुझे सब के अंत में बिठाया गया। जल्लाद ने दसों के सिर काट दिए तो मेरे पास आ कर रुक गया। खलीफा ने ध्यान से मुझे देखा और कहा, मूर्ख बूड्ढे, तू तो डाकू नहीं है, तू किस तरह इन के साथ आ मिला। मैं ने कहा, मालिक, मैं तो इन्हें भला आदमी समझ कर इनके साथ नाव पर बैठ गया था।
खलीफा को यह सुन कर हँसी आई और वह कहने लगा, तू अजीब आदमी है। पहले क्यों नहीं बोला कि तू डाकुओं में नहीं है। मैं ने कहा, सरकार मैं सात भाइयों में सब से छोटा हूँ। मेरे छहों भाई बकवासी हैं, मैं कम बोलता हूँ। मेरा एक भाई कुबड़ा है, दूसरा पोपला, तीसरा काना, चौथा अंधा, पाँचवाँ बूचा यानी कनकटा और छठा खरगोश की तरह होंठकटा है। कहें तो मैं उनका वृत्तांत कहूँ। किंतु

शायद वह सुनना न चाहता था इसलिए उसके बोलने के पहले ही मैं ने अपने भाइयों की कथा आरंभ कर दी।

नाई के कुबड़े भाई की कहानी

सरकार, मेरा सबसे बड़ा भाई जिसका नाम बकबक था, कुबड़ा था। उसने दरजीगीरी सीखी और जब यह काम सीख लिया तो उसने अपना कारबार चलाने के लिए एक दुकान किराए पर ली। उस की दुकान के सामने ही एक आटा चक्कीवाले की दुकान थी। चक्कीवाले का काम अच्छा चलता था और वह बहुत धनवान था किंतु मेरे भाई का काम नया था और वह बेचारा रोज कमाता और रोज खाता था।
एक दिन मेरा भाई काम कर रहा था और सामने चक्कीवाले के मकान की ऊपर की खिड़की खुली थी। कुछ देर में चक्कीवाले की अति सुंदर पत्नी वहाँ आ खड़ी हुई। मेरा भाई उसके रूप पर मर मिटा और उसे टकटकी लगाए देखता रहा। जब स्त्री की दृष्टि उस पर पड़ी तो उसने तुरंत ही खिड़की बंद कर ली क्योंकि वह बड़ी पतिव्रता थी। दूसरे दिन वह खिड़की न खुली। तीसरे दिन उस स्त्री ने खिड़की खोली तो फिर मेरे भाई को अपनी ओर देखता पाया। वह समझ गई कि यह आदमी मुझ पर बुरी नजर रखता है। वह इस बात पर जल गई किंतु उसने इसे दंड देना चाहा। वह इसकी ओर देख कर मुस्कुरा दी। यह भी हँस दिया। फिर वह शरमा कर चली गई। यह मूर्ख इससे समझा कि स्त्री मुझे चाहने लगी है।
अब उस स्त्री ने अपनी योजना आरंभ की। उसने अपनी सेविका के हाथ कई गज बहुमूल्य कपड़ा दरजी के पास भेजा कि मेरे लिए तुरंत ही अच्छा परिधान बना दे। मेरे भाई ने समझा कि यह वास्तव में मुझे चाहने लगी है नहीं तो इतना मूल्यवान कपड़ा नए दरजी के पास क्यों भेजती। उसने मेहनत से दिन भर लग कर शाम तक परिधान तैयार कर दिया। दूसरे दिन सेविका के आने पर उसने कहा कि अपनी स्वामिनी से कहना कि अपने सारे परिधान मुझी से सिलवाया करें, मैं बहुत शीघ्र और अत्यंत उत्तम सिलाई करता हूँ। सेविका थोड़ी दूर जा कर लौट आई और कहने लगी, मैं तुम्हें अपनी मालकिन का एक संदेश देना तो भूल ही गई। उसने पुछवाया है कि उस की रात तो तुम्हारे ध्यान में जागते ही कटी, तुम्हारी रात कैसी बीती। मेरा भाई यह सुन कर अत्यंत प्रसन्न हुआ और बोला कि उनसे कह देना कि मेरी तो चार रातें उनकी याद में जागते बीती हैं।
थोड़ी देर में सेविका फिर आई और कहने लगी कि मेरी मालकिन ने यह रेशमी कपड़ा दिया है कि उसके लिए परिधान बनाया जाए। मेरा मूर्ख भाई मनोयोग से उसे सीने

करते नहीं, तुम्हें एक पैसा भी नहीं देंगे। फिर वह मेरे पास आया कि कुछ पैसे दो, मैं कई दिन से भूखा हूँ। मैं ने उसे थोड़ा-सा धन दिया क्योंकि मैं भी कौन अमीर था। इन पैसों से उसका कुछ दिन तक इस तरह काम चला कि रोज दो-एक सूखी रोटियाँ खा लेता था।
एक दिन मेरा भाई फिर चक्कीवाले के यहाँ गया। वह उस समय चक्की पर काम कर रहा था। उसने समझा कि यह सिलाई माँगने आया है। उसने जेब में हाथ डाल कर कुछ सिक्के उसे देने के लिए निकाले। इसी समय सेविका ने पीछे से इशारा किया कि अगर सिलाई ली तो हमेशा के लिए काम बिगड़ जाएगा। अतएव उस बेचारे ने उस दिन भी कुछ न लिया और कहा कि मैं सिलाई लेने नहीं आया था, यूँ ही पड़ोसी होने के नाते तुम्हारी कुशल-क्षेम पूछने के लिए आया था। चक्कीवाला उस की भद्रता से बड़ा प्रभावित हुआ और उसे एक और कपड़ा सीने को दिया। मेरे भाई ने उसे भी उसी दिन सी दिया और दूसरे दिन चक्कीवाले के पास ले गया। चक्कीवाले ने सारे पैसे देने चाहे लेकिन सेविका ने फिर इशारा किया कि एक पैसा भी लिया तो मालकिन कभी तुम्हारे सामने न आएँगी। इसलिए उसने कहा, जल्दी क्या है, साहब? पैसे भी ले लूँगा। मैं तो आपका हाल-चाल पूछने के लिए आता हूँ, पैसे के लिए नहीं आता। यह कह कर फिर वह बेचारा अपनी दुकान में आ कर भूखा-प्यासा काम करने लगा।
लेकिन चक्कीवाले की पत्नी को इतनी बात से संतोष न हुआ। पैसे तो उसे बाद में मिल जाने ही थे। वह उसे कठोर दंड दिलवाना चाहती थी। इसलिए एक दिन उसने अपने पति को पूरी बात बता दी कि वह मुझ पर बुरी नजर रखता है, इसीलिए उसने इतने ढेर सारे कपड़े सी कर भी सिलाई नहीं ली। चक्कीवाला यह सुन कर बड़ा क्रुद्ध हुआ। उसने दो-चार दिन तक सोच विचार कर के मेरे भाई को अच्छी तरह दंड देने की योजना बनाई। उसने एक दिन इसे शाम के खाने पर बुलाया। खाना खाने के बाद दोनों देर तक बातें करते रहे। फिर चक्कीवाले ने कहा कि अब बहुत रात बीत गई है, कहाँ जाओेगे इस समय। यह कह कर उसे एक जगह सुला दिया।
आधी रात को उसने मेरे भाई को जगाया और कहा, भाई, मेरी मदद करो नहीं तो मेरी बड़ी हानि हो जाएगी। मेरा खच्चर जो चक्की चलाता था बीमार पड़ गया है और चक्की बंद पड़ी है।
मेरे भाई ने कहा, चक्की चलवाने के लिए क्या कर सकता हूँ। उसने कहा कि तुम खच्चर की जगह चक्की में बँध जाओ और उसे चारों ओर दौड़ कर घुमाओ। मेरे भाई को बड़ा आश्चर्य हुआ और वह आनाकानी करने लगा। किंतु चक्कीवाले ने उसे

चक्की से बाँध ही दिया और कहा कि तेज दौड़ो। मेरे भाई ने चलना शुरू किया तो चक्कीवाले ने उसे एक चाबुक मारा। इसने पूछा यह क्या बात है। उसने कहा कि खच्चर को मैं इसी तरह तेज चलाया करता हूँ, तुम भी तेज न चलोगे तो सारा अनाज बगैर पिसा रह जाएगा। मेरा भाई बेचारा दौड़ने लगा लेकिन दो-चार चक्कर लगाने के बाद बेदम हो कर बैठ रहा। चक्कीवाले ने दस बार चाबुक उसे मारे और उसे खूब गालियाँ दीं जैसी वह खच्चर को दिया करता था।
मेरे भाई की सुबह तक यही दशा रही। सुबह चक्कीवाला उसे वैसा ही बँधा छोड़ कर अपनी स्त्री के पास यह कहने को गया कि अपने प्रेमी की दशा देख लो। इसी बीच सेविका ने आ कर उसे खोला और कहा कि मुझे और मालकिन को तुम पर दया आई है, इसीलिए मैं ने तुम्हें छुड़ाया है। इसने कुछ उत्तर न दिया और गिरता पड़ता अपने घर आया। इस प्रकार उसके सिर से प्रेम का भूत उतरा।
खलीफा ने कहा कि आज ईद है, इस नाई को इनाम दे कर विदा करो। मैं ने यह कह कर विदा ली कि सारे भाइयों की बातें सुना कर ही इनाम लूँगा।

नाई के दूसरे भाई बकबारह की कहानी

दूसरे रोज खलीफा के सामने पहुँच कर मैं ने कहा कि मेरा दूसरा भाई बकबारह पोपला है। एक दिन उससे एक बुढ़िया ने कहा, मैं तुम्हारे लाभ की एक बात कहती हूँ। एक बड़े घर की स्वामिनी तुम से आकृष्ट है। मैं तुम्हें उसके घर ले जा सकती हूँ। उस की कृपा हो गई तो तुम शीघ्र ही धनवान हो जाओगे। मेरे भाई ने उसका बड़ा अहसान माना और कुछ पैसे भी बुढ़िया को दिए।
बुढ़िया ने कहा, लेकिन मैं एक चेतावनी तुम्हें देती हूँ। उस सुंदरी की उम्र कम है और उसका बचपन और खिलंदरापन अभी नहीं गया है। वह अपने मित्रों और उन सभी लोगों के साथ तरह-तरह के तंग करनेवाले मजाक करती है, इसी में उसे आनंद आता है। और अगर कोई उसके शारीरिक परिहासों का बुरा मानता है तो वह उससे हमेशा के लिए बिगड़ जाती है और कभी उसका मुँह नहीं देखती। इसलिए यह जरूरी है कि वह और उस की सहेलियाँ और दासियाँ तुम से कितनी ही छेड़छाड़ या खींचतान करें तुम किसी बात का बुरा न मानना। मेरे भाई ने यह बात स्वीकार कर ली।
फिर एक दिन वह बुढ़िया मेरे भाई को वहाँ ले गई। मेरे भाई बकबारह को उस भवन की विशालता और भव्यता को देख कर अति आश्चर्य हुआ। बुढ़िया के साथ होने से उसे किसी द्वारपाल ने नहीं रोका। बुढ़िया ने फिर ताकीद की कि वह सुंदरी या

है कि मुझे पकड़ो और कमरे-कमरे और दालान-दालान में दौड़ती फिरती है। जब वह थक कर खड़ी हो जाती है और वह व्यक्ति उसे पकड़ लेता है तो उस की बाँहों में चली जाती है।
अतएव मेरे भाई ने एक लँगोट को छोड़ कर सारे कपड़े उतार डाले और वह स्त्री उससे बीस कदम आगे भागने लगी। भागते-भागते वह उसे एक बिल्कुल अँधेरे कमरे में ले गई। वह स्वयं तो न जाने कहाँ निकल गई, वह बेचारा अँधेरे में भटकता रहा।
अंत में एक ओर प्रकाश देख कर वह उधर दौड़ा। वह पिछवाड़े का दरवाजा था। मेरा भाई वहाँ से ज्यों ही निकला कि वह द्वार बंद हो गया। पिछवाड़े की गली में चर्मकार रहते थे। उन्होंने एक दाढ़ी, मूँछ मुड़ाए, भौंहे रँगाए, लँगोट पहने आदमी को देखा तो उन्हें आश्चर्य हुआ और शरारत भी सूझी। उन्होंने हँसना और तालियाँ बजाना और चपतियाना शुरू किया। फिर वे एक गधा पकड़ लाए और उस पर उसे बिठा दिया और बाजार की तरफ ले जाने लगे। मेरे भाई के दुर्भाग्य से रास्ते में काजी का घर पड़ता था। काजी ने शोर सुन कर अपने नौकर से पुछवाया कि क्या बात है।
नौकरों ने सब लोगों को काजी के सामने ला खड़ा किया। काजी के पूछने पर चर्मकारों ने कहा, सरकार, हमने इस आदमी को इसी दशा में उस गली में पाया जो मंत्री के महल के पिछवाड़े खुलती है। यह वहीं घूम रहा था। काजी ने मंत्री के महल का नाम सुन कर कहा, यह पागल और खतरनाक आदमी मालूम होता है। इसे लिटा कर इसके पाँव उठवा कर तलवों पर सौ डंडे मारे जाएँ और उसके बाद इसे शहर से निकाल दिया जाए। इसके बाद इसके नगर में प्रवेश पर हमेशा के लिए रोक लगा दी जाए। अतएव ऐसा ही किया गया।
इसके बाद नाई ने कहा कि सरकार, यह मेरे दूसरे भाई बकबारह की कहानी है जो मैं ने आपको सुनाई है। अब मैं आपको अपने तीसरे भाई की कहानी सुनाता हूँ। यह कह कर बगैर खलीफा की अनुमति लिए वह कहानी सुनाने लगा।

नाई के तीसरे भाई अंधे बूबक की कहानी

नाई ने कहा, सरकार, मेरा तीसरा भाई बूबक था जो बिल्कुल अंधा था। वह बड़ा अभागा था। वह भिक्षा से जीवन निर्वाह करता था। उसका नियम था कि अकेला ही लाठी टेकता हुआ भीख माँगने जाता और किसी दानी का द्वार खटखटा कर चुपचाप खड़ा रहता। वह अपने मुँह से कुछ न कहता और दानी जो कुछ भी देता उसे ले कर

आगे बढ़ जाता। इसी प्रकार एक दिन उसने एक दरवाजा खटखटाया। गृहस्वामी ने, जो घर में अकेला रहता था, आवाज दी कि कौन है। मेरा भाई अपने नियम के अनुसार कुछ नहीं बोला लेकिन दुबारा दरवाजा खटखटाने लगा। गृहस्वामी ने फिर पुकारा कि कौन है। यह बगैर बोले फिर द्वार खटखटाने लगा। अब घर के मालिक ने दरवाजा खोला और पूछा कि तू क्या चाहता है।
बूबक ने कहा कि मैं गरीब भिखमंगा हूँ, भगवान के नाम पर कुछ भीख दो। गृहस्वामी ने कहा कि क्या तू अंधा है, उसने कहा कि हाँ। फिर गृहस्वामी ने कहा, हाथ बढ़ा। यह समझा कि कुछ भीख मिलेगी। उसने हाथ फैलाया तो घर का स्वामी उसे खींच कर ऊपर ले गया। फिर उसने बूबक से पूछा कि तू भीख लेता है तो कुछ देता भी है? उसने कहा, मैं आशीर्वाद ही दे सकता हूँ, तुझे आशीर्वाद देता हूँ। उस आदमी ने कहा कि मैं भी तुझे आशीर्वाद देता हूँ कि तेरी आँखों की ज्योति लौट आए।
बूबक ने उससे कहा, तू यह बात पहले ही कह देता। मुझे जीना चढ़ा कर क्यों लाया? उसने कहा, मैं ने तुझे दो बार आवाज दी थी। तू कुछ न बोला तो मुझे भी बेकार जीना उतरना-चढ़ना पड़ा। बूबक बोला कि अच्छा, मुझे जीने से उतार तो दे। उसने कहा कि सामने ही तो जीना है, तू खुद उतर जा। मजबूर हो कर बेचारा बूबक टटोल-टटोल कर जीना उतरने लगा लेकिन एक जगह उसका पाँव फिसल गया और वह लुढ़कता हुआ नीचे आ रहा। उसके सिर और पीठ में बड़ी चोट आई जिससे वह तिलमिला उठा। बेचारा बड़ी देर तक अपनी चोटों को सहलाता हुआ गृहस्वामी को गालियाँ देता और उस की भर्त्सना करता रहा। फिर वह लाठी टेकता हुआ आगे भीख माँगने के लिए बढ़ गया।
कुछ देर में उसे अपने दो साथी अंधे भिखारी मिले। उन्होंने पूछा कि तुम्हें आज भिक्षा में क्या मिला। बूबक ने सारा वृत्तांत कहा कि किस तरह एक घर का निवासी उसे पकड़ कर ऊपर ले गया और वहाँ जा कर उसके साथ कैसा निष्ठुर परिहास किया और उसे हाथ पकड़ कर उतारा भी नहीं। उसने यह भी बताया कि जीना उतरते समय पाँव फिसलने से उसे कैसा कष्ट हुआ। फिर मेरे भाई ने उनसे कहा कि आज मुझे कुछ नहीं मिला है लेकिन मेरे पास पहले के कुछ पैसे पड़े है, तुम जा कर उनसे कुछ भोजन सामग्री खरीद लाओ।
जो मनुष्य बूबक को जीने से ऊपर चढ़ा ले गया था वह वास्तव में एक ठग था। वह चुपके से बूबक के पीछे आ रहा था। वे तीनों अंधे जब अपने निवास स्थान पर आए तो वह भी उनके पीछे पीछे चल कर उनके घर में आ घुसा। मेरे भाई ने फिर अपनी

झूठ बकता है। सच्ची बात यह है कि हम चारों अंधों ने भीख माँग कर यह रुपया जमा किया है। अब यह तीनों बेईमान मुझे मेरा हिस्सा नहीं देते। यह मुझे चोर बना रहे हैं और मुझे मार रहे हैं। भगवान के लिए मेरा न्याय करो और मुझे इनसे बचाओ।
लोग इस मामले को उलझा हुआ देख कर सब को कोतवाल के पास ले गए। वहाँ अंधा बने हुए ठग ने कहा, मालिक, हम चारों ही दोषी हैं। लेकिन हम कसमें खा कर भी अपना दोष स्वीकार न करेंगे। अगर हम लोगों को एक-एक कर के मार पड़े तो हम अपराध कबूल कर लेंगे। आप पहले मुझ से आरंभ कीजिए, इस पर मेरे भाई ने कुछ कहना चाहा तो कोतवाल ने उसे डाँट कर चुप कर दिया।
ठग पर मार पड़ने लगी। बीस-तीस कोड़े खाने के बाद उसने एक-एक कर के अपनी दोनों आँखें खोल दीं और चिल्ला-चिल्ला कर कहने लगा, सरकार, हाथ रोक लीजिए। मैं सब कुछ बताऊँगा।
कोतवाल ने पिटाई बंद करवा दी तो ठग बोला, सरकार, असली बात यह है कि मैं और मेरे यह तीनों साथी अंधे नहीं हैं। हम अंधे बने हुए हैं और भीख माँगने के बहाने लोगों के घरों में घुस जाते हैं और मौका देख कर चोरी कर लेते हैं। इस तरह से हमने बयालीस हजार रुपया जमा किया है। आज मैं ने इन लोगों से कहा कि मेरे हिस्से का चौथाई रुपया मुझे दे दो तो इन लोगों ने भेद खुलने के भय से मुझे रुपया न दिया और मेरे जिद करने पर मुझ से मारपीट की। अगर आप को मेरी बात पर विश्वास न हो तो इन्हें भी मेरी तरह एक-एक कर के पिटवाइए। फिर देखिए यह लोग तुरंत अपना अपराध स्वीकार कर लेंगे।
मेरे भाई और दो अन्य अंधों ने भी चाहा कि अपनी बात कहें किंतु उन्हें बोलने नहीं दिया गया।
कोतवाल ने कहा कि तुम सब अपराधी हो। मेरे भाई ने बहुतेरा कहा कि यह ठग है और हम तीनों वास्तव में अंधे हैं। लेकिन कोतवाल ने उसका विश्वास न किया और तीनों पर मार पड़ने लगी।
ठग ने इन चिल्लाते हुए लोगों से कहा, दोस्तो, क्यों अपनी जान दे रहे हो। मेरी तरह तुम भी अपनी आँखें खोल दो और अपना अपराध स्वीकार कर लो। लेकिन वे बेचारे आँखोंवाले होते तो आँखें खोलते, उसी तरह पिटते और चिल्लाते रहे। अब ठग ने कहा, सरकार, यह लोग बड़े पक्के हैं, अगर आप इन्हें पीटते-पीटते मार डालेंगे तो भी यह अपना अपराध स्वीकार नहीं करेंगे। इन्होंने जितना अपराध

किया है इन्हें उससे अधिक दंड मिल चुका है। अब हम सभी को काजी के सामने पेश कर दिया जाए। वह ठीक फैसला करेगा।
काजी के सामने उस ठग ने कहा, हम लोगों ने चोरी से वह धन एकत्र किया है। आज्ञा हो तो मैं उस राशि को आपके सामने पेश करूँ। काजी ने अपना एक सेवक उसके साथ कर दिया। ठग उसके साथ जा कर मेरे भाई की गुदड़ी उठा लाया। काजी ने उस रकम का चौथाई भाग ठग को दे दिया जिसे ले कर वह चला गया। शेष रकम उसने अपने पास रख ली और बाकी तीन लोगों को और पिटवाया और देशनिकाला दे दिया। यह कह कर नाई ने खलीफा से कहा कि मुझे मालूम हुआ तो मैं ढूँढ़ कर बूबक को गुप्त रूप से अपने घर लाया और कई गवाह ले कर काजी के सामने उसको निर्दोष सिद्ध किया। काजी ने ठग को बुला कर उसका रुपया छीन कर उसे दंड दिया किंतु रकम इन लोगों को न दी। खलीफा यह सुन कर बहुत हँसा। फिर नाई ने चौथे भाई की कहानी शुरू कर दी।

नाई के चौथे भाई काने अलकूज की कहानी

नाई ने कहा कि मेरा चौथा भाई काना था और उसका नाम अलकूज था। अब यह भी सुन लीजिए कि उसकी एक आँख किस प्रकार गई। मेरा भाई कसाई का काम करता था। उसे भेड़-बकरियों की अच्छी पहचान थी। वह मेढ़ों को लड़ाने के लिए तैयार भी करता था। इस कारण वह नगर में सर्वप्रिय हो गया। वह बड़े अच्छे-अच्छे मेढ़े पालता और प्रतिष्ठित लोग उसके यहाँ मेढ़ों की लड़ाई देखने आते। इसके अलावा वह भेड़ का बहुत अच्छा मांस बेचता था।
एक दिन एक बुड्ढा उसके पास आया और एक पसेरी मांस खरीद कर और उसका मूल्य दे कर चला गया। उसके दिए हुए चाँदी के सिक्के बिल्कुल नए और चमकते हुए थे। मेरे भाई ने उन्हें देख कर एक संदूक में डाल दिया। वह बूढ़ा पाँच महीने तक इसी तरह आता और उतना ही मांस रोज उसकी दुकान से ले जाता रहा और बदले में उतने ही रुपए रोज दे जाता रहा। पाँच महीने बाद मेरे भाई ने जब और भेड़ें खरीदनी चाहीं तो संदूक खोलने पर वहाँ कागज के गोल कटे टुकड़े पाए।
यह देख कर वह अपना सिर पीट-पीट कर रोने-चिल्लाने लगा। उसने पड़ोसियों को बुलाया ओर उन्हें संदूक में भरी हुई कागज की गोल चिंदियाँ दिखाईं। वे भी यह देख कर बड़े आश्चर्य में पड़े। मेरा भाई दाँत पीस-पीस कर कह रहा था कि अगर वह कंबख्त बुड्ढा मिल जाए तो उसकी अक्ल ठिकाने लगाऊँ। संयोग से गली में कुछ दूर पर वह बुड्ढा दिखाई दिया। मेरे भाई ने दौड़ कर उसे पकड़ा और

मेरी पत्नी, जिसका मुख पूर्णमासी के चंद्रमा की तरह होगा, बड़ी सज-धज के साथ सोलह श्रृंगार कर के मेरे सामने आएगी तो मैं गर्व के मारे उसकी ओर आँख भी नहीं उठाऊँगा, फिर उसकी प्रधान सेविकाएँ और सखी-सहेलियाँ मेरे सामने आ कर विनय करेंगी कि मालिक, आपकी पत्नी, जो आपकी दासी के समान है, आप की आज्ञा की प्रतीक्षा में है और आप के सामने खड़ी है। कृपा कर के उसे अपने आगे बैठ जाने को कहें। मैं फिर भी उन्हें कोई उत्तर नहीं दूँगा। उन्हें इस बात का बड़ा आश्चर्य होगा कि मैं उनकी ओर और अपनी पत्नी की ओर देखता क्यों नहीं हूँ। वे लोग बड़ी देर तक मेरे सामने खड़ी हो कर मुझ से अपनी पत्नी पर ध्यान देने के लिए अनुनय करती रहेंगी।
फिर मैं एक कृपापूर्ण दृष्टि अपनी पत्नी पर डालूँगा लेकिन फिर निगाह फेर लूँगा। मेरे इस रवैये से मेरी पत्नी की सेविकाएँ और साथिनें समझेंगी कि मैं वैसे किसी बात पर नाराज नहीं हूँ किंतु पत्नी का जो साज-श्रृंगार किया गया है वह मेरे मन का नहीं है इसलिए वे उसे दूसरे कक्ष में ले जाएँगी ताकि उसका नए सिरे से साज-श्रृंगार करें। इतने समय में मैं भी उठ कर नए कपड़े पहन लूँगा।
शयनकक्ष में जाने पर भी मैं अपनी पत्नी से पूर्ण उपेक्षा का बरताव करूँगा। मैं उसकी ओर एक दृष्टि भी नहीं डालूँगा और उससे एक बात भी नहीं करूँगा। मैं पलंग पर उसकी और पीठ कर के सो रहूँगा। मेरी पत्नी रात भर इस उपेक्षा से दुखी हो कर आँसू बहाती रहेगी और सवेरा होने पर अपनी माता यानी मंत्री की पत्नी से रो-रो कर कहेगी कि मेरे पति ने रात में मेरे साथ गर्व और उपेक्षा का बर्ताव किया। उसकी माँ उसे दिलासा देगी, फिर मेरे महल में आ कर सम्मानपूर्वक मेरा हाथ चूमेगी और कहेगी कि जमाई राजा, मेरी बेटी पर इतना अत्याचार न करो कि उसकी ओर देखना ही छोड़ दो। उसका अगर कोई कसूर है तो बताओ मैं उसे दंड दूँगी। वैसे यह तो कहने की जरूरत नहीं कि वह तुम्हारी दासी है और तब मन से तुम्हारी सेवा करना उसका कर्तव्य है। तुम उस पर एक बार तो कृपा दृष्टि करो।
उसके इस अनुनय-विनय का मुझ पर कोई असर नहीं होगा। फिर मेरी सास मेरे पास आ कर मेरा पाँव चूमेगी। मैं इस पर भी टस से मस नहीं हूँगा। फिर मेरी सास शराब का एक प्याला भर कर मेरी पत्नी को देगी कि अपने पति को पिला दो, शायद इससे वह तुम से प्रसन्न हो जाए। मेरी पत्नी मेरे सामने आ कर प्याला लिए बहुत देर तक भयभीत-सी खड़ी रहेगी। फिर वह कहेगी कि आपको उसी भगवान की सौगंध है जिसने

xxxxx xxxx xx xxxxx xx xxx, xx xxx xxx xxx xxx xxxxx xx xx xxxxxxxx xx xxx xxxxxx xxxxx xx xxxxx xx x xxxxx

xxxxxxxxxx xx xxxxxxxx xx xxxxx xx xxx xxxxx xx xx xx xxxxxxx xxx xxxxx xxxxx xx, x xxxxx xxxxx xx xx xx xxxxx xxxxxxx xxxxx xxxxxx xx xxx xxxxx x xx xx xxxxxxxx xx xxxxxx xxxxx xxx xxxxx xxx xx xx xx xx xxxxx xx xx xxxxx xx xxxxx xxx xx xx xxxxx xxxxx xxxxxx xxx xxxxxx xxxxx xxx xxxxx xx xxx xx xxx xxxxxxxxxx xx xx xx xxx xx xx xx xxxxxxx xx xx xxx xxxxx xx xxxxx xx xxx xx xxx xxxxx xx xxxxx xxxxx xx xx xxxxxx xxxxx xxxxxx xxxxx xxx xx xxx xx xxxxx xxxxxx xx-xx xxxxx xxxxxxxx xxxxxx xx xx xxxxxxxx xxx xx xxxxx xxx x xxxxx xxxxxxx xxxxx xx xxx, xx xxxxxx xx xxx xxxxx xxx x xxxxxxx

xxxxx xxxxx xxx xx xxxxx xxxxxxx xxx xxxxxxxxxx xxx xxxxx xxxxx xx xxxxx xxxxxxx xx xxx xx xxxxx xxx xx xx xx xxxxx xxxxxx xxxxx xxxxxxx xx xxx xxxxx xx xxxxxx xxxxx xx xxxxxx xx xxxxx xxx xx xxx xx xxxxx xxxxxx xxxxx xxx xxxxx xxxxx xxx xxxxxxx xx xx-xxx xxxxx xx xxx xxx xx xxxxxxxxxx xx xxxxx xxxxx xx xxxxxx xx xxx xx xx xxxxx xxxxx xx xxxxxxx x xx xxxxx

xxxxx xxx xxxxxxx xx xx-xxx xxxxxxxxxx xx xx xx, xx xxxxx xxx xxx xxxxx xxx, xxx xx xxxxx xxxxxx xx xx xx xx xx xxxxx xxxxxx xxxxxxxxxx xx xxxxx xx xxx xx xxxxxxx xx-xxx xxx xxx xxx xxxxxxx xx xxx xxxxxx xx xxxxx xxxxx xx, xxxxx xx xx xxxxxx xx xxxxxx xx, xxx xx xx xxx xxxxx xxxxxx xxx xx xxx xxx xxxxxx xx xxxxx xx xx xxxxx xxx xx xxx xxx xxxxxx xx xxx xxxxxx xxx xxx xxx xxxxxxxx xxx xxxxxxx xx xxxxx xx xx xxx xxx xxxxx xx xxx xxx xx xxx xx xxxxx xx xxx xx xx xxxxx xxxxx xxx xxx xxxxxx xxxxx xxx-xxxxx xxxxx xxx xxx

xxx xx xxx xxx xxx xx xxxxx

xxx xx xxx xx xx xxxxx xxxxxx xxx xxx xxx xx xxxxxxxxx xx xxx xxx xxx xx xxx xxxxxx, xxx xxx xx xx xxxxx xxxxx xx xxx xx xxx xxx xxx xx xx xxxxx xxxxx xxxxxx xx xxx xxx xx xxxxx xxx xx xx xx xxxxx xx xxxxxx xx xxx xxx-xxx xx xxx xxxxx xx xxxxx xx xxx xxxxx xxxxxxx xx xxxxx xxxxx xx xxxxx xxxxx xxxxxxxx xxxxx xxxxxx xxx xxxxx xxxxxxx xxx xxxxxx xxx xxxxxx xxx xxxxxxxxxx xx xxx xxx xxxxx xxx xx xxxxx-xxxxx xx xxxxxxx xx xxxxx xxxxx xx xx xxxxx xxx xxxxx xx xx xx xx xxxxx

धोने लगा। फिर बरमकी बोला कि अभी भोजन भी आ रहा है। कुछ क्षणों के बाद वह अपने मुँह तक हाथ ले गया और ऐसे मुँह चलाने लगा जैसे ग्रास को चबा रहा है। उसने मेरे भाई से कहा कि तुम भी खाओ। संकोच क्यों कर रहे हो। इस घर को अपना ही समझो। मेरा भाई, जो वास्तव में भूखा था, इस झूठ-मूठ की दावत से कुढ़ कर रह गया और कुछ न बोला।
बरमकी ने कहा, क्या बात है? क्या तुम्हें यह शीरमाल और यह कबाब अच्छे नहीं लगते? तुम खा क्यों नहीं रहे हो? मेरे भाई ने कुछ और उपाय न देख कर बरमकी की भाँति ही झूठ-मूठ खाना शुरू कर दिया। कुछ देर बाद बरमकी ने पुकार कर कहा, सच कहो तुमने ऐसा स्वादिष्ट चकोर और बटेर का मांस कभी खाया है। फिर इसी प्रकार उसने झूठ-मूठ बतख का मांस खाया और खिलाया। फिर बरमकी बोला कि देखो यह मुर्गे का कैसा स्वादिष्ट मांस है, एक टाँग और एक बाजू तुम भी लो। फिर कहा, देखो यह बकरी के बच्चे का भुना मांस है। उसे भी उसने झूठ-मूठ खाया और खिलाया।
इसी प्रकार कई प्रकार के कल्पित व्यंजन उसने मँगाए और झूठ-मूठ खाए और खिलाए। फिर एक व्यंजन का एक ग्रास ले कर मेरे भाई के मुँह की ओर ले गया और कहा कि इसे मेरे हाथ से खाओ।
शाह कबक ने उस झूठे ग्रास को चबाया और कहा, वास्तव में इसका स्वाद अद्वितीय है। बरमकी बोला कि मैं पहले ही कहता था कि तुम इसे पसंद करोगे, अच्छा अब एक और चीज खा कर देखो। यह कह कर वह फिर एक हवाई ग्रास शाह कबक के मुँह की ओर ले गया। शाह कबक ने यूँ ही मुँह चला कर कहा, वाह, इसके स्वाद का क्या कहना, यह भी पिछले व्यंजन से कम नहीं है। इसमें से अंबर, लौंग, जायफल और जावित्री सब की सुगंध आ रही थी और कोई सुगंध किसी दूसरी सुगंध को दबा नहीं रही है। बरमकी बोला कि जी भर कर इसे खाओ।
फिर बरमकी ने छोकरे को (जो कहीं उपस्थित नहीं था) आवाज दी कि खाने के बरतन उठा ले और फल ला। फिर मेरे भाई से कहा कि यह बादाम आज ही तोड़े गए हैं। इसके बाद वे दोनों काल्पनिक रूप से बादामों को तोड़ कर उनका छिलका फेंक कर गूदा खाने लगे। इसी प्रकार और भी भाँति-भाँति के मेवों और फलों को बरमकी ने झूठ-मूठ खाया खिलाया। शाह कबक ने खूब तारीफ की और कहा कि बहुत ही स्वादिष्ट चीजें खाने को मिलीं जिनसे मुँह थक गया लेकिन मन न भरा।
अब बरमकी ने मुस्कुरा कर उसकी ओर हाथ बढ़ाया और कहा कि यह मदिरा पियो। शाह कबक ने कहा कि हमारे परिवार में मदिरापान वर्जित है किंतु बरमकी बराबर जोर

पहले एक प्रश्न पूछने की धृष्टता करना चाहता हूँ। कृपया यह बताएँ कि यह दरजी, यह यहूदी हकीम और इतने सारे नागरिक यहाँ क्यों जमा हैं और यह कुबड़ा आदमी जमीन पर किस लिए लेटा है। बादशाह ने कहा, तुझे इन बातों से क्या लेना- देना। नाई ने कहा, मैं सिर्फ यह साबित करना चाहिता हूँ कि मैं बकवासी नहीं हूँ। मैं बोलता हूँ तो सुनना भी चाहता हूँ।
बादशाह उसकी यह बात सुन कर हँस पड़ा और उसने पूरी घटना बताई कि किस तरह कुबड़े की हत्या के अपराध पर चार आदमी फाँसी चढ़ाए जानेवाले थे। नाई यह कथा सुनते समय गंभीरतापूर्वक सिर हिलाता रहा जैसे वह सब समझ रहा है और किसी ऐसे भेद को पा गया है जो वह अपने हृदय में छुपाए है। फिर उसने बादशाह से कुबड़े को देखने की अनुमति चाही। अनुमति मिलने पर वह उठ कर कुबड़े के पास गया और बहुत देर तक उसके शरीर का निरीक्षण करता रहा और नाड़ी, आँखें आदि देखता रहा।
यकायक वह बड़े जोर से हँसा। वह हँसता ही रहा और हँसते-हँसते पीठ के बल गिर पड़ा। उसे यह भी ध्यान न रहा कि बादशाह के सामने इस प्रकार हँसना बड़ी उद्दंडता है। उठने के बाद भी बहुत देर तक हँसता रहा। फिर बोला सरकार, इस कुबड़े की कहानी तो ऐसी है कि स्वर्णाक्षरों में लिखवा कर रखी जाए। लोग उसकी बात सुन कर आश्चर्यचकित हुए और कहने लगे कि या तो इस नाई का मस्तिष्क फिर गया है या बुढ़ापे के कारण इसकी मति मारी गई है। बादशाह ने भी विनोदपूर्वक कहा, हे अल्पभाषी, बुद्धिसागर महोदय, आपको इतनी हँसी किस कारण आ रही है?
नाई ने कहा, पृथ्वीपाल, मैं आपकी न्यायप्रियता और क्षमाशीलता की सौंगध खा कर कहता हूँ कि यह कुबड़ा मरा ही नहीं है। मैं इसे ठीक कर सकता हूँ। आप अनुमति दें तो मैं इसका इलाज करूँ। अगर मैं सफल न होऊँ तो फिर आप मुझे दुर्बुद्धि या विक्षिप्त जो भी चाहें ठहराएँ और जो दंड चाहें वह दें। बादशाह से अनुमति पा कर नाई ने अपना संदूकचा खोला और उसमें से एक तेल निकाल कर कूबड़े के हाथ और गले पर कुछ देर तक मलता रहा। फिर उसने एक औजार से कुबड़े का मुँह खोला और एक चिमटी उसके मुँह के अंदर डाल कर उसके गले में अटका मछली का काँटा पकड़ा और जोर लगा कर उसे बाहर निकाल लिया। उसने काँटा सभी उपस्थित व्यक्तियों को दिखाया। कुछ ही देर में कुबड़े के हाथ-पैरों में हरकत हुई और उसने अपनी आँखें खोल दीं। इसके अतिरिक्त भी उसके शरीर में जीवन के कई चिह्न दिखाई दिए।

यह नौजवान अबुल हसन है। यह बका का पुत्र है। इसका दादा ईरान का अंतिम बादशाह था। इसके परिवार की कई कन्याएँ खलीफा के वंश में ब्याही गई हैं। वह सुंदरी इस बात से बड़ी प्रसन्न हुई कि उच्चवंशीय है। उसने व्यापारी से कहा, मुझे यह नौजवान बड़ा सुसंस्कृत लगता है और इसके साथ बात कर के मुझे बड़ी प्रसन्नता होती है। आप की सहायता से मुझे इससे भेंट होने की आशा है। मैं एक विशेष दासी को आपके पास भेजूँगी। उस समय आप इसे अपने साथ ले कर मेरे यहाँ आएँ। मैं इसे अपने बाग और महल की सैर कराऊँगी और इससे उसका जी खुश होगा। आप मुझ पर कृपा कर के इसे अपने साथ जरूर लाएँ।
व्यापारी समझ गया कि सुंदरी भी शहजादे पर मुग्ध है। उसने शहजादे को लाने का वादा किया। इसके बाद वह अनिंद्य सुंदरी अपने रूप की छटा बिखेरती हुई अपने घर को चल दी। शहजादा बड़ी देर तक टकटकी लगाए उस मार्ग को देखता रहा जहाँ से हो कर वह गई थी। काफी देर इसी तरह बीती तो व्यापारी ने कहा, भाई, यह तुम्हें क्या हो गया है? एक ही जगह पागल की तरह देखे जा रहे हो। लोग तुम्हें इस दशा में देखेंगे तो कितना हँसेंगे। तुम अपने को सँभालो और दूसरी बातों में ध्यान लगाओ।
शहजादे ने कहा, मित्र, यदि तुम मेरे हृदय की दशा जानते तो शायद ऐसा न कहते। जब से मैंने उस मनमोहिनी को देखा है, मैं उसी का हो रहा हूँ। उसका ध्यान बिल्कुल नहीं भुला पा रहा हूँ। भगवान के लिए यह तो बताओ कि उसका नाम क्या है और वह कहाँ रहती है। व्यापारी ने कहा, मेरे प्यारे मित्र, इस सुंदरी का नाम शमसुन्निहार है। यह खलीफा की सबसे चहेती सेविका है। अबुल हसन ने कहा, यह सुंदरी यथा नाम तथा गुण है। शमसुन्निहार का अर्थ है दोपहर का सूर्य। इसका सौंदर्य वास्तव में दोपहर की सूर्य की भाँति प्रखर है जिस पर निगाह नहीं ठहरती। इसीलिए एक बार इसे देखने पर मैं और कुछ देख नही पा रहा हूँ। व्यापारी ने समझाना चाहा कि उस सुंदरी के प्रेम में फँसना ठीक नहीं है। उसने कहा, यह खलीफा की सबसे प्यारी सेविका है और वे इसे इतना मानते है कि मुझे कह रखा है कि इसे जिस चीज की जरूरत हो इसे तुरंत दी जाए, यह मेरा निश्चित आदेश है। इस प्रकार व्यापारी ने और भी बातें कहीं कि खलीफा का प्रेम-प्रतिद्वंद्वी बनने में जान का खतरा है। लेकिन अबुल हसन पर उसके समझाने-बुझाने का कोई प्रभाव नहीं पड़ा और वह शमसुन्निहार के लिए तड़पता रहा।

यह सब चल रहा था कि एक दिन शमसुन्निहार की भेजी हुई विशेष दासी आई। उसने चुपके से व्यापारी से कहा कि स्वामिनी ने आपको और शहजादे को बुलाया है। वे दोनों तुरंत उसके साथ हो लिए। शमसुन्निहार खलीफा के विशाल राजप्रासाद के एक कोने में बने हुए भव्य आवास में रहती थी। दासी दोनों आदमियों को अपनी स्वामिनी के आवास में एक गुप्त द्वार से ले गई। अंदर ले जा कर उसने दोनों को एक स्वच्छ और सुंदर स्थान पर बिठाया। तुरंत ही सुसंस्कृत सेवकों ने सोने की तश्तरियों में भाँति-भाँति के खाद्य पदार्थ ला कर रख दिए। जब वे लोग जी भर खा चुके तो एक दासी उनके लिए सुगंधित मदिरा मूल्यवान प्यालों में लाई। मद्यपान के बाद उनके हाथ धुलवाए गए और भाँति-भाँति के इत्र उनके सामने लाए गए जिन्हें उन्होंने अपने कपड़ों पर मला।
इसके बाद वही विश्वस्त दासी इन लोगों को एक अति सुंदर बारहदरी में ले गई। उसकी छत गुंबद की तरह थी और उसमें रत्न जड़े थे। सामने की ओर संगमरमर के दो विशाल खेमे थे जिनमें नीचे की ओर भाँति-भाँति के पशु-पक्षियों के सुंदर रंगों में मनोहारी चित्र बने थे। बारहदरी के फर्श पर भी तरह-तरह के फूल-बूटों के चित्र बने थे। एक ओर नाजुक-सी दो अल्मारियाँ रखी थीं। जिनमें चीनी, बिल्लौर, संगमूसा आदि के अत्यंत सुंदर पात्र रखे हुए थे। उन पात्रों पर सोने के पानी से बड़े सुंदर चित्र बने थे और सुलेख लिखे हुए थे। दूसरी ओर के खंभों में दरवाजे लगे थे। जिसके बाद बरामदा था। बरामदे के बाद बाग था। बाग की जमीन पर भी रंगीन पत्थर जड़े हुए थे। बारहदरी के दोनों ओर दो सुंदर और बड़े हौज थे जिनमें सैकड़ों फव्वारे छूट रहे थे। बाग में बीसियों तरह के पक्षी वृक्षों पर बैठे चहचहा रहे थे।
यह लोग उस अनुपम शोभा का आनंद ले ही रहे थे कि बहुत-सी दासियाँ जो सुंदर वस्त्राभूषण पहने थीं आईं और बारहदरी में बिछी हुई सुनहरे काम की चौकियों पर बैठ गईं और तरह-तरह के वाद्ययंत्र अपने सामने रख कर उन्हें ठीक करने लगीं ताकि आज्ञा मिलते ही गाना-बजाना शुरू कर दें। यह दोनों भी ऐसे स्थान पर बैठ गए जहाँ से सब कुछ देख सकें। उन्होंने देखा कि एक ओर ऊँची रत्नजटित चौकी रखी है। व्यापारी ने शहजादे से चुपके से कहा, अनुमानतः यह बड़ी चौकी स्वयं शमसुन्निहार के बैठने के लिए है। यह महल खलीफा के राजप्रासाद ही का एक भाग है किंतु इसे विशेष रूप से शमसुन्निहार के लिए बनवाया गया है। कारण यह है कि खलीफा के महल में जितनी दासियाँ और सेविकाएँ हैं उनमें वह सब से अधिक शमसुन्निहार ही को चाहता है। शमसुन्निहार को अनुमति है कि जहाँ चाहे

फिर दोनों ने अपनी-अपनी विरह व्यथा का इतने कारुणिक रूप से वर्णन किया कि जौहरी की आँखों में आँसू आ गए और शमसुन्निहार की तीनों दासियाँ रोने लगीं। जौहरी ने उन दोनों को तसल्ली दी और धैर्य से काम लेने के लिए समझाया- बुझाया। फिर दोनों को उस जगह लाया जहाँ जलपान की व्यवस्था थी। जलपान के उपरांत वे लोग वहाँ पर आ कर मसनदों पर बैठे जहाँ से उठ कर नाश्ता करने गए थे। वे एक-दूसरे से प्रीतिपूर्वक वार्तालाप करने लगे। शमसुन्निहार ने पूछा कि यहाँ कोई बाँसुरी तो नहीं होगी। जौहरी ने सारा प्रबंध पहले ही कर रखा था। उसने एक बाँसुरी ला कर दे दी। शमसुन्निहार ने बाँसुरी पर बड़ी देर तक प्रेम और विरह को व्यक्त करनेवाली एक धुन बजाई। इसके बाद शहजादे ने भी उसके जवाब में उसी बाँसुरी पर बड़ी कारुणिक ध्वनि में एक विरह-राग निकाला। इतने ही में मकान के बाहर बड़ा शोरगुल सुनाई दिया। दो क्षण बाद जौहरी का एक नौकर दौड़ा-दौड़ा आया और बोला कि द्वार पर बहुत-से आदमी जमा हैं और वे द्वार तोड़ कर अंदर आना चाहते हैं। उसने कहा कि जब मैंने उनसे पूछा कि तुम कौन हो और क्या चाहते हो तो उन्होंने मुझे पीटना शुरू कर दिया और मैं जान बचा कर द्वार बंद कर के अंदर भाग गया। यह सुन कर जौहरी स्वयं द्वार पर गया कि देखे कि क्या बात है। द्वार खोला तो देखा कि सौ आदमी हाथों में नंगी तलवारें लिए खड़े हैं। उसकी हिम्मत न उनसे बात करने की हुई न अंदर वापस आने की। वह एक पड़ोसी की, जिसे वह पहले से जानता था, दीवार पर चढ़ कर उसके मकान में कूद पड़ा। उसने पड़ोसी को बताया कि मुझ पर क्या बीत रही है। पड़ोसी ने उसे घर के एक कोने में छुपा लिया।
आधी रात को पड़ोसी की तलवार ले कर जौहरी बाहर निकला क्योंकि उस समय सारा शोर थम गया था और निस्तब्धता छा गई थी। बड़े मकान में देखा तो उसे सुनसान पाया। न वहाँ शहजादा या शमसुन्निहार या उनकी दासियाँ थीं न कोई साज सामान या बरतन-भाँडे। मकान में घूमते-घूमते एक कोने में उसे एक आदमी का शब्द सुनाई दिया। उसने पूछा, कौन हो? छुपे हुए आदमी ने उसकी आवाज पहचानी और बाहर निकल आया। वह जौहरी का एक सेवक था।
जौहरी ने उससे पूछा कि वे हथियारबंद लोग क्या गश्त के सिपाही थे। उसने कहा वे लोग गश्त के सिपाही नहीं थे बल्कि डाकू थे और सब कुछ लूट कर ले गए, कई दिनों से यह लोग लूट-मार कर रहे हैं और कई मुहल्लों में जा कर कई घरों में डाका डाल चुके हैं।

में उनका सरदार आया जिसके बाद सबने भोजन किया। भोजन के बाद उन लोगों ने जौहरी से पूछा कि क्या तुमने कभी पहले भी हमें देखा है। उसने कहा कि न तो मैंने पहले तुम लोगों ही को देखा न नदी पार के इस हिस्से की गलियाँ ही देखीं। फिर उन लोगों ने कहा कि कल रात जो कुछ तुम्हारे साथ हुआ वह साफ-साफ बताओ। जौहरी ने आश्चर्य से कहा कि तुम लोगों को यह कैसे मालूम कि कल रात मेरे साथ कोई विशेष घटना घटी थी। उन लोगों ने कहा कि हमें यह उस पुरुष और स्त्री से मालूम हुआ जो कल रात तुम्हारे साथ थे लेकिन हम चाहते हैं कि तुम्हारे मुँह से पूरा विवरण सुनें। जौहरी सोचने लगा कि कहीं यही तो वे डाकू नहीं है जो रात को आए थे।
उसने कहा, भाइयो, जो कुछ होना था वह हो गया किंतु मुझे असली चिंता उसी आदमी और उसी सुंदरी की है। तुम लोगों को उनका कुछ हाल मालूम हो तो बताओ। उन लोगों ने कहा कि तुम उन दोनों की चिंता छोड़ दो, वे दोनों कुशलतापूर्वक हैं। उन्होंने जौहरी को दो कक्ष दिखाए और कहा, वे दोनों अलग-अलग इन्हीं कमरो में हैं। उन्हीं से हमें तुम्हारा पता चला है और उन्होंने बताया है कि तुम उनके सहायक और मित्र हो। हम लोगों का काम किसी पर दया करना नहीं है, फिर भी हमने अपने स्वभाव के विपरीत उन दोनों को बड़ी सुख-सुविधा के साथ रखा और उन्हें किसी प्रकार का कष्ट नहीं होने दिया। और हम तुम्हें भी कोई कष्ट नहीं होने देंगे।
अब जौहरी को विश्वास हो गया कि वे डाकू हैं। उसने उनकी दया के लिए आभार प्रकट किया और शहजादे तथा शमसुन्निहार की प्रेम-कथा आरंभ से पिछली रात तक विस्तारपूर्वक बताई। उन लोगों ने आश्चर्य से कहा, क्या यह सच है कि यह आदमी फारस के शहजादे बका का पुत्र अबुल हसन है और यह स्त्री खलीफा की प्रेयसी शमसुन्निहार है? जौहरी ने कहा कि मैंने जो कुछ कहा है बिल्कुल सच कहा है। जब डाकुओं को जौहरी के कहने का विश्वास हुआ तो उन्होंने एक-एक कर के अबुल हसन और शमसुन्निहार के पास जा कर अपने अपराध के लिए क्षमा-प्रार्थना की। उन्होंने कहा कि हम लोग आपको जानते नहीं थे इसीलिए हम से यह अपराध हुआ है। उन्होंने कहा कि हमने जो कुछ आपके घर से लूटा था वह सब का सब तो वापस नहीं कर सकते क्योंकि उसमें से बहुत कुछ हमारे अन्य साथी ले गए हैं किंतु सोने और चाँदी के बरतन जरूर यहाँ है, उन्हें हम वापस कर देंगे। उन डाकुओं ने बरतन दे कर उन तीनों से कहा कि हम तुम्हें सुरक्षापूर्वक नदी के उस पार पहुँचा देंगे। किंतु तुम लोगों को यह वादा करना पड़ेगा कि हमारा भेद नहीं

जब शहजादे की लाश बगदाद पहुँची तो जौहरी ने उस दासी को इसकी सूचना भिजवाई। वह आ कर शहजादे की लाश को शहजादे की माता की अनुमति ले कर महलवाले मकबरे में ले गई। शहजादे की शवयात्रा में हजारों आदमी शामिल थे। अंततः शहजादे को भी अपने प्रेयसी के बगल में दफन कर दिया गया। तब से दूर-दूर के देशों से लोग आ कर उनकी कब्रों पर मनौती मानते हैं।
शहरजाद ने यह कथा समाप्त की तो उसकी बहन दुनियाजाद ने कहा कि यह कहानी बहुत ही सुंदर थी, क्या तुम्हें और भी कोई कहानी आती है। शहरजाद बोली, यदि मुझे आज प्राणदंड न मिला तो मैं कल शहजादा कमरुज्जमाँ की कहानी सुनाऊँगी। बादशाह शहरयार ने नई कहानी सुनने के लालच में उस दिन भी शहरजाद का वध नहीं करवाया और अगली सुबह के पूर्व शहरजाद ने नई कहानी आरंभ कर दी।

कमरुज्जमाँ और बदौरा की कहानी

फारस देश में बीस दिन की राह पर एक देश खलदान है। उस देश में कई टापू भी शामिल हैं। बहुत दिन पहले वहाँ का बादशाह शाहजमाँ था। उसके चार पत्नियाँ थीं और सात विशेष दासियाँ। वह बड़ा प्रतापी राजा था, उसके देश में समृद्धि और शांति का राज्य था। कोई शत्रु उसके देश पर निगाह नहीं लगाए था किंतु उसे एक बड़ा दुख था कि उसके कोई संतान नहीं थी। एक दिन उसने अपने मंत्री से कहा कि मेरी अवस्था व्यर्थ ही बीती जाती है और मेरे बाद इतने बड़े राज्य का क्या होगा, क्योंकि मेरे कोई संतान नहीं है, मालूम होता है भगवान भी मुझे भूल गया है।
मंत्री ने कहा, पृथ्वीपाल, आप इस प्रकार की निराशा की बातें न करें। भगवान के घर देर है अंधेर नहीं। वह किसी को भूलता नहीं है। आप दीनतापूर्वक रात-दिन भगवान से संतान की भीख माँगें। इसके अतिरिक्त फकीरों, दरवेशों के आशीर्वाद लें तो मनोकामना पूर्ण होगी।
मंत्री के परामर्श के अनुसार बादशाह ने पूरे जोर से धार्मिक कृत्य शुरू किए और फकीरों को खूब दान दिया और उनसे संतान का आशीर्वाद चाहा। कुछ काल के उपरांत उसकी रानी को गर्भ ठहर गया। नौ महीनों के बाद उससे एक पुत्र का जन्म हुआ। बादशाह की खुशी का ठिकाना नहीं रहा। उसने लाखों रुपया फकीरों के दान और अपने अधीनस्थ कार्यकर्ताओं के इनाम पर खर्च किए, यहाँ तक कि उसके देश में कोई भी व्यक्ति भूखा-नंगा नहीं रहा और महीनों तक राजमहल में उत्सव होता रहा।

बादशाह गौर ने करोड़ों अशर्फियों की लागत से अपनी प्यारी बेटी के लिए एक सतखंडा महल बनवाया है। उसका पहला खंड बिल्लौर पत्थर का है, दूसरा खंड ताँबे का, तीसरा फौलाद का, चौथा पीतल का, पाँचवाँ कसौटी के पत्थर का है, छठा खंड चाँदी का है और सातवाँ खंड सोने का। इस महल के चारों ओर मनोहर वाटिका है। इसमें हर प्रकार के फलों और हर प्रकार के फूलों के वृक्ष हैं। उस वाटिका में हर समय पके फलों और सुगंधित फूलों की खुशबू गमगमाती रहती है। जगह-जगह फव्वारे चलते हैं और स्वच्छ जल की नहरें और तालाब जगह-जगह बने हैं। कुछ पेड़ ऐसे घने हैं जिनके नीचे धूप नहीं आती और वहाँ आराम करने में सारी थकन मिट जाती है।
उस बादशाह का ऐश्वर्य और शहजादी के रूप की प्रशंसा सुन कर दूर-दूर के देशों के राजकुमारों ने उससे विवाह का प्रस्ताव किया है। बादशाह ने अपनी बेटी को अनुमति दे रखी है कि जिससे चाहे विवाह करे किंतु शहजादी को विवाह से चिढ़ है। उसके माँ-बाप ने बहुत समझाया किंतु वह राजी नहीं होती और कहती है कि अगर आप लोगों ने विवाह के लिए जोर दिया तो आत्महत्या कर लूँगी। बादशाह ने उसे एक मकान में बंदी बना रखा है। उसकी सेवा के लिए दस बूढ़ी स्त्रियाँ नियत की गई हैं जिनकी प्रमुख वह स्त्री है जिसका दूध राजकुमारी ने बचपन में पिया है। अब न शहजादी स्वयं कहीं जा सकती है न उसके पास कोई जा सकता है। बादशाह ने अपनी पुत्री को पागल समझ कर यह विज्ञापित कर दिया है कि जो हकीम या ज्योतिषी या तांत्रिक उसे अच्छा कर देगा उसी के साथ राजकुमारी का विवाह हो जाएगा। मुझे इस बात का बड़ा दुख है कि वह परम सुंदरी राजकुमारी इस प्रकार से बंदीगृह के दुख भोग रही है।
मैमून ने हँस कर नहस से कहा, मालूम होता है तुम्हारी अकल ठिकाने नहीं है। एक बेकार-सी लड़की के रूप की इतनी प्रशंसा कर रहे हो। अगर तुम उस शहजादे को देखो जिसे मैंने देखा है और जिसने मेरा मन मोह लिया है तो तुम्हें मालूम होगा कि सौंदर्य किसे कहते हैं। बल्कि मुझे विश्वास है कि शहजादे को देख कर तुम चीन की राजकुमारी का सौंदर्य भूल ही जाओगे।
नहस ने कहा, शहजादी, वह रूपवान शहजादा कहाँ है? मैमून ने कहा, वह तो अति निकट है। वह भी बंदी हो कर एक मकान में पड़ा है क्योंकि उसने भी विवाह करने से इनकार कर दिया है। वह उसी मकान में बंद है जिसके कुएँ में मैं रहती हूँ। नहस ने कहा, मैं उस शहजादे को देखने के बाद ही कह सकता हूँ कि वह कितना सुंदर है। फिर भी मैं कहता हूँ कि चीन की शहजादी अधिक सुंदर है। परी बोली

रही हो? तुम्हारे शयनगृह में चिड़िया तक का प्रवेश तो संभव नहीं है, सुंदर युवक कहाँ से आ जाएगा। तुमने अवश्य कोई सपना देखा है। भगवान के लिए ऐसी बातें न करो। तुम्हारी बातों का तुम्हारे माता-पिता को पता चलेगा तो मेरी गर्दन उड़ा दी जाएगी।
शहजादी बदौरा को दासी की बात पर बड़ा गुस्सा आया। उसने बुढ़िया के केश पकड़ लिए और उसे बेतहाशा मारना शुरू किया। बुढिया तड़प कर उसकी पकड़ से निकल गई और भागी-भागी राजमहल में पहुँची। वहाँ जा कर उसने बादशाह और बेगम को बताया कि बदौरा कैसी पागलपन की बातें करती है। वे दोनों परेशान हो कर शहजादी के पास पहुँचे और बोले - बेटी, तुमने रात को क्या स्वप्न देखा जिससे तुम इतनी परेशान हो गई हो कि बेकार बकवास करने लगी?
शहजादी बदौरा ने लज्जावश सिर झुका कर कहा, मुझे बड़ा खेद है कि आप लोग मेरा विवाह करना चाहते थे और मैं नादानी से जिद कर के आपकी आज्ञा का उल्लंघन करती रही किंतु जिस युवक को आपने मेरे लिए चुना है वह रात को मेरे साथ आ कर सोया था। मैं सच कहती हूँ कि अगर आप पहले से उसे दिखा देते तो मैं विवाह से इनकार ही क्यों करती। अब कृपया उसे तलाश कराइए, न जाने वह कहाँ चला गया है। मुझे उसके प्रेम ने ऐसा जकड़ लिया है कि मैं उसके बगैर एक क्षण नहीं रह सकती। वह न मिला तो मैं आत्महत्या कर लूँगी। अगर आप को विश्वास न हो तो यह देखिए, वह अपनी अँगूठी मुझे दे गया है।
उसके माता-पिता को यह देख कर वास्तव में आश्चर्य हुआ कि अँगूठी किसी और की है, शहजादी की नहीं। वे बहुत सोचते रहे किंतु उनकी समझ में कुछ नहीं आया कि इतनी कड़ी कैद के बाद भी कोई आदमी कैसे यहाँ तक आया और अँगूठी बदल गया। बहुत सिर मारने पर भी उनकी समझ में बेटी की बात नहीं आई और उन्होंने समझ लिया कि वह बिल्कुल पागल हो गई है, उन्होंने सोने की जंजीरे मँगा कर उनसे बेटी के हाथ-पाँव जकड़ दिए और अति दुखित हो कर अपने महल को वापस आए। उन्होंने आदेश दिया कि एक विश्वस्त बूढ़ी दासी के अलावा इसके पास कोई नहीं जा सकेगा। उन्होंने बंदीगृह के चारों ओर का पहरा भी बड़ा सख्त कर दिया। इसके अतिरिक्त बादशाह ने दरबार में सारे अमीरों और सामंतों के समक्ष घोषणा की कि मेरी बेटी पर उन्माद का प्रकोप हुआ है। कोई भी व्यक्ति जो उसे अच्छा कर देगा उसके साथ कुमारी का विवाह कर दिया जायगा और युवराज बना दिया जायगा। किंतु जो व्यक्ति इस प्रयत्न में असफल होगा उसे प्राणदंड दिया जाएगा।

थी। लेकिन वह बुद्धिमती थी, उसने साहस नहीं खोया और तय कर लिया कि आगे क्या करना चाहिए।
शहजादे के जाने का हाल दो-एक दासियों के अलावा किसी को नहीं मालूम था। बदौरा ने उन्हें कड़ी चेतावनी दी कि वे किसी भी दशा में शहजादे के जाने का समाचार किसी को न दें। वह सोचती थी कि लश्करवाले इस समाचार को सुन कर बगावत न कर दें और उसे कोई हानि न पहुँचाएँ। उसने खुद शहजादे के कपड़े पहने और उसी की तरह साज-सज्जा की। फिर उसने लश्कर के लोगों के लिए आदेश पहुँचवाया कि कल सुबह अँधेरा रहते ही यहाँ से कूच कर दिया जाए। उसने अपनी पालकी में अपनी जगह एक दासी को बिठा दिया और स्वयं एक तीव्रगामी घोड़े पर सवार हो गई। शाही लश्कर के कूच करते ही मौका पा कर उसने एक अन्य दिशा में अपना घोड़ा दौड़ा दिया।
वह कई मास तक कभी जल मार्ग और कभी थल मार्ग से यात्रा करती हुई, जिसके दौरान हर जगह अपने पति का पता लगाती जाती थी, अवौनी में पहुँची। उसने अपना नाम खलदान द्वीप का शहजादा कमरुज्जमाँ बताया था। अवौनी के बादशाह अश्शम्स को उसके आगमन का समाचार मिला तो वह उससे भेंट करने के लिए स्वयं ही सागर तट पर गया जहाँ बदौरा के जहाज ने लंगर डाला था। अवौनी और खलदान देशों के बादशाहों में मैत्री के संबंध थे। बादशाह ने बदौरा को कमरुज्जमाँ समझ कर उसका बड़ा सम्मान किया और आदरपूर्वक उसे अपने महल में ले आया और तीन दिन तक उसके सम्मान में कई भोज और समारोह किए। इसके बाद कमरुज्जमाँ रूपी बदौरा ने विदा की अनुमति चाही।
अवौनी का बादशाह उसके रूप और चातुर्य पर मुग्ध था और चाहता था कि उसे अपने पास रखूँ। लेकिन इस बात को सीधी तरह न कह कर उसने कहा, मेरे युवा मित्र, तुम जानते हो कि मैं अब वृद्ध और अशक्त हो गया हूँ और राज्य संचालन में मुझे कठिनाई होती है। मेरा कोई पुत्र नहीं है जो मेरी सहायता करे। मेरे केवल एक बेटी है जो अत्यंत सुंदर और बुद्धिमान है। मैं चाहता हूँ कि उसका विवाह उसी के अनुरूप किसी सुंदर और चतुर व्यक्ति के साथ कर के निश्चिंत हो जाऊँ। तुम हर तरह से उसके योग्य हो, इसलिए मैं चाहता हूँ कि तुम उससे विवाह कर लो और मेरे राज्य के उत्तराधिकारी बन जाओ। तुम्हें इस बारे में क्या कहना है? बदौरा बड़ी उलझन में पड़ी। सोचने लगी यदि मैं वास्तव में पुरुष होती तो इससे अच्छा अवसर मेरे जीवन में आना नहीं था। लेकिन मैंने तो मजबूरी में यह वेश धारण किया है, मैं राजकुमारी के साथ विवाह कैसे कर सकती हूँ? सुहागरात

असंतुष्ट हो? मेरे पिताजी कहते थे कि अगर बेटी आज रात को भी कुँवारी रही तो दामाद को मरवा डालूँगा।
बदौरा यह सुन कर अत्यंत व्याकुल हुई किंतु चुप रही। वह सोच रही थी कि अपना असली भेद बताती हूँ तो बादशाह धोखेबाजी पर जरूर मुझे मरवा देगा और अगर चुप रहती हूँ तो भी उसकी कोपाग्नि में मुझे जल मरना ही होगा। उसे चुप देख कर शहजादी उससे लिपट गई और कहने लगी, प्राणप्रिय, मेरी समझ में कुछ नहीं आ रहा। तुम्हारे चेहरे का रंग क्यों उड़ गया। तुम अपनी चिंता मुझे क्यों नहीं बताते? मैं तुम्हारी पत्नी हूँ, हर प्रकार तुम्हें सुखी ही देखना चाहती हूँ।
यह सुन कर बदौरा की अश्रुधारा बह निकली और उसे अशक्तता के कारण गशी आने लगी। किंतु उसने स्वयं को स्थिर किया और बोली, मेरी प्यारी, मैंने तुम्हारा बड़ा अपकार किया है। मैं अपना सारा वृत्तांत तुम से ब्योरेवार कहती हूँ, इसके बाद तुम्हें अधिकार होगा कि चाहे मेरी मजबूरी देख कर मुझे क्षमा कर दो या अपराधी समझ कर मरवा डालो।
उसने शहजादी को अपनी छाती खोल कर दिखाई और बोली, बहन, मैं भी तुम्हारी तरह औरत हूँ। मैं चीन के सम्राट की बेटी हूँ। अब अपना पूरा हाल कहती हूँ। यह कह कर बदौरा ने आरंभ से ले कर उस दिन तक की सारी आपबीती विस्तारपूर्वक शहजादी को सुनाई। फिर वह हाथ जोड़ कर बोली, मेरी तुम से प्रार्थना है कि जब तक मेरे पति का पता न चले तुम मेरा यह भेद छुपाए रखो। मुझे पूरी आशा है कि उससे भेंट अवश्य होगी। जब वह आ जाए तो तुम भी उससे विवाह कर के मेरे साथ सपत्नी बन कर रहना। हम दोनों मिल कर उसकी सेवा करेंगे और बहनों की तरह आपस में प्रीतिपूर्वक रहेंगे।
अवौनी की शहजादी बदौरा के साहस से बड़ी प्रभावित हुई और बोली, तुमने मुझे सब कुछ बता कर बहुत अच्छा किया। अब तुम पुरुष के रूप में निश्चिंत हो कर राजकाज करो, तुम्हें कोई कुछ नहीं कहेगा। सब मुझ पर छोड़ दो।
दूसरे दिन शहजादी ने अपनी दासियों को ऐसे इशारे दिए जिनसे स्पष्ट हो गया कि उसके साथ उसके पति ने संभोग कर लिया है। पहले भी रात में उसने ऐसी ध्वनियाँ कीं जिससे बाहर बैठी हुई दासियाँ समझें कि रात-कार्य हो रहा है। अतएव दूसरे दिन खूब धूमधाम हुई। बदौरा दिन भर राजकाज करती और रात को दोनों सहेलियाँ एक-दूसरे का आलिंगन कर के सो जातीं।

उधर कमरुज्जमाँ प्रस्तर पूजकों के देश में माली के साथ रहता हुआ मालीगीरी में दिन बिता रहा था। एक दिन माली ने कहा, आज यहाँ प्रस्तर पूजकों का महोत्सव है। आज के दिन यहाँ के लोग न खुद काम करते हैं न किसी को करने देते हैं। आज वे मुसलमानों या किन्हीं अन्य धर्मावलंबियों को दुख भी नहीं देते। तुम आराम से नगर में घूमो और वहाँ के खेल-तमाशे देखो। मैं भी अपने मित्रों के पास जा रहा हूँ। मैं उनसे पूछूँगा कि अवौनीवाला जहाज कब छूटेगा ताकि मैं तुम्हारे लिए यथेष्ट खाद्य सामग्री उस पर रख दूँ।
यह कह कर माली समुद्र की ओर चल दिया। कमरुज्जमाँ का जी न चाहा कि नगर में जा कर वहाँ के खेल-तमाशों में मन बहलाए। वह खाली समय पा कर अपनी पत्नी की याद में रोने लगा। कुछ देर में उसने स्वयं को सँभाला और निरुद्देश्य इधर-उधर देखने लगा। इतने में उसने देखा कि समीप के वृक्ष पर दो पक्षी आ कर लड़ने लगे। काफी देर की लड़ाई के बाद उनमें से एक पक्षी मर कर नीचे गिर पड़ा और दूसरा उड़ गया। कुछ ही देर में उसी प्रकार के किंतु बड़े डील-डौलवाले दो पक्षी आए और मृत पक्षी के सिर और दुम की ओर बैठ कर सिर हिलाने लगे जैसे उसकी मृत्यु पर शोक कर रहे हों। फिर उन्होंने चोंचों और पंजों से एक गढ़ा खोद कर मृत पक्षी को उसमें गाड़ा और उड़ गए। कुछ देर में वे उस पक्षी को, जिसने पहले पक्षी को मारा था, अपने पंजों में दबा लाए और उसे भूमि पर रख कर उन्होंने उसके पंख नोच डाले और शरीर के टुकड़े-टुकड़े कर दिए। इसके बाद वे उड़ गए।
कमरुज्जमाँ ने कौतूहलवश मृत पक्षी के पास जा कर देखा तो उसे उसकी आँतों में कुछ चमकदार-सी चीज दिखाई दी। उसने वह चीज निकाल कर पानी से धो कर देखी तो वह वही यंत्रवाली मणि निकली जो उसके हाथ से निकल गई थी। उसे विश्वास हो गया कि अब उसका पत्नी से मिलन अवश्य हो जाएगा। दूसरे दिन माली ने उससे कहा कि फलाँ पेड़ सूख गया हे, उसे जड़ से खोद डालो। शहजादा कुल्हाड़ी ले कर उसे खोदने लगा। इसी काम में उसकी कुल्हाड़ी एक शिला से टकराई। उसने शिला हटा कर देखा तो एक सुंदर आवास पाया। उसमें ताँबे के पचास पात्र रखे थे जो स्वर्ण के चूरे से भरे थे। कमरुज्जमाँ ने माली से जा कर कहा तो वह बोला, वह धन तुम्हारे भाग्य का है, तुम्हीं ले लो। तीन दिन बाद तुम्हारा अवौनीवाला जहाज छूटेगा। तुम इस स्वर्ण चूर्ण को भी ले जाओ किंतु पात्रों को थोड़ा- थोड़ा खाली कर के जैतून का तेल भर देना जिससे यह सुरक्षित रहे। जैतून का तेल मेरे पास बहुत है। अब कमरुज्जमाँ ने उससे कहा, वैसे तो यह धन तुम्हारा

मैंने मजबूरी में जहाज का लंगर उठा दिया क्योंकि बाद में अनुकूल वायु न रहती।
अब बदौरा ने अपने युवराज और मंत्री होने के अधिकार का प्रयोग किया। उसने सारे व्यापारियों और कप्तान का माल जहाज से उतरवा कर जब्त कर लिया और कप्तान से बोली, तुम्हें नहीं मालूम कि उस आदमी को न ला कर तुमने कितना बड़ा अपराध किया है। मुझे खजांची से मालूम हुआ कि वह आदमी हमारा लाखों का देनदार है और भगा हुआ है। तुम तुरंत ही जहाज को वापस ले जाओ और उस व्यक्ति को ले कर मेरे सुपुर्द करो। जब तक तुम यह न करोगे तुम्हारा और अन्य व्यापारियों का माल नहीं छोड़ा जाएगा। यह भी समझ लो कि अगर तुम उसे यहाँ न लाए तो तुम्हें कठोर दंड दिया जाएगा। अब देर न करो, तुरंत प्रस्तर पूजकों के देश की ओर रवाना हो जाओ क्योंकि उधर जाने के लिए वायु अनुकूल है। कप्तान बेचारा जहाज ले कर तुरंत ही प्रस्तर पूजकों के देश की ओर चल दिया। कुछ ही दिनों में वह वहाँ पहुँच गया। उसने जहाज का लंगर डाला और एक नाव पर कुछ खलासियों को ले कर बैठा तो तट पर उतरा। बाग बस्ती के किनारे था। वहाँ जा कर उसने आवाज दी कि दरवाजा खोलो। कमरुज्जमाँ कई रातों से बदौरा की याद और माली की मृत्यु से दुखी हो कर ठीक से सोया नहीं था। वह इस समय सो रहा था। लगातार आवाजों और दरवाजा भड़भड़ाए जाने से वह उठा और द्वार खोल कर उसने पूछा कि क्या बात है, तुम लोग क्यों शोर कर रहे हो। कप्तान और उसके साथ के खलासियों ने इसकी बात का कोई उत्तर न दिया। वे एक साथ उस पर टूट पड़े और उसके लाख चीख-पुकार करने पर भी वे लोग उसे अपने जहाज पर ले गए और यह काम पूरा होते ही उन्होंने जहाज का लंगर उठा दिया।
जब जहाज चल पड़ा तो कमरुज्जमाँ से पूछा कि अब तो मुझे बताओ कि मेरा कसूर क्या है, तुमने मुझे पकड़ कर क्यों जहाज पर चढ़ाया है और अब मुझे कहाँ लिए जा रहे हो। कप्तान ने कहा कि तुम पर अवौनी के बादशाह का लाखों का कर्ज है और हमें आदेश है कि तुम्हें पकड़ कर शीघ्रातिशीघ्र अवौनी के बादशाह के सामने पेश करें। कमरुज्जमाँ ने कहा, भाई, जरूर उसे कोई भ्रम हुआ है। मैंने कभी उस बादशाह की सूरत भी नहीं देखी है। यह कैसे संभव है कि मैंने उसका लाखों का ॠण लिया हो? कप्तान ने कहा, हम तो उस बादशाह के आदेश का पालन मात्र कर रहे हैं। हम तुम्हारे साथ होनेवाले न्याय-अन्याय का फैसला नहीं कर सकते। किंतु मैं तुम्हें विश्वास दिलाता हूँ कि वह बादशाह बहुत ही न्यायप्रिय है और यदि उसने वास्तव में भ्रमवश ही तुम्हें गिरफ्तार करने

कमरुज्जमाँ ने इस वेश में अपनी पत्नी को पहचान लिया और दौड़ कर उसे अपनी बाँहों में भर लिया। वह कहने लगा, यहाँ के युवराज की सेवा मुझे कितनी फली कि इतने समय बाद मैं अपनी प्राणप्रिया से मिल सका हूँ। बदौरा हँस कर कहने लगी, युवराज को भूल जाओ। वह तुम्हें अब दिखाई न देगा क्योंकि मैं ही युवराज बनी हुई थी। यह कहने के बाद उसने कमरुज्जमाँ से बिछुड़ने के दिन से लेर उस दिन तक का पूरा हाल कहा। कमरुज्जमाँ ने भी विस्तार से बताया कि उस दिन से ले कर यहाँ आने तक मुझ पर क्या बीती। इसके बाद वे दोनों पलंग पर जा कर आराम से एक-दूसरे की बाँहों में निद्रामग्न हो गए। सुबह बदौरा ने नहा-धो कर जनानी पोशाक पहनी और अवौनी के बादशाह को अपने महल में बुला भेजा।
बादशाह को अपने दामाद के बजाय एक सुंदरी को देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ। उसने कहा, बेटी, तुम कौन हो? और मेरा दामाद कहाँ गया है? बदौरा मुस्करा कर बोली, पृथ्वीनाथ, मैं कल तक आपका दामाद और इस राज्य का युवराज थी। आज मैं चीन के बादशाह की बेटी और खलदान देश के राजकुमार की पत्नी हूँ। आप कृपया धैर्यपूर्वक मेरा वृत्तांत सुनें जो बड़ा ही विचित्र है। फिर उसने अपनी कहानी आद्योपांत कही और अंत में कहा, हम सब मुसलमान हैं। हमारे धर्म में कोई भी पुरुष दूसरा विवाह करता है तो उसकी पहली पत्नी के मन में ईर्ष्या जागती है। मैं शहजादे की पहली पत्नी हूँ। मैं स्वयं आप से प्रार्थना कर रही हूँ कि अपनी बेटी को मेरे पति से ब्याह दें। उसका मेरे साथ जो विवाह हुआ था वह झूठा था।
बादशाह को यह सुन कर आश्चर्य हुआ। उसने कमरुज्जमाँ को देखने की इच्छा की। बदौरा ने उसे ला कर उपस्थित किया। बादशाह उसे देख कर खुश हुआ और बोला, बेटे, अभी तक हम इसे अपना दामाद मानते थे। हमें नहीं मालूम था कि यह तुम्हारी पत्नी और चीन देश की राजकुमारी है। अब मैं तुम्हें दामाद बनाना चाहता हूँ। तुम्हारी पत्नी की भी यही इच्छा है। तुम्हें आपत्ति न हो तो मैं अपनी बेटी ह्यातुन्नफ्स का विवाह तुम्हारे साथ कर दूँ। तुम उससे शादी कर के इस राज्य का शासन सँभालो।
कमरुज्जमाँ ने कहा, चाहता तो मैं यह था कि अपने देश को जाऊँ किंतु आपकी और बदौरा की जो इच्छा होगी उसे मैं अवश्य पूरा करूँगा। अतएव उसका विवाह धूमधाम के साथ अबौनी की शहजादी के साथ हो गया और दोनों स्त्रियाँ आपस में मिलजुल कर प्रेमपूर्वक रहने लगीं। कमरुज्जमाँ बारी-बारी से दोनों के पास

देना। अमजद ने उससे पीछा छुड़ाने के उद्देश्य से हाँ कर दी। कुछ देर बार स्त्री दरवाजे पर लगा हुआ ताला तोड़ने लगी। अमजद ने कहा, ताला क्यों तोड़ रही हो। उसने कहा कि आखिर घर तो तुम्हारा ही है, एक ताला खराब हो जाएगा तो कौन बड़ा नुकसान हो जाएगा।
अमजद सोचने लगा कि कुछ गड़बड़ी हुई तो यह तो औरत है, इससे कोई कुछ नहीं कहेगा, मुझी को सब लोग पकड़ेंगे। उसने सोचा कि चुपके से चल दे। किंतु वह स्त्री अंदर जा कर फिर बाहर आई और कहने लगी कि तुम अंदर क्यों नहीं चलते। अमजद ने कहा कि मैं अपने गुलाम की प्रतीक्षा कर रहा हूँ। उस औरत ने कहा, प्रतीक्षा तो अंदर बैठ कर भी हो सकती है, बाहर बैठ कर प्रतीक्षा करना क्या जरूरी है? विवश हो कर अमजद को अंदर जाना पड़ा। उसने देखा कि मकान बहुत ही साफ-सुथरा और लंबा-चौड़ा है। दोनों कुछ सीढ़ियाँ चढ़ कर बैठकवाली दालान में गए। वह दालान बहुत साफ-सुथरी और सुरम्य वस्तुओं से सजी हुई थी। एक ओर कई सुंदर पात्रों में नाना प्रकार के स्वादिष्ट व्यंजन रखे थे और दूसरी तरफ फलों और मेवों के पात्र थे। एक ओर शीशे की सुराहियों में सुवासित मदिरा भरी थी और मदिरा पान के लिए कई सुंदर प्याले थे। अमजद सोचने लगा कि यह किसी रईस का मकान है और किसी समय भी उसके नौकर-चाकर आ कर मेरी पिटाई करेंगे।
वह तो इस चिंता में था और स्त्री उससे कहने लगी, प्यारे, तुम तो कहते थे कि तुमने गुलाम को खाद्य वस्तुएँ खरीदने के लिए बाजार भेजा है, यहाँ तो इतना उत्तमोत्तम सामान रखा हुआ है। मालूम होता है तुम्हारा गुलाम यह भोजन, फल आदि रख कर कहीं ओर चला गया है। और तुम कहीं इसलिए तो उदास नहीं बैठे हो कि यह सब किसी और सुंदरी के लिए था और मैं बीच में आ गई। तुम चिंता न करो। मैं उसके आने पर आपत्ति भी न करूँगी और उसे मना भी लूँगी जिससे तुम्हें कोई परेशानी नहीं होगी। हम तीनों मिल कर आनंद मनाएँगे। अमजद ने हँस कर कहा, कोई और स्त्री नहीं आएगी। लेकिन यह भोजन मेरे खाने योग्य नहीं है, मेरे विश्वासों के अनुसार यह अपवित्र है। मेरा गुलाम मेरे लिए पवित्र भोजन लाता होगा। मैं इसीलिए कुछ खा नहीं रहा हूँ।
किंतु वह स्त्री लंबी प्रतीक्षा के लिए तैयार न थी। उसने भोजन करना आरंभ कर दिया। दो-चार ग्रास खा कर उसने शराब का प्याला भर कर पिया और एक प्याला अमजद को दिया। उसने विवश हो कर उसे पी लिया। वह यह भी सोचने लगा कि अच्छा हो कि गृह स्वामी के सेवकों के आने के पहले हम लोग खा-पी कर चल दें वरना

बड़ी बदनामी होगी। इसलिए वह थोड़ा-बहुत जल्दी-जल्दी खाने लगा किंतु वह स्त्री आराम से खा-पी रही थी।
इतने में घर का मालिक आता दिखाई दिया। स्त्री उसे न देख सकी क्योंकि उसकी पीठ दरवाजे की तरफ थी। अमजद ने उसे देख लिया और उसे चिंता बढ़ी कि अब क्या होगा। किंतु गृहस्वामी ने उसको संकेत दिया कि चिंता न करो और आराम से खाओ-पियो। वास्तव में घर का स्वामी शाही घुड़साल का प्रधान अधिकारी था। उसका नाम बहादुर था। उसके निवास का मकान दूसरा था। इस घर में वह आमोद-प्रमोद के लिए आया करता था। उस दिन उसके अपने कुछ मित्रों को भोज पर बुलाया था और इसीलिए सारा सामान ला रखा था। किंतु बाहर से आने पर ताला टूटा देखा और अंदर एक आदमी और एक औरत को मौज-मस्ती करते देखा तो छुप कर देखने लगा कि आगे क्या होता है।
अमजद लघुशंका के बहाने उठा और बहादुर से आ कर धीमे-धीमे बात करने लगा। उसने सारा हाल उसे बताया। बहादुर ने कहा, शहजादे, आप चिंता न करें। मुझे विश्वास हो गया कि आप निर्दोष हैं। मेरा तो इसके अलावा दूसरा घर है जहाँ मैं निवास करता हूँ और इस घर में कभी-कभी आमोद प्रमोद के लिए आता हूँ। मैं तो वैसे भी आप का सेवक हूँ। मैं कुछ देर में गुलामों के-से कपड़े पहन कर आता हूँ। आप मुझ पर नाराज हों बल्कि मुझे मारें भी कि मैंने इतनी देर क्यों लगाई। आप रात भर उस स्त्री के साथ सहवास करें और सबेरे इसे कुछ दे-दिला कर विदा करें। मैं अपने को बड़ा भाग्यशाली मानता हूँ कि किसी शहजादे ने मेरे घर पर पधार कर उसे पवित्र किया। आप जा कर रुचिपूर्वक भोजन करें। शहजादा यह सुन कर अंदर आ गया और खाने-पीने लगा।
बहादुर घर के बाहर गया क्योंकि आमंत्रित मित्र आ पहुँचे थे। उसने उनसे बहाना बनाया कि एक अपरिहार्य कारण से दावत स्थगित करनी पड़ी है। मैं आप लोगों को फिर बुलाऊँगा। आज के लिए आप लोग मुझे क्षमा करें। मित्रगण बाहर ही से वापस लौट गए। इधर बहादुर गुलामों जैसे कपड़े पहन कर आया और शहजादे के पैरों पर गिर कर क्षमा प्रार्थना करने लगा। अमजद ने बनावटी क्रोध में कहा कि तुम सुबह के गए थे, अभी तक कहाँ मर रहे थे। बहादुर फिर क्षमा याचना करने लगा। अमजद ने कहा कि मैं आज तेरी पिटाई किए बगैर नहीं मानूँगा। यह कह कर वह उठा और एक छड़ी उठा कर दो-चार बार बहादुर को हल्की चोटें दीं। स्त्री ने कहा, इस तरह मारने से इसकी समझ में कुछ आएगा? देखो, सजा ऐसी दी जाती है। यह कह कर उसने चार-छह छड़ियाँ पूरे जोर से मारीं और बहादुर बिलबिला उठा और

अच्छा तुम यहाँ सोए हो? तुम्हारी वजह से मुझ पर ऐसी विपदा पड़ी। इस वर्ष तो बलि से बच गए, अब देखता हूँ कि अगले वर्ष कैसे बचते हो।
बहराम असद से कहीं तगड़ा था। उसने असद को एक चादर में बाँधा और रात ही रात उसे उस बूढ़े अग्निपूजक के घर पहुँचा दिया जहाँ से असद को लाया था। बूढ़े ने फिर असद के पाँव में बेड़ियाँ डाल कर उसे तहखाने में पहुँचाया और बोस्तान और कैवाना को पहले की तरह उसे रोज खूब मारने और रोटी-पानी देने की आज्ञा दी। बोस्तान उसे तहखाने में ले गई। असद ने विलाप आरंभ किया कि इस सारे साल की मार से तो अच्छा था कि मुझे बलि ही दे दिया जाता। बोस्तान को पहले ही अपनी क्रूरता पर खेद था। इस समय उसे असद पर बड़ी दया आई। उसने कहा, तुम चिंता न करो। मैं तुम्हें न मारूँगी। मैं तुम्हें यह भी बता दूँ कि मैं मुसलमान हो गई हूँ।
बोस्तान की बातों से असद को बहुत तसल्ली हुई किंतु उसे अब भी कैवाना की ओर से डर लग रहा था। उसने कहा, भगवान ने तुम्हारे हृदय में मेरी ओर से दया उपजा दी है किंतु कैवाना तो मुझे पूर्ववत ही मारेगी। बोस्तान ने कहा, तुम डरो नहीं। अब तुम्हारे पास कैवाना नहीं, मैं ही आऊँगी। उस दिन से बोस्तान ही उसके पास आने लगी। वह उसे भरपेट स्वादिष्ट भोजन खिलाती और उससे मित्रतापूर्वक बातें करती।
एक दिन बोस्तान अपने दरवाजे पर खड़ी थी कि उसने मुनादी होते सुनी। मुनादी करनेवाला उच्च स्वर में कह रहा था, इस देश का मंत्री अमजद अपने छोटे भाई असद को ढूँढ़ने स्वयं ही नगर में निकला है। जो भी उसके भाई को उसके पास लाएगा उसे इतना धन दिया जाएगा कि कई पीढ़ियों के लिए काफी होगा। और अगर कोई असद को जान-बूझ कर छुपा कर रखेगा तो वह अपने परिवारवालों के सहित मार डाला जाएगा और उसका घर खुदवा कर उस जमीन पर हल चलवा दिया जाएगा। यह मुनादी सुन कर बोस्तान दौड़ी हुई असद के पास गई। उसने उसकी बेड़ियाँ काट दीं और उसे ले कर गली में निकल आई। यहाँ आ कर उसने पुकार कर कहा, यह है मंत्री अमजद का भाई असद, इसे मंत्री के पास पहुँचा दो।
मंत्री के सेवकों ने मंत्री को तुरंत इस बात की सूचना दी। वह असद को बुलाने के बजाय स्वयं ही वहाँ पर आ गया। असद को पहचान कर उसने उसे आलिंगनबद्ध किया। फिर वह असद और बोस्तान को ले कर बादशाह के पास पहुँचा। वहाँ पहुँच कर असद ने अपने ऊपर पड़नेवाली सारी विपत्तियों का वर्णन किया। बादशाह के क्रोध का ठिकाना न रहा। उसने आज्ञा दी कि बुड्ढे अग्निपूजक का घर खुदवा

डाला जाए तथा उसे और बहराम आदि रिश्तेदारों को मृत्युदंड की आज्ञा दी। उन सबने उसके पैरों पर गिर कर प्राणों की भिक्षा माँगी। बादशाह ने कहा कि तुम्हारा अपराध बहुत बड़ा है, तुम्हें इसी शर्त पर प्राण-दान मिल सकता है कि तुम अपना यह झूठा धर्म छोड़ कर मुसलमान हो जाओ। उन्होंने यह स्वीकार कर के जान बचाई।
मंत्री अमजद ने इसके बाद उन लोगों को गुजारे के लिए यथेष्ट धन दिया। बहराम इससे प्रभावित हुआ। उसने कहा कि सरकार, पिछले साल मैं अवौनी देश गया था। वहाँ बादशाह कमरुज्जमाँ आप लोगों के वियोग में बड़े व्याकुल हैं। आश्चर्य न होगा यदि इस दुख में उनके प्राण निकल जाएँ। आप दोनों यदि वहाँ चलने को तैयार हों तो मैं आपको सुविधापूर्वक पहुँचा दूँ।
अमजद और असद ने यह स्वीकार किया और बादशाह से जाने की अनुमति माँगी जो उसने दे दी। उसने उन्हें गले लगा कर विदा किया और बहुत साधन यात्रा के लिए दिया। इतने में एक हरकारे ने आ कर कहा कि एक ओर से एक बड़ी सेना आ रही है। बादशाह सोचने लगा कि मेरा ऐसा कौन दुश्मन है जो चढ़ाई करे। उसने अमजद से जा कर सेनाध्यक्ष से मिलने को कहा। अमजद गया तो उसे मालूम हुआ कि सेना की नायक एक स्त्री है। उसने उससे भेंट कर उससे पूछा कि आप युद्ध का इरादा ले कर आई हैं या मैत्री का? उसने कहा, मैं युद्ध करने नहीं आई हूँ। यहाँ का बहराम नामी कप्तान मेरे दास असद को चुरा लाया है। मैं उसी को लेने आई हूँ। मेरा नाम मरजीना है। यदि आप असद को मुझे वापस दिलाने में सहायक हों तो आपकी आभारी हूँगी।
अमजद ने कहा, आपका दास असद मेरा छोटा भाई है। मैं यहाँ का मंत्री हूँ। आप कृपया चल कर हमारे बादशाह से भेंट करें। वे असद को आपकी सेवा में दे देंगे।
मरजीना यह सुन कर बहुत प्रसन्न हुई और सारी सेना वहीं छोड़ कर कुछ अंगरक्षकों को साथ ले कर अमजद के साथ बादशाह के पास आने लगी।
इसी बीच एक और हरकारे ने आ कर कहा कि दूसरी दिशा से एक और सेना आ रही है। बादशाह फिर चिंतित हुआ। उसने अमजद को इस सेना का हाल जानने के लिए भेजा। अमजद कुछ सिपाहियों के साथ गया और फौज के एक सरदार से कहा कि मैं यहाँ का मंत्री हूँ, मुझे अपने बादशाह के पास ले चलो। बादशाह के पास जा कर उसने पूछा कि आप अगर युद्ध के लिए आए हैं तो यह भी बताए कि हमसे क्यों युद्ध करना चाहते हैं। बादशाह ने कहा, मैं युद्ध करने नहीं आया। मैं चीन का

चीन के सम्राट से संक्षिप्त रूप से भेंट करने के बाद कमरुज्जमाँ और उसके दोनों बेटे उस तरफ गए जहाँ चौथी फौज ने पड़ाव डाला था। पास पहुँचने पर अमजद आगे बढ़ कर गया। संयोग से उसकी पहली ही भेंट इस फौज के बादशाह के मंत्री के साथ हुई। उसने पूछा, आप लोग तो मुसलमान हैं, इस देश में जहाँ मुख्यतः अग्निपूजक रहते हैं क्या करने आए हैं? उस मंत्री ने कहा, हम लोग खलदान देश से आए हैं। हमारे बादशाह का बेटा कमरुज्जमाँ बीस वर्ष से अधिक समय से लापता है। हमारे बादशाह उसी की खोज में भटक रहे हैं। अगर आप लोगों ने कमरुज्जमाँ का कुछ हाल सुना हो तो बताइए, आपकी बड़ी कृपा होगी।
अमजद ने हँस कर कहा, आप कमरुज्जमाँ का समाचार पूछ रहे हैं। मैं स्वयं कमरुज्जमाँ को यहाँ लिए आता हूँ। आप बादशाह से हम लोगों की भेंट का प्रबंध कराइए। इधर मंत्री अपने बादशाह को यह समाचार देने गया उधर अमजद ने जा कर अपने बाप से कहा कि आपके पिता आप की खोज में यहाँ तक आए हैं और यह फौज उन्हीं की है। कमरुज्जमाँ ने स्वप्न में भी नहीं सोचा था कि पिता से भेंट होगी और वह भी इतने आकस्मिक ढंग से। वह भावातिरेक से मूर्छित हो गया। जब वह सचेत हुआ तो बेटे को साथ ले कर पिता से मिलने चल पड़ा और उसके पास जा कर उसके पैरों पर गिर पड़ा। वह उसे छाती से लगा कर बहुत देर तक रोता रहा। उसने कमरुज्जमाँ से पूछा, बेटे, मुझ से ऐसी क्या भूल हो गई थी कि तुम बगैर कुछ कहे-सुने चले आए। तुम इस अरसे में कहाँ-कहाँ और किस तरह रहे? कमरुज्जमाँ ने लज्जित हो कर चुपचाप देश छोड़ने पर पिता से क्षमा याचना की और फिर उसे अपना, बदौरा का और बेटों का पूरा हाल बताया। उसने अपने दोनों बेटों को पिता से मिलवाया। वह दोनों पौत्रों को गले लगा कर बहुत देर तक प्यार करता रहा।
फिर सारे बादशाहों और रानी मरजीना ने अग्निपूजक देश के मुसलमान बादशाह के महल में एक-दूसरे से भेंट की और तीन दिन तक राग-रंग होता रहा। सभी की सलाह से मंत्री अमजद के साथ भूतपूर्व अग्निपूजक की बेटी बोस्तान का विवाह कर दिया गया क्योंकि वह सब से पहले स्वयं ही मुसलमान हुई थी और उसी ने असद को पिता की कैद से निकाला था। इसी तरह सब की सलाह से असद का विवाह रानी मरजीना से कर दिया गया क्योंकि वह इतनी शक्तिशालिनी हो कर भी असद पर इतनी मुग्ध थी कि उसकी तलाश में भटक रही थी। असद अपनी पत्नी के साथ चला गया। अमजद को वहाँ के बादशाह ने अपना राजपाट सौंप दिया। इस सारे वृत्तांत का यह प्रभाव पड़ा कि उस देश के अधिकतर अग्निपूजक अपना पुराना धर्म छोड़ कर मुसलमान हो गए।

चीन का सम्राट, खलदान का बादशाह और कमरुज्जमाँ उस देश के बादशाह की दी हुई बहुमूल्य भेंटें स्वीकार करने के बाद अपने-अपने देशों की ओर रवाना हो गए। शहरजाद ने यह कहानी खत्म की तो दुनियाजाद ने कहा, दीदी, तुमने बहुत ही अच्छी कहानी सुनाई। मैं चाहती हूँ कि और भी ऐसी कहानियाँ सुनूँ। शहरजाद बोली, यदि मुझे आज प्राणदंड न दिया गया तो कल नूरुद्दीन और फारस देश की दासी की सुंदर कथा सुनाऊँगी। बादशाह शहरयार ने इस कहानी के लालच में उस दिन भी शहरजाद का प्राणदंड स्थगित कर दिया।

नूरुद्दीन और पारस देश की दासी की कहानी

अगली सुबह से पहले शहरजाद ने नई कहानी शुरू करते हुए कहा कि पहले जमाने में बसरा बगदाद के अधीन था। बगदाद में खलीफा हारूँ रशीद का राज था और उसने अपने चचेरे भाई जुबैनी को बसरा का हाकिम बनाया था। जुबैनी के दो मंत्री थे। एक का नाम था खाकान और दूसरे का सूएखाकान। खाकान उदार और क्षमाशील था और इसलिए बड़ा लोकप्रिय था। सूएखाकान उतना ही क्रूर और अन्यायी था और प्रजा उससे रुष्ट थी। सूएखाकान अपने सहयोगी मंत्री खाकान के प्रति भी विद्वेष रखता था।
एक दिन जुबैनी ने खाकान से कहा कि मुझे एक दासी चाहिए जो अति सुंदर हो तथा गायन-वादन तथा अन्य विद्याओं में निपुण भी हो। खाकान के बोलने के पहले ही सूएखाकान बोल उठा, ऐसी लौंडी तो दस हजार अशर्फी से कम में नहीं आएगी। जुबैनी ने आँखें तरेर कर कहा, तुम समझते हो दस हजार अशर्फियाँ मेरे लिए बड़ी चीज हैं? यह कह कर उसने खाकान को दस हजार अशर्फियाँ दिलवा दीं। खाकान ने घर आ कर दलालों को बुलाया और उनसे कहा कि तुम जुबैनी के लिए अति सुंदर और सारी विद्याओं, कलाओं में निपुण एक दासी तलाश करो चाहे जितने मोल की हो। सारे दलाल इच्छित प्रकार की दासी ढूँढ़ने में लग गए।
कुछ दिनों बाद एक दलाल खाकान के पास आ कर बोला कि एक व्यापारी ऐसी ही दासी लाया है जैसी आपने कहा था। खाकान के कहने पर दलाल उस व्यापारी को दासी समेत ले आया। खाकान ने आ कर जाँच-परख की तो दासी को हर प्रकार से गुणसंपन्न पाया और जुबैनी की आशा से अधिक सुंदर भी पाया। उसने व्यापारी से उसका दाम पूछा तो उसने कहा, स्वामी, यह रत्न तो अनमोल है। किंतु मैं आप के हाथ मात्र दस

हजार अशर्फियों पर बेच दूँगा। इसके लालन-पालन और शिक्षा-दीक्षा पर मैंने बहुत श्रम किया है। यह गायन, वादन, साहित्य, इतिहास और सारी विद्याओं में पारंगत है और अभी तक अक्षत है। मंत्री ने बगैर कुछ कहे दस हजार अशर्फियाँ गिनवा दीं।
व्यापारी ने कहा, सरकार, एक निवेदन और है। इसे एक सप्ताह बाद ही हाकिम के पास ले जाएँ। कारण यह है कि यह बहुत दूर की यात्रा से बड़ी क्लांत है और एक हफ्ते के अंदर इसे अच्छा खिलाएँगे-पिलाएँगे और दो बार गरम पानी से नहलाएँगे तो इसका रूप ऐसा निखरेगा कि आप भी इसे पहचान नहीं सकेंगे। खाकान ने यह बात मान ली। उक्त दासी को उसने अपनी पत्नी के सुपुर्द किया और कहा कि इसे एक सप्ताह तक खिलाओ-पिलाओ और दो बार गरम हम्माम में भेजो, फिर मैं उसे जुबैनी के सामने पेश करूँगा। उसने दासी से भी, जिसका नाम हुस्न अफरोज था, कहा, देख, तुझे मैंने अपने स्वामी के लिए मोल लिया है। तू यहाँ आराम से किंतु बड़ी होशियारी से रह। खबरदार, किसी पुरुष से तेरा संसर्ग न हो। खास तौर से तू मेरे जवान बेटे नूरुद्दीन से सावधान रहना। वह दिन में कई बार अपनी माँ के पास आया करता है। हुस्न अफरोज ने खाकान से कहा, सरकार, आपने बहुत अच्छा किया जो मुझे यह चेतावनी दे दी। अब आप इत्मीनान रखिए। आपकी आज्ञा के विरुद्ध कोई बात नहीं होगी।
खाकान इसके बाद दरबार को चला गया। दोपहर के भोजन के समय नूरुद्दीन अपनी माँ के पास आया तो उसने देखा कि उसकी माँ के पास एक कंचनवर्णी, मृगनयनी, गजगामिनी षोडशी बैठी है। सौंदर्य की इस प्रतिमूर्ति को देखते ही उसका हृदय उस दासी के लिए बेचैन हो गया। उसके पूछने पर उसकी माँ ने बताया कि इस दासी को जो पारस देश से आई है, तुम्हारे पिता ने बसरा के हाकिम जुबैनी की सेवा के लिए खरीदा है। इसके बावजूद नूरुद्दीन उससे अपना मन न हटा सका और ऐसी तरकीब सोचने लगा जिससे वह दासी उसके हत्थे चढ़ जाए। नूरुद्दीन अत्यंत सुंदर था। इसलिए हुस्न अफरोज भी भगवान से प्रार्थना करने लगी कि कोई ऐसी बात हो जाए जिससे मैं हाकिम के बजाय इसी सजीले नौजवान के पास रह सकूँ।
उस दिन से नूरुद्दीन ने यह नियम बना लिया कि अक्सर अपनी माँ के पास आता और हुस्न आफरोज से आँखों-आँखों में बातें करता। हुस्न अफरोज भी खाकान की पत्नी की आँख बचा कर नूरुद्दीन से प्रेमपूर्वक आँखें मिलाती और संकेत ही में अपने हृदय की अभिलाषा कहती। यह मौन दृष्टि-विनिमय कब तक छुपाता। नूरुद्दीन की माँ उसका इरादा समझ गई और उससे बोली, प्यारे बेटे, अब भगवान

हाकिम के लिए खरीदी थी वह अपने बेटे को दे डाली। उसकी पत्नी ने कहा, सूएखाकान निस्संदेह तुम्हारा शत्रु है किंतु हमारे घर के अंदर का हाल उसे क्या मालूम? फिर अगर कोई चुगली भी करे तो तुम हाकिम से कह देना कि मैंने आपके लिए एक दासी खरीदी जरूर थी किंतु उसकी शरीर-परीक्षा से ज्ञात हुआ कि वह आपके योग्य नहीं थी। इस तरह सूएखाकान की शिकायत का कोई प्रभाव नहीं रहेगा। इधर तुम फिर दलालों को बुलवाओ और नई सर्वगुण संपन्न दासी लाने के लिए कहो।
पत्नी के समझाने से मंत्री को ढाँढ़स बँधा। उसका नूरुद्दीन पर उतना क्रोध न रहा किंतु वह उसे क्षमा भी नहीं कर सका। नूरुद्दीन अपने पिता से छुप कर रात के समय महल में आता और सुबह पिता के जागने के पहले बाहर चला जाता। फिर भी उसकी माँ को यह भय और चिंता लगी रहती थी कि कभी मंत्री ने नूरुद्दीन को देखा तो उसका क्रोध फिर भड़क उठेगा और वह उसे जरूर मार डालेगा। उसने एक दिन अपने पति से यह बात पूछी तो उसने कहा कि मैं पाऊँगा तो जरूर उसे मार डालूँगा। पत्नी ने कहा, देखो, वह तुम्हारा इकलौता बेटा है। जवानी में आदमी से भूल हो ही जाती है। उससे भी हो गई। रही यह बात कि उसे अपने अपराध की गंभीरता का पता चल जाए तो उसकी तरकीब मैं बताती हूँ। तुम उसे पकड़ लेना और मारने के लिए तलवार निकाल लेना। फिर मैं तुम्हारी खुशामद कर के उसे छुड़ा लूँगी। मंत्री को यह सुझाव पसंद आया।
दूसरे दिन सवेरे पत्नी के इशारे पर मंत्री ने दरवाजे पर जा कर नूरुद्दीन को धर दबोचा और तलवार निकाल कर उसे मारने के लिए उठाई। तभी उसकी पत्नी ने आ कर उसका हाथ पकड़ लिया और बोली, तुम इसे मारना ही चाहते हो तो पहले मुझे मार डालो। नूरुद्दीन ने भी गिड़गिड़ा कर प्राण-भिक्षा माँगी और कहा कि इतने-से कसूर पर आप मेरी जान लेंगे तो कयामत में खुदा को क्या जवाब देंगे? मंत्री ने तलवार फेंक कर कहा, तुम मेरे नहीं, अपनी माँ के पाँवों पर गिरो, उसी के कहने पर मैंने तुम्हें छोड़ा है। मैं तुम्हें हुस्न अफरोज भी देता हूँ लेकिन खबरदार उसके साथ ब्याहता का व्यवहार करना, दासी का नहीं। और उसे किसी दशा में न बेचना।
इसके बाद नूरुद्दीन आनंदपूर्वक हुस्न अफरोज के साथ रहने लगा और मंत्री भी उन दोनों की परस्पर प्रीति देख कर प्रसन्न हुआ और संतोष से रहने लगा। जुबैनी के सामने उसने दासी के बारे में वही कह दिया जो उसकी पत्नी ने कहा था।

इसके एक वर्ष बाद की बात है। मंत्री ने गरम पानी से देर तक स्नान किया किंतु अचानक कुछ ऐसा काम आ पड़ा कि वह बाहर निकल आया। गर्मी से अचानक सर्दी में आ जाने के कारण वह बीमार हो गया और उसका रोग बढ़ता गया। अपना अंत समय निकट देख कर नूरुद्दीन से, जो उसकी परिचर्या के लिए बराबर उसके पास रहता था, कहा, मैंने पहले भी कहा था और अब फिर कहता हूँ कि हुस्न अफरोज को प्यार से रखना और उसे कभी बेचना नहीं। इसके बाद उसने शरीर छोड़ दिया।
नूरुद्दीन ने उसकी बड़ी धूमधाम से अंत्येष्टि की और चालीस दिन तक बाप का मातम किया। इसी बीच उसने किसी मित्र आदि को अपने पास आने की अनुमति नहीं दी। फिर धीरे-धीरे उसके मित्र उसे तसल्ली देने के लिए आने लगे और कुछ दिनों में मित्रों के आने का ताँता लग गया। नूरुद्दीन अल्पवयस्क और अनुभवहीन था। उसके मित्रों ने इस बात का अनुचित लाभ उठाया। उन्होंने रासरंग के सुझाव दिए और नूरुद्दीन ने दोनों हाथों से धन लुटाना आरंभ किया और उसके मित्र धन से अपना घर भरने लगे। एक दिन हुस्न अफरोज ने उसे समझाया, तुमने अपने कमीने मित्रों पर बहुत कुछ लुटा दिया, अब चेत जाओ और यह फिजूलखर्चियाँ बंद कर दो। नूरुद्दीन हँस कर बोला, क्या बात करती हो? क्या मेरे पिता मरने पर अपने साथ ले गए और क्या मैं ले जाऊँगा? फिर जीवन में आनंद लेने के लिए अपने धन का प्रयोग क्यों न करूँ?
दो-चार दिन बाद उसका गृह-प्रबंधक उसके पास आया और बही-खाता खोल कर उसे सारी स्थिति बताने के बाद उससे बोला, आप ने इस थोड़े ही समय में बहुत अधिक खर्च कर दिया है। आपके स्वामिभक्त सेवकों से आपकी यह बरबादी नहीं देखी जाती। इसलिए उनमें से बहुत-से लोग काम छोड़ कर चले गए हैं। यही हाल रहा तो मैं भी अधिक दिनों तक आपकी सेवा नहीं कर सकूँगा। या तो आप अपने अपव्यय को रोकिए या मेरा हिसाब साफ कर मुझे विदा कीजिए।
प्रबंधक के लाख समझने पर भी नूरुद्दीन ने अलल्ले-तलल्ले नहीं छोड़े। उसके मित्र उसे पहले से अधिक लूटने लगे। कभी कोई आता और कहता, आपका अमुक बाग और उसमें बना मकान मुझे बहुत भा गया है। आपको तो कोई कमी नहीं, आप उसे मुझे दे दीजिए। और मूर्ख नूरुद्दीन उसके नाम वह बाग और उसके अंदर का मकान लिख देता। इसी प्रकार कोई उसके अरबी घोड़े या विशालकाय हाथी की प्रशंसा करता और नूरुद्दीन उसे भी दे डालता। कुछ ही दिनों में यह हाल हो गया कि उसके पास अपने रहने के महल के अलावा और कुछ नहीं रहा।

बोला, तुम्हें किसने मारा? सूएखाकान ने हाथ जोड़ कर कहा, सरकार, पुराने मंत्री खाकान के बेटे नूरुद्दीन ने मेरी यह दुर्दशा की है। जुबैनी ने विस्तृत विवरण चाहा तो सूएखाकान ने कहा -
'मैं आज बाजार की तरफ से निकला तो एक जगह भीड़ देखी। पूछने पर मालूम हुआ कि एक दासी बिक रही है। मुझे भी गृह-कार्य के लिए एक दासी की जरूरत थी इसलिए मैं भी रुक गया। दासी के देखने पर मुझे वह आपकी सेवा के उपयुक्त मालूम हुई इसलिए मैंने चार हजार अशर्फी पर उसका सौदा कर लिया। इतने में नूरुद्दीन आ गया और बोला कि मैं अपनी दासी तुम्हारे हाथ नहीं बेचूँगा। मैंने उसे बहुत समझाया कि मैं यह दासी अपने लिए नहीं बल्कि हाकिम के लिए खरीद रहा हूँ लेकिन उसने मेरी एक न सुनी। आपको भी भला-बुरा कहा और मुझे मार-पीट कर दासी को ले गया।
'सरकार, आप को याद होगा कि तीन-चार बरस पहले आपने खाकान को दस हजार अशर्फियाँ एक सर्वगुण-संपन्न दासी खरीदने के लिए दी थीं। उसने इसी धन से यह दासी खरीद कर अपने बेटे को दे दी। तब से वह दासी उसी के पास है। पिता के मरने के बाद नूरुद्दीन ने अपनी सारी संपत्ति भोग-विलास में उड़ा दी। अब उसके पास अपने एक मकान और इस लौंडी के अलावा कुछ नहीं है। भूख से तंग आ कर वह अपनी उस दासी को बेच रहा था किंतु मुझ से दुश्मनी होने के कारण उसने मेरे साथ यह किया।'
हाकिम जुबैनी को पुरानी बात याद आ गई और वह गुस्से में भर गया। उसने वजीर सुएखाकान को विदा किया और अपने एक सरदार को आज्ञा दी कि चालीस सिपाहियों को ले कर जाओ, नूरुद्दीन और उसकी दासी को बाँध कर यहाँ लाओ और उसके मकान को खुदवा कर भूमि को समतल कर दो। यह सरदार नूरुद्दीन के पिता से बड़ा उपकृत था। वह छुप कर अकेला उसके घर पर पहुँचा और उसे हाकिम की आज्ञा को बता कर कहा, यह चालीस अशर्फियाँ लो। इस समय मेरे पास इतना ही है। तुम तुरंत दासी को ले कर कहीं भाग जाओ वरना जान से हाथ धोओगे। मैं भी भागता हूँ, कोई मुझे यहाँ देख कर हाकिम से कह देगा तो मैं भी मारा जाऊँगा।
यह कह कर सरदार उसी तरह छुप कर चला गया। इधर नूरुद्दीन ने जा कर हुस्न अफरोज को यह सब बताया और उसे ले कर मकान के पिछवाड़े की दीवार फलाँग कर नदी के तट पर भागता हुआ पहुँचा। संयोग से उसी समय एक छोटा जहाज बगदाद जाने के लिए लंगर उठा रहा था। नूरुद्दीन और दासी के सवार होते ही जहाज ने लंगर उठा दिया और बगदाद को चल पड़ा।

उधर कुछ देर बाद वही सरदार अपने साथ सशस्त्र सैनिकों को ला कर नूरुद्दीन का दरवाजा ऐसे क्रोध से खटखटाने लगा जैसे वास्तव में उसे गिरफ्तार करने आया हो। दरवाजा न खुलने पर उसने उसे तुड़वा दिया और अंदर जा कर सिपाहियों को मकान की तलाशी लेने और नूरुद्दीन और उसकी दासी को पकड़ने की आज्ञा दी। सिपाहियों ने मकान में न कोई सामान पाया न कोई आदमी।
उसने पड़ोसियों से पूछा कि नूरुद्दीन कहाँ है। उनमें दो-एक को मालूम था कि वह पिछवाड़े से भाग गया है किंतु सभी लोग उसे चाहते थे इसलिए बोले कि हम लोगों को बिल्कुल नहीं मालूम कि वह कहाँ गया। सरदार ने हाकिम से जा कर सारा हाल कहा तो उसने कहा कि उसका घर गिरवा कर समतल कर दो। और शहर में मुनादी करवा दो कि जो नूरुद्दीन को पकड़ कर लाएगा उसे एक हजार अशर्फियों का इनाम मिलेगा और अगर कोई उसे या उसकी दासी को शरण देगा तो उसे तथा उसके कुटुंबियों को मृत्यु-दंड दिया जाएगा। अतएव ऐसा ही किया गया।
उधर नूरुद्दीन का जहाज बगदाद पहुँचा तो कप्तान ने यात्रियों को समझाया कि यह नगर अद्भुत है, यहाँ क्षण मात्र में गरीब अमीर बन जाता है और अमीर गरीब इसलिए यहाँ परदेशियों को सावधान रहना जरूरी है। खैर, बगदाद पहुँच कर अन्य व्यापारी तो अपने-अपने ठिकानों पर गए, नूरुद्दीन ने कप्तान को पाँच अशर्फियाँ किराए में दीं और हुस्न अफरोज को ले कर उतरा। उसके लिए यह नगर नितांत अपरिचित था और उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि किस जगह ठहरे। दोनों बहुत देर तक भटकने के बाद एक बाग में पहुँचे जो नदी के तट पर था और जिसका द्वार खुला था। यहाँ बहुत देर तक बाग के कुंड में हाथ-पाँव धोने और जल पीने के बाद वे एक दालान में जा बैठे। वे दोनों बहुत थक गए थे इसलिए लेट गए और लेटते ही सो गए।
यह बाग खलीफा हारूँ रशीद का था। वह इसमें रात को सैर के लिए आया करता था। उस बाग में रात दिन मोमबत्तियाँ जला करती थीं। उसमें एक विशाल बारहदरी थी जो इतनी ऊँची थी कि उसकी छत पर होनेवाली रोशनी सारे नगर में दिखाई देती थी। उस बारहदरी में अस्सी द्वार थे जिनके किवाड़ बिल्लौर के बने हुए थे। बाग के रक्षक का नाम शेख इब्राहिम था। उसकी अनुमति के बगैर कोई आदमी बाग में प्रवेश नहीं कर पाता था। उस दिन वह थोड़ी देर के लिए बाग का दरवाजा खुला छोड़ कर बाहर चला गया था। फिर उसे कुछ देर लग गई।
संध्याकाल निकल आने पर शेख इब्राहीम आया तो देखा कि कुंड के समीप की दालान में दो व्यक्ति मुँह पर महीन चादरें डाले सो रहे हैं। उसे बड़ा क्रोध आया

और उसने इरादा किया कि डंडा उठा कर दोनों को पीटे। फिर यह सोच कर रुक गया कि शायद ये परदेशी हों, बगैर सोचे-विचारे इन्हें दंड देना ठीक नहीं है। पहले इनसे पूछूँ कि ये यहाँ क्यों और कैसे आए। उसने दोनों के मुँह की चादरें हटाईं तो देखा कि एक से बढ़ कर एक सुंदर स्त्री पुरुष हैं। उसने नूरुद्दीन का पाँव हिला कर उसे जगाया। उसने जाग कर देखा कि एक सफेद दाढ़ीवाला बूढ़ा मौजूद है तो उसने फौरन उठ कर उसके हाथ चूमे और अदब से सलाम किया और बोला, पिताजी, मेरे लिए क्या आज्ञा है? रक्षक उसके विनय से प्रभावित हो कर बोला, बेटे, तुम कौन हो? कहाँ से आए हो? नूरुद्दीन ने कहा, हम लोग परदेशी हैं। हम यहाँ किसी को नहीं जानते। आप कृपया हमें रात भर यहाँ रहने की अनुमति दें, सवेरा होते ही हम चले जाएँगे।
बूढ़ा और प्रभावित हुआ। कहने लगा, यहाँ सोने में तुम्हें कष्ट होगा। तुम मेरे साथ चलो। मैं तुम्हें ऐसी जगह ठहराऊँगा जहाँ तुम आराम से सो सको। वहाँ से इस सारे बाग की सैर भी कर सकते हो। नूरुद्दीन ने पूछा, क्या यह बाग आप का है? उसने मुस्कुरा कर कहा, हाँ, यह मेरे बाप की जायदाद है। फिर उसने बाग की एक और आरामदह इमारत में उन्हें ठहराया जहाँ से सारा बाग दिखाई देता था। उसने उन्हें वहाँ की और भी इमारतें दिखाईं। फिर नूरुद्दीन ने रक्षक के हाथ में दो अशर्फियाँ रखीं और कहा कि इससे हम लोगों के लिए सुस्वाद भोजन मँगा दीजिए। बूढ़े ने सोचा कि बहुत अच्छा हुआ कि मैंने ऐसे धनी और सुसंस्कृत आदमी को नहीं मारा। इन अशर्फियों से तो बढ़िया से बढ़िया खाना लाने पर भी मेरे पास बहुत-कुछ बचा रहेगा। अतएव वह उन्हें बाग की बारहदरी में बिठा कर भोजन लाने चला गया। इधर नूरुद्दीन ने चाहा कि ऊपर जा कर सैर करे किंतु जा कर देखा कि जीने में ताला जड़ा था।
बाग का रक्षक भोजन लाया तो नूरुद्दीन ने कहा कि हम ऊपर जा कर भी देखना चाहते हैं, क्या आप हमें दिखा सकेंगे? दरोगा ने ताली निकाल कर ताला खोल दिया। वे दोनों ऊपर जा कर बहुत खुश हुए। नूरुद्दीन ने कहा कि आप कृपा कर के हम लोगों को यहीं सोने की अनुमति दे दीजिए।
उसने यह भी कहा कि आप भी हमारे साथ भोजन करें और यहीं आराम करें। बूढ़े ने सोचा कि आज खलीफा तो आनेवाले हैं नहीं, आनेवाले होते तो अब तक संदेश भिजवा देते। उसने यह भी सोचा कि ऐसे उदार आदमी की बात नहीं टालनी चाहिए। इसलिए वह न केवल उन्हें स्थान देने पर राजी हो गया अपितु उसने खलीफा के लिए रखे हुए

जड़ाऊ बरतनों में उन्हें भोजन परोसा। सब लोग खाना खा कर हाथ धो चुके तो नूरुद्दीन ने कहा, कुछ पीने को भी मिल सकता है?
रक्षक ने कहा, मैं शरबत ला सकता हूँ लेकिन शरबत खाने के पहले पिया जाता है, बाद में नहीं। नूरुद्दीन बोला, आप ठीक कहते हैं लेकिन मेरा मतलब शरबत से नहीं था, अंगूरी शराब से था। उद्यान-रक्षक ने कहा, देखो इस्लाम में शराब हराम है। फिर मैं तो चार बार हज कर आया हूँ, मैं तो शराब पीना क्या उसे हाथ से भी नहीं छू सकता। बल्कि मैंने कभी शराब देखी भी नहीं है। नूरुद्दीन ने कहा, मैं एक तरकीब बताता हूँ। बाग की खाई के पास एक गधा बँधा है। उसे ले आइए। मैं रूमाल में एक अशर्फी बाँध कर उसकी पीठ पर रख दूँगा। आप उसे हाँकते हुए शराबखाने तक ले जाएँ और शराबखाने के मालिक को इशारे से अशर्फी दिखा दें। वह समझ जाएगा और अशर्फी ले कर शराब की मटकियाँ गधे पर लाद देगा। फिर आप गधे को यहाँ ले आएँ। यहाँ हम वे पात्र उतार लेंगे। आपको शराब छूने या मुँह से माँगने की जरूरत ही नहीं पड़ेगी।
बूढ़े को इसमें कोई बुरी बात नहीं दिखाई दी। उसने वही किया जो नूरुद्दीन ने कहा था। गधे के वापस आने पर नूरुद्दीन ने मटकियाँ गधे से उतार कर रखीं और बूढ़े से कहा, आपने हम लोगों पर बड़ी कृपा की है, अब थोड़ी और दया कीजिए। दो-तीन गिलास और शराब के साथ खाने के लिए कुछ फल ले आइए। बाग के रक्षक दारोगा ने यह चीजें भी ला कर दीं और साफ कपड़ा जमीन पर बिछा कर उस पर फल काट कर तश्तरियों में रख दिए और गिलास भी। यह कर के वह कुछ दूर जा बैठा ताकि कहीं यह लोग मुझ से भी मदिरा पान के लिए न कहें।
जब दोनों को शराब पी कर नशा आ गया तो नूरुद्दीन ने हुस्न अफरोज से कहा कि हम लोग कितने भाग्यवान हैं कि इस निपट अनजाने शहर में भी हमें ऐसी सुंदर जगह ठहरने को मिली है। फिर वे दोनों गाने लगे। उनका गाना सुन कर दारोगा खुश हुआ और कुछ पास आ कर गाना सुनने लगा। नूरुद्दीन ने उससे कहा, दारोगा साहब, आप बहुत अच्छे आदमी हैं। आप भी हमारे इस आनंद में शामिल हो जाएँ। मैं आपकी प्रशंसा में कसीदा सुनाऊँगा। दारोगा ने हँस कर कहा, आप दोनों के आनंद से मुझे काफी आनंद आ रहा है, अब और आनंद क्या चाहिए। यह कह कर वह फिर दूर जा बैठा।
हुस्न अफरोज ने नूरुद्दीन से कहा, आप कहें तो में इस बूढ़े कर्मकांडी को भी शराब पिला दूँ।

बूढ़ा ठठा कर हँसा और कहने लगा, मैंने पी कहाँ है, यह तो तुम्हारी साथिन ने जबर्दस्ती मुझे पिलाई है। इसी तरह वे लोग हँसी-खुशी के साथ आधी रात तक बैठे-बैठे मदिरापान करते रहे।
जब दारोगा को काफी नशा चढ़ गया तो हुस्न अफरोज ने कहा कि अब अँधेरा डरावना लगता है, कहो तो शमादान (मोमबत्तियों के पात्र) जला दूँ। बूढ़े ने कहा, अच्छा, यही चाहती हो तो जला लो लेकिन दो-चार ही जलाना। किंतु हुस्न अफरोज ने वहाँ के सारे ही शमादान जला दिए।
बूढ़ा नशे में था और हुस्न अफरोज के सौंदर्य से मस्त भी। उससे हुस्न अफरोज ने पूछा, कहिए तो जीने के शमादान भी जला दूँ ताकि किसी आने-जानेवाले को कष्ट न हो। बूढ़े ने बगैर समझे-बूझे इस की भी अनुमति दे दी। वह इस समय हुस्न अफरोज की हर बात मानने को तैयार था।
खलीफा हारूँ रशीद उस दिन देर तक राज-काज में लगा रहा था। आधी रात को उसकी इच्छा हुई कि बाग में जा कर थकन मिटाए। महल से उसने देखा तो बाग की बारहदरी के ऊपर प्रकाश-पुंज दिखाई दिया क्योंकि हुस्न अफरोज ने सारे शमादान जला दिए थे। उसने अपने मंत्री जाफर से कहा, समझ में नहीं आता। मैं तो यहाँ हूँ, इस बाग की बारहदरी में रोशनी किसने करवाई है। जाफर की समझ में भी कुछ न आया लेकिन वह दिल का अच्छा आदमी था। बाग के दारोगा को बचाने के लिए झूठ बोल गया, बाग के दारोगा ने एक मानता मानी थी और कहा था कि यह पूरी होगी तो अपने मित्रों को दावत दूँगा। उसने आज दावत दी होगी।
खलीफा को इस बात पर विश्वास न हुआ, उसने खुद भी साधारण नागरिक के वस्त्र पहने और जाफर तथा अपने प्रधान अंगरक्षक मसरूर को भी पहनवाए और उन दोनों को ले कर चुपके से बाग की ओर चला। वहाँ जा कर देखा कि बाग का बाहरी द्वार खुला है। उसे दारोगा की असावधानी पर रोष हुआ और वह कहने लगा कि यह दरवाजा क्यों खुला है? जाफर इसका क्या जवाब देता। फिर खलीफा इन लोगों को बाग में बिठा कर खुद चुपचाप जीने पर चढ़ कर छत का तमाशा देखने लगा। उसने देखा कि एक अति सुंदर युवक के साथ एक अनिंद्य सुंदरी बैठी है और दारोगा शराब का गिलास उस स्त्री को देते हुए कह रहा है, हे परमसुंदरी, मैंने अभी जी भर कर तुम्हारा गाना नहीं सुना। एक गाना सुनाओ। इसके बाद मैं भी तुम्हें गाना सुनाऊँगा। किंतु वह स्त्री का गाना सुनने के बजाय खुद गाने लगा। स्पष्ट था कि उसे गाना नहीं आता था, यूँ ही रेंक रहा था।

पास भेज दूँगा। तब तक तुम मेरे महल में रहोगी। यह सुन कर हुस्न अफरोज की खुशी का ठिकाना नहीं रहा। खलीफा उसे ले कर महल में आया। दूसरे दिन उसने हुस्न अफरोज को अपनी रानी जुबैदा के हाथ में सौंपा और कहा कि इसका ख्याल रखना, यह बसरा के नए हाकिम नूरुद्दीन की स्त्री है और कुछ दिनों बाद इसे उसी के पास भेजना है।
इधर नूरुद्दीन एक जहाज में बैठ कर, जो उसी समय छूट रहा था, बसरा पहुँचा और अपने किसी मित्र या परिचित से मिले बगैर सीधे हाकिम जुबैनी के पास पहुँचा। वह उस समय मुकदमों के फैसले कर रहा था। नूरुद्दीन बेधड़क उसके पास पहुँचा और कहा, आपके पुराने मित्र ने यह पत्र आप के लिए दिया है। जुबैनी ने खलीफा की हस्तलिपि देख कर पत्र को चूमा और मंत्री सूएखाकान से उसे पढ़ने के लिए कहा। मंत्री ने पत्र देखा तो उसकी जान निकल गई। उसने प्रकाश में अच्छी तरह पत्र पढ़ने के बहाने बाहर आ कर खलीफा की मुहरवाला लिफाफे का भाग दाँतों से कुतर कर खा लिया। वापस दरबार में आ कर कहा कि इस पत्र में नूरुद्दीन को बसरा का हाकिम बनाने को लिखा है किंतु यह पत्र जाली मालूम होता है। उसने कहा, सरकार, मुझे ऐसा मालूम होता है कि नूरुद्दीन ने मुझसे और आपसे अपने अपमान का बदला लेने के लिए यह ढोंग रचा है। इसने खलीफा से हम लोगों की शिकायत जरूर की होगी किंतु खलीफा बच्चा तो है नहीं जो बहकावे में आ जाए। वह ज्यादा से ज्यादा यह लिखता कि इसे दंड न दो या कोई नौकरी दे दो। ऐसे निठल्ले आदमी को वह बसरे का हाकिम किस तरह बना देगा?
उसने यह भी कहा कि आप नूरुद्दीन को मेरे सुपुर्द कर दीजिए, मैं खोज कर के असल तथ्य का पता लगाऊँगा। जुबैनी भी क्यों आसानी से अपना पद देता। उसने सूएखाकान की बात मंजूर कर ली। सूएखाकान नूरुद्दीन को अपने भवन में लाया। वह उसकी जान का प्यासा हो ही रहा था। चुनांचे उसने नूरुद्दीन को इतना पिटवाया कि वह बेहोश हो कर गिर गया और मरने के समीप हो गया। फिर उसने उसे एक तंग कोठरी में बंद कर दिया और उस पर कड़ा पहरा बिठा दिया और आदेश दिया कि इसे दिन में सिर्फ एक बार कुछ रोटी के टुकड़े और पानी दिया जाए, इससे अधिक कुछ न दिया जाए।
नूरुद्दीन को होश आया तो देखा कि उसे एक सीली, दुर्गंधपूर्ण और ऐसी तंग कोठरी में बंद किया गया है जिसमें वह हिल-डुल भी नहीं सकता। उसे यह तो मालूम ही नहीं था कि जुबैनी के नाम पत्र में क्या लिखा था। वह रो-रो कर कहने लगा, वाह रे मछवाहे! मैंने तो तुझे अपना सब कुछ दे डाला। अशर्फियों के

साथ अपनी प्राणों से भी प्यारी दासी भी दे डाली। और तूने मेरे इस उपकार का बदला इस प्रकार दिया। भगवान तुझे तेरी इस दुष्टता के लिए कभी क्षमा नहीं करेगा। मैं भी कैसा नादान हूँ कि उस मछवाहे के कहने में आ गया।
सूएखाकान ने नूरुद्दीन को छह दिन तक ऐसे ही कष्ट में रखा। वह चाहता तो था कि नूरुद्दीन का प्राणांत हो जाए किंतु उसकी हिम्मत उसे अपने घर में मारने की नहीं हो रही थी, वह उसे हाकिम ही से मृत्युदंड दिलाना चाहता था। सातवें दिन उसने अच्छी-अच्छी चीजों की टोकरियाँ नौकरों के सिर पर लदवाईं और जुबैनी के सामने पेश कीं। उसने पूछा यह क्या है, तो सूएखाकान ने कुटिलतापूर्वक कहा, यह बसरे के नए हाकिम ने आप के पास भेजा है ताकि इनके बदले आप उसे बसरे का हाकिम बनाएँ। इससे जुबैनी को बड़ा गुस्सा आया। उसने कहा, वह अभी जिंदा है? मैंने समझा था कि तुमने उसे मार डाला होगा। मंत्री ने कहा, मुझे किसी को प्राणदंड देने का अधिकार नहीं है। जुबैनी ने कहा, मैं आज्ञा देता हूँ कि तुम उसकी गर्दन उतारो। कमबख्त मुझसे मजाक करता है? सूएखाकान ने कहा, आपकी आज्ञा सिर-आँखों पर किंतु मैं चाहता हूँ कि वह सर्वसाधारण के सामने मारा जाए, तभी मैं उससे उस सार्वजनिक अपमान का बदला लूँगा जो उसने किया है।
जुबैनी ने मान लिया। शहर में मुनादी की गई कि कल नूरुद्दीन की, जिसने मंत्री का खुलेआम अपमान किया था, अमुक स्थान पर गरदन काटी जाएगी। सुएखाकान उसे अत्यंत अपमानपूर्वक अंधे, बेजीन के घोड़े पर बिठा कर वधस्थल पर लाया। नूरुद्दीन ने कहा, बुड्ढे खबीस, तू मुझ निर्दोष को झूठ और छल से अपमानपूर्वक मरवा रहा है। मगर याद रखना कि भगवान निर्दोष व्यक्ति का खून बहानेवाले आदमी को कभी क्षमा नहीं करता। सूएखाकान दाँत पीस कर बोला, दुष्ट, तू इस तरह से मेरा सब लोगों के सामने अपमान कर रहा है? खैर, इसकी सजा क्या दी जाए। तुझे तो सबसे बड़ी सजा मिलनेवाली है।
नूरुद्दीन को महल से लगे एक बड़े मैदान में पहुँचा दिया गया जहाँ लोगों को आम जनता के सामने मारा जाता था। जल्लाद ने कहा, मुझे आपके पिता का जमाना याद है। मैं आपका सेवक हूँ किंतु इस समय मेरा कर्तव्य आपको मारना है। आपकी कुछ अंतिम इच्छा हो तो कहें। नूरुद्दीन ने कहा कि मुझे पानी पीना है। जल्लाद ने एक आदमी से पानी मँगाया और नूरुद्दीन पीने लगा।
सूएखाकान जल्लाद पर बिगड़ने लगा कि देर क्यों कर रहा है, तुरंत ही इसकी गरदन क्यों नहीं काट देता। जो लोग वहाँ मौजूद थे वे मंत्री की कठोरता पर

नूरुद्दीन ने खलीफा के सामने की भूमि को चूम कर कहा, सरकार, इसमें संदेह नहीं कि यह मेरा पुराना शत्रु है किंतु यह इतना बड़ा पापी है कि मैं इसके खून से अपने हाथ रँगना नहीं चाहता। आप मुझे इस बारे में माफी दें। खलीफा ने मुस्कुरा कर कहा, तुम सचमुच बड़े सुसंस्कृत आदमी हो। नहीं चाहते तो इसे न मारो। यह कह कर उसने जल्लाद को इशारा किया और जल्लाद ने तुरंत ही सूएखाकान का सिर उसके धड़ से अलग कर दिया। नूरुद्दीन को बसरा का हाकिम बनाने की बात पर वह बोला, सरकार, आप की बड़ी कृपा है किंतु मैं उस मनहूस शहर में नहीं जाना चाहता। मुझे अपने चरणों ही में रहने की अनुमति दीजिए।
खलीफा ने उसकी बात मान ली। उसे एक बड़ी जागीर और विशाल भवन दे कर अपना दरबारी बना लिया और हुस्न अफरोज को उसे दे दिया। खलीफा जुबैनी से भी नाराज था कि उसने पहली आज्ञा क्यों नहीं मानी। किंतु जाफर ने उसकी सिफारिश की कि इसी ने अंत समय में नूरुद्दीन की हत्या रुकवाई। अतएव खलीफा ने उसका पद उसे वापस दे दिया।
दुनियाजाद ने कहा, बहन, बहुत ही बढ़िया कहानी कही। तुम्हें तो बहुत अच्छी कहानियाँ आती हैं। कोई और कहानी कहो ना। बादशाह शहरयार ने भी अपने मौन द्वारा दुनियाजाद की बात का समर्थन किया और शहजाद ने अगली कहानी आरंभ कर दी।

ईरानी बादशाह बद्र और शमंदाल की शहजादी की कहानी

शहरजाद ने कहा कि बादशाह सलामत, ईरान बहुत बड़ा देश है। पुराने जमाने में वहाँ बड़े शक्तिशाली और प्रतापी नरेश हुआ करते थे और उन्हें शहंशाह यानी बादशाहों का बादशाह कहा जाता था। उसी काल का वहाँ का एक बादशाह बद्र था। उसके पास अपार धन- दौलत और सैनिक शक्ति थी। उसके सौ पत्नियाँ और हजारों दासियाँ थीं किंतु उसे बड़ा दुख था कि उसके कोई पुत्र नहीं था। दूर-दूर के व्यापारी उसके लिए सुंदर दासियाँ लाते। वह उनसे पुत्र प्राप्ति की इच्छा से भोग करता। अपने देश के सिद्धों और तांत्रिकों से भी इस बारे में सहायता करने को कहा, हजारों कँगलों को धन का दान करता कि किसी के आशीर्वाद से पुत्र प्राप्ति हो। किंतु कोई उपाय सफल नहीं हो सका था और बादशाह की चिंता का अंत नहीं था।

आशा है कि मेरे बेटा ही पैदा होगा। इस बीच मुझ से जो कुछ अविनय हुआ इसके लिए मैं क्षमा माँगती हूँ। अभी तक मैं इसलिए नहीं बोली थी कि जबर्दस्ती यहाँ लाए जाने से मुझे बड़ा क्रोध चढ़ा था किंतु अब मैं आपसे जान से प्यार करने लगी हूँ।
बादशाह इतनी बात सुन कर खुशी से पागल हो गया। उसने उसे खींच कर सीने से लगा लिया और कहा कि गर्भ रहने का समाचार दे कर तुमने मेरे सारे दुख दूर कर दिए। यह कह कर बाहर आया और मंत्री को यह शुभ सूचना दे कर कहा कि फौरन एक लाख अशर्फियाँ गरीबों और भिखारियों में बँटवा दो, मेरे राज्य में कोई दीन-दुखी न रहे। इसके बाद वह फिर उस सुंदरी के पास आ कर बोला, माफ करना, मैं तुम्हारे गर्भ धारण के समाचार से इतना प्रसन्न हुआ कि सार्वजनिक दान की घोषणा में विलंब न कर सका। अब तुम यह बताओ कि तुम्हें ऐसी क्या नाराजगी थी कि तुम साल भर तक मुझ से या किसी से भी नहीं बोलीं। वह बोली, कारण यह था कि भगवान ने मुझे आपके पास दासी रूप में भेजा और अपने देश से इतनी दूर कर दिया कि कभी वहाँ जा ही न सकूँ। विशेषतः अपने माँ-बाप, भाई-बंधु आदि का बिछोह मुझे सता रहा था। आप जानते हैं कि परतंत्र हो कर जीने में कोई आनंद नहीं, इससे तो मौत ही अच्छी। बादशाह ने कहा, तुम्हारी बात ठीक है लेकिन जब कोई स्त्री तुम्हारी जैसी सुंदर हो और मेरे जैसे व्यक्ति के हृदय में घर कर ले तो फिर उसे परेशान होने की क्या जरूरत है। सुंदरी ने कहा, आप ठीक कहते हैं। आपकी बड़ी कृपा है, किंतु दासी फिर भी दासी है।
बादशाह ने कहा, तुम्हारी बातों से मालूम होता है कि तुम किसी बड़े घराने की संतान हो। मुझे विस्तार से बताओ कि तुम कहाँ की हो और तुम्हारे माँ-बाप कौन हैं।
वह बोली, मेरा नाम गुल अनार आसीन है। मेरा पिता आसनी नामी समुद्र का राजा था। मरते समय उसने अपना राज्य मेरी माता और मेरे भाई सालेह को सौंप दिया। मेरी माँ भी किसी समुद्री राजा की बेटी थीं। हम तीनों आनंद से समय बिता रहे थे कि हमारे राज्य पर एक अन्य राजा ने चढ़ाई कर दी और हमारा राज्य छीन लिया। मेरा भाई उसका मुकाबला न कर सका और मुझे और माँ को ले कर चुपके से राज्य से निकल गया। सुरक्षित स्थान पर पहुँच कर वह बोला कि हम पर विपत्ति पड़ी है और हमारी दुर्दशा हो गई है, भगवान चाहेगा तो मैं दुबारा अपने राज्य पर कब्जा करूँगा किंतु मैं चाहता हूँ कि इससे पहले तुम्हारे विवाह से छुट्टी पा जाऊँ और चूँकि किसी जल राज्य का कोई शहजादा तुम्हारे लायक नहीं

किंतु मेरी प्रार्थना है कि मेरे साथ जैसे अब तक रानियों जैसा व्यवहार किया गया है आयंदा भी वैसा ही किया जाता रहे।
बादशाह ने कहा, तुम्हारा सुंदर मुख देख कर ही मैं तुम्हारा दीवाना हो गया था, अब तुम्हारी सुमधुर बातें सुन कर और भी हो गया हूँ। यह सुन कर मेरी प्रसन्नता का ठिकाना न रहा कि तुम भी एक शहजादी हो। इससे पहले तुम समुद्र के एक देश की राजकुमारी थी और आज से तुम ईरान की मलिका हो। मैं आज ही दरबार में इस बात की घोषणा करूँगा और सारे देश में मुनादी करवा दूँगा। मैं अभी तक तुम से जितना प्यार करता था आगे उससे भी अधिक करूँगा। तुम भी मेरे अलावा किसी और आदमी का ध्यान भी न करना। लेकिन एक बात बताओ। तुमने कहा कि तुम जल की निवासिनी हो। मेरी समझ में यह नहीं आया कि तुम लोग पानी में डूबते क्यों नहीं हो। सुना तो पहले भी था कि जल के अंदर भी मनुष्य रहते हैं किंतु इस बात पर विश्वास नहीं कर सकता था। अब तुमने खुद कहा कि मैं जल की निवासिनी हूँ तो विश्वास करना पड़ा लेकिन समझ में अब तक नहीं आया कि यह बात संभव किस तरह है। आदमी किस तरह पानी के अंदर रह सकता है और किस तरह वहाँ काम-काज कर सकता है?
गुल अनार ने कहा, 'देखिए, पानी कितना ही गहरा हो किंतु आप उसकी तह तक देख सकते हैं। जैसे निगाह पर पानी रोक नहीं लगाता उसी प्रकार कुछ लोग पानी के अंदर रहते भी हैं। वैसे तो समुद्र के नीचे जहाँ हम लोग रहते हैं रात-दिन के बीच कोई अंतर नहीं दिखाई देता किंतु हम लोग पानी के अंदर से भी आसमान में चलनेवाले सूर्य तथा चंद्रमा और तारों को देख सकते हैं। जैसे धरती पर कई देश हैं और कई नगर बसे हुए हैं वैसे ही समुद्र की तलहटी में कई देश बसे हुए हैं जो अलग-अलग बादशाह के अंतर्गत हैं। बल्कि सच तो यह है कि पृथ्वी के ऊपर जितने देश हैं उसके तिगुने देश जल के नीचे आबाद हैं। यहाँ की तरह ही वहाँ भी मनुष्यों की कई जातियाँ हैं। हम लोगों के अच्छे-अच्छे भवन और राजमहल बड़े भव्य होते हैं। वे संगमरमर के बने होते हैं और उनकी दीवारों और छतों में सीप, मोती और मूँगे ही नहीं, तरह-तरह के बिल्लौर और रत्नादि जड़े होते हैं। पानी में पृथ्वी से अधिक रत्न पाए जाते हैं और मोती तो इतने बड़े होते हैं जिनकी आप कल्पना भी नहीं कर सकते और न मैं आप को ठीक तरह बता ही सकती हूँ।
'जल निवासियों में हर व्यक्ति अपने लिए सुंदर भव्य महल बना लेता है। वहाँ आने-जाने के लिए गाड़ियों की जरूरत नहीं पड़ती, हर आदमी जितनी दूर चाहे

बगैर थके जा सकता है। आम आदमी घोड़ा भी नहीं रखते, सिर्फ बादशाह लोग शोभायात्रा के लिए अपनी घुड़सालों में दरियाई घोड़े रखते हैं। जब वे जुलूस में निकलते हैं या कहीं तमाशा देखने जाते हैं तो इन दरियाई घोड़ों को विशेष रूप से बनाई हुई गाड़ियों में जोत देते हैं। गाड़ियाँ इतनी आरामदेह होती हैं और घोड़े इतने होशियार होते हैं कि सवार का शरीर भी नहीं हिलता और घोड़े इशारे भर से चलते हैं। हमारे देश की स्त्रियाँ बड़ी सुंदर, चतुर और पतिपरायण होती है।'
यह कह कर गुल अनार बोली, स्वामी, यदि आज्ञा हो तो मैं अपने भाई और माता को यहाँ बुला लूँ ताकि वे खुद अपनी आँखों से देखें कि उनकी बेटी अब ईरान की मलिका बन गई है। बादशाह ने कहा, मुझे उनका स्वागत करने में अति प्रसन्नता होगी किंतु मेरी यह समझ में नहीं आता कि तुम उन्हें कैसे बुलाओगी। तुम्हें तो यह भी नहीं मालूम कि तुम्हारे देश को कौन सा रास्ता जाता है। गुल अनार बोली, वह सब मुझ पर छोड़िए। आप सिर्फ कुछ देर के लिए बगलवाले भवन में बैठें और तमाशा देखें।
मलिका गुल अनार ने अपनी दासी से आग मँगवाई फिर उसने कहा, तू बाहर जा और कमरे का द्वार बंद कर दे और जब तक मैं न बुलाऊँ यहाँ न आना। दासी के जाने पर उसने एक संदूकचे से एक चंदन का टुकड़ा निकाल कर आग पर डाल दिया और जब उसमें से धुआँ उठने लगा तो वह कोई मंत्र पढ़ने लगी। बादशाह उस मंत्र के शब्द बिल्कुल न समझ सका और आश्चर्यपूर्वक मलिका की ओर देखता रहा। मंत्र ज्यों ही समाप्त हुआ कि समुद्र की सतह ऊँची होने लगा और समुद्र बढ़ते-बढ़ते राजमहल से जा लगा। कुछ देर बाद समुद्र का पानी फट गया और उसमें से एक सुंदर युवक निकला। उसकी मूँछें पानी की तरह हरी थीं। फिर एक शालीन प्रौढ़ महिला निकली जिसके पीछे पाँच सुंदर युवतियाँ थीं।
गुल अनार ने पानी के किनारे खड़े हो कर उन सब का अभिवादन किया। दो-चार क्षणों में वे लोग किनारे आ गए। युवक का नाम सुल्तान सालेह था और वह मलिका गुल अनार का भाई था। प्रौढ़ स्त्री गुल अनार की माँ थी। किनारे पर आ कर सालेह तथा उसकी माँ ने गुल अनार को गले लगाया और उसके मिलने पर आनंद के आँसू बहाए। गुल अनार ने अपने भाई, माँ और उनके साथ आए लोगों का यथोचित आदर-सत्कार किया। उसकी माँ ने कहा, बेटी, तुम्हारे वियोग में हम पर जो कष्ट पड़ा उसके वर्णन के लिए मेरे पास शब्द नहीं है। तुम्हारे भाई ने मुझे बताया था कि तुम किसी बात पर रूठ कर घर से निकल गई थीं। हम लोग तो बराबर

तुम्हारे लिए रोते रहे। अब तुम बताओ कि तुम इस बीच कहाँ-कहाँ रहीं और तुम पर क्या बीती और यहाँ किस तरह पहुँचीं।
यह सुन कर गुल अनार अपनी माँ के चरणों पर गिर पड़ी। फिर कुछ देर बाद सिर उठा कर बोली, वास्तव में मुझ से बड़ा भारी अपराध हुआ जो आप लोगों को इस प्रकार छोड़ कर चली आई। मुझ पर बड़ी-बड़ी विपत्तियाँ पड़ीं किंतु अंत में मैं इस सुखद स्थान पर पहुँच गई। यहाँ आ कर मुझे मालूम हुआ कि स्थल के बादशाह भी जल देशों के बादशाहों की तरह होते हैं। अब सालेह ने कहा, प्यारी बहन, जो हुआ सो हुआ। अब तुम हमारे साथ अपने देश को चलो। हम लोग तुम्हें अपने बीच पा कर आनंद से रहेंगे।
ईरान के बादशाह पास ही के एक स्थान से सब कुछ देख-सुन रहा था। वह मन में घबराने लगा कि अगर यह लोग मलिका को ले गए तो मैं तो जीते जी मर जाऊँगा क्योंकि मैं गुल अनार का बिछोह सहन नहीं कर सकता। लेकिन गुल अनार की बातों से उसे धैर्य हुआ। वह बोली, अब मैं यहाँ से कहीं नहीं जा सकती। एक तो यहाँ के बादशाह ने मुझे दस हजार अशर्फियों में खरीदा है, दूसरे उससे मुझे चार महीने का गर्भ है। उसके भाई और माँ ने फिर कुछ नहीं कहा।
गुल अनार ने दासियों को आवाज दे कर सारे मेहमानों के लिए नाना प्रकार के भोजन परसवा दिए। उसने उनसे भोजन करने के लिए कहा। किंतु इस पर उनके चेहरे लाल हो गए और मुँह और नथुनों से आग की लपटें निकलने लगीं। उन्होंने कहा, यह ठीक है कि तुम्हारा पति बादशाह हैं, किंतु क्या हम लोग इतने नीचे हैं कि वह हमारे साथ भोजन भी न करें। बादशाह कुछ दूर बैठा था। उनकी बात तो न सुन सका किंतु उनके मुँह और नथुनों से लपटें निकलते देख कर घबराया। गुल अनार ने उसके पास आ कर कहा, वे लोग चाहते हैं कि आप ही के साथ भोजन करें। अब यही उचित है कि आप उन लोगों के पास चलें और सब से यथायोग्य भेंट करें और सबके साथ भोजन करें। बादशाह ने कहा, मुझे इसमें क्या आपत्ति हो सकती है किंतु उनके मुँह और नथुनों से तो आग निकलती है। गुल अनार हँस कर बोली, आप चिंता न करें। इस समय वे सोच रहे हैं कि आपने स्वयं न आ कर उनका अपमान किया है। वे लोग क्रोध में आते हैं तो उनके मुँह और नथुनों से आग निकलने लगती हैं। आप चलेंगे तो उनका क्रोध दूर हो जाएगा। मेरे भाई और माँ का कहना है कि मैं उनके साथ देश चलूँ। किंतु मैं आपके प्रेम में इतनी फँसी हूँ कि आप को छोड़ कर नहीं जा सकती। बादशाह यह सुन कर बड़ा प्रसन्न हुआ और कहने लगा, मैं तुम्हारे जाने की बात से बड़ा दुखी था, अब तुम्हारी बात से मुझे ढाँढ़स

मिला। मैं तुम्हारी माता और भाई से मिलने अभी चलता हूँ। उन्हें मुझ से कोई शिकायत नहीं रहेगी।
यह कह कर बादशाह गुल अनार के साथ उस मकान में गया जहाँ उसकी सास और साला मौजूद थे। उन लोगों ने बादशाह को देखा तो पृथ्वी से अपने सिरों को लगा कर नमन किया। बादशाह ने उनको एक-एक कर के उठाया और गले लगाया। फिर सब लोग बैठ कर प्रसन्नतापूर्वक बातें करने लगे। सालेह ने कहा, हम सब भगवान को बड़ा धन्यवाद देते हैं कि हमारी बहन बड़े कष्ट उठाने के बाद आप की छत्र छाया में आई और यहाँ बहुत ही प्रसन्न है। भगवान आपको चिरायु करे। बादशाह ने भी अभ्यागतों के स्वागतार्थ विनीत वचन कहे और सब लोग काफी देर तक सानंद बातचीत करते रहें।
रात पड़ने पर बादशाह ने भोजन लाने की आज्ञा दी। सब के साथ भोजन करने के बाद उसने पास के मकान में मेहमानों के लिए कोमल सुखदायी शैय्याएँ बिछवाईं और उनसे आराम करने को कहा। वह स्वयं गुल अनार को साथ ले कर अपने शयन कक्ष में चला गया। कुछ दिन बाद अतिथियों ने जाना चाहा तो बादशाह ने उन्हें आग्रहपूर्वक रोका कि गुल अनार के प्रसव तक तो रुक ही जाओ। वे लोग भी इस बात को सहर्ष मान गए और ईरान का सम्राट रोजाना उनके लिए नए-नए मनोरंजन प्रस्तुत करवाता रहा।
समय आने पर एक दिन गुल अनार प्रसव-पीड़ा से छटपटाने लगी। दूसरे दिन उसने एक पुत्र को जन्म दिया। यह पुत्र सुंदरता में चंद्रमा के तुल्य था इसलिए उसका नाम बद्र (चंद्रमा) रखा गया। गुल अनार की माँ ने अपने देश के अनुसार भी रस्में कीं और यहाँ के रिवाज के अनुसार छठी का भारी जोड़ा भी दिया। ईरान के सम्राट ने सार्वजनिक उत्सव की आज्ञा दी और देश के सभी निवासियों ने अपने- अपने घरों में राग-रंग का आयोजन किया।
शाही महल में जो उत्सव हुए उनका तो वर्णन ही असंभव है। बादशाह ने खजाने का मुँह खोल दिया और दीन-दुखियों को दान तथा सैनिकों, विद्वानों, कलाविदों आदि को भरपूर पारितोषिक दिए गए।
जब सौर गृहवास के दिन पूरे हो गए तो मलिका गुल अनार को स्नान करवाया गया और बादशाह, सुल्तान सालेह, उसकी माता तथा अन्य संबंधी नवयौवनाएँ बच्चे को देखने के लिए आए। सभी ने उसे उठा कर चूमा और तरह-तरह से प्यार-दुलार किया। सब के बाद सालेह बच्चे की दाई के पास गया और उसकी गोद से बच्चे को ले कर काफी देर तक इधर-उधर टहलता रहा। जब सब लोग इधर-उधर की बातों में लगे थे तो

सालेह चुपचाप कमरे के दरवाजों से बाहर निकला और तेजी से समुद्रतट की ओर चला। सब लोग तो इत्मीनान से रहे किंतु बादशाह घबराने लगा। सालेह तेजी से समुद्र तट पर पहुँचा और एक ऊँची जगह से झम से समुद्र में कूद पड़ा। बादशाह यह देख कर हाय-हाय करने लगा और सिर पीटने लगा। मलिका गुल अनार ने हँस कर उसे धैर्य दिया, बादशाह सलामत, आप परेशान न हों। बच्चे को कुछ भी नहीं होगा। आप देखते तो जाइए। आप उसके पिता हैं तो मैं भी उसकी माँ हूँ, मैं तो कुछ भी चिंता नहीं कर रही।
बादशाह ने पूछा, लेकिन तुम्हारे भाई को यह क्या सूझी? उसने ऐसा क्यों किया? गुल अनार ने कहा, उन्होंने इसलिए यह किया कि बच्चे को हम लोगों की तरह जल और स्थल दोनों में रहने की आदत हो जाय। उसकी माँ तथा अन्य संबंधियों ने भी बादशाह को ऐसे आश्वासन दिए तो उसका चित्त स्थिर हुआ।
कुछ देर बाद समुद्र की सतह पर फिर उथल-पुथल होने लगी और सालेह बद्र को गोद में लिए हुए जल-तरंगों से बाहर आया। फिर वह हवा में उड़ता हुआ महल में आया जहाँ बादशाह और दूसरे लोग बैठे थे। बादशाह को यह देख कर ताज्जुब हुआ कि बच्चा अपने मामा की गोद में सो रहा है। सालेह ने बादशाह से कहा, सरकार, जब मैं आपके बच्चे को ले कर समुद्र में गया था तो आपको डर तो नहीं लगा था? बादशाह ने कहा, भाई, क्या पूछते हो। मेरी तो जान ही निकल गई थी। अब उसे सही- सलामत देख कर मुझे ऐसा लग रहा है जैसे मुझे नए सिरे से जीवन मिला है। सालेह ने कहा, बच्चे को कुछ हो ही नहीं सकता था। मैंने समुद्र में पैठने के पहले हजरत सुलैमान की अँगूठी पर खुदा महामंत्र इस्मे-आजम पढ़ लिया था। हमारे यहाँ की यह रीति हे कि हम लोगों की नस्ल में कोई बच्चा अगर पृथ्वी पर पैदा होता है तो हम इस्मे-आजम की शक्ति के बल पर उसे जल के अंदर ले जाते हैं। वही मैंने किया। यह कह कर उसने बच्चे को दाई की गोद में दे दिया।
फिर उसने अपने वस्त्रों से एक छोटा संदूकचा निकाला। उसमें से सौ हीरे, जो कबूतर के अंडों के बराबर थे, निकाले। इसके अलावा सौ लाल और नीलम जिनमें प्रत्येक लगभग आधी छटाँक का था निकाले और तीस हार भी नीलम के निकाले और उन्हें बादशाह को दे कर कहा, हमें मालूम न था कि मेरी बहन कितने ऐश्वर्यवान बादशाह को ब्याही है। हमारी यह तुच्छ भेंट स्वीकार करें।
ईरान का बादशाह उन रत्नों को देख कर आश्चर्य में पड़ गया। उनमें दो इतने बड़े थे कि समस्त पृथ्वी पर कहीं न होंगे। उसने हर्षपूर्वक इस भेंट को आँखों से लगाया और सालेह से कहा, भाई, मैं तुम्हारी विनयशीलता से अति

अधिक सुंदर हो। तुमने मेरे हृदय पर अधिकार कर लिया है। लेकिन मैं कहाँ जाऊँ कि तुम मुझे मिलो। सालेह को इससे अधिक सुनने का धैर्य न रहा। वह आगे बढ़ कर बद्र के पास जा बैठा और बोला, इसका मतलब यह है कि तुमने हम-भाई बहन की बातें सुन ली हैं। हमने तो इस बात का ध्यान रखा था कि तुम्हें कुछ न मालूम हो लेकिन हम लोगों की होशियारी कुछ काम नहीं आई।
बद्र ने कहा, जो कुछ होना था वह तो हो ही गया। अब सोचिए कि आगे क्या होना है। यदि आप चाहते हैं कि मैं जीवित रहूँ तो मेरे विवाह का संदेशा ले कर जाएँ और उसके पिता को राजी करें। सालेह ने उसे दिलासा देते हुए कहा, तुम अब अपने नगर को जाओ। मैं अभी समंदाल देश जाता हूँ और तुम्हारे विवाह की बात वहाँ के बादशाह से चलाता हूँ। बद्र बोला, नहीं मामाजी, आप मुझे बहला रहे हैं। अगर आप को वास्तव में मेरे प्राणों की चिंता होती तो ऐसी दशा में मुझे अकेला नहीं छोड़ते। अगर आप को वास्तव में मुझसे प्रेम है तो मुझे भी अपने साथ ले चलें। सालेह ने कहा, भाई, कैसी बातें करते हो? तुम्हें तुम्हारी माँ की अनुमति के बगैर मैं किस तरह ले जा सकता हूँ?
बद्र ने कहा, फिर तो हो चुका। आप अच्छी तरह जानते हैं कि मेरी माँ मुझे प्राणों से भी अधिक चाहती हैं। वे मुझे कभी आपके साथ जाने नहीं देंगी। सालेह अजीब चक्कर में पड़ा कि किस तरह वह इस स्थिति से निकले। उसने कुछ देर सोच कर कहा, मैं तुम्हें अपने साथ तो नहीं ले जा सकता किंतु यह अँगूठी देता हूँ जिस पर इस्मे-आजम (चमत्कारी महामंत्र) खुदा है। इसे पहन कर निःशंक पानी में घुस जाना, तुम्हें कुछ नहीं होगा। बद्र ने अँगूठी पहन ली। सालेह ने कहा, अब तुम्हारे हाथ में चमत्कारी अँगूठी है और जो कुछ मैं कर सकता हूँ वह सब तुम कर सकते हो। तुम मेरे पीछे-पीछे आओ। यह कह कर वह हवा में उड़ने लगा। बद्र भी उसके पीछे उड़ता हुआ समुद्र तट पर पहुँचा। फिर वह अपने मामा के पीछे समुद्र में गोता लगा गया और दोनों तेजी से चलते हुए सालेह के राज्य में पहुँच गए। बद्र को सालेह अपनी माँ के पास ले गया।
बद्र ने आदरपूर्वक नानी के हाथ चूमे और वह भी उसे देख कर बड़ी प्रसन्न हुई और आशीर्वाद देने लगी और उसे खूब प्यार करने लगी। उसने परिवार की अन्य स्त्रियों से भी मिलवाया और सब लोग बहुत देर तक बातें करते रहे।
इस बीच सालेह ने अवकाश पा कर अपनी माँ से बद्र का सारा हाल बताया कि वह किस प्रकार समंदाल देश की शहजादी के पीछे पागल हो गया है। उसने कहा कि अब तुम बद्र को रखना, मैं समंदाल के बादशाह से बद्र के लिए जवाहर को माँगने जा रहा

प्रसन्नतापूर्वक भेंट को स्वीकार किया। फिर सालेह ने कहा, हम दोनों के देशों में जो परंपरागत मैत्री रही है और जिस प्रकार आप जैसे प्रतापी नरेश की दया हम लोगों पर रही है उसी से प्रोत्साहित हो कर में आपसे अपने हृदय की बात कहने के लिए आया हूँ। आप का मन अति स्वच्छ है और आप किसी की प्रार्थना नहीं टालते इसीलिए मैं निवेदन कर रहा हूँ कि मेरी बहन का नाम गुल अनार है। बहुत दिन पूर्व उसका विवाह ईरान के सम्राट के साथ हुआ था। उसका एक बेटा है जो इस समय ईरान का सम्राट है। वह न केवल अतीव सुंदर है अपितु प्रत्येक प्रकार की विद्याओं और कलाओं में भी निपुण है। वह पंद्रह वर्ष की अवस्था से राज-काज देख रहा है। अब वह विवाह योग्य हो गया है। मेरी आप से सविनय प्रार्थना है कि आप उसे अपने दासत्व के लिए स्वीकार करें और अपनी अद्वितीय पुत्री जवाहर का विवाह मेरे भानजे बद्र के साथ कर दें।
समंदाल देश का राजा अभी तक तो बड़ा शालीन रहा था किंतु यह सुनते ही उसका चेहरा और आँखें लाल हो गईं। सालेह का हृदय काँपने लगा। कुछ क्षणों के उपरांत समंदाल नरेश ने कहा, सालेह, मैं समझता था कि तुम बड़े समझदार आदमी हो। लेकिन आज मालूम हुआ कि तुममें बिल्कुल बुद्धि नहीं है। मैंने सौजन्य के नाते तुम्हारी अभ्यर्थना अवश्य की किंतु इसका यह अर्थ तो नहीं है कि तुम्हें अपनी बराबरी की हैसियत दे दूँ। क्या तुम नहीं जानते कि मेरा ऐश्वर्य और वैभव कितना अधिक है? क्या तुम नहीं जानते कि तुम्हारा राज्य मेरे राज्य के सामने अति तुच्छ है? तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई कि मेरी पुत्री जवाहर का नाम अपनी जुबान से निकालो। तुम्हारी मौत तो तुम्हें यहाँ नहीं खींच लाई है?
सालेह ने घबरा कर कहा, शायद आपने मेरी बातों का अर्थ ठीक नहीं समझा। मैं बूढ़ा आदमी हूँ। मैं अपने लिए जवाहर को नहीं माँग रहा। मैं तो यह कह रहा हूँ कि आप अपनी पुत्री का विवाह मेरे भानजे यानी ईरान के सम्राट बद्र के साथ कर दीजिए।
समंदाल का बादशाह यह सुन कर और क्रुद्ध हुआ और आपे से बाहर हो कर कहने लगा, तूने यह कह कर मेरा और अपमान किया है। कमबख्त, तू समझता है तेरे भानजे की कोई बराबरी मेरी बेटी से हो सकती है? तेरा भानजा क्या चीज है। यह कह कर उसने अपने सिपाहियों को आज्ञा दी कि सालेह को पकड़ कर उसका सिर काट लें। सालेह इस स्थिति को पहले ही से भाँपे हुए था। उसके कुछ सेवक बादशाह का

गुल अनार यह सुन कर रोने लगी। वह अपने भाई को बुरा-भला भी कहने लगी कि अच्छी शहजादी का जिक्र किया कि लड़के का दिमाग ही फिर गया। उसकी माँ ने कहा, इसमें संदेह नहीं कि सालेह को चाहिए था कि जवाहर का उल्लेख तुमसे करते समय सावधानी बरतता कि बद्र को यह मालूम न हो पाता। किंतु अब तुम चिंता न करो। वह बद्र को जरूर ढूँढ़ निकालेगा। तुम्हारे लिए यही उचित है कि ईरान जा कर राज्य प्रबंध सँभालो वरना वहाँ कोई उपद्रवी व्यक्ति गड़बड़ी कर सकता है। गुल अनार ने माँ की सलाह मान ली और ईरान वापस आ गई। ईरान आ कर उसने एक और समझदारी का काम किया। उसने राजधानी में घोषणा करवा दी कि बद्र का हालचाल मालूम हो गया है, वह सकुशल है और शीघ्र ही यहाँ वापस आएगा। सभी लोग इस बात को सुन कर प्रसन्न हुए और यथानियम अपना-अपना काम मुस्तैदी से करने लगे।
अब बादशाह बद्र का हाल सुनिए। जब दासी उसे पक्षी के रूप में पृथ्वी के एक टापू पर छोड़ आई तो वह अपने को पक्षी के शरीर में देख कर बड़ा आश्चर्यान्वित हुआ। उसे मालूम भी न था कि ईरान किधर है और उसके पंखों में इतनी शक्ति भी न थी कि उड़ कर किसी दूर देश को जाता। और ईरान पहुँच भी जाता तो क्या लाभ था, उसे पक्षी के रूप में कौन पहचान पाता। मजबूरी में उस द्वीप के फल और दाने खाता रहता और रात को किसी डाल पर बैठ कर सो जाता। कुछ दिन बाद एक चिड़ीमार जाल ले कर वहाँ आया और उसे देख कर आश्चर्य करने लगा। उसने इतना सुंदर पक्षी कभी नहीं देखा था। उसने जाल बिछाया और अन्य पक्षियों के साथ बद्र को भी पकड़ लिया और नगर में आ कर बाजार में पक्षियों को बेचने के लिए बैठ गया।
कई लोगों ने उस लाल रंग के पक्षी का दाम पूछा। चिड़ीमार ने कहा, यह तुम लोगों के काम का नहीं है। तुम इस का क्या करोगो? भून कर खाने के लिए ही तो खरीद रहे हो। इसका क्या दोगे? दो-चार आने या हद से हद एक रुपया। तुम दूसरे पक्षी ले लो। इसे तो मैं यहाँ के बादशाह को भेंट दूँगा। वह इसकी कद्र करेगा और मुझे अच्छा इनाम देगा। उस बहेलिए ने ऐसा ही किया। वह पक्षी को ले कर राजमहल की ओर गया। संयोग से उस समय बादशाह महल के छज्जे पर बैठा हुआ बाजार का तमाशा देख रहा था। उसने बहेलिए के पिंजरे में वह सुंदर पक्षी देखा तो सेवकों द्वारा बहेलिए को बुलाया। बहेलिया आया तो बादशाह ने पूछा, इस पक्षी को कितने में बेचोगे? बहेलिए ने भूमि चूम कर कहा, पृथ्वीपाल, मैं इसे बेचने

बादशाह ने खुशी से मंजूर कर लिया। उसने अपने सेवकों को आज्ञा दी कि बद्र को ईरान वापस ले जाने के लिए एक बढ़िया जहाज सजाया जाए। ऐसा ही किया गया और बादशाह से धन्यवादपूर्वक विदा ले कर बद्र ने ईरान के लिए यात्रा शुरू कर दी। दस दिन तक जहाज आराम से चलता रहा लेकिन ग्यारहवें दिन मुसीबत खड़ी हो गई। समुद्र में एक प्रचंड तूफान आया। साथ ही हवा का रुख भी बदल गया। जिससे जहाज अपने रास्ते से भटक गया। कुछ ही देर में जहाज के सारे मस्तूल टूट गए और जहाज काग की तरह लहरों पर उछलने लगा। देखते ही देखते उसका तला एक जलगत चट्टान से टकराया और जहाज टुकड़े-टुकड़े हो गया। औरों का मालूम नहीं क्या हुआ किंतु बद्र एक तख्ते के सहारे तैरता हुआ कुछ घंटों में भूमि पर जा लगा। यह एक द्वीप था जिसमें समुद्रतट पर एक ओर पहाड़ था और दूसरी ओर दूर पर एक नगर दिखाई दे रहा था। बद्र जल से निकल कर भूमि पर आया और आराम करने के लिए लेट गया।
किंतु तुरंत ही घोड़े, गाएँ और बहुत-से दूसरे जानवर आ कर शोर करने लगे और उसे समुद्र की ओर ढकेलने लगे। वह किसी तरह उनसे बच कर एक पहाड़ की खोह में जा छुपा और कुछ देर आराम करने के बाद और कपड़े सुखाने के बाद नगर में जाने के लिए उद्यत हुआ किंतु वे जानवर फिर आ गए और चिल्ला-चिल्ला कर उसका रास्ता रोकने लगे। वह किसी तरह उनसे बचता-बचाता नगर में प्रविष्ट हो गया। वहाँ उसे यह देख कर आश्चर्य हुआ कि सड़कों आदि पर सफाई आदि खूब है किंतु दुकानदार कम ही हैं। काफी देर बाद उसे एक दुकान में एक बूढ़ा दिखाई दिया जो वहाँ रखे फलों को पोंछ- पोंछ कर साफ कर रहा था। बद्र ने पास जा कर उसे सलाम किया। उसने बद्र को देखा तो उसके रूप से बहुत प्रभावित हुआ। फिर उसके सलाम का जवाब दे कर उसने पूछा, तुम कौन हो? कहाँ से आए हो? बद्र ने संक्षेप में अपना परिचय दिया। इसके बाद बूढ़े ने पूछा, मेरे अलावा तुम्हें और किसी ने तो यहाँ नहीं देखा? बद्र ने कहा, नहीं, आपके सिवा किसी मनुष्य को मैंने यहाँ पर पास से नहीं देखा। मुझे बड़ा आश्चर्य है कि ऐसा स्वच्छ और सुंदर नगर ऐसा वीरान क्यों हैं। बूढ़ा बोला, अच्छा, अच्छा, तुम बाहर खड़े न रहो, अंदर आ जाओ।
बद्र अंदर गया तो बूढ़ा बोला, यह बड़ा अच्छा हुआ कि अभी तक तुम्हें किसी ने नहीं देखा है। इस नगर की बड़ी विचित्र कथा है। किंतु तुम भूखे-प्यासे मालूम होते हो, पहले खाना खाओ फिर मैं यहाँ की बातें तुम्हें बताऊँगा। बद्र खा-पी कर तृप्त हुआ तो वृद्ध ने कहना शुरू किया, देखो बादशाह बद्र,

यहाँ पर तुम्हें बहुत होशियारी से रहना है, यह जादू नगरी है। यहाँ की शासिका एक स्त्री है। वह अत्यंत रूपवती है और साथ ही मंत्र विद्या में निपुण। वह बड़ी विलासिनी भी है। तुमने देखा होगा कि नगर के बाहर समुद्र तट पर बहुत-से जानवर हैं जो हर एक को रोकने की कोशिश करते हैं कि वह इस शहर में प्रवेश न करे। वे सब पहले तुम्हारी तरह मनुष्य थे। यहाँ की मलिका ने उन्हें अपने मंत्र बल से पशु बना रखा है।
बद्र को आश्चर्य हुआ। उसने पूछा, मलिका आदमी को जानवर क्यों बना देती है? बूढ़े ने कहा, मैंने तुम्हें बताया न कि मलिका बड़ी विलासप्रिय है। जब कोई तरुण सुंदर पुरुष उसे दिखाई देता है तो वह उसे पकड़वा मँगाती है। मैंने इसीलिए तुमसे पूछा था कि तुम्हें किसी ने देखा तो नहीं। वह उसका बड़ा आदर-सत्कार करती है और उसके साथ भोग-विलास करती है। कुछ दिनों में जब उसका जी उस आदमी से भर जाता है और जब उसके जाल में कोई और रूपवान पुरुष आ जाता है तो वह इस पहले आदमी को बैल, घोड़ा या कोई और जानवर बना कर छोड़ देती है। ताकि उसका भेद किसी पर प्रकट न हो। यह सब बेचारे जानवर किसी समय उसके प्रेमपात्र रह चुके हैं। जब भी कोई दुर्भाग्य का मारा सुंदर जवान आदमी इस नगर में आना चाहता है तो वे शोर मचा कर उसे रोकने की कोशिश करते हैं। वे बेचारे कोई भाषा तो बोल नहीं पाते कि अपनी दुर्दशा का पूरा हाल कहें। सिर्फ चिल्ला-चिल्ला कर यही कहना चाहते हैं कि वापस चले जाओ, इस मनहूस शहर के अंदर न आना वरना तुम्हारी हालत भी हमारे जैसी हो जाएगी। लेकिन आनेवाला उनके अभिप्राय को समझने में असमर्थ रहता है और उनके शोरगुल को अनसुना कर नगर में चला जाता है और रानी के जाल में फँस कर कुछ दिनों बाद पशु बन कर उन पशुओं में जा मिलता है।
बद्र यह सुन कर बहुत घबराया और कहने लगा, हे ईश्वर, यह कैसा अन्याय है। मैं अभी-अभी एक जादूगरनी के जादू से छूटा हूँ और दूसरी के देश में आ फँसा हूँ। बूढ़े के पूछने पर उसने विस्तार में जवाहर द्वारा अपने पक्षी बनाए जाने और अज्ञात द्वीप की रानी द्वारा फिर से मनुष्य बनाए जाने की कहानी कही। बूढ़े ने कहा, इसमें संदेह नहीं कि तुम बड़े खराब देश में आ फँसे हो लेकिन तुम्हारा भाग्य प्रबल था कि तुम सब से पहले मुझ से मिले। अब तुम इसी दुकान में रह कर काम करो। मुझे यहाँ का हर एक व्यक्ति जानता है, तुम्हें यहाँ रहने में कोई कष्ट न होगा किंतु खबरदार किसी और से मेल-जोल नहीं बढ़ाना वरना मुसीबत में फँस सकते हो।

अत्यंत भव्य परिधान पहने हुए रानी सवार थी। सभी दासियों ने भी झुक-झुक कर वृद्ध को प्रणाम किया। जब मलिका की सवारी दुकान के सामने आई तो उसकी नजर बद्र पर पड़ी। वह उसे देखते ही उस पर मर-मिटी और उसने दुकान के मालिक बूढ़े को आवाज दी।
बूढ़ा बाहर निकला और उसने मलिका के घोड़े की रकाब चूमी। मलिका ने पूछा, यह सुंदर युवक, जो तुम्हारी दुकान पर बैठा है, कौन है? क्या यह तुम्हारा नौकर है? वृद्ध ने सिर झुका कर कहा, सरकार, यह मेरा भतीजा है। कुछ दिन पहले इसका पिता यानी मेरा भाई मर गया। मेरे कोई औलाद नहीं थी इसलिए इस लड़के को गोद ले लिया है। ताकि मेरा बुढ़ापा भी आराम से गुजरे और मरने के बाद मेरा नामलेवा भी कोई रहे। मलिका तो बद्र के रूप को देख कर दीवानी हो रही थी। उसका पूरा इरादा हो गया कि उसको अपने शयनकक्ष में ले जा कर आनंद करे। उसने बूढ़े से कहा, बड़े मियाँ, मैं तुमसे प्रार्थना करती हूँ कि अपना भतीजा मुझे दे दो। हम लोगों के देवता अग्नि और प्रकाश हैं। मैं उनकी सौगंध खा कर कहती हँ कि मेरे यहाँ इसे किसी प्रकार का कष्ट नहीं होगा। तुम मुझे हमेशा से मानते रहे हो और मुझे विश्वास है कि तुम मेरी इस प्रार्थना को न ठुकराओगे। अगर तुमने अपना भतीजा मुझे दे दिया तो मैं जन्म भर तुम्हारा अहसान मानूँगी।
अब्दुल्ला यानी उक्त वृद्ध ने उसके विनय के पीछे छुपी हुई धमकी साफ-साफ महसूस की और चाहा कि किसी बहाने से बद्र को मलिका के चंगुल से बचाए। उसने कहा, सरकार, यह तो आपकी असीम कृपा है कि मेरे भतीजे को अपने पास रख कर उसी का नहीं मेरा भी अपूर्व सम्मान किया। किंतु यह बड़ा अनाड़ी लड़का है। अभी गाँव से आया। इस राजमहल के तो क्या सभ्य नागरिकों के भी तौर-तरीके नहीं जानता। इसलिए अभी इसे कुछ दिन मेरे पास ही रहने दीजिए। महिला ने कहा, तुम इस बात की चिंता न करो। मैं इसे एक दिन ही में सारे तौर-तरीके सिखा दूँगी। अब तुम इस मामले में टालमटोल बिल्कुल न करो। मैं कहे देती हूँ कि जब तक तुम इस युवक को मेरे हाथों में न सौंप दोगे मैं यहाँ से नहीं हटूँगी। मैं इसे ले कर ही जाऊँगी। मैं फिर अपने देवताओं अग्नि और प्रकाश की सौगंध खाती हूँ कि इसे किसी प्रकार का कष्ट नहीं दिया जाएगा और तुम भी इस बात पर कभी पश्चात्ताप न करोगे कि तुमने अपने भतीजे को मुझे सौंपा।
अब बूढ़े ने सोचा कि जिद करना ठीक नहीं है। अगर मलिका को क्रोध आ गया तो मालूम नहीं मेरे साथ क्या कर डाले। उसने कहा, आप का हुक्म सिर आँखों पर

किंतु एक विनय है। यह भतीजा मुझे बहुत प्यारा है। कम से कम एक दिन तो इसे मेरे पास और रहने दीजिए। कल यह अवश्य आपकी सेवा में उपस्थित हो जाएगा। मलिका ने यह बात मान ली और अपने सेना के साथ वापस चली गई। उसके जाने के बाद बूढ़े ने बद्र से कहा, मैं तो नहीं चाहता था कि तुम्हें उसके हाथ में दूँ लेकिन मुझे भय था कि अगर वह क्रोध में आ गई तो इसी समय हम दोनो को मरवा देगी। शायद वह तुम्हारे साथ दुर्व्यवहार न भी करे। उसने अपने आराध्य अग्निदेव की कसम खाई है। फिर मलिका के सारे दरबारी मुझे मानते हैं। वे भी तुम्हारी भरसक सहायता करेंगे। बद्र को इन बातों से कुछ ढाँढ़स हुआ और वह कहने लगा, अब तो जो कुछ मेरी किस्मत में है वह भोगना ही पड़ेगा। अब चाहे इस रानी के हाथों में मेरी मौत हो या मेरे भाग्य खुलें, मुझे तो उसके पास जाना ही है।
बूढ़े ने कहा, तुम अधिक चिंता न करो। यद्यपि रानी जादूगरनी है और उसके पास राजशक्ति भी है किंतु वह मेरी शक्ति भी जानती है। वह अचानक कोई बात मेरी मरजी के खिलाफ नहीं करेगी। फिर भी वह महादुष्ट है। तुम्हें चाहिए कि हरदम होशियार रहो और अगर कोई बात असाधारण रूप से होते देखो तो मुझे उसकी सूचना देते रहना।
दूसरे दिन वह पापिनी रानी पिछली जैसी शान-शौकत से निकली और अब्दुल्ला की दुकान पर रुक गई। वह बूढ़े अब्दुलला से कहने लगी, तुम्हारे भतीजे के ख्याल में मैं रात भर सो नहीं सकी। अब तुमने कल जो वादा किया था उसे निभाओ। बूढ़े ने मलिका के सम्मानार्थ अपना शीश भूमि से लगाया फिर मलिका के समीप जा कर ताकि उसकी बात को कोई दूसरा न सुने - बोला, कल जो कुछ मैंने अपने भतीजे के बारे में कहा था उसे कृपया न भूलें। मैं उसे आपके हाथों में सौंपता हूँ। किंतु इस बात का ध्यान अवश्य रखें कि इसे किसी प्रकार का कष्ट न हो। मैंने आप से पहले भी कहा है कि और अब फिर कहता हूँ कि यह लड़का मेरे बेटे जैसा है और इसके दुख से मुझे दुख होगा। मलिका ने कहा, तुम्हें विश्वास क्यों नहीं हुआ है? मैंने तो इस बारे में तुम्हारे सामने अग्निदेवता की सौंगंध खाई है कि मेरे पास कोई दुख नहीं पहुँच सकता।
बूढ़े ने बद्र का हाथ मलिका के हाथ में दिया और कहा, आपकी बात पर विश्वास न होने का कोई प्रश्न नहीं है किंतु जहाँ आपने इतनी कृपा की है वहाँ इतनी कृपा अवश्य कीजिए कि इसे कभी-कभी यहाँ आ कर मुझ से मिलने की अनुमति दे दें। इसीलिए मैंने दुबारा इसे दुख न पहुँचने की बात की है। यह कभी-कभी आ कर

ढूँढ़ कर उस स्थान पर ले आए जहाँ उसका पिता था। समंदाल नरेश ने जवाहर को गले लगा कर कहा, बेटी, मैंने बादशाह बद्र को वचन दिया है कि तुम्हारा विवाह उसके साथ कर दूँगा। आशा है तुम इस बात को मान जाओगी। जवाहर ने कहा, आपकी आज्ञा मुझे शिरोधार्य है किंतु बादशाह बद्र से बहुत लज्जित हूँ। मैंने क्रोध में आ कर उनसे बड़ा बुरा सलूक किया। मालूम नहीं कि वे इसके लिए मुझे क्षमा करेंगे या नहीं। बद्र ने कहा, तुमने वास्तव में क्रोध में आ कर मुझे दुख दिया था। अब मैं उसे भूल गया और तुम भी उसे भूल जाओ। एक खुशी की बात यह भी हुई कि मलिका के मर जाते ही वे सब लोग जिन्हें मंत्रबल से जानवर बना रखा गया था, अपने मनुष्य रूप में वापस आ गए और विवाह में हँसी-खुशी शामिल हो कर वर-वधू को आशीर्वाद देते हुए अपने-अपने देशों को चले गए। फिर समंदाल नरेश अपने सरदारों के साथ अपने देश को गया, बादशाह बद्र अपनी माता और पत्नियों को ले कर ईरान को रवाना हुआ और कुछ दिन वहाँ रहने के बाद सालेह भी अपनी माता के साथ अपने देश को वापस हुआ।

गनीम और फितना की कहानी

दुनियाजाद ने मलिका शहरजाद से नई कहानी सुनाने को कहा और बादशाह शहरजाद ने भी अपनी मौन स्वीकृति दे दी तो शहरजाद ने नई कहानी शुरू कर दी। उसने कहा कि पुराने जमाने में दमिश्क नगर में एक व्यापारी रहता था जिसका नाम अय्यूब था। उसके दो ही संतानें थीं, एक पुत्र और एक पुत्री। पुत्र का नाम था गनीम और पुत्री का अलकिंत। पुत्री अत्यंत रूपवती और गुणवंती थी और उसे जो भी देखता उस पर मुग्ध हो जाता। कुछ समय के बाद अय्यूब बीमार पड़ा और उस बीमारी से उबर न सका। गनीम अभी बिल्कुल नौजवान था। पिता का पूर्णरूपेण अंतिम संस्कार करने के बाद उसने व्यापार वस्तुओं तथा संपत्ति को सँभालना शुरू किया।
उसने अपने पिता के गोदाम में जा कर देखा कि बहुत-सी गाँठें हैं जिन पर बड़े बड़े अक्षरों में बगदाद लिखा है। उसकी समझ में कुछ न आया और उसने अपनी माँ से पूछा कि गठरियों और गाँठों पर बगदाद क्यों लिखा है। माँ ने उत्तर दिया, बेटे, तुम्हारे पिता का हर काम बड़ा व्यवस्थित होता था। जिस चीज को जहाँ जा कर बेचना चाहते थे उसकी गाँठ पर उस स्थान का नाम लिख देते थे ताकि व्यापार यात्रा करते समय हर चीज को खोल कर देखने की जरूरत न पड़े और समय का अपव्यय या गड़बड़ी की संभावना न हो। जिन गाँठों पर बगदाद लिखा है उन्हें वे बगदाद

xxxxx xx xxxxxxxxx xxx xxxxxxxxx xxxxx xx xxxxx xx xxxxx xxx xx xxx xxxxx xx xxx xxxxx xxx xx xxxxx xxxxx xxxxx xxxxx xx xx xxx xxxxxxxx xx xxxxx, xxxxx, xxx xxxxx xxx xx? xxxxxxx xx xxx xxxxx xxxxxxx xxxxxx, xxxxxx xxxxxx xx xxxxxxx xx xxx xxxxxx xx xxx xxxxxxxx xx xxxxxxx xx xxxxx xxxxxxxxxxx xxx xxxxxx xxxxxx xxxxx xx, xx xx xxx xx xxxxx xxxxx xxxxxxx xxx xxxxxx xxxxxxxxxxx xxx xxxxxxxx xx xxxxxx xx xx xxxxx xxx xxxxx xx x xxx xxxxxx xxxxxx xxx xxxxx xxxxxx xxxxx xx xx xxxxxx xx xxx xx xx xxxxx xxx xxxxx xxxxxxxx xx xxx xxx xxx xxx xx xxxxx xxxxx xxxxxxxxxxx xxxxxx xxxxx xx xxxxxxx

xxxxxxxx xxxxx xxxxxxxx xxx xxxxx xxx, xxxxx, xxx xxxxxxxx xxxxxx x xxxxx xx xxx xxxxx xxx xx? xxx xxx xxxxxx xxxxxxxx xx xxxxx xx xx xxxxxx xxx xxxxx xx xxxxxx x xx xxxxxxx xxxxxx xxx xx xxx xxxxxx xxxxx xxxxxxxx xxxxxxx xx xxx, xxxxxx, xxx xxxxx xxxxx xx xxxxx xxx

xxxxxxxx xxxxx, xxxxxx xxxxx xxx xxxxxxx xx xx xxxxx-xx xxxxxx xx xxxxxx xxxxxx, xxxxx xxxxxx xxxxxx xxxxx xxxxx xxxxxxx xxx xx xx xxxxxxx xxxxxx xxxxx xxxxxxx xxx xx xxxxxx xxxxxx xx xxxxxx xxx xxxxxx xx xxxxx xx xxxxxx xx xxxxx xxxxxxxxxxx xxx xxxxxx xxxxxx xxxxx xx xxxxx, xxxxx xx xxx xx xxxxxxx xxxxxx xx xxxxx xxxxx xx xx xxxxxx xxx xxxxxx xx xx xxxxx-xx xxxxxx xxxxxx xxxxxx xxxxx xx xxx xxxxx xx xxxxx xxxxxxx xxxxxx xxx-xxx xxx xx xxxxxxxxx xxxxxxxx xxxxx xxxxxx xxx xx xxxxxx xx xxxxx xxxxx xx xxxxx xx xx xxxxxx xx xxx xxxxx xxxxx xxxxxx xxxxxx xx xxxxx xxxxxxxx xx xxxxxxx xxxxx xxxxxx xxx xx xxxxxx xx xxx xxxxx xxxxx xx xxxxx xxxxxx xxx xx xxxxx xx xxxxxxxx xxxxxx xxx xxx xxx xx xx xx xxx xxx xxxxxx xxx xx xxxxx xxxxx xx xxx xxxxxx xxxxxx xx xxx xx xxxxxx xxxxx xxxxxxxx xx xxxxx xxxxxx xxxxxx xxxxx xxx xxx xxxxx xx xxxxxxxxx xxxxxxxx xx xxxxx xxxxxxx xxx xxxxxx xx xxxxx xx xxx xx, xxx xx xxxxx xxx xxxxxx xx xxxxxx xxxxx xxxxx xx xxx xx xxxxxx xx xxxxx xxx xxxxx xxxxxx xx xx-xxx xx xxx xxxxxxx

xxxxxxx xx xxx, xxx xxxxx xxxxxx xx xxxxxx xx xxxxx xxxxxx xx xxxxx xxxxxx xxxxxx xxxxx xxxxx xx xx xxx xxx xx xxxxxx xx xxx xxxxx xxx xxxxxxxx xxxxxxxx xx xxx, xxx xxxxx xx xxxxxx xxxxxx xxxxxxx xxxxx xx xxxxxxx xxx xxxxx xxxxxxx xxxxx xx xxxxxx xxx xxxxxx xxxxxx xx xxxxxx xx xxxxxxx xxxxxx x xx, xx xx xxxxx xxxxx xxx xxxxx xx xxx xxx xxxxxxx xxxxx xxxxx xxxxx xx xx xxxxxxxx xxxxxxx xx xx

बोला, प्रबुद्धजनों ने कहा है कि स्वामी की संपत्ति सेवक को लेनी क्या, उसे लेने की इच्छा भी नहीं करनी चाहिए।
खलीफा को युद्धभूमि में काफी समय लगा। शत्रु को परास्त करके तीन महीने बाद जब वह बगदाद वापस आया तो उसने सोचा कि पहली फुरसत ही में फितना के पास जाऊँ।
किंतु अपने महल में आते ही जुबैदा और दासियाँ शोकवसन पहने दिखाई दीं तो उसने पूछा कि इसका क्या कारण है। जुबैदा ने छल के आँसू बहाते हुए फितना की मृत्यु का समाचार दिया। खलीफा इसे सुन कर मूर्छित होने लगा तो मंत्री जाफर ने उसे सँभाला। खलीफा की तबीयत कुछ सँभली तो उसने पूछा कि फितना को कहाँ दफन किया गया है। जुबैदा ने कहा कि मैंने शाही कब्रिस्तान में उसके लिए अच्छी कब्र बनवाई है और उस पर एक शानदार मकबरा बनवाया, जिसमें फितना का चित्र भी रखा है, आप कहें तो आपके साथ चल कर सब कुछ दिखाऊँ। खलीफा ने कहा, तुम आराम करो, मैं स्वयं ही वह मकबरा देख आऊँगा।
खलीफा मसरूर को ले कर गया तो देखा कि बड़ी सुंदर कब्र और मकबरा मौजूद है और वहाँ बहुत-से दीये जल रहे हैं। उसे यह देख कर आश्चर्य हुआ कि सौतिया डाह होने पर भी जुबैदा ने फितना के अंतिम संस्कार के लिए ऐसा आयोजन किया है। उसने सोचा कि यह संभव है कि जुबैदा ने फितना को निकाल दिया हो और इस बात को छुपाने के लिए उसकी मौत का ढोंग रचाया हो। उसने मकबरे पर लगा हुआ चित्र भी उतार कर देखा तो वह काफी खराब था, किसी अनाड़ी चित्रकार से जल्दी में बनवाया हुआ लगता था। अब उसने सोचा कि कब्र खुदवा कर देखना चाहिए कि फितना वास्तव में मरी है या जीवित है। उसने धर्मगुरुओं से सलाह ली तो उसने कहा कि आप यह काम नहीं कर सकते क्योंकि इस्लाम में कब्र खुदवाना धर्मविरुद्ध है। इस पर खलीफा ने फितना की कब्र खुदवाने का विचार त्याग दिया और रस्मी तौर पर उसके लिए मातम शुरू कर दिया। उसने कई कुरानपाठियों को फितना की कब्र पर निरंतर कुरान पाठ करने के लिए नियुक्त किया। स्वयं काले कपड़े पहन लिए और शोक और विषाद का जीवन व्यतीत करने लगा। एक महीने तक रोजाना एक बार जाफर और अन्य सभासदों को ले कर फितना की कब्र पर जाता और फातिहा पढ़ता और बैठ कर उसकी याद में आँसू बहाता। इस सारी अवधि में उसने राज्य-प्रबंध भी नहीं देखा और सारे समय रुदन और विरह-विलाप करता रहा।
चालीस दिनों के बाद मातम खत्म हुआ। खलीफा ने खुद काले कपड़े उतारे और दूसरों से भी मातमी लिबास उतारने को कहा। इस सारे समय में वह कभी ठीक से

रात में तो उसने किसी से कुछ नहीं कहा लेकिन दूसरे दिन दरबार में जा कर उसने प्रधानमंत्री जाफर को बुला कर कहा, आज मैं तुम्हारी मुस्तैदी की परीक्षा लेता हूँ। तुम चार हजार सिपाहियों को ले कर अमुक मुहल्ले में जाओ। वहाँ दमिश्क का एक जवान व्यापारी गनीम रहता है। उसके पिता का नाम अय्यूब है। उसने मेरी प्रेयसी फितना को रख छोड़ा है। तुम जा कर गनीम को पकड़ो और उसके हाथ-पैर बाँध कर ले आओ। और ध्यान रहे कि फितना भी हाथ से निकलने न पाए, उसे भी पकड़ कर ले आना किंतु उसे बाँधना नहीं। इसके साथ ही जिस मकान में गनीम रहता है उसे खुदवा कर जमीन के बराबर करवा देना। मैं उन दोनों को कठोर दंड देना चाहता हूँ।
मंत्री जाफर ने यह आज्ञा पा कर चार हजार सैनिक बुलाए और कुछ ही देर बाद गनीम के भव्य भवन को चारों ओर से घेर लिया। वह अपने साथ सैकड़ों बेलदार भी ले गया था ताकि मकान को खुदवा कर जमीन के बराबर करवा दे। सिपाहियों को भी उसने ताकीद की कि बहुत होशियार रहो ताकि गनीम कहीं से निकल कर भागने न पाए। गनीम पकड़ा जाता किंतु फितना राज कर्मचारियों के तौर-तरीकों से परिचित थी। उसने दूर ही से मंत्री को सेना के साथ आते देख कर समझ लिया कि खलीफा को यहाँ का हाल मालूम हो गया है और उसने दोनों को पकड़वाने के लिए सेना भेजी है।
उसी समय गनीम और फितना भोजन से निवृत्त हुए थे। फितना को बड़ा भय अपने से अधिक गनीम के लिए हुआ क्योंकि वह उसे प्रेम करने लगी थी। उसने यह भी सोचा कि खलीफा को मुझसे प्रेम है इसलिए मुझे तो मामूली सजा ही देगा। किंतु इस निरपराध को जरूर मरवा डालेगा। उसके मुँह से गिरफ्तारी के लिए सैनिकों के आने का हाल सुन कर गनीम प्राण-भय से काँपने लगा और उसमें बोलने और उठने की शक्ति भी नहीं रही। फितना ने झुँझला कर उसे हाथ पकड़ कर उठाया और बोली, मूर्ख, देर करने का समय नहीं है। तुम फौरन गुलामों जैसे कपड़े पहनो, मुँह और हाथ-पैर में कोयले का चूरा मलो जिससे हब्शी मालूम पड़ो। इसके बाद रसोई के बरतनों का टोकरा ले कर बाहर निकल जाओ। वे लोग तुम्हें गुलाम समझ कर जाने देंगे। इसके अलावा और किसी तरह तुम्हारी जान नहीं बच सकेगी। अगर वे लोग पूछें कि तुम्हारा मालिक कहाँ है तो कहना कि घर के अंदर है।
गनीम ने कहा, इस समय मुझे अपने प्राणों से भी अधिक तुम्हारी सुरक्षा की चिंता है। फितना बोली, मेरी चिंता न करो। मैं खलीफा के सामने अपना सारा अपराध क्षमा करवा लूँगी। किंतु तुम्हें देखते ही वह तुम्हें मरवा डालेगा

पकड़ कर खलीफा के दरबार में पहुँचा देना क्योंकि खलीफा उसकी गिरफ्तारी पर बड़ा जोर दे रहे हैं।
मंत्री और अन्य अफसर इधर राजमहल को चले उधर कोतवाल ने मकान के चप्पे-चप्पे की तलाशी ली किंतु गनीम को कहीं नहीं पाया। खलीफा ने वजीर को आते देखा तो दूर ही से पूछा, मेरी आज्ञाओं का पालन किया? जाफर ने कहा, एक को छोड़ कर सभी आज्ञाओं का पालन हुआ है। अभी आ कर पूरा हाल बताता हूँ। इतने में कोतवाल भी आ गया किंतु गनीम का कहीं पता नहीं चला। मंत्री ने खलीफा के पास जा कर फितना और उसकी दोनों दासियों को उपस्थित किया और कहा, मैंने मकान का एक-एक कोना छान मारा लेकिन गनीम कहीं नहीं था। लोगों ने बताया कि वह एक महीने से अधिक हुआ व्यापार के काम से दमिश्क चला गया है। इसके बाद मैंने बेलदार लगवा कर अपने सामने उसका मकान गिरवा कर जमीन के बराबर कर दिया।
खलीफा को गनीम के हाथ से निकल जाने पर और गुस्सा आया। उसने अपने सामने खड़ी भय से काँपती फितना को देखा तो गुस्से के कारण उससे भी कुछ न बोला क्योंकि वह समझता था कि यह गनीम के उपभोग में रही है। उसने महल के हब्शी प्रबंधक मसरूर से कहा कि इसे दासियों के लिए बने बंदीगृह में डाल दे। यह बंदीगृह खलीफा के अपने निवास कक्षों से लगा हुआ था।
फिर खलीफा ने उसी क्रोध की दशा में पत्र लेखक को बुलवाया और दमिश्क के हाकिम के नाम निम्नलिखित पत्र लिखवाया:
दमिश्क के हाकिम को खलीफा हारूँ रशीद की ओर से ज्ञात हो कि दमिश्क के मृत व्यापारी अय्यूब का पुत्र गनीम शाही महल की एक दासी का अपहरण करके ले गया था। इस समय वह भागा हुआ है। आप उसे हर जगह ढुँढ़वाएँ। जहाँ मिले उसे पकड़ कर हथकड़ी डाल कर गलियों में फिराएँ और सिपाहियों को आदेश दें कि हर चौराहे पर उसे कोड़े मारें और घोषणा करें कि बादशाह या खलीफा के साथ धोखा करनेवाले और उसकी दासी को भगानेवाले का यही दंड होता है। फिर उसे पहरे में मेरे पास भेज दें ताकि मैं उसका उचित न्याय करूँ। उसके घर को खुदवा दें और उस जमीन पर हल चलवा दें।
अगर वह न मिले तो दमिश्क में उसकी माँ, बहन, भाई या जो भी दूसरे कुटुंबी हों उन्हें भी इसी प्रकार का दंड तीन दिन तक दिया जाए। अगर दमिश्क का कोई ओर निवासी गनीम की किसी प्रकार की प्रत्यक्ष या परोक्ष सहायता करता हुआ पाया जाए तो उसे भी इसी प्रकार नगर में अपमान तथा मकान खुदवा डालने का दंड दिया जाए। इस आदेश को जरूरी समझें और इसका अविलंब और पूर्णरूपेण पालन करें।

होती है। और वही आशा इन्हें द्वार-द्वार भटका रही थी। बेचारियाँ हर एक से गनीम के बारे में पूछतीं और हर जगह से जवाब मिलता कि हमें कुछ नहीं मालूम। उधर फितना पर क्या बीती यह भी सुनिए। वह बेचारी अपने कारागार की तंग कोठरी में रात-दिन विलाप किया करती। उसी कोठरी से लगा हुआ खलीफा के आवास का आँगन था। वह अक्सर शाम को उस आँगन में टहलता और उसी समय अपनी प्रशासनिक समस्याओं पर विचार किया करता था। एक शाम को वह वहाँ टहल रहा था कि उसे अत्यंत करुण ध्वनि सुनाई दी। वह उसे सुन कर खड़ा हो गया। उसने ध्यान से सुना तो अपनी प्रेयसी फितना की आवाज पहचानी। वह कान लगा कर सुनने लगा। फितना रो-रो कर कह रही थी, अभागे गनीम, तू कहाँ है? तूने मेरी इतनी सेवा की और मेरी भलाई की और उसका बदला यह मिला कि आर्थिक रूप से बिल्कुल बरबाद हो गया। मालूम नहीं तू अब जिंदा है या खलीफा के डर से मर गया।
कुछ देर बाद उसकी आवाज फिर आई, ओ खलीफा हारूँ रशीद, तूने निरपराध गनीम पर ऐसा अत्याचार किया जैसा किसी बादशाह ने किसी पर नहीं किया होगा। क्या तुझे ईश्वर का भय नहीं है? कयामत में जब सारे लोग ईश्वर के समक्ष होंगे और जब उनसे उनके भले-बुरे कामों की पूछताछ की जाएगी उस समय तू अपने इस महाअन्याय का क्या औचित्य देगा? यह कहने के बाद फितना जोरों से विलाप करने लगी। खलीफा यह सुन कर बड़ी चिंता में पड़ा। उसने सोचा कि अगर फितना सच कह रही है और गनीम निर्दोष है तो वास्तव में उस पर और उससे भी अधिक उसकी बहन पर अन्याय हुआ। खलीफा के लिए जो भगवान का प्रतिनिधि होता है ऐसा अन्याय किसी प्रकार उचित नहीं है।
वह अपने कक्ष में गया और वहाँ राजमहल के मुख्य अधिकारी मसरूर को बुलाया और उसे आदेश दिया कि फितना को कैदखाने से निकाल कर मेरे पास ले आओ। मसरूर को फितना से स्नेह था। वह यह आदेश पा कर बड़ा प्रसन्न हुआ और फितना के पास जा कर बोला, सुंदरी, चलो, तुम्हें खलीफा ने बुलाया है। मुझे विश्वास है कि अब तुम कैद से छूट जाओगी। फितना तुरंत ही तैयार हो गई और मसरूर ने उसे खलीफा के सामने पेश कर दिया। खलीफा ने उसे देखते ही पूछा, तुमने यह कैसे कहा कि कयामत में मैं ईश्वर को मुँह नहीं दिखा सकूँगा। मैंने किस निरपराध व्यक्ति को हानि पहुँचाई है? तुम्हें मालूम है कि मैं न्याय के लिए प्रसिद्ध हूँ और किसी पर भी अन्याय नहीं करता न किसी और को अन्याय करने देता हूँ।

शहजादा जैनुस्सनम और जिन्नों के बादशाह की कहानी

पुराने जमाने में बसरा में एक बड़ा ऐश्वर्यवान और न्यायप्रिय बादशाह राज करता था। उसे सबकुछ प्राप्त था किंतु उसे बहुत दिनों तक कोई संतान नहीं हुई जिससे वह बहुत दुखी रहता था। नगर निवासी भी बादशाह के साथ मिल कर भगवान से प्रार्थना किया करते थे कि राजकुमार का जन्म हो। अंत में भगवान ने उन सब की बात सुनी और मलिका को गर्भ रहा और नौ महीने बाद उसके एक पुत्र पैदा हुआ। उसका नाम रखा गया जैनुस्सनम। बादशाह ने अपने राज्य के सभी प्रख्यात ज्योतिषियों को बुला कर आज्ञा दी कि शहजादे का भविष्य पूर्णरूपेण बताएँ। सबने उसकी जन्मपत्री अलग-अलग बनाई किंतु सब ने बाद में एकमत हो कर कहा कि यह शहजादा बड़ा साहसी और प्रतापवान होगा और अपनी पूर्ण आयु को भोगेगा किंतु इसके सामने जीवन में कई खतरे आएँगे। बादशाह ने कहा, इसमें तो चिंता की कोई बात नहीं है। जो साहसी होता है वह खतरों का सामना करता ही है। फिर बादशाहों का तो काम ही है कि खतरों से जूझें। यह खतरे और विपत्तियाँ ही बादशाहों को जीवन का मार्ग दिखाती हैं। तुम लोगों ने जी खुश करनेवाली भविष्यवाणी की है। यह कह कर बादशाह ने ज्योतिषियों को अच्छा इनाम दे कर विदा किया।
शहजादा बड़ा हुआ तो उसकी शिक्षा-दीक्षा के लिए प्रत्येक विषय के लिए योग्यतम गुणी नियुक्त किए गए। कुछ ही दिनों में वह प्रत्येक विद्या और कला में निपुण हो गया। किंतु बुढ़ापे की औलाद होने की वजह से वह लाड़ में कुछ बिगड़ भी गया और अपव्ययी हो गया। कुंछ समय के बाद उसका पिता रोगग्रस्त हुआ और कोई दवा उस पर प्रभावकारी न हुई। मरने के पहले उसने जैनुस्सनम को नसीहत की कि तुम निठल्ले और स्वार्थी लोगों की संगत से बचना और अपव्यय न करना और जैसा बादशाहों को शोभा देता है दंड और उदारता की नीतियों में संतुलन रखना। फिर बूढ़ा बादशाह मर गया। जैनुस्सनम ने निश्चित अवधि तक उस का मातम किया और फिर राजसिंहासन पर बैठा। अनुभव तो था नहीं, एकबारगी इतना कोष पाया तो दोनों हाथों से लुटाने लगा और भोग-विलास में प्रवृत्त हो गया। उसकी माँ ने बहुत समझाने की कोशिश की किंतु उसने उसकी बात अनसुनी कर दी। फलतः खजाना खाली हो गया। राज्य-प्रबंध चौपट हो गया और सैनिक नौकरी छोड़ने लगे।

अब उसकी समझ में आया कि कहाँ गड़बड़ हो गई। उसने अपने नौजवान मित्रों को उच्च पदों से हटा दिया और अनुभवी राज्य-प्रबंधकों को रखा। उन्होंने उसे उसकी भूलें बताई और किसी तरह राज्य-प्रबंध चलाए रखा किंतु अच्छी तरह राज्य संचालन के लिए धन की आवश्यकता थी और जैनुस्सनम रात-दिन इसी चिंता में रहने लगा कि धन कहाँ से प्राप्त किया जाए।
एक रात को उसने स्वप्न में देखा कि एक वृद्ध उससे मुस्कुरा कर कह रहा है - ओ जैनुस्सनम, तुम यह बात समझ लो कि हर रंज के बाद खुशी आती है और हर विपत्ति के बाद सुख मिलता है। इसलिए निराश न हो। यदि चाहते हो कि इस दुख से उबरो तो फौरन अकेले ही काहिरा चले जाओ जो मिस्र की राजधानी है। वहाँ तुम्हारा भाग्य जागेगा और तुम्हारे दुख दूर हो जाएँगे। जगने पर उसने अपनी माँ से सपने का हाल कहा और यह भी कहा कि मैं अपना भाग्य जगाने को काहिरा जाऊँगा। उसकी माँ ने समझाया, बेटे, सपने तो रोजाना ही दिखाई देते हैं और अजीब-अजीब दिखाई देते हैं, वे सच्चे थोड़े ही होते हैं। तुम्हें अकेले इतनी लंबी यात्रा नहीं करनी चाहिए। जैनुस्सनम जिद्दी तो था ही, कहने लगा, अम्मा, तुम कैसी बातें करती हो। ऐसे सपने गलत नहीं होते। बड़े-बड़े नबियों को महत्वपूर्ण बातें सपने ही में दिखाई दीं। मुझे जो वृद्ध सपने में दिखाई दिया वह कोई महान संत था, उसकी बात झूठी नहीं हो सकती। माँ ने उसे बहुत समझाना चाहा कि इस बेकार की खतरनाक यात्रा से बाज आए किंतु जब जैनुस्सनम कोई बात मन में ठान लेता था तो उसे पूरा ही करके छोड़ता था। उसने राज्य का प्रबंध अपनी माँ के सुपुर्द किया और स्वयं गुप्त रूप से महल से निकल कर काहिरा की ओर रवाना हो गया। उसने अपने साथ एक भी आदमी न लिया।
कई दिनों की जोखिम-भरी ओर कष्टदायी यात्रा करने के बाद वह काहिरा के सुंदर और विशाल नगर में जा पहुँचा। हारा-थका वह एक मसजिद के अंदर जा कर सो रहा। उसने फिर स्वप्न में उसी बूढ़े को देखा जो कह रहा था, मैंने तुम्हारा साहस देखने के लिए तुम्हें काहिरा बुलाया था। तुम इस परीक्षा में पूरे उतरे। तुम बड़े शक्तिशाली राजा बनोगे। तुम बसरा लौट जाओ। वहीं पर तुम्हें अपार धन राशि मिलेगी।
जैनुस्सनम जगा तो सोचने लगा कि इस बूढ़े ने मुझे अच्छा बेवकूफ बनाया, अगर बसरा ही में मुझे धन प्राप्ति होनी थी तो काहिरा तक क्यों दौड़ाया। उसने सोचा कि यह भी अच्छा हुआ कि यह बात मैंने अपनी माँ के सिवा किसी और से नहीं कहीं, नहीं तो सभी लोग मेरी मूर्खता पर हँसते। खैर, बेचारा फिर बसरा को चल

हैं, दो-चार दिन आराम करें। मैंने काहिरा के प्रमुख व्यक्तियों को भोज दिया है, आप भी वहीं चले। जैनुस्सनम ने सहर्ष यह स्वीकार कर लिया। मुबारक उसे भोज स्थान पर ले गया और स्वयंसेवकों की भाँति बादशाह जैनुस्सनम के पास खड़ा रहा। वहाँ उपस्थित लोग ताज्जुब से देखने और एक-दूसरे से पूछने लगे कि यह कौन है जिसकी मुबारक दासों की भाँति सेवा कर रहा है।
जब सब मेहमान खाना खत्म कर चुके तो मुबारक ने उनसे कहा, आप लोग आश्चर्य में होंगे कि मैं इस नवयुवक की इतनी सेवा क्यों कर रहा हूँ। आश्चर्य की कोई बात नहीं है। यह बसरा के बादशाह हैं मैं, इनके पिता का गुलाम था। वे मुझे मुक्त करने से पहले मर गए। अतएव अब मैं इनका गुलाम हूँ। यह अपने पिता के एकमात्र उत्तराधिकारी हैं। इस पर जैनुस्सनम ने कहा, मैं इस उपस्थित समूह के समक्ष घोषणा करता हूँ कि मैंने इन्हें अपनी दासता से मुक्त किया। सिर्फ एक बात, जो अभी मैंने इनसे कही है, इन्हें करनी पड़ेगी।
यह सुन कर मुबारक ने सिर झुका कर शाहजादे का आभार प्रकट किया। इसके बाद मदिरा का दौर चला। शाम तक सब लोग शराब पीते रहे, फिर मुबारक ने फल आदि दे कर सब को विदा किया। जैनुस्सनम ने रात भर आराम किया और दूसरे दिन कहा, भाई, अब मेरी यात्रा की थकन दूर हो गई है। मैं यहाँ घूमने नहीं बल्कि नवीं मूर्ति लेने आया हूँ। अब यह आवश्यक है कि उस काम के लिए चला जाए। मुबारक ने कहा, अच्छी बात है किंतु आपको एक बात जाननी जरूरी है। मार्ग में बहुत-सी भयोत्पादक बातें होंगी। यह आवश्यक है कि आप किसी बात से भय न खाएँ और किसी बात पर ध्यान न दें। नवयुवक बादशाह ने कहा, आप इत्मीनान रखें। मैं किसी भूत-प्रेत से न डरूँगा और जैसा आप कहेंगे वैसा ही करूँगा। वैसे भी मैं बादशाह हूँ, मुझे किसी बात से डरना नहीं चाहिए।
मुबारक यह सुन कर आश्वस्त हुआ। उसने अपने नौकरों को यात्रा की तैयारी का आदेश दिया। दूसरे दिन वे दोनों घर से चले। मार्ग के दर्शनीय स्थल देखते हुए वे लोग कई दिनों बाद एक बहुत सँकरे रास्ते से चलने लगे। मुबारक ने घोड़े और साथ के नौकर वहीं छोड़ दिए और आदेश दिया कि हम लोगों के लौटने तक तुम लोग यहीं हमारी प्रतीक्षा करना। अब वह जैनुस्सनम को ले कर पैदल चला। एक बार फिर उसने कहा, अब भयानक स्थान शुरू होता है। आप किसी अजीब से अजीब बात को देख कर भी डरिएगा नहीं। फिर वह उसे ले कर एक नदी के तट पर आ कर बैठ गया और बोला, इस नदी को पार करके हमें अपने उद्देश्य की प्राप्ति होगी।

लिए जैनुस्सनम को दिए। फिर उसने जमीन पर दो चादरें बिछाईं। उन चादरों के कोनों और किनारों पर पत्थर रख कर उसने उन्हें स्थिर कर लिया। फिर वह जैनुस्सनम से बोला, अब मैं जिन्नों के बादशाह का आह्वान करता हूँ। उसी का यह किला है। अगर वह यहाँ किसी भयानक रूप में आएगा तो उसका मतलब यह होगा कि वह हमारे आने से प्रसन्न नहीं है और हम लोग बड़े दुख में पड़ जाएँगे। किंतु अगर वह मानवीय रूप में आया तो आप की कामना पूर्ण हो जाएगी। आप इस बात का ध्यान रखें कि वह चाहे जो रूप भी धर कर आए, उसे झुक कर सलाम करें किंतु किसी भी दशा में उस चादर या उन पटकों को अपने शरीर से अलग न होने दें। यह शरीर से अलग हुए कि आपका शरीरांत हो जाएगा। जिन्नों के बादशाह के आगमन पर आप यह कहें कि मेरे पिता का, जो आप का सेवक था, अब देहांत हो चुका है और जो कृपा आप मेरे पिता पर किया करते थे वह मुझ पर भी करें। जब वह पूछे कि मैं तुम पर कौन-सी कृपा करूँ तो आप कहें कि मुझे अपने महल के तहखाने के लिए नवीं मूर्ति भी दे दीजिए।
इस प्रकार मुबारक ने जैनुस्सनम को सारी बातें दुबारा समझाईं और फिर मंत्र पढ़ने लगा। कुछ ही देर में बड़े जोर से बादल गरजने लगा और ऐसा भयंकर शब्द हुआ कि जान पड़ता था कि जमीन फट जाएगी। जैनुस्सनम यह कांड देख कर बहुत डरा। उसने बाहरी तौर पर तो शांति रखी किंतु उसका दिल जोरों से धड़कने लगा।
मुबारक ने उसकी यह दशा देखी तो बोला, अब आपको घबराने की जरूरत नहीं। जितनी भयानकता होनी थी हो ली। अब यह अँधेरा भी छँट जाएगा और उजाला हो जाएगा। ऐसा ही हुआ। कुछ ही क्षणों में बादल, बिजली सब गायब हो गए और प्रकाश फैल गया। उसके बाद जिन्नों का बादशाह एक सुंदर मनुष्य के रूप में प्रकट हुआ। मुबारक के समझाने के अनुसार जैनुस्सनम ने खड़े हो कर झुक कर जिन्नों के बादशाह को सलाम किया। जिन्नों का बादशाह मुस्कुराता हुआ उसके समीप आया और बोला, मेरे बेटे, तुम्हारा स्वर्गीय पिता मेरा बड़ा घनिष्ठ मित्र था, मुझे उससे बड़ा स्नेह था। जब भी वह मेरे पास आता, मैं उसे हीरे की एक सुंदर मूर्ति भेंट में देता। वह उसे अपने साथ ले जाता। इस प्रकार मैंने उसे आठ मूर्तियाँ दीं। मैंने उससे यह भी कहा कि तुम नवीं मूर्ति के लिए भी स्वर्ण-स्तंभ बनवाओ और उस पर एक सफेद रेशमी चादर में अपने बेटे के लिए संदेश लिख कर छोड़ दो। तुमने वह संदेश पढ़ा और उसके अनुसार यहाँ आए हो। मैंने तुम्हारे पिता से प्रतिज्ञा की थी कि नवीं मूर्ति मैं जैनुस्सनम को दूँगा। नवीं मूर्ति सुंदरता में पहले की आठ मूर्तियों से कहीं अच्छी है।

मुबारक दोनों ने जिन्नों के बादशाह को प्रणाम किया और वह गायब हो गया। यह दोनों फिर नदी के तट पर आए जहाँ उस विचित्र माँझी ने उन्हें क्षण भर ही में दूसरे तट पर पहुँचा दिया। फिर वे उस जगह पर गए जहाँ उनके सेवक उनकी प्रतीक्षा में थे। वहाँ जा कर वे अपने घोड़ों पर सवार हुए और काहिरा पहुँच गए।
काहिरा में जैनुस्सनम ने कुछ दिनों तक आराम किया। तत्पश्चात मुबारक से कहा कि अब मैं जिन्नों के बादशाह के लिए कन्या ढूँढ़ने जाता हूँ। मुबारक ने कहा, इसके लिए बाहर जाना बेकार है। काहिरा में जितनी सुंदर कन्याएँ हैं उतनी संसार में कहीं नहीं। जैनुस्सनम ने कहा, आप की बात ठीक है किंतु काहिरा की सुंदरियाँ मिलें कैसे? मुबारक ने कहा, आप इसकी चिंता न करें। यहाँ एक बुढ़िया रहती है। वह सारे नगर की कन्याओं की खबर रखती है। मैं उसे बुला कर यह काम उसके सुपुर्द करता हूँ। मुझे आशा है कि वह बगैर किसी कठिनाई के आपकी वांछित कन्या ले आएगी। यह कह कर मुबारक ने उस बुढ़िया को बुलाया। वह महाधूर्त थी और कुटनीपन के काम में अति निपुण थी। उसने दो-चार दिन ही में बीसियों पंद्रह वर्ष की सुंदरियाँ ला कर खड़ी कर दीं। उन सब के चेहरे तो सौंदर्य में सूरज-चाँद को शरमाते थे किंतु जब जैनुस्सनम ने उनका रूप जादू के दर्पण में देखा तो हर एक को कुरूप पाया, एक भी लड़की ऐसी नहीं मिली जो उस दर्पण में सुंदर दिखाई देती।
अब तो मजबूरी में दूसरी जगह तलाश करना ही था। जैनुस्सनम और मुबारक दोनों बगदाद आए और एक बड़ा-सा मकान ले कर रहने लगे। वे बड़ी उदारता बरतते और रोजाना सैकड़ों आदमी उनके घर खाना खाते। उस मुहल्ले में मुराद नामक एक ईर्ष्यालु व्यक्ति रहता था जो प्रत्येक धनवान से जलता था क्योंकि वह स्वयं निर्धन था। वह जैनुस्सनम की उदारता का यश सुन-सुन कर कुढ़ता रहता था।
एक दिन शाम की नमाज के बाद मसजिद में बैठ कर मुराद ने मुहल्लेवालों से कहा
- भाइयो, सुना है हमारी गली में एक आदमी रहने लगा है जो बेतहाशा धन लुटाता है। शहर में शायद ही कोई ऐसा आदमी हो जिसकी उसने सहायता न की हो। मुझे तो ऐसा मालूम होता है कि कोई चोर-डाकू है वरना उसके पास इतना धन कहाँ से आया। हम लोगों को सावधान रहना चाहिए। खलीफा को मालूम हुआ कि हमारी गली में कोई अपराधी रहता है तो हम सब भी जाएँगे। लोगों ने कहा, तुम ठीक कहते हो। हमें इस आदमी की शिकायत कोतवाल से कर देनी चाहिए। तुम खुद ही यह काम क्यों नहीं

कर देते? मुराद बोला, अच्छी बात है। कल मैं ही कोतवाल से उसकी शिकायत करूँगा।
मुराद को पता नहीं था किंतु उन आदमियों के बीच मुबारक भी बैठा सारी बातें सुन रहा था। दूसरे दिन सुबह मुबारक एक थैली में पाँच अशर्फियाँ और कुछ रेशमी थान ले कर मुराद के घर गया। मुराद ने उसे देख कर कटु स्वर में पूछा, तुम कौन हो और यहाँ किस लिए आए हो? मुबारक ने अत्यंत विनम्रता से कहा कि हम दो परदेशी हैं जो आपके पड़ोस में रहने लगे। फिर उसने अशर्फियों की थैली और रेशमी थान उसे दे कर कहा, मेरे मालिक शहजादे ने आपकी सच्चरित्रता की ख्याति सुन कर मुझे आपके पास भेजा है और कहलवाया है कि यह तुच्छ भेंट स्वीकार करें, मुझे अपना सेवक समझें और अवसर मिले तो दर्शन दें।
यह सुन कर मुराद बिल्कुल पिघल गया। उसने कहा, शहजादे से कहिए कि मैं इस बात पर बड़ा लज्जित हूँ कि अभी तक आपकी भेंट को न आ सका। कल जरूर आऊँगा। फिर नमाज के बाद मसजिद में उसने मुहल्लेवालों से कहा, उस उदार व्यक्ति के बारे में मुझे भ्रम था। अब मुझे मालूम हुआ है कि वह चोर-डाकू नहीं बल्कि किसी देश का राजकुमार है। अब उसकी शिकायत कोतवाल से करने का कोई मतलब नहीं है। अन्य लोगों ने भी मुराद से सहमति प्रकट की।
दूसरे दिन मुराद अच्छे कपड़े पहन कर जैनुस्सनम के पास गया। जैनुस्सनम ने उसकी बहुत खातिर-तवाजो की। मुराद ने पूछा, आप इस नगर में किस उद्देश्य से आए हैं? जैनुस्सनम ने कहा, मैं एक पंद्रह वर्ष की अत्यंत रूपवती कन्या चाहता हूँ जिस का मन भी उतना ही निर्मल हो जितना उस का मुख। मुराद ने कहा, ऐसी कन्या का मिलना कठिन है किंतु मेरी जानकारी में एक ऐसी लड़की है। उसका पिता एक भूतपूर्व राज्य मंत्री है। उसने अपनी बेटी की संपूर्ण शिक्षा- दीक्षा खुद की है। वह कन्या अनिंद्य सुंदरी भी है। चाहेंगे तो उसका पिता उसका हाथ सहर्ष आपके हाथ में दे देगा। जैनुस्सनम ने कहा, लेकिन मैं उसे पहले खुद देखूँगा। मुझे शरीर के सौंदर्य के साथ मन का सौंदर्य भी चाहिए। मुराद बोला, मुख दिखाने की बात मैं तय कर दूँगा किंतु आप उसके स्वभाव को कैसे जानेंगे? स्वभाव तो बहुत दिन साथ रहने पर ही जाना जाता है। जैनुस्सनम ने कहा, मैं किसी का मुख देख कर ही उसके मन की बात जान लेता हूँ। मुराद ने कहा कि मैं आज ही जा कर उस लड़की के पिता से बात करता हूँ। दूसरे दिन मुराद के साथ जा कर जैनुस्सनम कन्या के पिता से मिला। भूतपूर्व मंत्री ने जैनुस्सनम के परिवार आदि के बारे में पूछताछ कर अपनी पुत्री के विवाह की

में है कि तू खुद उनकी खोज में जा और जहाँ भी मिलें उन्हें ले कर आ। तू उन्हें न लाया तो तेरा सिर उतरवा दूँगा।
खुदादाद बादशाह के क्रोध से डर गया और कुछ धन ले कर घोड़े पर सवार हो कर चला गया। वह नगर-नगर और गाँव-गाँव उन्हें तलाश करता रहा किंतु वे कहीं नहीं मिले। वह अक्सर विलाप किया करता और कहता, मेरे भाइयो, तुम लोग कहाँ हो? तुम किसी दुश्मन के हाथ में तो नहीं पड़ गए? जब तक तुम नहीं मिलते मैं हैरन वापस नहीं जा सकता और तुम्हारा कहीं पता नहीं है। अब उस ने बस्तियों को छोड़ कर जंगलों में उन्हें ढूँढ़ना शुरू किया। इसी खोज में वह एक गहन वन में जा पहुँचा। उस में काले पत्थर का एक विशाल भवन बना हुआ था। वह जा कर उस महल के नीचे खड़ा हो गया और ऊपर देखने लगा। काफी ऊँचे पर एक खिड़की खुली और एक अत्यंत सुंदर स्त्री, जिसके बाल बिखरे और वस्त्र मैले और फटे थे, धीरे- धीरे कुछ कहने लगी। खुदादाद ने कान लगा कर सुना। वह कह रही थी, ओ मुसाफिर, यहाँ से फौरन भाग जा, नहीं तो इस भवन का स्वामी तेरी दुर्दशा कर डालेगा। वह महाविकराल नरभक्षी हब्शी है। उस के पंजे में फँसा हुआ आदमी बचता नहीं। वह परदेशियों को पकड़ लाता है, उन्हें एक अँधेरे तहखाने में बंद कर देता है, फिर उन्हें एक-एक करके भून कर खाता है। खुदादाद ने पूछा, तुम कौन हो? स्त्री बोली, मैं काहिरा की रहनेवाली हूँ। बगदाद जा रही थी। इस वन से निकल रही थी कि यही हब्शी आ गया। इस ने मेरे सेवकों को मार डाला और मुझे इस जगह बंद कर दिया। वह मुझ से भोग करना चाहता है किंतु मैं बचती रही हूँ। आज मैं ने उस की बात नहीं मानी तो वह मुझे मार डालेगा। मैं उस का साथ करने से मर जाना पसंद करती हूँ। किंतु तुम क्यों जान देना चाहते हो? तुम भाग जाओ। वह भटके हुए मुसाफिरों को ढूँढ़ने गया है ताकि अपनी खाद्य सामग्री बढ़ाए। वह आता ही होगा। उस की दृष्टि तीक्ष्ण है, वह बहुत दूर से देख लेता है। तुम चले जाओ।
सुंदरी खुदादाद से यह सब कह ही रही थी कि वह राक्षस जैसा मनुष्य आ पहुँचा। वह पर्वताकार लगता था और बहुत ऊँचे तुरकी घोड़े पर बैठा था। उस की तलवार इतनी भारी थी कि उस के अलावा किसी और से उठ ही नहीं सकती थी और उस की गदा कई मन की थी। खुदादाद उसे देख कर डर गया और ईश्वर से प्रार्थना करने लगा कि इस राक्षस से बचा। हब्शी ने उसे तलवार निकाले देखा किंतु उसे तुच्छ जान कर अपने हथियार न सँभाले बल्कि चाहता था कि वैसे ही उसे हाथों से पकड़ ले। यह देख कर खुदादाद ने घोड़ा बढ़ाया और उस के घुटने पर एक तलवार की चोट की। घाव

त्याग दो। भगवान की दया से मैं ने तुम्हारे शत्रु हब्शी को मार डाला है। वे यह सुन कर बड़े खुश हुए।
खुदादाद ने उन के बंधन खोलने शुरू किए। जिनके बंधन खुलते थे वे औरों के भी खोलने लगते थे। इस प्रकार अल्प समय ही में सारे लोग मुक्त हो गए। तहखाने से बाहर निकल कर सबने खुदादाद के पाँव चूमे और उसे आशीर्वाद देने लगे। जब वे महल के बाहर खुले प्रकाश में आए तो खुदादाद ने देखा कि उनमें उस के वे सभी भाई हैं जिन्हें वह ढूँढ़ने निकला था। उस ने कहा, भगवान की बड़ी अनुकंपा है कि तुम लोग सही-सलामत हो। तुम्हारे पिता तुम्हारे वियोग में अति कातर हो रहे हैं। तुम लोगों में से तो कोई राक्षस के पेट में नहीं गया? यह कह कर उस ने उन्हें गिना और शेष समूह से अलग कर दिया। सारे शहजादे एक-दूसरे के गले मिले।
खुदादाद ने सुंदरी से पूछ कर हब्शी के भंडार-गृह का पता लगाया और सब लोगों को भरपेट भोजन कराया। उस ने यह भी देखा कि गोदामों में तरह-तरह की मूल्यवान वस्तुएँ, रत्न, सुगंधियाँ, रेशनी थान, मखमल आदि के ढेर लगे हैं। यह माल हब्शी ने व्यापारियों से लूटा था जिन्हें वह तहखाने के लिए पकड़ लाता था। उस गोदाम में सारे मुक्त बंदियों को ले जा कर खुदादाद ने कहा कि अपना-अपना माल उठा लें। सबने अपनी-अपनी गठरियाँ लीं तो खुदादाद ने शेष वस्तुओं में से भी अधिकांश उन्हें बाँट दीं। किंतु उस ने कहा कि इस सुनसान वन में से तुम लोग इन चीजों को ले कैसे जाओगे। उन्होंने कहा, यह हब्शी हमारे ऊँट और खच्चर भी पकड़ लाता था। वे कहीं बँधे होंगे।
खुदादाद पशुशाला में गया तो उस ने सैकड़ों ऊँटों और खच्चरों के अलावा शहजादों के घोड़े भी बँधे देखे। उनकी रखवाली हब्शी सेवक करते थे। वे सब इन बंदियों को छूटा देख कर समझ गए कि हमारा हब्शी मालिक मारा गया। वे सब जान बचा कर इधर- उधर भाग गए। खुदादाद ने उन्हें जाने दिया। फिर खुदादाद ने उस सुंदरी से कहा, तुम्हें यह हब्शी कहाँ से लाया था? हम तुम्हें वहीं पहुँचा देंगे। यह हैरन के शहजादे तो तुम्हारे देश को जानते ही होंगे, वही तुम्हें पहुँचा देंगे।
लड़की बोली, यह मैं पहले ही बता चुकी हूँ कि मैं काहिरा की रहनेवाली हूँ। तुमने मेरी जान और इज्जत बचाई, इस के लिए तुम्हारी अति आभारी हूँ। मैं अपना और हाल क्या बताऊँ। बस इतना काफी है कि मैं भी एक शहजादी हूँ। एक दुष्ट ने मेरे पिता को मार डाला और उस के देश को लूट लिया। मैं वहाँ से भागी और यहाँ

आ कर इस राक्षस जैसे हब्शी के हाथ पड़ गई। इस पर खुदादाद तथा अन्य शहजादों ने जोर दिया तो वह अपना विस्तृत वृत्तांत इस प्रकार बताने लगी।

दरियाबार की शहजादी की कहानी

उस सुंदरी ने कहा कि काहिरा के निकट दरियाबार नाम एक द्वीप है। उस का बादशाह सब प्रकार से सुखी था किंतु उसे संतान न होने का बड़ा दुख था। वर्षों की प्रार्थनाओं और सिद्धों के आशीर्वादों से उस के यहाँ एक पुत्री जन्मी। मैं ही वह अभागी हूँ। मेरे जन्म पर मेरे पिता ने बड़ा समारोह किया। मैं बड़ी हुई तो उस ने मुझे सारी विद्याओं और कलाओं की शिक्षा दिलवाई। उस ने मुझे राज्य के प्रबंध की स्वयं शिक्षा दी। उस का विचार यह था कि उस की मृत्यु के बाद मैं ही राज्य की अधिष्ठात्री बनूँ।
एक दिन मेरा पिता शिकार खेलने गया। उस ने एक हिरन के पीछे घोड़ा डाल दिया और अपने साथियों से बिछुड़ गया। शाम हो गई किंतु हिरन हाथ न आया। मेरा पिता एक पेड़ के नीचे जा बैठा और सोचने लगा कि राजधानी को किस प्रकार वापस हुआ जाए। रात होने पर उस ने देखा कि गहन वन के बीच एक जगह से प्रकाश आ रहा है। वह उधर चला। उसे आशा थी कि यह प्रकाश किसी गाँव से आ रहा होगा किंतु काफी दूर चलने के बाद उस ने देखा कि प्रकाश एक विशाल भवन से आ रहा है। वह उस ओर बढ़ा तो देखा कि घर में एक लंबा-चौड़ा हब्शी बैठा मांस खा रहा है और हाँडियाँ उठा कर उनसे शराब पी रहा है। उस ने यह भी देखा कि पास ही में एक अति सुंदर स्त्री बैठी है जिसके हाथ बँधे हैं और उस के पास ही दो-तीन वर्ष का एक लड़का बैठा है।
मेरे पिता को उस स्त्री पर दया आई और उस ने इरादा किया कि हब्शी को मार कर इस सुंदरी को छुड़ाऊँ। वह अवसर की प्रतीक्षा से खड़ा रहा। हब्शी जब आधा बैल खा चुका और सारी हाँडियों की शराब पी चुका तो स्त्री से कहने लगा, ओ मनमोहनी, तू कब तक मुझ से अलग-अलग रहेगी और कब तक मेरी इच्छा पूरी नहीं करेगी। तू यह तो देख कि मैं तुझ से कितना अधिक प्यार करता हूँ ओर कैसे तेरे ही ध्यान में मरता हूँ। तुझे भी चाहिए कि मुझ से इसी तरह प्रेम करे। स्त्री ने कहा, दुष्ट जंगली, क्या बकवास लगा रखी है। मैं, और तुम से प्रेम करूँगी। पहले अपनी सूरत तो आईने में देख। तू मुझे बराबर दुख दे रहा है। तू चाहे इस से भी अधिक दुख मुझे दे बल्कि मेरी जान भी ले ले तो भी मैं तेरी ओर मुँह कर के थूकूँगी भी नहीं।

किंतु मेरे पिता ने शादी की एक शर्त यह रखी कि वह फिर किसी अन्य स्त्री से विवाह नहीं करेगा। मुसलमानों में चार विवाह तक जायज हैं, इसलिए यह शर्त उसे अपमानजनक लगी और उस ने यह शर्त अस्वीकार कर दी। चुनांचे विवाह न हुआ। वह इस बात से बहुत नाराज हुआ और बदला लेने के लिए षड्यंत्र करने लगा। एक दिन अवसर पा कर उस ने मेरे पिता को मार डाला और मेरी हत्या के इरादे से मेरे महल में आया। किंतु हमारे मंत्री ने मुझे पहले ही एक गुप्त मार्ग से निकाल लिया था। मंत्री ने एक मित्र के घर रखा। दो दिन में एक जहाज के कप्तान से बात करके मुझे ऐसे बादशाह के देश की ओर रवाना कर दिया जिसका राजा मेरे पिता का मित्र था।
जहाज चला तो सब ठीक-ठाक था कि किंतु कुछ दिनों बाद ऐसा तूफान आया जिसे देख कर कप्तान और नाविक तक गश खा कर गिर पड़े। कुछ ही देर में जहाज के टुकड़े- टुकड़े हो गए और उस में के सब लोग डूब गए। किंतु मुझे एक तख्ता मिल गया जिस पर मैं बैठ गई और एक दिन बाद किनारे आ लगी। किंतु मुझे यह नहीं मालूम था कि भगवान ने और दुख देने के लिए मेरी जान बचाई है। मैं किनारे लगी और मैं ने भगवान को धन्यवाद दिया। मैं बहुत देर तक तलाश करती रही कि शायद मंत्री या जहाज का कोई अन्य व्यक्ति मुझे जीवित मिल जाए किंतु ऐसा नहीं हुआ।
मैं अपने पिता की याद करके और उस निर्जन स्थान में अपने को निपट अकेला पा कर रोने लगी और सोचने लगी कि समुद्र में डूब मरूँ।
इतने में मैं ने अपने पीछे कई मनुष्यों और घोड़ों की आवाज सुनी। पलट कर देखा तो कई घुड़सवार थे जिनके हाथों में शस्त्रास्त्र थे और जिनके मध्य एक नवयुवक था। वह जवान जरी की पोशाक पहने था और रत्नजटित पेटी कमर में बाँधे था। उनको मुझे उस स्थान पर देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ। उन के नायक नवयुवक ने, जो वास्तव में एक शहजादा था, मेरे पास यह जानने के लिए भेजा कि मैं कौन हूँ और वहाँ कैसे पहुँची। उस आदमी ने तरह-तरह से मेरा हाल पूछा। मुझे और भी भय लगा कि यह लोग न जाने कौन हैं और जाने मेरी क्या दशा करें। इसलिए मैं जोर-जोर से रोने लगी। वह परेशान हो कर लौट गया। फिर शहजादे ने कई लोगों को एक साथ मेरे पास भेजा। उन लोगों ने भी मुझ से बहुत पूछा किंतु मैं रोती रही और मैं ने कोई उत्तर नहीं दिया। उन लोगों ने तट पर बहुत-से तख्ते, मस्तूल आदि टूटे हुए पाए और समझ गए कि कोई जहाज टूट कर डूबा है और यह लड़की उस में से बच कर किनारे आ लगी है।

बादशाह के पूछने पर खुदादाद ने अपना हाल यह बताया, जब मेरे भाइयों ने मुझे मरा जान कर रात में प्रस्थान किया तो सुबह वहाँ से एक किसान निकला। उस ने मुझे अचेत और रक्तरंजित देखा तो अपने गाँव में उठा लाया। उस ने मेरे घावों पर जड़ी-बूटियाँ पीस कर लगाईं और मुझे अच्छा कर दिया। स्वस्थ हो कर मैं सोच रहा था कि मैं यहाँ आऊँ। इतने में सुना कि आप का पुराना शत्रु आप पर आक्रमण करनेवाला है। मैं ने कई गाँवों के जवान इकट्ठे किए। वे सब आप की रक्षा के लिए जान देने को तैयार हो गए। मैं ने उनकी फौज बनाई और अवसर रहते आप की सेवा में आ गया।
बादशाह ने खुदादाद की बड़ी प्रशंसा की और मंत्री को आदेश दिया कि उनचास पुत्रों को फाँसी दी जाए। खुदादाद ने हाथ जोड़ कर कहा, निस्संदेह न्याय की दृष्टि से उन्हें यही दंड मिलना चाहिए। किंतु आखिरकार वे आप के पुत्र और मेरे भाई हैं। मैं ने हृदय से उनका अपराध क्षमा किया और आप से भी निवेदन करता हूँ कि उन्हें क्षमा करें। बादशाह ने कहा कि तुम कहते हो तो मैं उन्हें क्षमा करता हूँ। खुदादाद ने बंदीगृह से अपने भाइयों को बुलाया। उस ने एक बार फिर उसी तरह उन के बंधन खोले और उन्हें गले लगाय जैसे हब्शी दैत्य के महल में किया था। प्रमुख नागरिकों और सामंतों ने खुदादाद के हृदय की विशालता की भूरि-भूरि प्रशंसा की। बादशाह ने खुदादाद को उसी समय युवराज और राज्य का स्वामी घोषित कर दिया। उस ने जर्राह और खुदादाद के सहायक किसान को अपार धन-संपदा दे कर विदा किया और खुदादाद के सैनिकों को भी इनाम दिया।
शहरजाद ने यह कहानी खत्म की तो दुनियाजाद ने इस की बड़ी प्रशंसा की। शहरजाद ने कहा कि मेरे पास एक और अति मनोरंजक कथा सोते-जागते आदमी की है, यदि बादशाह मुझे प्राणदंड न दे तो मैं यह कहानी भी सुनाऊँगी, क्योंकि सवेरा हो गया है और कल ही कहानी सुनाई जा सकती है। बादशाह ने दूसरे दिन नई कहानी आरंभ करने की अनुमति दे दी।

सोते-जागते आदमी की कहानी

शहरजाद ने कहा कि खलीफा हारूँ रशीद के जमाने में बगदाद में एक धनी व्यापारी था। उस का एक ही पुत्र था जिसका नाम अबुल हसन था। व्यापारी बड़ा कंजूस था। वह धन एकत्र ही करता था, खर्च बहुत कम करता था। इसलिए जब वह मरा तो उस ने बेहद धन-दौलत छोड़ी। अबुल हसन का स्वभाव इस से उलटा था। उस ने जब

लिए जाएँ। हाँ, एक बात कहनी है। सवेरे तुम्हारी आँख खुले तो मुझ से विदा लिए बगैर चले जाना और दरवाजा बंद कर जाना। खलीफा ने कहा, अच्छी बात है। लेकिन एक बात मेरी चलेगी। अभी तक तुमने प्याले भर-भर कर शराब पिलाई है, यह बाकी बची शराब मैं तुम्हें पिलाऊँगा। अबुल हसन ने मान लिया। खलीफा ने एक प्याला खुद पिया फिर एक प्याला भर कर अबुल हसन को दिया और उस में नजर बचा कर बेहोशी की दवा, जिसे वह अपने साथ लाया था, मिला दी। बेहोशी की दवा बहुत तेज थी। उस ने फौरन अपना असर दिखाया। अबुल हसन ने खाली प्याला भी बड़ी कठिनाई से जमीन पर रखा। उस का सिर घुटनों में जा लगा। खलीफा यह देख कर खूब हँसा।
फिर खलीफा ने अपने दास को बुलाया। वह भोजन कर के आज्ञा की प्रतीक्षा में खड़ा ही था। खलीफा ने कहा, इस आदमी को उठा कर कंधे पर रख कर ले चल। और इस मकान को अच्छी तरह पहचान ले। जब मैं आदेश दूँ तो महल से इस आदमी को इसी तरह ला कर इसी जगह छोड़ जाना। दास ने आसानी से अबुल हसन को कंधे पर लाद लिया और खलीफा ने चलते समय मकान का दरवाजा बंद कर दिया। महल में जा कर वह दास को लिए हुए चोर दरवाजे से अंदर पहुँचा। वहाँ बीसियों दास-दासियाँ खलीफा के शयन कक्ष के बाहर उस की प्रतीक्षा में थे।
खलीफा ने आज्ञा दी, इस आदमी को मेरे जैसे शयनवस्त्र पहनाओ और मेरे पलंग पर सुलाओ। तुम सब लोग रात भर जागते रहो। सुबह जागने के समय तुम लोग उसी प्रकार इसे प्रणामादि करना जैसे मुझे करते हो। इसकी आज्ञा का पालन भी यथावत करना ओर इसे खलीफा कह कर संबोधित करना। उन सबों ने कहा, बहुत अच्छा, हम ऐसा ही करेंगे। फिर खलीफा बाहर आया और उस ने मंत्री को उस के घर से बुला कर कहा, मेरे पलंग पर सोए हुए इस आदमी को देख लो। कल यह मेरे राजसी वस्त्र पहन कर मेरी जगह सिंहासन पर बैठेगा। तुम सब लोग इस के साथ ऐसा ही बरताव करना जैसा मेरे साथ करते हो। मेरे कोष से जो कुछ इनाम वगैरह किसा को दिलाए फौरन दे देना और इसी तरह जो दंड किसी को दिलवाए वह भी देना। सवेरे सभी दरबारी इसका स्वागत ऐसे ही करें जैसा मेरा करते हैं। फिर उस ने महल के प्रबंधक मसरूर को भी आदेश दिया कि हर सुबह जिस तरह मुझे नमाज पढ़ने के लिए जगाया करते हो वैसे ही इसे भी जगाया करना और अन्य व्यवहार भी ऐसे ही करना।
यह आदेश दे कर खलीफा बगल के एक कमरे में जा कर सो रहा। सुबह वह जल्दी ही जाग गया और परदे के पीछे छुप कर देखने लगा कि अबुल हसन क्या करता है और क्या बोलता है। उधर खलीफा के आदेशानुसार सारे कर्मचारी और दास-दासियाँ खलीफा

किया है। परदे के पीछे बैठा हुआ खलीफा अलग उसी दशा का आनंद ले रहा था। इतने में एक दासी ने सामने आ कर उस के पाँव चूमे और गाने-बजानेवाली दासियों ने मधुर संगीत छेड़ दिया। संगीत की लहरियों ने उसे आत्म-विस्मृत कर दिया और वह सोचने लगा कि यह सब क्या हो रहा है। उस ने आँखों पर हथेलियाँ रख लीं और सोचने लगा कि यह सुनहरे वस्त्र पहने हुए दास और यह मनमोहिनी नवयौवना दासियाँ और यह मधुर संगीत क्या है और कहाँ से आ गया। यह भी स्वप्न तो नहीं है, यह सोच कर वह अपनी आँखों पर हथेलियाँ रगड़ने लगा।
इतने में ख्वाजासरा मसरूर आया और सिर झुका कर बोला, सरकार, क्या कारण है कि आज आप ने नमाज अदा नहीं की? क्या रात को आप की नींद में व्याघात हुआ था? क्या, भगवान न करे, आप का शरीर कुछ अस्वस्थ है? अब सरकार उठ कर नित्य कर्म करें और फिर दरबार में पदार्पण करें। वहाँ सभी दरबारी और सामंत आप की राह देख रहे हैं। मसरूर की बातें सुन कर अबुल हसन को और विश्वास हुआ कि मैं जाग रहा हूँ और यह सब कुछ स्वप्न नहीं है किंतु उस की समझ में अब भी नहीं आया कि मुझे खलीफा पद कैसे प्राप्त हो गया। उस ने मसरूर से पूछा, तुमने यह बातें किस आदमी से कही हैं? किसे तुम बादशाह और खलीफा कहते हो? मैं ने तो तुम्हें कभी नहीं देखा। तुमने शायद किसी और के धोखे में मुझे खलीफा समझ लिया है? मसरूर ने कहा, पृथ्वीपालक, आप यह क्या कह रहे हैं? क्या आप इस सेवक की परीक्षा ले रहे हैं? क्या आप ही खलीफा नहीं हैं? और क्या समस्त संसार में आ पका आदेश नहीं माना जाता? आप की कृपा हम सब पर रहे। जान पड़ता है आप ने रात कोई दुःस्वप्न देखा है जिस से यह अजीब बातें कर रहे हैं।
मसरूर की यह बातें सुन कर अबुल हसन हँसने लगा। हँसते-हँसते वह मसनद पर पीठ के बल गिर पड़ा। खलीफा को भी जोरों की हँसी आई और वह ठट्टा मार कर हँसनेवाला ही था कि उस ने यह सोच कर अपनी हँसी दबा ली कि कहीं अबुल हसन आवाज न पहचान पाए। अबुल हसन बहुत देर तक हँसता रहा। फिर वह उठ बैठा और एक लड़के को, जिस का रंग मसरूर की तरह काला था, बुला कर पूछने लगा कि सच बता मैं कौन हूँ। उस के लड़के ने सविनय निवेदन किया कि आप खलीफा हैं। अबुल हसन ने कहा, तू बड़ा झूठा है, इसी कारण तेरा रंग काले कुत्ते जैसा हो गया है। लड़के ने कहा, सरकार विश्वास कीजिए कि मैं झूठ नहीं बोल रहा हूँ, आप वास्तव में खलीफा हैं।
अबुल हसन की समझ में अब भी नहीं आ रहा था कि यह सब लोग क्या कह रहे हैं। उसे फिर स्वप्न देखने का संदेह हुआ। उस ने पास खड़ी हुई एक दासी से कहा, हाथ

अबुल हसन जब इस मद्यपान के कक्ष में आया तो उस ने देखा कि यहाँ की दासियाँ पिछले कक्षों की सभी दासियों से अधिक सुंदर और आकर्षक हैं। उस ने उन्हें देखा तो देखता ही रह गया। उस की आवाज भी गले में फँसने लगी क्योंकि वह उन के सौंदर्य से अत्यधिक अभिभूत हो गया था। उस का जी चाहने लगा कि उन सुंदरियों के साथ हास-परिहास करूँ। किंतु संगीत के स्वर इतने ऊँचे उठ रहे थे कि कुछ कहना-सुनना मुश्किल था। अतएव उस ने ताली बजाई जिसका अर्थ था कि संगीत बंद हो जाए। अतएव संगीत बंद कर दिया गया। अबुल हसन ने अपने पास खड़ी हुई एक दासी को हाथ पकड़ कर अपने समीप बिठाया और पूछा कि तुम्हारा नाम क्या है। उस ने कहा कि मेरा नाम सिलके-गुहर (मोती माला) है। अबुल हसन बोला, जिसने तुम्हारा नाम रखा है उस ने नाम रखने में कंजूसी की है। वास्तविकता यह है कि तुम्हारी दंत-पंक्ति हीरे की माला की तरह चमकती है। मैं सोच कर कोई इस से अच्छा तुम्हारा नाम रखूँगा। अब तुम अपने कोमल हाथों से भर कर मुझे मद्य का एक प्याला दो ताकि मैं तुम्हारे मुख की और देखता हुआ उसे पियूँ। सिल्के-गुहर ने तुरंत ही स्वच्छ और सुगंधित मदिरा से भर कर एक प्याला अबुल हसन को दिया जिसे उस ने तुरंत ही खाली कर दिया। फिर अबुल हसन ने उस से कहा कि एक प्याला शराब तुम भी पियो। सिल्के-गुहर ने उस के आदेश पर एक प्याला भर कर पी लिया। शराब पी कर सिल्के-गुहर ने एक अति नवीन राग बाँसुरी पर गाया। इस राग को सुन कर अबुल हसन झूमने लगा।
इस के बाद अबुल हसन ने अपने हाथ से उसे एक फल खिलाया। और दूसरी दासी को अपने पास बिठा कर उस से उस का नाम पूछा। उस ने कहा कि मेरा नाम माहजबीं (चंद्रमा सदृश माथेवाली) है। अबुल हसन बोला, तुम्हारा भी नाम इस से अधिक सुंदर होना चाहिए था क्योंकि तुम्हारी आँखें चंद्रमा से भी अधिक प्रकाशवान हैं। उस ने उस के हाथ से भी शराब पी और उसे पीने को कहा और उसे भी फल खिलाया। इसी प्रकार उस ने सातों दासियों के हाथ से मदिरा पी और पिलाई और उसे काफी नशा हो गया और उस की आँखें बंद होने लगीं।
अब परदे के पीछे छुपे हुए खलीफा ने सिल्के-गुहर नाम की दासी को इशारा किया। दासी ने एक प्याला शराब का भरा और उस में बेहोशी की दवा डाल कर अबुल हसन के सामने लाई और बोली, हुजूर, अब इस रात का आखिरी जाम मेरे हाथ से पिएँ। इस के बाद मैं एक राग सुनाऊँगी। वह राग मैं ने आज सुबह ही बनाया है और अभी तक किसी और ने उसे नहीं सुना है। अबुल हसन ने एक ही साँस में सारा प्याला पी लिया। दासी ने बाँसुरी ले कर वह राग बजाया जिसे उस ने नवीनतम राग कहा था।

हैं और जिसके अधीन दुनिया के सभी राजा-महाराजा हैं। माँ बोली, हाय भगवान, मै क्या करूँ तुम्हारे सिर पर कोई भूत प्रेत सवार हो गया है या खुद शैतान तुम्हें बहका रहा है। भगवान तुम्हारी रक्षा करें। देखो, तुम अबुल हसन हो। तुम मेरी कोख से इसी घर में पैदा हुए हो। यहाँ की हर एक चीज को देखो और पहचानो। इसी घर पर तुम्हारा राज है, सारी दुनिया पर नहीं। खलीफा का पद तुम्हें न मिला है न मिल सकता है।
अबुल हसन कुछ देर माथे पर हाथ धर कर सोचता रहा जैसे कि कोई भूली हुई बात याद कर रहा हो। फिर धीरे-धीरे बडबड़ाने लगा, हो सकता है कि इस बुढ़िया की बात ठीक हो, यही मेरी माता हो और मैं खलीफा न हो कर अबुल हसन हूँ। फिर चौंक कर कहने लगा, नहीं-नहीं, यह नहीं हो सकता। न जाने मेरे मन में यह तुच्छ विचार कैसे आ गया कि मैं खलीफा नहीं बल्कि अबुल हूँ। बुढ़िया ने सोचा कि शायद इस ने कोई दुःस्वप्न देखा है जिस से अभी तक अच्छी तरह जाग नहीं सका है। उस ने प्यार से पूछा, बेटे, क्या तुमने रात को कोई स्वप्न देखा है जो ऐसी बातें कर रहे हो? तुम्हें खलीफा बनने की खब्त क्यों है?
अबुल हसन ने डाँट कर कहा, बुढ़िया, जबान सँभाल कर बोल। क्या तेरा दिमाग फिर गया है कि खलीफा को अपना बेटा बना रही है और बकवास करती ही जा रही है? इस के अलावा खलीफा की शान में गुस्ताखी भी करती जा रही है। बुढ़िया ने दुखी हो कर कहा, बेटा, भगवान के लिए ऐसी बातें न करो। क्या तुमने गली के मुअज्जिन और उस के साथियों का हाल नहीं सुना कि उन्हें कैसी कड़ी सजा दी गई। मुअज्जिन को चार सौ कोड़े लगे और उस के चार साथियों को सौ-सौ और फिर उन सबों को पीछे की ओर मुँह करके ऊँट पर बिठा कर शहर में घुमाया गया और फिर शहर से निकाल दिया गया। कहीं ऐसा न हो कि खलीफा के पास तुम्हारी यह बातें कोई पहुँचा दे और तुम्हारा भी वही हाल हो।
अबुल हसन ने कहा, तुम्हारी इस बात से और भी साबित हो गया कि मैं खलीफा हूँ। मैं तुम्हारा पुत्र नहीं हूँ न हो सकता हूँ। कल दिन में मैं ने ही आज्ञा दी थी कि मुअज्जिन और उस के साथियों को वही दंड दिया जाए जिसका तुमने अभी उल्लेख किया है। कोतवाल ने मेरे आदेश ही पर उन पाँचों दुष्टों को दंड दिया था और मुझे आ कर बताया था कि सजा दे दी गई।
अबुल हसन की माँ को बड़ी चिंता हुई कि इसे क्या हो गया कि मुअज्जिन की सजा की बात सुन कर यह और जोरों से कहने लगा कि मैं खलीफा हूँ। उस ने फिर कहा, बेटा, सोच-समझ कर बात करो, तुम्हारी बातों को अगर कोई सुनेगा तो तुम्हें

पीछे पड़ा कि अबुल हसन इनकार न कर सका और उसे ले कर अपने घर में आया। रास्ते में खलीफा ने कहा, तुम मुझ पर विश्वास रखो कि हर हाल में तुम्हारी भलाई की बात करूँगा। मैं तुम्हारा हितचिंतक हूँ और तुम्हें मुझ पर किसी तरह का संदेह नहीं करना चाहिए। अबुल हसन ने कहा, चलो, मान लिया। किंतु आज के बाद तुम कभी मेरे यहाँ आतिथ्य सत्कार की आशा न रखना। तुम्हारे कारण जो दुख मुझ पर पड़े हैं उन्हें भूल पाना मेरे लिए संभव नहीं है। खलीफा ने मुस्कुरा कर कहा, भाई, बड़े अड़ियल आदमी हो। मैं इतनी देर से तुम्हारी दोस्ती का दम भर रहा हूँ और तुम्हें विश्वास नहीं होता। लेकिन मैं तुम्हें विश्वास दिला कर ही रहूँगा।
वे लोग बातें करते-करते अबुल हसन के घर पहुँचे। उस की माँ ने रोज की तरह भोजन का प्रबंध कर रखा था। खाने के बाद अबुल हसन की माँ ने फल, शराब आदि भेजी। यह करके वह अपनी कोठरी में जा कर सो रही। इन दोनों ने खूब शराब पी। जब अबुल हसन को नशा चढ़ गया तो खलीफा ने उस से पूछा, तुम्हें किसी से प्रेम हुआ है? वह बोला, न मुझे प्रेम हुआ है न मेरी विवाह की इच्छा है। मैं केवल यह चाहता हूँ कि दोस्तों के साथ अच्छी शराब पियूँ और गप्पे लड़ाऊँ। हाँ, एक सुंदरी को जरूर चाहता हूँ जिसने उस सपने में मेरे साथ बैठ कर मद्यपान किया था। किंतु वैसी स्त्री राजमहल ही में मिल सकती है, और फिर यह सब स्वप्न ही की तो बातें हैं। कौन सचमुच की ऐसी स्त्री है।
अब उस ने शराब का प्याला भर कर खलीफा को दिया, आज रात का अंतिम प्याला मेरे हाथ से पियो। खलीफा उसे पी गया फिर उस ने वह रस्मी तौर पर अपनी ओर से अंतिम प्याला अबुल हसन को दिया, लेकिन फिर से उस में बेहोशी की दवा डाल दी और प्याला उसे दे कर कहा, लो, यह प्याला पियो और सपनेवाली महलों की सुंदरी का ध्यान धर कर सो जाओ। अबुल हसन ने मुस्कुरा कर प्याला लिया और पी गया और कुछ क्षणों में बेहोश हो कर गिर गया। खलीफा ने अपने बलिष्ठ दास को संकेत किया और वह अबुल हसन को कंधे पर डाल कर ले चला। खलीफा भी बाद में निकला और उस ने अब की बार द्वार बंद कर दिया। महल में पहुँच कर खलीफा ने दास से कहा कि इसे उसी कक्ष में ले जा कर लिटा दे जहाँ से उठा कर इस के घर ले गया था। फिर ख्वाजासराओं (जनखों) से कहा कि इस के वस्त्र उतार कर इसे मेरे कपड़े पहना दो। उन्होंने उस की आज्ञा का पालन किया।
खलीफा रात को एक कमरे में जा कर सो गया और सुबह होते ही अबुल हसन के कमरे के पास छुप कर बैठ गया कि उस का तमाशा देख सके। जब अबुल हसन पर से बेहोशी की

महलका की बात का समर्थन किया और सब के सब कहने लगे, अब आप उठें। नमाज का समय अभी नहीं बीता है। नमाज पढ़ें और दरबार करें।
अबुल हसन ने दासियों से कहा, तुम सब झूठी और मक्कार हो। तुम्हें भगवान ने रूप और कलाएँ तो प्रदान की हैं किंतु तुम में झूठ बोलने की आदत भी डाल दी है। तुम मुझे फिर बहकाने आई हो? पहले भी मैं ने ऐसा ही सपना देखा था। उस का असर ऐसा हुआ कि मेरा बड़ा अपमान हुआ और मुझे रोज पचास कोड़े कई सप्ताह तक खाने पड़े। मेरी पीठ की खाल उधड़ गई और मेरी बाँहों और पीठ पर मार के काले- नीले निशान पड़ गए। महलका ने जवाब दिया, सरकार, यह आप का भ्रम है। आप को सजा देनेवाला और मारनेवाला दुनिया में कहाँ है। आप ने स्वप्न मात्र देखा है। आप कहीं बाहर गए ही नहीं। रात भर इस कक्ष में सोते रहे हैं। हाँ, आज सुबह आप की आँखें देर में जरूर खुली हैं। अबुल हसन ने सिर थाम कर कहा, शायद तू ठीक कहती है। जब मैं इस महल से बाहर ही नहीं निकला तो यह सब सपना ही होगा। किंतु उस का संदेह नहीं गया। वह सोचता रहा कि वास्तविकता क्या है, मैं खलीफा हूँ या अबुल हसन? मैं मार खाने को सपना समझूँ या इस सब को जो मैं देख रहा हूँ? फिर उस ने ऊपर के कपड़े उतारे और अपनी बाँहों पर पड़े मार के निशान देखे। उस ने दासियों को यह निशान दिखा कर कहा, धूर्तो, देखो। कहीं सोए हुए आदमी के बदन पर ऐसे मार के निशान पड़ते हैं जिन्हें दबाने से दर्द हो। अब तो यह निश्चित हो गया कि मैं खलीफा अलीफा नहीं, केवल गरीब अबुल हसन हूँ। कोई विश्वास नहीं कर सकता कि किसी पर सपने में मार पड़े और उस के शरीर पर मार के वास्तविक निशान पड़ जाएँ। फिर भी उसे वर्तमान दृश्यों के स्वप्न होने को सिद्ध करना था। उस ने एक दासी से कहा, तू मेरी उँगली में काट खा। खलीफा के इशारे से दासी ने उस की उँगली में जोर से दाँत गड़ा दिए। अबुल हसन ने चीख कर उँगली खींची। इस के साथ ही जोर से बाजे बजने लगे।
अबुल हसन के मस्तिष्क ने इतने सोच-विचार और इतने उलझन के बाद काम करना बंद कर दिया था। उस ने कुर्ता भी नहीं पहना और जब दासियों ने गाने के साथ नाच शुरू कर दिया तो वह उठ कर सिर्फ पजामा पहने हुए उन के साथ नाचने लगा। वह बराबर ताली बजा रहा था और नृत्य की भंगिमाओं में कभी इधर झुकता था कभी उधर और बराबर थिरक रहा था। कभी वह इतना झुकता कि दुहरा-सा होता जाता, कभी पीछे की तरफ झुक जाता। संक्षेप में यही कहना चाहिए कि कोई मसखरापन ऐसा नहीं बचा जो अबुल हसन ने नाचती और हँसती दासियों के आगे न किया हो।

अबुल हसन दरवाजे की सेंध से देख रहा था। दूर से बुढ़िया को आते देखा तो समझ गया कि यह जुबैदा की भेजी आ रही है। उस ने अपनी पत्नी से कहा, अब मैं मरने का स्वाँग करता हूँ और तुम मातम का स्वाँग करो। वह दालान में लेट गया और महजबीन ने उस के मुँह पर पगड़ी और शरीर पर जुबैदा का दिया हुआ थान डाल दिया। जब बुढ़िया दासी उन के घर पहुँची तो उस ने दरवाजा खुला पाया और देखा कि महजबीन उसी प्रकार बाल बिखराए कपड़े फाड़े छाती पीटते हुए महाविलाप कर रही है। बुढ़िया ने उस से कहा कि मैं तुम्हारे मातम में शरीक नही हो सकूँगी क्योंकि मुझे दूसरे काम को भेजा गया है। महजबीन ने उस की बात अनसुनी कर दी जैसे बहुत दुख में हो और बोली, हाय अम्मा, मेरा दुर्भाग्य तो देखो। खलीफा और मलिका ने कितने चाव से हमारा विवाह कराया था लेकिन मेरा सुहाग दो दिन भी नही रहा। फिर वह छाती पीट कर चिल्लाने लगी, अबुल हसन, तुम मुझे छोड़ कर कहाँ चले गए? तुम्हारे बगैर मैं क्या करूँगी? मुझे किसके सहारे छोड़े जा रहे हो?
बूढ़ी दासी ने देखा कि यहाँ तो जो कुछ है वह मसरूर के कथन से उलटा है। उस ने कहा, खुदा की मार पड़े उस मुए मसरूर पर, उस ने झूठ बोल कर खलीफा और बीबी में झगड़ा डलवा दिया।
फिर उस ने महजबीन से कहा, बेटी, तुमने और कुछ सुना है। वह नालायक हब्शी मसरूर खलीफा से क्या कह रहा था? उस ने कहा कि तुम (भगवान न करे) मर गई हो और अबुल हसन तुम्हारी लाश के सिरहाने बैठ कर आँसू बहा रहा है। इस बात पर जुबैदा बीबी क्रुद्ध हुईं और उन्होंने मुझे यहाँ भेजा।
महजबीन रो कर बोली, अम्मा, काश मसरूर का कहा हुआ सच होता। रँड़ापे से तो मौत कहीं अच्छी है। हाय, अब मेरे जीवन में भी क्या रखा है। यह कह कर वह फिर बुक्का फाड़ कर रोने लगी। बुढ़िया भी उस के साथ मिल कर रोने लगी। इसी विलाप के बीच उस ने चतुरता से अबुल हसन के मुँह से पगड़ी उठा कर मुँह देखा और रोती हुई बोली, अबुल हसन, भगवान तुझे स्वर्ग भेजे और तेरी आत्मा को शांति दे। तू कितना भला आदमी था। फिर महजबीन से कहने लगी, अच्छा बेटी, खुदा हाफिज। मैं तो चाहती थी तुम्हारे साथ बैठ कर मातम करती रहती किंतु कुछ ऐसी विवशता है कि तुम्हारे यहाँ अधिक नहीं ठहर सकूँगी। जुबैदा बीबी मेरी राह देख रही होंगी। इस झूठे मसरूर ने उन्हें नाराज कर रखा है। उस बेशर्म ने उन्हीं की कसम खा कर कहा है कि तुम मर गई हो और तुम्हारा पति जीवित है जब कि

सुन कर मुझे ऐसा दुख हुआ है जो कहा नहीं जा सकता। मेरे यहाँ आने का उद्देश्य तो मिट्टी में मिल गया और मार्ग का सारा श्रम वृथा हुआ। अब मेरी भगवान से प्रार्थना है कि तुम्हें लंबी उम्र दे। मैं तुम में तुम्हारे पिता के सारे हाव-भाव और चाल-ढाल देखता हूँ। तुम्हारी सूरत भी उनसे मिलती है, तुम्हें देख कर मुझे बड़ा संतोष होता है। यह कह कर उस ने जेब से कुछ पैसे निकाले और उसे दे कर कहा, बेटा, तुम्हारी माँ कहाँ रहती है? तुम उन से मेरा सलाम कहना और कहना कि कल अवकाश मिलने पर मैं तुम्हारे घर अवश्य आऊँगा और फिर उस जगह पर बैठूँगा जहाँ भाई साहब बैठते थे और इस तरह मन को संतोष दूँगा। अलादीन ने उसे अपने घर का पता बता दिया।
जादूगर के जाने के बाद अलादीन माँ के पास पहुँचा और बोला, अम्मा, क्या मेरे कोई चचा भी है। माँ ने इस से इनकार किया तो वह बोला, अभी एक आदमी मुझ से कह रहा था कि मैं तुम्हारा चचा हूँ। जब मैं ने उसे पिताजी के मरने की बात बताई तो वह मुझे गले लगा कर बहुत रोया और उस ने मुझे बहुत प्यार भी किया और पैसे भी दिए। उस ने तुम्हें सलाम कहा है और कहा है कि कल फुरसत मिली तो आऊँगा और उस जगह बैठ कर अपने मन को संतोष दूँगा जहाँ मेरा भाई बैठता था। उस की माँ ने कहा, तुम्हारे पिता का तो एक ही भाई था जो उस के जीवनकाल ही में मर गया। मैं ने तुम्हारे पिता से किसी और भाई के बारे में कुछ नहीं सुना।
दूसरे दिन अलादीन बाजार में अन्य लड़कों के साथ खेल रहा था तो उसे वही जादूगर मिला। उसे गले से लगा कर दो अशर्फियाँ दीं और कहा, इनसे खाद्य सामग्री ले कर अपनी माँ से खाना पकवा रखना, मैं शाम को तुम्हारे घर आऊँगा और हम सब लोग मिल कर भोजन करेंगे। तुम एक बार फिर अपने घर का ठीक-ठीक पता बताओ जिस से मैं शाम को वहाँ पहुँच सकूँ। अलादीन ने समझा कर पूरा पता बता दिया और जादूगर चला गया। अलादीन भी तुरंत अपने घर गया और उस ने अपनी माँ को दो अशर्फियाँ दे कर सारा हाल बताया। उस की माँ बाजार से अच्छी खाद्य सामग्री लाई और पड़ोसियों से पकाने और खाने के लिए अच्छे बरतन उधार माँग कर सारी दोपहर और तीसरे पहर भोजन बनाने में लगी रही।
भोजन तैयार होने पर उस ने अलादीन से कहा, अब शाम हो गई है। तुम्हारा चचा मकान की तलाश में भटक रहा होगा, तुम बाजार जा कर उसे अपने घर ले आओ। अलादीन ने जादूगर को अच्छी तरह घर का पता बताया था फिर भी वह उसे लेने के लिए उठा। किंतु द्वार पर पहुँच कर उसे लगा जैसे कोई दरवाजा खुलवा रहा है। दरवाजा खोलने पर उस ने देखा कि वही जादूगर दो बोतल शराब और कुछ फल हाथों में लिए

खड़ा है। उस ने यह चीजें अलादीन को दीं और खुद मकान के अंदर चला गया। उस ने अलादीन की माँ को नम्रतापूर्वक नमस्कार किया और उस से पूछा कि मेरा भाई किस जगह बैठा करता था। उस ने जादूगर को वह जगह दिखा दी।
जादूगर ने वहाँ जा कर सिर झुकाया, फिर उस जगह को कई बार चूमा। इस के बाद वह रोते हुए कहने लगा, हाय हाय, मैं कैसा भाग्यहीन हूँ, भाई साहब। मैं इतनी दूर से यात्रा में तरह-तरह का कष्ट उठा कर यहाँ इसीलिए आया था कि तुम्हारे दर्शन करूँ। किंतु तुम्हारे दर्शन मेरे भाग्य में न थे, तुम पहले ही महायात्रा पर चले गए। अलादीन की माँ ने उसे उसी जगह बैठने को कहा तो वह बोला कि मैं अपने भाई की जगह कैसे बैठ सकता हूँ। अलादीन की माँ ने इस बारे में और आग्रह न किया और कहा, जहाँ जी चाहे बैठो। वह एक जगह बैठ गया और उस ने बातचीत शुरू कर दी।
उस ने कहा, भाभी, तुम्हें आश्चर्य तो हो रहा होगा कि यह कौन है लेकिन मैं तुम्हें सारी बात बताए देता हूँ। मैं इसी नगर में पैदा हुआ था किंतु चालीस वर्ष पूर्व मैं ने यह शहर छोड़ दिया। पहले मैं हिंदोस्तान गया। फिर फारस गया और इस के बाद मिस्र देश। इन महान देशों में कई वर्षों तक रह कर मैं अफ्रीका के बड़े देशों में जा कर रहा। वहाँ मैं ने देखे कि बड़े अच्छे लोग रहते हैं इसलिए मैं वहीं जा कर बस गया। इस के बावजूद मैं अपने जन्मस्थान को नहीं भूला। मुझे परिवारवालों और इष्ट मित्रों की बड़ी याद आती रही, विशेषतः अपने बड़े भाई की। मेरी सदैव आकांक्षा बनी रही कि जा कर उन से मिलूँ इस बार मैं ने अपना कारोबार गुमाश्तों के सुपुर्द कर दिया और लंबी यात्रा करके यहाँ आया तो यह कुसमाचार मिला कि वे परलोकवासी हो गए हैं। इस से मुझे इतना दुख हुआ जिस का मैं वर्णन नहीं कर सकता। कितने दुख की बात है कि मैं ने इतनी लंबी यात्रा के कष्ट उठाए और सब कुछ बेकार गया। खैर, मुझे अलादीन को देख कर तसल्ली हुई। यह मेरे प्रिय भाई की निशानी है। इसीलिए इसे पहली ही बार देख कर समझ लिया कि यह मेरे भतीजे के अलावा और कोई नहीं हो सकता। इस ने तुम्हें यह भी बताया होगा कि इस के पिता की मृत्यु की बात सुन कर मुझे कितना रोना आया था। भगवान को धन्यवाद है कि मैं ने उन के पुत्र को देखा, जैसे उन्हीं को दूसरे रूप में देख लिया।
यह बातें सुन कर अलादीन की माँ का भी जी भर आया और वह अपने पति की याद में फूट-फूट कर रोने लगी। अब जादूगर ने यह बातें छोड़ दीं और अलादीन से पूछा, बेटा, तुम जीविका के लिए क्या करते हो, तुमने कौन-सा धंधा अपनाया है और कौन-

चिराग के पास किसी पूर्णतः निष्कपट बालक के अलावा और कोई नहीं जा सकता, कम से कम वह जादूगर खुद तो हरगिज नहीं जा सकता था। एक बात यह भी थी कि जादूगर खुद मोटा-ताजा था और चाहे जितने कसे कपड़े पहनता दालानों की दीवारों से वह छू ही जाता और वहीं भस्म हो कर रह जाता। उस ने अलादीन को इसीलिए पटाया था और उस पर इतना धन इसलिए व्यय किया था कि अलादीन के द्वारा उसे चिराग की प्राप्ति हो जाए। उस का यह भी इरादा था कि अलादीन से चिराग ले कर अपने मंत्रबल से उसे वहीं मार डाले और उस की आकस्मिक मृत्यु की बात कह कर निर्दोष बना हुआ अफ्रीका चला जाए।
जब अलादीन ने उसे चिराग न दिया, या वह चिराग न दे सका तो जादूगर निराशा और क्रोध के कारण यह भी भूल गया कि उस का दिया हुआ जादुई छल्ला अभी अलादीन के पास है। जादूगर को शायद खुद उस छल्ले की इतनी जरूरत भी न थी, इसलिए वह छल्ले को भूल गया।
किंतु अलादीन का जीवन इसी छल्ले के कारण बचा। जादूगर तो मंत्रबल से गढ़े पर शिला रख कर चला गया, अलादीन यही समझता रहा कि मेरा चचा बाहर खड़ा है। वह लगातार रोता-पीटता और चचा की मनुहार करता रहा कि मुझे वापस निकाल लीजिए, मैं किसी तरह सीने के ऊपर से चिराग निकाल कर आप को दे दूँगा।, इस के बाद ही मुझे गढ़े से निकालिएगा। लेकिन अब उस की कौन सुनता। जादूगर तो इतने में मीलों आगे चला गया था। बेचारा अलादीन घंटों तक चिल्लाता रहा जब तक प्यास ने उस का गला बंद नहीं कर दिया।
अंत में फिर वह सीढ़ी से उतर कर दालान के बाहर बैठ गया। यहाँ कम से कम उस के हाथ-पाँव हिलाने की जगह तो थी। वह यह देख कर और परेशान हुआ कि दालान, बाग आदि धीरे-धीरे गायब होने लगे क्योंकि वे सब जादू के खेल थे। हाँ, उस के पास चिराग और बटोरे हुए रत्न जैसे के तैसे थे। किंतु अब वह इनका क्या करता। वह अँधेरे में इधर-उधर भटकने लगा और फूट-फूट कर रोने लगा। अंत में वह एक जगह थक कर बैठ गया। उस ने सोना चाहा किंतु उसे नींद भी नहीं आई। एक पूरा दिन इसी तरह गुजर गया हालाँकि अलादीन को दिन-रात का अंतर क्या मालूम होता।
अब उस ने समझ लिया कि अब मुझे यहीं भूखे-प्यासे मर जाना है और मेरी माँ को मेरी कोई खबर नहीं लगेगी और वह भी रो-रो कर मर जाएगी। वह निपट निराशा में अपने हाथ मलने लगा। इसी में उस के हाथ का छल्ला किसी चीज से रगड़ खा गया और इस के साथ ही एक महाभयानक जिन्न उस के सामने प्रकट हो गया और बोला, मेरे लिए क्या आज्ञा है? मैं आप का गुलाम हूँ। अलादीन भय के मारे कुछ बोल नहीं

सका तो जिन्न ने फिर कहा, स्वामी, आप डरें नहीं। मैं उस आदमी का सेवक हूँ जो यह लोहे का छल्ला पहने हुए है। उस की आज्ञा पर मैं सब कुछ कर सकता हूँ। अलादीन जीवन से निराश तो हो ही चुका था, डर को छोड़ कर बोला, अगर ऐसे ही बलवान हो तो मुझे यहाँ से निकाल कर ऐसी जगह खड़ा कर दो जहाँ से मैं अपने घर को जा सकूँ। जिन्न ने एक क्षण ही में उसे उस के सारे सामान के साथ बाहर निकाल दिया और गायब हो गया।
अलादीन को बड़ा आश्चर्य हुआ कि यह क्या हो रहा है। उस ने आँखें मल कर चारों ओर देखा तो पहचान गया कि यह वही रास्ता है जिस से वह अपने नगर से आया था। बहुत देर तक इसी आश्चर्य में पड़ा रहा कि उस अँधेरे से मैं किस प्रकार बाहर निकला और वह महाभयानक आदमी कौन था जो स्वयं को मेरा दास कहता था। लेकिन अधिक सोच-विचार से लाभ भी क्या था। वह दो दिन का भूखा-प्यासा था और यह भी भूल गया था कि रत्नों को फेंक-फाक कर अपना बोझ हलका करे। उसी तरह लदा-फँदा धीरे-धीरे रेंगता हुआ-सा अपने घर की ओर चलने लगा और दो-तीन घंटे में वहाँ पहुँच गया।
घर पहुँच कर उसे बड़ी प्रसन्नता हुई। किंतु वह माँ से कुछ कह न सका, भूख, प्यास और कमजोरी की वजह से बेहोश हो कर गिर पड़ा। उस की माँ भी उस की चिंता में दो दिन से सोई न थी। उसे बेहोश होते देख कर दौड़ी और उस के मुँह पानी के छींटे दे कर और पंखा करके उसे थोड़ी देर में होश में लाई। होश में आ कर उस ने माँ से कहा कि कुछ खाने को लाओ, मैं ने दो-तीन दिन से कुछ खाया नहीं है। खाना तैयार था और उस की माँ उसे ले भी आई और बोली, बेटा, थोड़ा-सा खाना। बहुत भूख में एकदम बहुत-सा खा लेने से मृत्यु तक हो सकती है। अलादीन ने थोड़ा-सा खा कर थोड़ा पानी पिया और बोला, मैं भगवान की दया ही से जीवित बचा। जिस आदमी को तुम अपना देवर समझे थी और जिसके हाथ में तुमने मुझे सौंपा था उस ने मेरे साथ बड़ी दुश्मनी की और अपनी समझ में मुझे जान से मार कर चला गया था। वह मुझ से झूठा स्नेह दिखा कर मुझ से अपना कोई काम निकलवा कर फिर मेरी हत्या कर देना चाहता था।
थोड़ी देर आराम करके अलादीन ने विस्तृत रूप से अपने ऊपर बीती हुई बातें अपनी माँ को बताईं। यह सुन कर उस की माँ ने जादूगर को बहुत गालियाँ दीं और ईश्वर को धन्यवाद दिया कि अलादीन सही-सलामत घर लौट आया। उसे अलादीन ने फल लगनेवाले रत्न भी दिए। वह बेचारी भी उनका मूल्य नहीं जानती थी इसलिए उस ने उन्हें एक ओर रख दिया। किंतु उसे यह देख कर आश्चर्य हुआ कि अँधेरे में वे

कहा, ऐसी बारह रकाबियाँ मैं यहूदी के हाथ बेच चुका हूँ और उस ने हर रकाबी की कीमत एक अशर्फी दी है। यहूदी ने कहा, बड़ा अनर्थ हो गया। यह रकाबियाँ बहत्तर-बहत्तर अशर्फियों की हैं। मैं तुम्हें इस के बदले में बहत्तर अशर्फियाँ देता हूँ। तुम और जगह जा कर पूछ लो। अगर किसी ने इस से अधिक मूल्य लगाया तो मैं तुम्हें इसका दुगुना दूँगा। लेकिन तुम यह बात यहूदी से न कहना वरना वह मुझ से झंझट करेगा। अलादीन ने उसे धन्यवाद दिया और किसी और जगह सौदा न किया। कई वर्षों तक माँ-बेटे का काम इस धन से बड़ी आसानी से चला। वे चाहते तो जिन्न से असंख्य धन ले सकते थे किंतु उन्हें उस से अधिक की जरूरत ही महसूस नहीं हुई।
इस अरसे में अलादीन अक्सर सर्राफे और जौहरी बाजार में जाया करता और तरह-तरह के रत्नों को देखा करता। अब वह समझ गया कि अपने घर में उस ने जो चीजें पत्थर के फल समझ कर रक्खी थीं वे पत्थर नहीं बल्कि ऐसे रत्न हैं जिन के मुकाबले में जौहरियों की दुकानों में रक्खे हुए रत्न कोई हैसियत नहीं रखते। फिर भी उस की हिम्मत उन का सौदा करने की न हुई, क्योंकि फौरन यह सवाल उठता कि इतने बड़े रत्न कहाँ से आए। उस ने इस बारे में माँ से भी कुछ नहीं कहा। वह या तो इस पर विश्वास न करती या दूसरों से इसका उल्लेख कर देती।
एक दिन अलादीन बाजार में घूम रहा था। उस ने सुना कि बादशाह की तरफ से मुनादी हो रही है कि कल न कोई व्यापारी अपनी दुकान खोले न कोई आदमी बाजार में या सड़कों पर दिखाई दे। कल शहजादी बदर बदौर शहर के बड़े हम्माम में स्नान करेगी और फिर अपने महल को जाएगी। अलादीन स्वभाव से बेफिक्रा तो था ही, उस की इच्छा होने लगी कि किसी तरह उस शहजादी को देखना चाहिए जिसके परदे के लिए इतना प्रबंध हो रहा है। उस ने हम्माम के सामने का एक मकान एक दिन के लिए किराए पर लिया और दूसरे दिन मुँह अँधेरे ही उस में जा कर किवाड़ बंद कर लिए और वहीं बैठ कर किवाड़ों की दरारों से हम्माम की ओर देखने लगा। कुछ देर बार अपनी दासियों के साथ शहजादी आई और हम्माम के बाहर उस ने अपने चेहरे से नकाब उतारा और भारी कपड़े भी उतारे और हम्माम में चली गई।
अलादीन ने उस समय तक अपनी बूढ़ी और कुरूप माँ के अलावा कोई स्त्री देखी ही नहीं थी और जानता ही नहीं था कि स्त्रियों का सौंदर्य कैसा होता है। यहाँ उस के सामने स्वयं राजकुमारी आ गई थी जिस से बढ़ कर सारे चीन देश में कोई सुंदरी नहीं थी। यह उस के अनिंद्य सौंदर्य को देख कर गश खा कर गिर पड़ा। कुछ देर में वह होश में आया तो सोचा कि अब यहाँ ठहरने से कोई लाभ नहीं

क्योंकि शहजादी की एक दासी ने उस से कहा था, इस समय आप ने नकाब बाहर उतार दिया तो कोई बात नहीं किंतु हम्माम से खुले मुँह बाहर न निकलिएगा। अलादीन ने दरवाजे में अंदर से जंजीर लगाई और घर के पिछवाड़े से निकल कर छोटी गलियों से छुपता-छुपाता अपने घर पहुँच गया।
घर जा कर वह मुँह ढाँप कर लेटा रहा क्योंकि वह शहजादी के प्रेम में जकड़ चुका था और विरह-व्यथा को सहन नहीं कर पा रहा था। वह रह-रह कर ठंडी साँसें भी भरता था। उस की माँ को देख कर आश्चर्य हुआ कि कल तक तो लड़का ठीक-ठाक था, आज इसे क्या हो गया है। उस ने पूछा, बेटे, क्या तुम्हारी तबीयत खराब है जो इस तरह लेटे हुए आहें भर रहे हो? अलादीन ने कोई उत्तर नहीं दिया। माँ ने उस समय अधिक पूछताछ नहीं की क्योंकि उसे भोजन भी बनाना था। वह भोजन बनाती रही और अलादीन उसी तरह लेटा हुआ आहें भरता रहा। उस की माँ खाना बना कर उस के पास लाई और दोनों खाने लगे किंतु अलादीन ने दो-चार कौर ही खाए और खाने से हाथ खींच लिया। उस की माँ ने फिर पूछा, क्या तुम्हारी तबीयत ठीक नहीं जो खाना नहीं खा रहे हो? अलादीन ने कुछ बहाना बना दिया और अपनी व्यथा माँ से न कही।
शाम के खाने के समय भी उस का यही हाल रहा तो उस की माँ ने फिर उस के दुख का कारण पूछा। उस ने फिर चुप साध ली। माँ भी पूछते-पूछते थक गई थी और झुँझला कर चुप हो रही कि अपना कष्ट नहीं बताता तो न बताए। अलादीन रात भर शहजादी की याद में तड़पता रहा। लेकिन अब उस की विरह-व्यथा उस के बर्दाश्त के बाहर हो गई थी। वह उठ कर अपनी माँ के पास जा बैठा जो चर्खा कात रही थी। उस ने कहा, अम्मा, तुम कल से मेरी तकलीफ के बारे में पूछ रही हो और मैं छुपाता रहा हूँ। अब मैं तुम से अपना कष्ट कहता हूँ। मुझे कोई बीमारी नहीं है और न मुझे किसी हकीम के पास जाने की जरूरत है। कल शहजादी के हम्माम में जाने की परसों मुनादी हुई थी। कल मैं ने एक जगह छुप कर शहजादी का अनुपम सौंदर्य देखा। उसे देखते ही मेरे मन की ऐसी दशा हो गई जिसे मैं बता नहीं सकता। मैं उस के विरह में व्याकुल हूँ। यही मेरी बीमारी है और इस बीमारी का इलाज सिर्फ यही हो सकता है कि मैं बादशाह से प्रार्थना करूँ कि वह अपनी बेटी का विवाह मेरे साथ कर दे।
उस की माँ यह सुन कर हँसने लगी और बोली, अलादीन, तुम्हारा तो दिमाग खराब हो गया है। मेरे सामने कहा सो कहा, और किसी के सामने ऐसी पागलपन की बात न करना। अलादीन ने कहा, मैं जानता हूँ कि तुम यही कहोगी। मैं तुम्हें बता

देना चाहता हूँ कि मैं पागल नहीं हूँ और मैं राजकुमारी से अवश्य विवाह करूँगा। उस की माँ ने कहा, लड़के, तू क्या बेकार की बातें कर रहा है। क्या तुझे याद नहीं रहा कि तू एक मामूली दरजी का बेटा है और तेरा पिता बादशाह की प्रजा में एक निर्धन व्यक्ति था? तुझे क्या यह बात भी नहीं मालूम कि बादशाह लोग विवाह-संबंध या तो बादशाह में करते हैं या फिर मंत्री आदि के कुलीन घरानों में? अगर वे ऐसा न करें तो उनकी प्रजा में कुछ प्रतिष्ठा न रहे और राज्य का प्रबंध भी चौपट हो जाए।
अलादीन ने कहा, अम्मा, जो कुछ तुम ने कहा वह सब ठीक है लेकिन मैं राजकुमारी से विवाह किए बगैर नहीं रह सकता। तुम्हें शाही महल में जा कर शहजादी के साथ मेरे विवाह का प्रस्ताव करना ही पड़ेगा। शहजादी से मेरा विवाह नहीं हुआ तो मैं जीवित न रह सकूँगा। वैसे भी उस के वियोग में आधा तो मर ही चुका हूँ और उस के बगैर मैं जीवन वृथा भी समझता हूँ। उस की माँ यह सुन कर बहुत घबराई। वह कातर हो कर कहने लगी, देखो बेटे, हमें वही काम करना चाहिए जो हमें शोभा दें। और वही बातें कहनी चाहिए जो हमारे मुँह से अच्छी लगें। कहाँ राजा भोज, कहाँ गँगुआ तेली। तुम किसके सपने देख रहे हो। अगर अपनी हैसियत के किसी परिवार की कन्या होती तो मैं बगैर झिझक तुम्हारे विवाह का प्रस्ताव ले कर जाती। लेकिन इतने बड़े बादशाह के सामने ऐसा प्रस्ताव रखने की मेरी हिम्मत कैसे हो सकती है। मेरी तो हालत यह है कि तुम्हारा बाप भी मुझ पर बिगड़ता था तो मैं डर के मारे काँपने लगती थी और तुम कह रहे हो कि मैं बादशाह से बात करूँ और वह भी ऐसे विषय पर जिसे मानने के लिए दुनिया में कोई भी तैयार नहीं होगा।
अलादीन इस पर भी अपनी जिद पर अड़ा रहा और रोता-पीटता रहा तो उस की माँ ने कहा, अच्छा, मैं बादशाह के पास चली जाऊँगी। लेकिन बड़े लोगों विशेषतः बादशाहों के पास कोई जाता है तो खाली हाथ नहीं जाता, कुछ भेंट ले कर जाता है। बादशाह के पास जाने के लिए कोई भेंट भी होनी चाहिए जो उस की प्रतिष्ठा के अनुकूल हो। मेरे पास ऐसी कौन-सी चीज हो सकती है जो बादशाह को भेंट कर सकूँ? तुम क्यों ऐसी बात पर जिद कर रहे हो जो हो ही नहीं सकती। तुम शहजादी का खयाल दिल से निकाल दो।
अलादीन ने कहा, अम्मा, तुम क्या कर रही हो? शहजादी का प्रेम मेरे हृदय में इतना गहरा जम चुका है कि या तो शहजादी का आलिंगन करूँगा या मृत्यु का। मैं तुम से विनय करता हूँ कि अगर तुम्हें मेरे जीवन से जरा-सा लगाव है तो तुम

करने का अवकाश नहीं मिला। लेकिन मैं कल फिर जाऊँगी और आशा है उस से बात कर सकूँगी। अलादीन को यह सोच कर संतोष हुआ कि माँ की हिम्मत खुल गई है, वह देर-सवेर विवाह का प्रस्ताव कर ही देगी।
बुढ़िया दूसरे दिन फिर उसी तरह तैयार हो कर दरबार पहुँची। किंतु उस का जाना व्यर्थ ही सिद्ध हुआ। दरबार का द्वार बंद था और वहाँ के कर्मचारियों ने उसे बताया कि दो दिनों तक दरबार में छुट्टी रहेगी। अतएव वह दरबार से वापस लौट आई और दरबार की छुट्टी की बात अलादीन को बताई। तीसरे दिन फिर वह दरबार में गई किंतु उस दिन भी बड़ी भीड़ थी और उसे बादशाह से बात करने का मौका नहीं मिला। इस के बाद वह बराबर कई दिनों तक दरबार में पहुँची लेकिन कभी उस ने बादशाह से बात करने का अवसर नहीं पाया। रोजाना आधा दिन वहाँ बिताती और फिर घर वापस आ जाती।
एक दिन बादशाह ने मंत्री से कहा, मैं कई दिनों से देख रहा हूँ कि वह बुढ़िया रोज यहाँ आती है और चुपचाप खड़ी रहती है। यह अपने हाथ में भी कोई पोटली लिए रहती है। यह कौन है और मुझ से क्या चाहती है? वास्तव में मंत्री को बुढ़िया से उस का मंतव्य पूछ रखना चाहिए था किंतु उस ने आलस्यवश ऐसा नहीं किया था, इसलिए कहा, पृथ्वीपाल, यह स्त्रियाँ जरा-जरा-सी बात के लिए राजदरबार में पहुँच जाती हैं। यह भी ऐसी ही कोई नालिश ले कर आई होगी कि कसाई ने गोश्त या कुंजड़े ने सब्जी खराब कर दी या तौल में कम दी। बादशाह को इस उत्तर से संतोष न हुआ। उस ने कहा, ऐसी बात नहीं मालूम होती। इन बातों के लिए कोई दिन-प्रतिदिन नहीं खड़ा रहता। कल अगर यह आए तो इसे सबसे पहले पेश किया जाए। मंत्री ने सिर झुका कर यह आदेश स्वीकार किया किंतु उस का पालन न किया। दूसरे दिन बुढ़िया के आने पर मंत्री ने उसे आगे न बढ़ाया। बादशाह ने खुद मंत्री से कहा कि इस बुढ़िया को मेरे पास क्यों नहीं लाते, तो मंत्री को विवश हो कर उसे पेश करना पड़ा।
बुढ़िया ने, जो इतने दिनों तक दरबार का अदब-कायदा देख चुकी थी, अपने सिर को भूमि से लगाया और सिंहासन के सामने बिछे हुए सुंदर कालीन को चूम कर देर तक धरती से सिर लगाए रही। उस ने तभी सिर उठाया जब कि बादशाह ने आदेश दिया कि उठ कर अपनी बात कहो। वह खड़ी हुई तो बादशाह ने कहा, मैं कई दिनों से तुम्हें यहाँ आते देख रहा हूँ। तुम क्या चाहती हो? बुढ़िया ने एक बार फिर धरती चूमी और बोली, हे दीनबंधु प्रजापालक न्यायमूर्ति महाराज, यदि मुझे प्राणदान का आश्वासन दिया जाए तो मैं अपना मनोरथ आप के सामने रखूँ। किंतु

मैं जो कुछ कहना चाहती हूँ आप से एकांत में कहना चाहती हूँ। बादशाह ने आदेश दिया कि दरबार खाली हो जाए। अतएव सभी लोग बाहर चले गए, केवल प्रधानमंत्री ही वहाँ रह गया क्योंकि उस से कोई बात गुप्त नहीं रखी जाती थी, साथ ही बादशाह की सुरक्षा के लिए भी एक आदमी का रहना जरूरी था।
बादशाह ने कहा, अब कहो, क्या कहती हो? अलादीन की माँ ने कहा, पहले आप आश्वासन दें कि मेरी बात से क्रुद्ध न होंगे और मेरा कोई अपराध भी समझेंगे तो क्षमा करेंगे। बादशाह ने यह आश्वासन दिया कि निर्भय हो कर अपनी बात कहे। बुढ़िया ने विस्तारपूर्वक बताया कि अलादीन ने किस प्रकार छुप कर शहजादी को देखा था और कैसे उस के विरह में मृत्यून्मुख हो रहा है। उस ने कहा, मैं अपने पुत्र की प्राणरक्षा के हेतु उस के साथ शहजादी के विवाह का प्रस्ताव ले कर आई हूँ।
बादशाह ने इस पर नाराजगी तो न दिखाई किंतु कुछ कहा भी नहीं। फिर बोला, तुम इस पोटली में क्या चीज रोज ले कर आती हो? अलादीन की माँ ने रत्नों का पात्र खोल कर बादशाह के पैरों के पास रख दिया। बादशाह की आँखें फट गईं। वह एक-एक रत्न को उठा कर देखता और उस की प्रशंसा करता। उस ने मंत्री को पास बुला कर कहा, तुम भी देखो। तुमने कहीं इतने बड़े और चमकीले रत्न देखे हैं? मंत्री ने कहा, मैं ने नहीं देखे। बादशाह ने कहा कि ऐसे रत्नों के मालिक के साथ राजकुमारी का विवाह होना ठीक रहेगा।
मंत्री को इस बात से दुख हुआ। उसे विश्वास था कि शहजादी का विवाह उस के पुत्र ही से होगा और बाद में उस के पुत्र को चीन का विशाल राज्य मिलेगा। इस समय रत्नों के कारण बादशाह की राय बदलते देख कर वह दुखी हुआ और कहने लगा, शहजादी के सामने यह रत्न क्या चीज हैं? मेरा पुत्र तीन महीने में इन से अच्छे रत्न ला सकता है।
बादशाह जानता था कि अलादीन की माँ की दी हुई भेंट से अधिक मूल्यवान कोई भेंट नहीं हो सकती किंतु उस ने मंत्री की बात मान ली। लेकिन उस ने ऊँची आवाज में अलादीन की माँ से कहा, हमने शहजादी से तुम्हारे पुत्र के विवाह का प्रस्ताव स्वीकार किया। लेकिन हमें अपनी बेटी के लिए समुचित दहेज की व्यवस्था करने में कुछ समय लगेगा। यह दहेज लगभग तीन महीने में तैयार होगा। इसलिए तुम तीन महीने बाद मेरे पास आना। तब मैं शादी के समारोह की रूपरेखा बनाऊँगा। अलादीन की माँ ने यह सुन कर कई बार झुक कर भूमि स्पर्श की और खुश घर वापस आई। उस की प्रसन्नता कई कारणों से थी - एक तो यह कि उस के बेटे की

रात के कपड़े पहना कर कमरे में भेज दिया और द्वार बंद कर दिया। शहजादी के पलंग पर बैठते ही जिन्न ने दोनों के पलंग को अलादीन के घर पहुँचा दिया। अब अलादीन ने जिन्न से कहा कि मंत्रि-पुत्र के पाजामे के अलावा सारे कपड़े उतार कर उसे घर के तंग और बदबूदार शौचालय में बंद कर दे। उस ने वह भी कर दिया। बेचारे मंत्रि-पुत्र की बदबू और सर्दी से बुरी हालत हो गई। अलादीन ने शहजादी से अधिक बात नहीं की। उस ने सिर्फ यह कहा, तुम्हारे पिता ने मुझ से तुम्हें ब्याहने का वादा किया था। वे अपने वचन से फिर गए हैं। मैं ने यह सब सिर्फ इसलिए किया है कि मंत्रि-पुत्र तुम्हारा अंग स्पर्श न कर सके। वह बेचारी वैसे ही इस अद्भुत व्यापार को देख कर हक्का-बक्का हो रही थी, अलादीन की बातें सुन कर चुपके से पलंग पर दुबक गई। फिर अलादीन ने अपनी पगड़ी और ऊपरी वस्त्र उतारा और शहजादी के पलंग पर उस की ओर पीठ करके और बीच में नंगी तलवार रख कर सो गया। यह इस बात का प्रतीक था कि यद्यपि वह शहजादी को अपना समझता था किंतु विवाह के पूर्व संभोग का अपराध नहीं करना चाहता था। अपनी प्रेमिका की पवित्रता बचा सकने पर उसे बहुत संतोष हुआ और वह रात भर आराम की नींद सोया। उधर मंत्रि-पुत्र रात भर पाखाने में सड़ता रहा और सर्दी में ठिठुरता रहा और शहजादी भी अपने और अपने शैय्या के साथी के बीच में नंगी तलवार देख कर भयभीत रही और बहुत कम सोई।
सुबह जिन्न बगैर बुलाए ही आ गया और अलादीन से बोला, मालिक, अब मुझे क्या आज्ञा है? अलादीन ने बीच से तलवार हटा दी और पलंग से उतर कर कहा, अब मंत्रि- पुत्र को पलंग पर लिटा कर दोनों को मय पलंग के उन के कमरे में पहुँचा दो। वह जिन्न मंत्रि-पुत्र को शौचालय से निकाल कर लाया और उसे उस के कपड़े पहना दिए, फिर उसे शहजादी के पलंग पर पटक दिया। इस बार जिन्न ने स्वयं को गुप्त नहीं रखा बल्कि अपने स्वाभाविक महाभयानक आकार में बना रहा। शहजादी बदर बदौर और मंत्रि-पुत्र दोनों की उस का विकराल रूप देख कर घिग्घी बँध गई। कोई आश्चर्य की बात न होती अगर वे दोनों डर के मारे ही मर जाते। लेकिन भाग्यवश दोनों केवल अधमरे हो गए।
उस देश की रीति थी कि सुहागरात के बाद की सुबह को कन्या का पिता आ कर उस से इशारे से पूछता था कि रात स्वाभाविक रूप से बीती या नहीं। बादशाह भी सुबह यह हाल लेने के लिए आया।
उस की आहट सुनते ही मंत्रि-पुत्र पलंग से कूदा और दूसरे दरवाजे से निकल गया क्योंकि वह अपनी दुर्दशा छुपाना चाहता था। बादशाह ने कमरे में जा कर बेटी

मैं अभी तेरे टुकड़े-टुकड़े किए डालता हूँ। बदर बदौर घबरा कर रोने लगी और बोली, पिताजी, मुझ से कोई अपराध हुआ हो तो क्षमा कर दें। आप जोर देते हैं तो मैं पिछली दो रातों का हाल आप को बताए देती हूँ परंतु आप को इस पर विश्वास नहीं होगा। इसीलिए मैं अब तक चुप थी। यह कह कर बादशाह को अपने मुँह से सारा हाल बताया। फिर कहने लगी, आप को विश्वास न हो रहा हो तो मंत्रि-पुत्र से पूछ लीजिए। बादशाह ने कहा, बेटी, मैं तुम्हें किसी तरह दुख नहीं देना चाहता। मैं ने तुम्हारा विवाह तुम्हारी प्रसन्नता के लिए किया था, दुखी करने के लिए नहीं। खैर, अब तुम चिंता छोड़ो। अब तुम्हें ऐसा अनुभव नहीं होगा।
इस के बाद बादशाह अपने महल में आया और उस ने वहाँ मंत्री को बुलाया। उस ने मंत्री से पूछा, क्या तुमने अपने बेटे से बात की और उस का हाल पूछा? उस ने कहा मैं ने नहीं पूछा। बादशाह ने बदर बदौर का बताया हुआ पूरा किस्सा उसे सुनाया और कहा, यद्यपि मैं अपनी पुत्री की बात विश्वास करता हूँ फिर भी तुम्हारे बेटे द्वारा इसकी पुष्टि चाहता हूँ। तुम जा कर अपने बेटे से यह बात पूछो। मंत्री अपने घर गया और अपने बेटे को बुला कर कहने लगा, शहजादी ने बादशाह से यह बातें कही हैं, तुम इस बारे में क्या कहते हो?
मंत्रि-पुत्र पिछले दिन विवाह टूटने के भय से झूठ बोल गया था किंतु दूसरे दिन भी वही अनुभव हुआ तो उस की हिम्मत टूट गई। उस ने कहा, कल मैं ने इस बात से इनकार कर दिया था लेकिन वास्तविकता यह है कि शहजादी ठीक कहती है। दो रातों से एक महाभयानक जीव हम दोनों को पलंग समेत उठा कर कहीं पहुँचा देता है। फिर मेरे कपड़े सिवा पाजामे के, उतार कर मुझे एक तंग शौचालय में बंद कर देता है जहाँ भरे हुए मल की बदबू से रात भर मेरा दिमाग फटता रहता है और मैं सरदी से ठिठुरता रहता हूँ और हाथ-पाँव भी नहीं हिला पाता। मुझे पता नहीं कि रात भर मेरी पत्नी के साथ क्या होता है। सुबह वही जीव मुझे निकाल कर कपड़े पहनाता है और पलंग पर लिटा कर हम दोनों को पलंग समेत महल में वापस ले आता है। मैं ऐसी शादी से बाज आया। दो-तीन दिन और यही हाल रहा तो मर ही जाऊँगा। मंत्री ने देखा कि दो दिन में उस का बेटा बदहवास ही नहीं, दुबला भी हो गया था। वह भी इस नतीजे पर पहुँचा कि इसे शहजादी से अलग रखना चाहिए वरना वास्तव में चार-छह रोज में मर जाएगा। उस के बाद वह बादशाह के पास गया और बोला, सरकार, शहजादी बिल्कुल ठीक कहती है। मेरे बेटे ने कल शादी टूटने के डर से झूठ बोला था लेकिन आज उस ने सच्ची बात बताई है। उसे दो रातों से तंग गंदे

वहाँ जिन्न भी आ गया जिसने कपड़े पहनने में अलादीन की सहायता की। फिर जिन्न ने कहा, अब क्या आज्ञा है? अलादीन ने कहा, मेरे लिए एक ऐसा बढ़िया घोड़ा लाओ जिसके मुकाबिले का कोई घोड़ा शाही अस्तबल में मौजूद न हो। उस का साज-सामान भी लाखों रुपए का होना चाहिए। इस के अलावा बारह गुलाम मेरे दाएँ-बाएँ और पीछे चलने के लिए हों और बीस सिपाही मेरी सवारी के आगे चलने के लिए। छह दासियाँ अच्छे कपड़े पहने हुए मेरी माँ की सेवा में चलें और दो दासियाँ दो भारी और अति मूल्यवान कपड़ों के जोड़े उठाए हुए साथ चलें, एक मेरी माँ के लिए और दूसरा मेरी भावी पत्नी के लिए। इस के अलावा दस तोड़े अशर्फियों के मेरे लिए हों जिन्हें मैं रास्ते में लुटाता चलूँ।
जिन्न यह आदेश पा कर गायब हो गया और दो क्षणों में यह सारी चीजें ला कर दे दीं। अलादीन ने अशर्फियों के चार तोड़े अपनी माँ को दिए ताकि शाही महल में इनाम- इकराम के काम आएँ और छह तोड़े अपने साथ चलनेवाले बारह गुलामों में से छह को दिए कि मुट्ठी भर-भर कर अशर्फियाँ फकीरों और गरीबों के लिए बादशाह के महल तक लुटाते चलें। अपनी माँ के आगे छह दासियाँ करके कहा, यह छह तो तुम्हारी सेवा के लिए हैं। इनके अलावा यह दो दासियाँ बहुमूल्य वस्त्र लिए हैं, इनमें एक जोड़ा जो तुम चाहो बदर बदौर को दे देना और दूसरा अपने लिए रख लेना। फिर उस ने जिन्न से कहा कि इस समय तुम जाओ, जब फिर जरूरत पड़ेगी तो तुम्हें बुलाऊँगा। जिन्न यह सुन कर गायब हो गया।
इस के बाद अलादीन ने एक दास को शाही दरबार में भेजा कि बादशाह से कहे कि अलादीन आना चाहता है। वह जा कर वापस हुआ और बोला, बादशाह और सारे सरदार आप की प्रतीक्षा में हैं। अलादीन कभी घोड़े पर न बैठा था किंतु उस बढ़िया घोड़े पर शान से बैठा और उसे कुदाता हुआ बाजार से निकला। लोगों की भीड़ लग गई और अलादीन के दासों ने अशर्फियाँ लुटानी शुरू कर दीं। लोगों ने अलादीन को हमेशा फटेहाल देखा था। उसे इस ठाठ-बाट में देख कर कोई पहचान न सका और लोग आपस में बातें करने लगे कि यह शानदार आदमी जो इतने खुले हाथों से अशर्फियाँ लुटा रहा है, कौन है। सारे शहर में उस की चर्चा होने लगी और जानकार लोगों ने बताया कि कुछ ही देर पहले इस ने बादशाह के लिए ऐसी बहुमूल्य भेंट भेजी है जिसकी कोई कल्पना भी नहीं कर सकता। उन्होंने यह भी बताया कि इसी आदमी से शहजादी का विवाह होना निश्चित हुआ है। यह सुन कर लोग बड़े खुश हुए और कहने लगे कि वास्तव में शहजादी के लिए इस से अधिक उपयुक्त वर का मिलना असंभव था।

उसे देखा किंतु जब उस ने दुबारा यही प्रश्न किया तो उस ने कहा, मक्कार, तू मुझ से ऐसे अपराध पूछता है जैसे कि जानता ही नहीं। मेरे साथ महल की छत पर आ। मैं तुझे तेरा अपराध बताऊँगा नहीं बल्कि दिखाऊँगा। यह कह कर बादशाह उसे महल की छत पर ले गया और उस से पूछने लगा, बताओ, तुम्हारा बनवाया महल कहाँ है?
अलादीन भी आश्चर्य से आँखें फाड़ कर देखने लगा लेकिन उसे महल का निशान भी देखने को न मिला। वह ऐसा हक्का-बक्का हुआ कि जड़वत बहुत देर तक खड़ा रहा। बादशाह ने फिर पूछा, अब चुप क्यों हो? बताओ महल का क्या हुआ। अलादीन ने कहा, महल वाकई गायब है लेकिन इसमें मेरा कोई दोष नहीं है, मेरा तो इतना बड़ा महल चला गया। बादशाह ने कहा, तुम्हारा महल जाए भाड़ में। मुझे तो यह चिंता है कि मेरी बेटी कहाँ गई। मैं उस के दुख में पागल हो गया हूँ। तुम अगर खैरियत चाहो तो मेरी बेटी का पता लगाओ वरना अब जब मैं तुम्हें दंड दूँगा तो ऐसी व्यवस्था करूँगा कि तुम्हारे समर्थक भी कुछ न कर सकें। अलादीन ने कहा, इस की जरूरत नहीं। मुझे भी अपनी पत्नी के गुम हो जाने का दुख कम नहीं है। आप मुझे चालीस दिन का समय दे दीजिए। इस काल में यदि मैं शहजादी का पता न लगा सका तो स्वयं ही अपना सिर काट कर आप के पाँवों पर डाल दूँगा। बादशाह ने यह स्वीकार किया।
बादशाह ने कहा, चालीस दिनों तक तुम्हारी छुट्टी है, तुम जहाँ चाहो खोज कर सकते हो। लेकिन यह न समझना कि तुम मुझ से बच कर निकल सकोगे। तुम संसार में चाहे जहाँ भी रहोगे मैं तुम्हें पकड़वा मँगाऊँगा। अलादीन यह सुन कर महल से बाहर निकला। वह अपने दुर्भाग्य पर रोता हुआ जा रहा था। सरदार और अमीर-उमरा भी उस के दुख से दुखी हो कर उस से मुँह छुपाने लगे, वे उस की तसल्ली के लिए कहते भी क्या। अलादीन ने चालीस दिन की अवधि तो ले ली थी किंतु उस की समझ में खुद भी नहीं आ रहा था कि महल और बदर बदौर को कहाँ ढूँढ़े। तीन दिनों तक वह शहर में भटकता रहा। हर जान पहचानवाले से पूछता, भाई, तुम्हें मालूम हो तो बताओ कि मेरा खोया हुआ महल कहाँ मिल सकता है। लोग उस पर तरस खाते और आपस में कहते, बेचारा पागल हो गया है। कितना भला आदमी है किंतु दुर्भाग्य की मार से किसे छुटकारा मिला है। वे लोग दया करके उसे कुछ खाने-पीने को दे देते। इस से अधिक कर भी क्या सकते थे।
तीन दिन बाद वह बिल्कुल निराश हो गया। कहाँ तो कल तक यह हाल था कि लोगों में अशर्फियाँ लुटवाता था और अपनी बुद्धि और पराक्रम से राजदरबार में

बड़ा सम्मान प्राप्त किए था कहाँ यह हाल कि लोग उसे पागल समझ कर तरस खाते और उसे भीख के तौर पर कुछ टुकड़े दे देते। अंत में वह अर्धविक्षिप्त अवस्था में शहर से बाहर निकल कर जंगल में चला गया। बड़ी दूर तक जाने के बाद उसे एक नदी मिली। उस ने सोचा कि मेरी पत्नी तो अब मुझ से मिलने से रही, अब जीवन व्यर्थ है। और जीवन भी कितने दिन का है। अवधि के अंत में बादशाह उसे मरवा ही देगा। उस ने सोचा कि नदी में डूब मरूँ।
फिर उसे खयाल आया कि मुसलमान के लिए आत्महत्या वर्जित है। उस ने सोचा कि मैं नदी में स्नान करके फिर नमाज पढ़ूँगा और भगवान से निरंतर अपने उद्देश्य की सफलता की प्रार्थना करूँगा। यह सोच कर वह नदी में उतरा लेकिन उस का पाँव फिसल गया और वह तैरना नहीं जानता था इसलिए डूबने लगा। तभी उस का हाथ एक छोटी-सी चट्टान पर लगा और उस ने उसे कस कर पकड़ लिया।
यह डूबना भी उस के लिए सौभाग्यपूर्ण हुआ। वह छल्ले को भूल गया था किंतु छल्ले के पत्थर पर रगड़ खाने से छल्ले का जिन्न आ गया और बोला, स्वामी, क्या आज्ञा है? अलादीन ने कहा, पहले मुझे डूबने से बचाओ, फिर तुम से कुछ बात करूँगा। जिन्न ने उसे उठा कर किनारे पर बिठाया। कुछ देर बाद अलादीन सावधान हुआ तो उस ने पूछा, तुम क्या मुझे बता सकते हो कि मेरा महल कहाँ गायब हो गया और मेरी पत्नी यानी शहजादी कैसी है? जिन्न ने कहा, यह मैं बता सकता हूँ। जिस जादूगर ने आप को उस गढ़े में बंद किया था जहाँ से पहली बार मैं ने आप को निकाला था वही जादूगर आप की पत्नी के साथ आप के महल को उड़ा ले गया है। वह अफ्रीका का रहनेवाला है और वहीं पर अपने निवास नगर में महल को ले गया है। उस के हाथ जादू का चिराग लग गया था।
अलादीन ने कहा, क्या तुम शहजादी के समेत महल को वापस ला कर उस की पुरानी जगह पर रख सकते हो? जिन्न ने कहा, यह मेरा काम नहीं है, यह चिराग के जिन्नों का काम है। हम लोग एक-दूसरे के कामों में दखल नहीं दे सकते। अलादीन ने कुछ सोच कर कहा, अच्छा, क्या तुम मुझे उस जगह पहुँचा सकते हो जहाँ वह महल है? जिन्न बोला, यह जरूर कर सकता हूँ। चुनांचे अलादीन ने जिन्न से यही करने को कहा और जिन्न ने कुछ क्षणों ही में अफ्रीका के उस नगर में उसे पहुँचा दिया जहाँ जादूगर रहता था और जहाँ उस ने चीन से महल को ला कर रखा था। अलादीन को उस के महल के सामने उतार कर जिन्न गायब हो गया।
यद्यपि उस समय रात काफी बीत गई थी और अँधेरा हो गया था तथापि अलादीन ने अपना महल पहचान लिया। वह एक पेड़ के नीचे जा बैठा और मन ही मन ईश्वर को

गलती तो मेरी ही थी कि मैं ऐसी चीज की तरफ से लापरवाह हो गया। मैं ने तुम्हें चिराग के बारे में बताया भी कुछ नहीं था इसलिए अगर तुमने उसे पुराना और बेकार चिराग समझा तो तुम्हें कैसे दोष दिया जाए। शहजादी ने कहा, मैं तो अपनी मूर्खता पर अपने को बार-बार धिक्कारती हूँ। जब अचानक मैं महल समेत इस नई जगह में आ गई तो पहले तो कुछ समझ ही नहीं पाई कि क्या हुआ। फिर उसी दिन जादूगर मेरे पास आया और कहने लगा कि तुम अब अफ्रीका में हो। अपने पति और पिता से मिलने की आशा छोड़ दो। मैं ने पूछा कि मैं यहाँ कैसे आ गई। उस ने हँसते हुए और अपनी चालाकी की शान झाड़ते हुए बताया कि जिस चिराग को तुमने पुराना समझ कर मुझे नए चिराग के बदले में दे दिया था यह सब उसी का चमत्कार है।
अलादीन ने कहा, खैर, यह तो हुआ। अब तुम पहले यह बताओ कि वह चिराग इस समय कहाँ है। और यह भी बताओ कि जादूगर ने अभी तक तुम्हें भ्रष्ट तो नहीं किया है? बदर बदौर बोली, चिराग को वह दुष्ट हमेशा अपने वस्त्रों के अंदर अपने सीने से सटाए रखता है। तुम्हारी दूसरी बात का जवाब यह है कि अभी तक तो भगवान की दया से मेरी पवित्रता बची हुई है, आगे की बात नहीं कह सकती। वह तो रात होने पर रोजाना मेरे पास आता है और तरह-तरह से मुझे फुसलाने का प्रयत्न करता है किंतु मैं उस की तरफ देखती भी नहीं। उस ने बलात्कार शायद इसलिए नहीं किया कि उसे आशा है कि कुछ दिनों में मैं पिता और पति से अलग से अलग होने का दुख भूल जाऊँगी और प्रेमपूर्वक उसकी अंकशायिनी बनूँगी। मैं ने तो तय कर लिया है कि खुद उस से नहीं बोलूँगी और उस ने बलात्कार किया तो आत्महत्या कर लूँगी।
अलादीन ने कहा, वह मेरे प्राणों का शुरू से ग्राहक रहा है और अब भी उसे अवसर मिलेगा तो मारने की चेष्टा करेगा। इस के अतिरिक्त वह तुम से भी पशुवत यौन व्यवहार करना चाहता है, बाद में तुम्हें मार डालेगा। मुझे सुन कर बड़ी प्रसन्नता हुई कि वह तुम्हें भ्रष्ट नहीं कर सका। इस समय बाहर जाता हूँ, दोपहर तक फिर वापस आऊँगा। मैं उसी चोर दरवाजे से आऊँगा। मैं दूसरे कपड़े पहने हुए आऊँगा। इसलिए तुम वहाँ ऐसी होशियार और विश्वस्त दासी को रखना जो मेरे चेहरे को पहचानती हो। तुम मुझे कुछ धन भी दो क्योंकि मुझे हम दोनों की मुक्ति का उपाय करना है और आज का काम भी चलाना है।
बदर बदौर ने उसे अशर्फियों की एक थैली दी क्योंकि अलादीन तो फकीर बन कर चीन के राजमहल से निकला था हालाँकि कपड़े हमेशा जैसे पहने था। शहजादी की वही

नीचे बैठूँगा। जब जादूगर बेहोश हो जाए तो दासी को भेज कर मुझे बाहर से बुला लेना। इतना काम कर सकोगी?
शहजादी ने यह स्वीकार किया। अलादीन उस समय एक अन्य कक्ष में चला गया और दिन ढलते ही चोर दरवाजे से निकल कर एक पेड़ के नीचे जा बैठा। इधर शहजादी ने होशियारी के साथ अपनी साज-सज्जा करवानी शुरू की। अफ्रीका आने के बाद तो उस ने कपड़े भी नहीं बदले थे। उस ने गले में बहुमूल्य मोतियों की माला पहनी और हाथों में रत्नजटित कंगन। उस ने नए वस्त्र पहने जिनमें बढ़िया इत्र लगाया गया था। कमर में उस ने पटका बाँधा और दासियों से कहा कि मैं ने अभी तक जादूगर को अच्छी तरह देखा भी नहीं है, वह आए तो इशारा कर देना कि वही है ताकि उसे मेरे व्यवहार से यह न मालूम हो कि मैं ने उसे नहीं देखा है। जादूगर के आने पर दासी ने इशारा दे दिया कि चिराग बदलनेवाला छली आ गया। शहजादी मुस्कुराती हुई उस के स्वागत के लिए उठी और उस का हाथ पकड़ कर उसे अपने पास बिठा लिया। यद्यपि वह सम्मानार्थ दूर ही बैठना चाहता था क्योंकि बहरहाल वह राजकुमारी थी। जादूगर इस बात से खुश तो हुआ लेकिन समझ न पाया कि शहजादी के व्यवहार में यह परिवर्तन कैसे हो गया। इसलिए चुपचाप बैठा रहा। शहजादी ने मोहक मुस्कान बिखेरते हुए कहा, तुम यह सोच रहे हो न कि आज इस ने अपनी सूरत कैसे बदल डाली। बात यह है कि अभी तक मैं अपने पिता से अलग होने और अपने पति के बिछोह में घुली जाती थी। आज मुझे यह खयाल आया कि मेरा पति बेचारा तो कभी का स्वर्ग सिधार गया होगा, मेरे पिता ने मेरे गायब हो जाने पर क्रोध में आ कर उसे मरवा डाला होगा। अब पति तो जिंदा ही नहीं रहा और पिता से मिलने की आशा न है न इच्छा क्योंकि वह मेरे पति का हत्यारा है। मैं ने सोचा है मैं उनकी याद में कब तक घुल-घुल कर जियूँ। इसीलिए मैं ने पति की जगह तुम्हें ही मान लिया है। आज मैं तुम्हारे साथ भोजन करूँगी। किंतु अभी भोजन का समय नहीं हुआ है, तब तक हम लोग कुछ पिएँ-पिलाएँ। मैं ने बहुत दिनों से अच्छी शराब नहीं पी है। तुम्हारे शहर में अच्छी शराब मिलती है?
जादूगर यह सुन कर फूला न समाया और बोला, आप के लायक तो शहर में शराब नहीं मिलेगी लेकिन मैं ने अपने तहखाने में बड़ी पुरानी शराबें रखी हैं। मैं उन्हीं में से ला रहा हूँ। शहजादी ने कहा, तुम क्यों जा रहे हो? किसी आदमी को भेज कर क्यों नहीं मँगा लेते? जादूगर ने कहा, मुझे खुद ही जाना पड़ेगा। न कोई आदमी तहखाने तक जा पाएगा न उस का ताला ही खोल सकेगा। शहजादी ने कहा, अच्छा जाओ लेकिन जल्दी आना। मुझे तुम्हारे बगैर अच्छा नहीं लगता। जादूगर

बार रमल द्वारा एक-दूसरे के कुशल-मंगल का समाचार जान लेते थे। अतएव कुछ महीनों के बाद जब छोटे भाई ने रमल के नक्शे फैला कर बड़े भाई का हाल जानना चाहा तो उसे मालूम हुआ कि चीन की राजधानी के एक आदमी ने उसे विष दे कर मार डाला है। वह आदमी पहले बहुत निर्धन था किंतु इस समय बड़ा धनवान और बादशाह का दामाद है।
यह जान कर वह बहुत रोया। फिर उस ने सोचा कि कायरों की तरह रो-पीट कर बैठे नहीं रहना चाहिए, अपने भाई के हत्यारे से इस हत्या का बदला लेना जरूरी है। वह अपना जादू का सामान और रुपया-पैसा ले कर घोड़े पर बैठा और मारा-मारा कुछ महीनों में चीन की राजधानी पहुँचा। उस ने उसी दिन एक घर किराए पर लिया और दूसरी सुबह वह शहर घूमने निकला।
घूमते-घूमते वह एक ऐसी जगह पहुँचा जहाँ शहर के बेफिक्रे और निठल्ले लोग जमा हो कर बातचीत में सारा दिन बिताते थे। वह भी चुपचाप उन की बातें सुनने लगा। बहुत देर तक उसे कोई मतलब की बात सुनने को नहीं मिली। वे लोग खा-पी भी रहे थे और गप्पें भी मार रहे थे। कुछ ही देर में उन लोगों में फातिमा बीबी की बातें होने लगीं और उन में से हर एक फातिमा बीबी के स्वभाव और आचार-व्यवहार की प्रशंसा करने लगा। यह बातचीत सुन कर जादूगर को आशा हुई कि इस बात से मेरा मतलब पूरा होने की संभावना है।
वह कुछ देर तक सुनता रहा लेकिन चूँकि विदेशी आदमी था इसलिए उन लोगों की दी हुई सूचनाएँ उस की समझ में नहीं आ रही थीं। उस ने उस समूह के एक व्यक्ति को अलग ले जा कर उस से पूछा कि यह फातिमा बीबी कौन हैं और उनमें क्या विशेषता है। उस ने कहा, तुम परदेशी मालूम होते हो वरना इस नगर में तो हर आदमी फातिमा बीबी को केवल जानता ही नहीं उस का भक्त भी है। वह वृद्धा बड़ा पवित्र और सदाचारी जीवन व्यतीत करती है। सारी उम्र उस ने ईश्वर आराधना के सिवाय कुछ नहीं किया है। उस में ऐसी चमत्कारी शक्ति है कि किसी के सिर में चाहे जितना दर्द हो वह हाथ से छू भी दे देती है तो दर्द दूर हो जाता है। जादूगर ने पूछा कि वह रहती कहाँ है। उस आदमी ने जादूगर को फातिमा बीबी के घर का पता दे दिया।
जादूगर उस की गली को पूछते-पूछते उस के घर जा पहुँचा किंतु उस समय वह अंदर नहीं गया। बाहर ही से देख कर उस ने मकान की पूरी तरह पहचान कर ली। आधी रात के लगभग वह अपने मकान से उठ कर फातिमा बीबी के घर जा पहुँचा। बंद दरवाजे को उस ने अपने साथ लाए हुए औजारों से खोल लिया। अंदर देखा कि वृद्धा अपने आँगन

नहीं की है बल्कि किसी के बहकाने से की है। हम तुझे छोड़ देते हैं पर अब तेरी आज्ञा पर न आएँगे। हाँ, जाने से पहले मैं तुझे एक बड़े खतरे से होशियार किए देता हूँ। तेरी स्त्री ने एक जादूगर के बहकावे में आ कर यह माँग की है। यह जादूगर उस जादूगर का छोटा भाई है जिसे तूने विष दे कर मारा था। वह अपने भाई की मौत का बदला लेने के लिए आया है क्योंकि उसे रमल से अपने भाई की हत्या की बात मालूम हो गई थी। उस ने फातिमा बीबी के घर जा कर उसे मार डाला है और उस का वेश बना कर तेरे महल के एक बाहरी मकान में रह रहा है।
उस ने शहजादी को इसलिए बहकाया है कि मैं क्रोध में आ कर तुम दोनों को मार डालूँ। तुम उस से होशियार रहो वरना वह भाई का बदला लिए बगैर नहीं रहेगा। यह कह कर जिन्न गायब हो गया।
अलादीन तो फातिमा के बारे में जानता ही था। उस ने कुछ देर सोच कर अपनी योजना बना ली। वह शहजादी के कमरे में गया। शहजादी उस से रूख के अंडे के बारे में कुछ पूछे इस से पहले वह सिर पकड़ कर लेट गया और हाय-हाय करने लगा। शहजादी के पूछने पर उस ने बताया कि अचानक सिर में बहुत तीव्र पीड़ा होने लगी है जिसने मुझे बेहाल कर दिया है। शहजादी बोली, यह सौभाग्य की बात है कि बीबी फातिमा यहीं हैं, वे चुटकी बजाते ही तुम्हारा दर्द दूर कर देंगी। यह कह कर उस ने एक सेवक से कहा कि बीबी फातिमा को बुला लाओ, मालिक के सिर में दर्द हो रहा है।
जादूगर ने देखा कि जिन्न ने भी अलादीन को नहीं मारा तो वह खुद उसे मारने की तैयारी करके आया। अलादीन ने कहा, माता जी, मेरे सौभाग्य से आप यहाँ हैं वरना मैं सिर दर्द के मारे मर ही जाता। आप की कृपा हो तो मेरी पीड़ा एक क्षण में दूर हो सकती है। मेरे हाल पर दया कीजिए और अपने आशीर्वाद और मंत्रों के द्वारा मेरी पीड़ा दूर कीजिए। इस दर्द ने मेरा बुरा हाल कर रखा है। यह कह कर अलादीन ने अपना सिर झुका कर उस के आगे कर दिया।
जादूगर ने एक हाथ अलादीन के सिर पर रखा और दूसरे से अपने कपड़ों में छुपाई हुई कटार निकालने लगा। अलादीन होशियार था ही। उस ने फुर्ती से उस का हाथ मरोड़ कर कटार छीन ली और उस की छाती में उतार दी। वह एक मिनट तड़प कर मर गया।
शहजादी ने दूर से देखा तो चीख कर कहने लगी, मेरे प्रियतम, यह घोर पाप तुमने क्यों किया क्यों? ऐसी पवित्रात्मा वृद्धा की हत्या कर दी! किंतु अलादीन

ने उस से कहा, दास-दासियों को हटा दो और तुम मेरे पास आओ। सब के हटने के बाद शहजादी पास आई तो अलादीन ने जादूगर का मुखावरण हटाते हुए कहा, अच्छी तरह देखो। मैं ने फातिमा बीबी को नहीं, इस नरक के कीड़े को मारा है। शहजादी ने मृत चेहरा देखा तो वास्तव में पुरुष दिखाई दिया।
अलादीन ने कहा, यह दुष्ट तुम्हारा अपहरण करनेवाले जादूगर का छोटा भाई था। यह खुद जादूगर था और अपने भाई की मौत का बदला लेने के लिए यहाँ आया था। इस ने बेचारी फातिमा के घर जा कर उस से अपना रूप बदलवाया और फिर यहाँ आ कर तुम्हें बहका कर हम दोनों को मरवाना चाहा। चिराग के जिन्नों का असली स्वामी रूख का अंडा है। मेरी माँग पर जिन्न बहुत बिगड़ा और कहने लगा कि तुमने अपनी ओर से यह माँग की होती तो तुम्हें, तुम्हारी पत्नी और तुम्हारे महल को अभी खत्म कर देता। किंतु तुमने बहकावे में आ कर यह माँग की है इसलिए छोड़ देता हूँ लेकिन अब तुम्हारे बुलाने पर न आऊँगा। यह कहने के बाद उसी ने उस जादूगर का पूरा हाल मुझे सुनाया।
शहजादी ने यह सुन कर भगवान को धन्यवाद दिया। कमी ही किस चीज की रह गई थी जो जिन्न को फिर बुलाया जाता। दोनों ने विश्वस्त सेवकों द्वारा इस जादूगर की लाश भी जंगल में फिंकवा दी। उस के बाद दोनों पति-पत्नी शांति और सुख से रहने लगे। कुछ वर्ष और बीते तो चीन का बादशाह अति वृद्धावस्था के कारण हलकी-सी बीमारी के बाद मर गया। बदर बदौर के अतिरिक्त उस के और कोई संतान न थी इसलिए उस की मौत के बाद वही रानी बनी और अलादीन के हाथ में सारा राज्य-प्रबंध आ गया। लंबे अरसे तक दोनों ने राज्य सुख भोगा।

खलीफा हारूँ रशीद और बाबा अब्दुल्ला

दुनियाजाद के प्रस्ताव और शहरयार की अनुमति से नई कहानी प्रारंभ करते हुए शहरजाद ने कहा कि कभी-कभी आदमी का चित्त प्रसन्न होता है और उसकी कोई साफ वजह भी नहीं होती। ऐसी स्थिति भी होती है जब आदमी खुश तो होता है लेकिन हजार सोचने पर भी उसकी समझ में नहीं आता कि खुशी क्यों हो रही है। ऐसी ही बात कभी-कभी चिंता और उद्विग्नता के बारे में भी होती है कि समझ में नहीं आता कि किस बात की चिंता है। खलीफा हारूँ रशीद एक दिन अपने महल में यूँ ही उदास बैठा था और उदासी का कोई कारण भी उसकी समझ में नहीं आ रहा था। इतने में उसका विश्वासयोग्य मंत्री जाफर आया। खलीफा ने न उसकी ओर देखा न उससे कोई बात की। मंत्री ने कहा, मालिक, इस दासानुदास की समझ में नहीं आ रहा है

अशर्फी दी है वह खलीफा हारूँ रशीद है और उसने आदेश दिया है कि तुम कल दरबार में आओ और सब को बताओ कि तुम धौल लगाने को क्यों कहते हो। भिक्षुक ने कहा, जरूर आऊँगा।
वे दोनों कुछ दूर और चले तो देखा कि एक मैदान में मूल्यवान कपड़े पहने एक आदमी घोड़ी पर सवार है और उसे बेदर्दी से चाबुक से मार-मार कर और एड़ लगा- लगा कर एक मैदान में बेकार और बेदर्दी से दौड़ा रहा है। घोड़ी का दौड़ते- दौड़ते बुरा हाल हो गया था। उसके मुँह से झाग और खून निकल रहा था किंतु सवार को उस पर बिल्कुल तरस नहीं आ रहा था। वह बराबर उसे चाबुक मार-मार कर चक्कर दिए जा रहा था। खलीफा ने वहाँ खड़े एक आदमी से पूछा कि यह आदमी कौन है और घोड़ी को क्यों ऐसे सता रहा है। उसने कहा, मुझे यह नहीं मालूम। किंतु मैं रोज देखता हूँ कि यह आदमी अपनी घोड़ी को इसी तरह दौड़ाता हैं और अकारण ही चाबुक मार-मार कर मैदान के सैकड़ों चक्कर उसे दिलवाता है। यह सुन कर खलीफा ने अलग ले जा कर मंत्री से कहा कि मैं आगे जा रहा हँ। तुम इस जवान घुड़सवार से जा कर कहो कि कल उसी समय, जो भिक्षुक के लिए नियत किया गया है, दरबार में हाजिर हो और इस बात को बताए कि वह अपनी घोड़ी के साथ क्यों ऐसी कठोरता बरतता है। मंत्री ने यही किया और घुड़सवार को खलीफा का आदेश सुनाया।
इसके बाद वे दोनों आगे बढ़े तो देखा कि एक गली में एक भव्य भवन खड़ा है। खलीफा ने पूछा, क्या यह भवन मेरे किसी सरदार का है? मंत्री को स्वयं नहीं मालूम था कि किसका भवन है। अतएव उसने वहाँ के रहनेवालों से पूछा तो उन्होंने बताया कि यह महल एक हव्वाल यानी रस्सी बट कर बेचनेवाले का है। जिसका नाम ख्वाजा हसन है। खलीफा को आश्चर्य हुआ कि कल दरबार में इस हव्वाल को भी आने को कहो ताकि मैं उससे इतना धनवान होने का रहस्य पूछूँ। मंत्री ने ऐसा ही किया।
दूसरे दिन सुबह की नमाज पढ़ने के बाद खलीफा दरबार में अपने सिंहासन पर बैठा। मंत्री ने उपर्युक्त तीनों व्यक्तियों को जो पहले ही वहाँ आ गए थे, खलीफा के सामने पेश किया। खलीफा ने अंधे भिखारी बाबा अब्दुला से पूछा, मैं जानना चाहता हूँ कि तुम दाता से धौल मारने को क्यों कहते हो। भिखारी ने उसकी आवाज पहचान कर अपना सिर जमीन से लगाया और बोला, पहले तो मैं कल की अभद्रता के लिए आपसे क्षमा माँगता हूँ, मैं नहीं जानता था कि आप कौन हैं। अब मैं अपना पूरा वृत्तांत आपके सम्मुख रखता हूँ।

अंधे बाबा अब्दुल्ला की कहानी

बाबा अब्दुल्ला ने कहा कि मैं इसी बगदाद नगर में पैदा हुआ था। मेरे माँ बाप मर गए तो उनका धन उत्तराधिकार में मैंने पाया। वह धन इतना था कि उससे मैं जीवन भर आराम से रह सकता था किंतु मैंने भोग-विलास में सारा धन शीघ्र उड़ा दिया। फिर मैंने जी तोड़ कर धनार्जन किया और उससे अस्सी ऊँट खरीदे। मैं उन ऊँटों को किराए पर व्यापारियों को दिया करता था। उनके किराए से मुझे काफी लाभ हुआ और मैंने कुछ और ऊँट खरीदे और उनको साथ में ले कर किराए पर माल ढोने लगा।
एक बार हिंदुस्तान जानेवाले व्यापारियों का माल ऊँटों पर लाद कर मैं बसरा ले गया। वहाँ माल को जहाजों पर चढ़ा कर और अपना किराया ले कर अपने ऊँट ले कर बगदाद वापस आने लगा। रास्ते में एक बड़ा हरा-भरा मैदान देख कर मैंने ऊँटों के पाँव बाँध कर उन्हें चरने छोड़ दिया और खुद आराम करने लगा। इतने में बसरा से बगदाद को जानेवाला एक फकीर भी मेरे पास आ बैठा। मैंने भोजन निकाला और उसे साथ में आने को कहा। खाते-खाते हम लोग बातें भी करते जाते थे। उसने कहा, तुम रात-दिन बेकार मेहनत करते हो। यहाँ से कुछ दूर पर एक ऐसी जगह है जहाँ असंख्य द्रव भरा है। तुम इन अस्सी ऊँटों को रत्नों और अशर्फियों से लाद सकते हो। और वह धन तुम्हारे जीवन भर को काफी होगा। मैंने यह सुन कर उसे गले लगाया और यह न जाना कि वह इससे कुछ स्वार्थ सिद्ध करना चाहता है। मैंने उससे कहा, तुम तो महात्मा हो, तुम्हें सांसारिक धन से क्या लेना-देना। तुम मुझे वह जगह दिखाओ तो मैं ऊँटों को रत्नादि से लाद लूँ। मैं वादा करता हूँ कि तुम्हें उनमें से एक ऊँट दे दूँगा। मैंने कहने को तो कह दिया किंतु मेरे मन में द्वंद्व होने लगा। कभी सोचता कि बेकार ही एक ऊँट इसे देने को कहा, कभी सोचता कि क्या हुआ, मेरे लिए उन्यासी ऊँट ही बहुत हैं। वह फकीर मेरे मन के द्वंद्व को समझ गया। उसने मुझे पाठ पढ़ाना चाहा और बोला, एक ऊँट को ले कर मैं क्या करूँगा, मैं तुम्हें इस शर्त पर वह जगह दिखाऊँगा कि तुम खजाने से भरे अपने ऊँटों में से आधे मुझे दे दो। अब तुम्हारी मरजी है। तुम खुद ही सोच लो कि चालीस ऊँट क्या तुम्हारे लिए कम हैं। मैंने विवशता में उसकी बात स्वीकार कर ली। मैंने यह भी सोचा कि चालीस ऊँटों का धन ही मेरी कई पीढ़ियों को काफी होगा।

कर पुलाव खा रहा था किंतु मेरी पत्नी कान खोदने की सलाई से चावल का एक एक दाना उठा कर खाने लगी। मुझे यह देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ। मैंने कहा, प्यारी, क्या तुम्हारे मायके में इसी तरह से लोग खाना खाया करते हैं। जितनी देर तुमने भोजन किया है उसमें तुमने दस-पंद्रह चावलों से अधिक न खाया होगा। तुम दाने गिन-गिन कर क्यों खा रही हो? क्या तुम किफायत के लिए ऐसा कर रही हो? अगर ऐसा है तो तुम किफायत का ख्याल छोड़ दो और जैसे मैं खुल कर खा रहा हूँ वैसे ही तुम भी खाओ। मुझे भगवान ने इतना दे रखा है कि तुम्हें पेट भर खाना खिला सकूँ।
उसने मेरी बात का कोई उत्तर न दिया। पूर्ववत ही एक-एक दाना उठा कर खाती रही, बल्कि मुझे खिजाने के लिए एक-एक दाना भी बहुत देर में उठाने लगी। जब हमारे सामने शीरमाल और बाकर खानी रोटियाँ आईं तो उसने एक रोटी के छिलके का बहुत ही छोटा टुकड़ा तोड़ कर बड़े नखरे से मुँह में रखा। जितना खाना कुल मिला कर उसने खाया वह एक चिड़िया का पेट भरने को भी काफी नहीं था।
मुझे उसकी अल्प भोजन की जिद पर आश्चर्य हुआ किंतु मैंने सोचा कि यह मेरे साथ पहली बार खाना खा रही है और किसी पुरुष के साथ खाने का पहला मौका होने के कारण लजा रही है, जब इसे मेरे साथ खाने की आदत हो जाएगी तो खुल कर खाएगी। मैंने यह भी सोचा कि हो सकता है कि मेरे साथ खाने के पहले यह कोई चीज अधिक मात्रा में खा चुकी हो और इस समय इसके पेट में जगह न हो। एक विचार यह भी आया कि शायद इसे अकेले ही खाने की आदत हो। यह सब सोच कर मैंने उससे कुछ न कहा और वह पूर्ववत ही नाम चार के लिए खाती रही। खाने के बाद मैं घूमने-फिरने चला गया और यह बात बिल्कुल भूल गया कि मेरी पत्नी कितनी अल्पभक्षी है।
किंतु शाम के खाने पर भी उसका यह हाल रहा। बाद में भी कई दिनों तक मैंने खाने के मामले में उसका यही रवैया देखा तो मुझे यह आश्चर्य हुआ कि यह स्त्री इतना कम खाने पर भी न केवल जीवित है अपितु स्वस्थ भी है। एक दिन हम दोनों सोने के लिए लेटे तो यह मुझे सोता जान कर सावधानी से उठी। मैं आँखें बंद किए था किंतु जाग रहा था। मैं जान-बूझ कर खर्राटे भरने लगा। वह उठ कर अंदर गई और कपड़े पहन कर घर से बाहर निकली। मैं भी अपने कपड़ों को कंधे पर डाल कर चुपके-चुपके उसके पीछे चल दिया। बाहर चाँदनी थी इसलिए उसका पीछा करना मुश्किल न हुआ। वह चलते-चलते हमारे घर के समीपवर्ती कब्रिस्तान में पहुँची। मैं ओट में खड़ा हो कर देखने लगा। मैंने देखा कि मेरी पत्नी एक

अपना वृत्तांत पूरा करके सीदी नोमान बोला, सरकार, अब यह कहानी सुनने के बाद मुझे क्षमा करेंगे और यह स्वीकार करेंगे कि मैं घोड़ी बनी हुई अपनी स्त्री को जो दंड देता हूँ वह उचित है। अगर अब भी आप मेरा कार्य अनुचित समझें तो जो चाहे वह सजा दें। खलीफा ने कहा, तुम्हारी कहानी वास्तव में विचित्र है और तुम्हारी स्त्री ने जो अपराध किया है उसे देखते हुए उसका दंड कम ही है। किंतु मैं तुम से पूछता हूँ कि क्या तुम आजीवन उसे इसी तरह मारते रहोगे? तुम ऐसा क्यों नहीं करते कि उस सुंदरी के पास जा कर फिर से अपनी पत्नी को स्त्री रूप दिलवाओ। सीदी नोमान ने कहा, आपकी आज्ञा शिरोधार्य किंतु मेरी पत्नी फिर दुष्टता पर उतरी तो क्या करूँगा? खलीफा ने कहा, तुम ठीक कहते हो। उसे ऐसा ही रहने दो और जब तक चाहो उसे इसी तरह सजा देते रहो।
फिर खलीफा ने तीसरे आदमी यानी ख्वाजा हसन हब्बाल की ओर दृष्टि की और कहा, ख्वाजा हसन, कल मैंने तुम्हारी गली में जा कर तुम्हारा महल देखा। मैं उससे बहुत प्रभावित हुआ। फिर मैंने वहाँ के लोगों से पूछा कि यह विराट भवन किसका है तो तुम्हारे पड़ोसियों ने तुम्हारा नाम लिया।
साथ ही उन्होंने यह भी बताया कि तुम्हारा पेशा रस्सी बनाने का है। इस पेशे में तो अधिक आय नहीं होती। तुम्हारे पड़ोसियों का भी कहना है कि कुछ समय पूर्व तक तुम कठिनाई से जीवन निर्वाह करते थे। तुम्हारे पड़ोसी तुम्हारी इस बात में बड़ी प्रशंसा करते हैं कि तुम अपने पुराने जीवन को नहीं भूले और अपने धन को व्यर्थ खर्च नहीं करते हो। मैं यह सब सुन कर बहुत प्रसन्न हुआ कि मेरे राज्य में तुम जैसे भले आदमी रहते हैं। फिर भी मैं तुमसे यह पूछना चाहता हूँ कि तुमने इतना धन किस प्रकार प्राप्त किया। तुम मेरे प्रश्न से कुछ भयभीत न होना। मुझे तुम्हारी धन-संपत्ति से कुछ लेना देना नहीं है। तुम्हें यह धन भगवान ने दिया है। तुम इसका जैसा चाहो उपयोग करो। भगवान तुम्हारी संपत्ति और बढ़ाए। मुझे केवल यह जानने की उत्कंठा है कि तुम्हारे जैसे निर्धन व्यक्ति को इतनी संपदा मिली कैसे।
ख्वाजा हसन ने सिंहासन के पाए को चूम कर कहा, भगवान आपको हमेशा सही- सलामत रखे। मैं सारा वृत्तांत सच्चा-सच्चा कहता हूँ। भगवान जानते हैं कि मैंने कभी कोई बात ऐसी नहीं की जिसे हमारे इस्लाम धर्म या मेरी जाति-बिरादरी ने वर्जित किया हो। मुझे जो कुछ मिला है भगवान की कृपा ही से मिला है। अब आपकी आज्ञानुसार अपना हाल कहता हूँ।

ख्वाजा हसन हव्वाल की कहानी

ख्वाजा हसन ने कहा कि मैं अपनी बात बताने के पहले अपने दो मित्रों के बारे में बताना चाहता हूँ। वे अभी जीवित हैं और यहीं बगदाद में रहते हैं। वे मेरे प्रत्येक कथन की पुष्टि करेंगे। उनमें से एक का नाम सादी है। सादी का विश्वास था कि संसार में आनंद धन ही से मिलता है और धन उद्योग और परिश्रम ही से प्राप्त होता है। इसके विरुद्ध साद का मत था कि धन ईश्वर की कृपा और मनुष्य के भाग्य ही से मिलता है। दोनों में गाढ़ी दोस्ती थी और कोई झगड़ा नहीं होता था किंतु इस विषय पर हमेशा बहस होती थी। एक दिन इस बात को ले कर दोनों के बीच बहुत अधिक वाद-विवाद हुआ। सादी का कहना था, या तो आदमी गरीब परिवार में पैदा हो कर हमेशा गरीब रहता है, या धनी परिवार में जन्म ले कर जवानी में भोग-विलास में धन को फूँक कर निर्धन हो जाता है। वरना उद्यमी और समझदार आदमी गरीब नहीं होता। साद कहता था, उद्यम और बुद्धि से कुछ नहीं होता। आदमी अपने भाग्य ही से धनवान होता है। गरीबी और अमीरी प्रारब्ध के खेल हैं। पूँजी और उद्यम के अलावा और भी कई रास्तों से दौलत आती है। सादी ने कहा, तुम्हारी यह बात बिल्कुल झूठ है। आओ, हम दोनों अपने-अपने कथन की परीक्षा करें। हम किसी गरीब पेशेवर आदमी को तलाश करेंगे। मैं उसे कुछ धन दूँगा। तुम देख लेना कि वह उस धन के बल पर उद्यम करके बड़ा आदमी बन जाएगा। तभी तुम्हें मेरी बात का विश्वास होगा।
फिर वे दोनों घूमते-घूमते मेरे घर की ओर आए। मैं अपने घर के सामने बैठा हुआ रस्सी बट रहा था, क्योंकि रस्सी बटने का पेशा मेरे बाप-दादा के जमाने से होता आया था। उन दोनों को देख कर मैंने सलाम किया। उन्हें मेरे वस्त्रों और घर की हालत देख कर मेरी निर्धनता का बोध हुआ। साद ने सादी से कहा, यह ऐसा ही आदमी है जैसा तुम तलाश कर रहे थे। मैं इसे काफी दिनों से जानता हूँ। यह बड़ा गरीब है। दिन भर कड़ी मेहनत करके रस्सी बटता रहता है और फिर भी कठिनता से परिवार का पालन- पोषण करता है। सादी ने कहा, अच्छा, लेकिन पहले हम उसे अच्छी तरह देख तो लें। उन्होंने यह बातें इतने धीमे स्वर में की थीं कि मैं कुछ सुन न सका। फिर सादी ने, जो साद से अधिक धनवान था, मेरे और पास आ कर मेरा नाम पूछा।
मैंने कहा, मेरा नाम हसन है और रस्सी बटने के कारण मुझे लोग हसन हव्वाल कहते हैं। सादी ने कहा, तुम्हें अपने पेशे में अच्छी-खासी आमदनी हो जाती

होगी। तुम्हारे बाप-दादा भी यही काम करते थे, इसलिए उन्होंने भी तुम्हारे लिए बहुत कुछ छोड़ा होगा। तुमने भी अपनी मेहनत से काफी पैसा कमाया होगा और तुम्हारी संपत्ति और बढ़ गई होगी। मैंने उत्तर दिया, ऐसी बात बिल्कुल नहीं है। मेरे पास कुछ भी धन-संपत्ति नहीं है। मुझे पेट भर खाना भी नसीब नहीं होता। मैं सुबह से शाम तक रस्सी बटता हूँ, एक क्षण के लिए भी आराम नहीं लेता हूँ। फिर भी जैसे-तैसे सूखी रोटी ही अपने परिवार के लिए जुटा पाता हूँ। मेरे छोटे-छोटे पाँच बच्चे हैं। उनमें से कोई योग्य नहीं कि मेरी मदद कर सके। मैं अकेला ही उनके लिए खाना कपड़ा जुटाता हूँ। मैं रस्सी बेचता हूँ, उसके मूल्य से कुछ तो खाने आदि में खर्च करता हूँ और बाकी का सन खरीद कर दूसरे दिन उससे रस्सी बनाता हूँ। फिर भी मैं ईश्वर का धन्यवाद देता हूँ कि मैं केवल निर्धन हूँ। किसी का गुलाम नहीं हूँ, आजादी से अपना काम करता हूँ।
सादी ने कहा, तुमने अपना पूरा हाल मुझे बताया। इसके लिए धन्यवाद लेकिन मैं जो कुछ समझा था इससे तो उलटा ही निकला। अच्छा, अगर मैं तुम्हें दो सौ अशर्फियाँ दे दूँ तब तो तुम्हारी यह दशा नहीं रहेगी। दो सौ अशर्फी पा कर तो तुम धनवान हो जाओगे और आनंदपूर्वक जीवन निर्वाह करोगे? मैंने कहा, दो सौ अशर्फियाँ खुद तो मुझे धनवान नहीं बना सकतीं। लेकिन इससे मैं अपने पेशे को और अच्छी तरह चला सकता हूँ और अधिक धनोपार्जन कर सकता हूँ। सादी ने देखा कि मैं विश्वसनीय आदमी हूँ तो उसने अपनी जेब से दो सौ अशर्फियों की थैली निकाली और मुझे दे कर कहा, मैं यह दो सौ अशर्फियाँ तुम्हें दे रहा हूँ। यह उधार नहीं, दान में दे रहा हूँ। तुम इससे अपना व्यापार बढ़ाओ। भगवान तुम्हारी कमाई में बरकत दें। लेकिन यह ध्यान रहे कि यह धन बेकार खर्च न हो। तुम्हारी समृद्धि में मैं ही नहीं, मेरा परम मित्र साद भी प्रसन्न होगा। भगवान तुम पर अपनी कृपा करें।
मैं दो सौ अशर्फियाँ पा कर फूला न समाया। मैंने धन्यवादस्वरूप सादी का वस्त्र चूमा और उसकी दीनबंधुता की बड़ी प्रशंसा की। इसके बाद वे दोनों चले गए। उनके जाने के बाद मुझे यह चिंता हुई कि मैं इन अशर्फियों को कहाँ रखूँ। मेरे घर में न तो कोई सुरक्षित स्थान था न संदूकचा ही था जहाँ मैं इतना धन, जो मैंने सारी उम्र नहीं देखा था, रखता। आखिर में यह तय किया कि थैली को अपनी पगड़ी ही में छुपा लूँ। मैंने थैली में से दस अशर्फियाँ ले कर जेब में डालीं और थैली का मुँह कस कर डोरे से बाँधा और उसे सावधानी से पगड़ी में रख

विश्वास न किया किंतु मेरी पत्नी को मेरी बात पर विश्वास था और वह इस पर बहुत रोई। फिर जीवन वैसे ही चलने लगा।
छह महीने बाद दोनों मित्र सादी और साद मेरी गली में आए। साद ने कहा कि चल कर हसन हव्वाल को देखें कि दो सौ अशर्फियाँ पा कर उसकी दशा कितनी बदलती है। सादी ने कहा, यह बहुत अच्छा कहा। हम उसे जरूर देखेंगे। अगर उसकी दशा में सुधार हुआ तो हमें यह देख कर संतोष होगा कि हमारे दिए हुए धन से एक निर्धन का जीवन सुधरेगा। वे दोनों और निकट आए तो साद ने कहा, भाई, मुझे तो उसकी दशा पहले जैसी लग रही है। उसके कपड़े वैसे ही फटे-पुराने हैं, हाँ, उसकी पगड़ी जरूर नई मालूम हो रही है। तुम भी देखो, शायद मुझसे देखने में भूल हुई हो। सादी ने भी देखा और कहा, तुम ठीक कहते हो।
अब दोनों मेरे पास आए। साद ने कहा, हसन भाई, अब तुम्हारा क्या हाल है? दो सौ अशर्फियों से तुम्हारा व्यापार तो अच्छा-खासा बढ़ गया होगा। मैंने कहा, मैं अपने दुर्भाग्य का हाल आप लोगों से क्या कहूँ। मुझे कहते हुए शर्म आती है। न बताऊँ तो भी काम नहीं चलता। आप लोगों ने मुझ पर इतनी कृपा की, आप से छुपाऊँ भी क्या, हालाँकि मेरा हाल सुन कर आप को ताज्जुब ही होगा। यह कह कर मैंने सारा हाल बताया। सादी ने कहा, हसन, क्यों हमें बेवकूफ बना रहे हो। चील खाने की चीजें लेती है या पगड़ियाँ। तुमने भी वही किया है जो तुम्हारे जैसे लोग करते हैं। जब अप्रत्याशित रूप से धन मिलता है तो अपना काम-काज छोड़ भोग-विलास में पड़ जाते हैं। और कुछ दिनों में सब कुछ लुटा कर फिर फटीचर बन जाते हैं। तुमने भी यही किया है।
मैंने कहा, मेरे लिए जो कुछ भी कहें उसे कहने का आपको पूरा हक है। किंतु मैंने कुछ भी झूठ नहीं कहा है। मुझ पर जो कुछ गुजरी है वह यहाँ सभी लोग जानते हैं। मैं भी जानता हूँ कि साधारणतः चील पगड़ियाँ नहीं ले जातीं किंतु मेरे साथ यह अघट घटना घटी है और उसके साक्षी बहुत-से लोग हैं। साद ने मेरा पक्ष ले कर कहा, इसमें अविश्वास करने की कोई बात नहीं है। कई बार ऐसा देखा गया है कि चीलों ने ऐसी वस्तुएँ भी ले ली हैं जो उनके खाने के काम नहीं आ सकती। यह सुन कर सादी ने अपनी जेब से एक भारी थैली निकाली और उसमें से दो सौ अशर्फियाँ गिन कर मुझे दे दीं और कहा, भाई हसन, मैं फिर तुम्हें दो सौ अशर्फियाँ दे रहा हूँ। इन्हें सावधानी से सुरक्षापूर्वक रखना और पहले की भाँति इन्हें खो मत देना। इससे अपना व्यापार बढ़ाना जिससे तुम्हारी आर्थिक अवस्था ठीक हो जाए। इनका कोई दुरुपयोग भी न करना। मैंने सादी को

बहुत धन्यवाद दिया और उसकी लंबी उम्र की कामना की। इसके बाद दोनों मित्र से विदा ले कर चले गए।
मैं अशर्फियाँ ले कर अपने घर के अंदर गया। उस समय मेरी पत्नी और पुत्र कहीं गए हुए थे। मैंने सोचा कि अशर्फियों को किसी ऐसी जगह रखा जाए जहाँ किसी बाहरी आदमी की नजर न पड़े। मैंने दस अशर्फियाँ निकाल कर शेष अशर्फियाँ एक पुराने-से चीथड़े में बाँधीं किंतु घर में कोई संदूक आदि तो था ही नहीं। इधर-उधर देखा तो एक कोने में एक नाँद रखी दिखाई दी जिसमें भूसी भरी हुई थी। मैंने उसी भूसी के अंदर अशर्फियों की पोटली रख दी। कुछ देर में मेरी स्त्री आई। मैंने फिर उससे अशर्फियों की बात छुपाई और रस्सी के लिए सन खरीदने को बाजार चला गया। इधर एक फेरीवाला अया जो सिर धोने की मिट्टी बेचता था। मेरी पत्नी को मिट्टी की जरूरत थी किंतु घर में एक पैसा भी नहीं था। उसने फेरीवाले से कहा, भाई मेरे, पास पैसा तो है नहीं, तुम मुझे इतनी मिट्टी दे दो और इसके बदले में नाँद समेत यह भूसी ले जाओ। फेरीवाले को यह सौदा लाभदायक लगा और उसने इसे मंजूर कर लिया। अतएव वह फेरीवाला सिर धोने की मिट्टी दे कर भूसी की नाँद उठा ले गया।
उसके जाने के बाद मैं सन का गट्ठा सिर पर लादे अपने घर आया। घर में आ कर सबसे पहले भूसी की नाँद को देखा तो उसे वहाँ नहीं पाया जहाँ वह रखी थी। मैंने अपनी पत्नी से पूछा कि नाँद कहाँ गई तो उसने कहा कि फेरीवाले को नाँद दे कर सिर धोने की मिट्टी ले ली। मैंने यह सुन कर सिर पीट लिया और अपनी पत्नी पर बरसने लगा। मैंने कहा, कमबख्त तूने गर्दन काटने का काम किया है। सारे परिवार को भूखों मार दिया और फेरीवाले का घर भर दिया। तू जा कर कहीं डूब मर। उसकी समझ में मेरी नाराजगी नहीं आई और उसने पूछा, क्यों चिल्ला रहे हो तो मैंने बताया कि एक मित्र ने मुझे फिर दो सौ अशर्फियाँ दी थीं जिनमें से दस निकाल कर बाकी को एक कपड़े में बाँध कर मैंने भूसी में छुपा दिया था ताकि किसी और की निगाह उन पर न पड़े।
यह सुन कर मेरी पत्नी ने अपना सिर पीट डाला और चिल्ला-चिल्ला कर रोने लगी। उसने कहा, हाय अब मैं उस बदमाश फेरीवाले को कहाँ पाऊँगी। मैं तो उसको पहचानती भी नहीं। कोई मुहल्लेवाला भी उसे नहीं जानता। वह तो पहली बार ही मुहल्ले में आया था। और तुम भी मुझे अपना दुश्मन समझते हो कि मुझे नहीं बताया। दोनों बार मुझसे अशर्फियों को छुपाया और दोनों बार उसे खो दिया। मैंने उससे कहा, अभागी, जो हानि होगी वह तो हो ही गई। अब क्यों इतना चिल्ला

रही हो? पड़ोसी यह सुनेंगे तो हमारी मूर्खता पर हँसेंगे ही। अब रोने-पीटने से क्या लाभ।
हम दोनों ने दस अशर्फियों से कुछ सामान घर-गृहस्थी का खरीदा, फिर उसी तरह निर्धनता का जीवन व्यतीत करने लगे। मेरी चिंता और लज्जा का ठिकाना न था। गरीबी की तो शुरू से आदत थी। उसकी इतनी चिंता नहीं थी। परेशानी यह थी कि अब की बार सादी आएगा तो उससे क्या कहूँगा। मैं कोई झूठ बात कह नहीं सकता और सच बात का उसे विश्वास नहीं होगा और वह यही समझेगा कि मैंने भोग-विलास में दो सौ अशर्फियाँ उड़ा दीं। कुछ दिनों के बाद फिर मेरे बारे में बहस करते हुए साद और सादी मेरे घर आए। मैं उन्हें दूर से आता देख कर सोचने लगा कि अब इनसे कैसे आँखें मिलाऊँगा। मैं चाहता था कि उठ कर कहीं चला जाऊँ किंतु वे सीधे मेरे पास आ गए। और मुझे सलाम करके मेरी कुशल-क्षेम पूछने लगे। मैं शर्म के मारे सिर झुकाए बैठा रहा। वे लोग मेरी निर्धनता को पूर्ववत देख कर आश्चर्य करने लगे। सादी ने कहा, क्या बात है? मैंने कहा, आप विश्वास करें या न करें, सच्ची बात यह है कि आपके जाने के बाद मैंने अशर्फियों को एक नाँद में भूसी के अंदर छुपा दिया था। हाँ, उसमें से दस अशर्फियाँ जरूर पहले निकाल ली थीं। उस समय घर में मेरे सिवा कोई न था। दस अशर्फियाँ ले कर मैं बाजार गया ताकि सन मोल लूँ। इस बीच मेरी पत्नी घर आ गई थी। कुछ देर में एक फेरीवाला सिर धोने की मिट्टी बेचता हुआ इधर से निकला। मेरी पत्नी के पास उस समय एक पैसा भी नहीं था। उसने भूसी को बेकार समझ कर फेरीवाले से कहा कि भूसी की नाँद के बदले मुझे सिर धोने की मिट्टी दे दो। फेरीवाला इस सौदे पर राजी हो गया। और मेरी पत्नी ने मिट्टी के बदले उसे भूसी की नाँद दे दी। उसके साथ आपकी दी हुई अशर्फियों में से एक सौ नब्बे अशर्फियाँ भी चली गईं। सादी ने कहा, तुमने अपनी पत्नी को यह बताया क्यों नहीं कि नाँद में अशर्फियाँ रखी हैं? मैंने कहा, आपने कहा था कि अशर्फियाँ सावधानी से रखना सो मैंने उन्हें सुरक्षित स्थान में रखा। स्त्री के आने पर मुझे बाजार जाने की जल्दी थी और फिर मैं उसे बताना भी नहीं चाहता था क्योंकि स्त्रियों के पेट में बात पचती नहीं है। यह भी डर था कि वह कहीं अपनी शौकीनी में उन्हें खर्च न कर दें। आप ने दो-दो बार मुझे निर्धन से धनवान बनाने का प्रयत्न किया किंतु क्या आप कर सकते हैं और क्या मैं कर सकता हूँ। निर्धनता तो मेरे भाग्य ही में लिखी हैं, फिर मेरे पास धन आएगा कहाँ से। हाँ, आप ने जो अहसान मुझ पर किया उसे मैं जन्म भर नहीं भूलूँगा और जीवन भर

भली-भाँति परखा और उसके खरेपन को उसे विश्वास हुआ तो बोला, मेरी स्त्री इसकी पचास हजार अशर्फियाँ लगा गई है, मैं सत्तर हजार लगाता हूँ। उससे अधिक न दे सकूँगा।
मैंने कहा, तुम्हें तुम्हारी पत्नी ने बताया होगा कि मैं हीरे को एक लाख अशर्फियों से कम पर बेचने को तैयार नहीं हूँ। अगर तुम इतने पर उसे लेने को तैयार नहीं हो तो मैं दूसरे जौहरी से सौदा करूँगा। काफी झिकझिक करने के बाद यहूदी जौहरी एक लाख अशर्फियों के सौदे पर राजी हो गया क्योंकि हीरा बहुत बड़ा था और एक लाख अशर्फियों में खरीद कर भी यहूदी को बड़ा मुनाफा होना था। यहूदी ने मुझे दो हजार अशर्फियाँ बयाने में दीं और कहा कि कल शाम तक मैं पूरा दाम दे दूँगा और हीरा ले जाऊँगा। दूसरे दिन यहूदी जौहरी ने अपने कई मित्रों से कर्ज ले कर अठानबे हजार अशर्फियाँ मुझे दीं और हीरा ले लिया।
इतना धन पा कर मैंने ईश्वर को धन्यवाद दिया। उसी भगवान के दिए हुए द्रव्य से मैंने धनवानों जैसा गृहस्थी का सामान खरीदा और मेरी पत्नी ने भी अपने लिए और लड़कों के लिए अच्छे कपड़े बनवाए। मैंने रहने के लिए एक बड़ा मकान खरीदा। उसमें परदे, फर्श आदि लगवाए। मैंने अपनी पत्नी से कहा, हमें इतना पैसा जरूर मिल गया है लेकिन अपना पेशा मैं पैत्रिक ही रखूँगा। वह भी इस बात से सहमत हुई। मैंने अपनी पूँजी का कुछ भाग ही व्यापार में लगाया, शेष को सावधानी से रख दिया ताकि आड़े समय काम आए। मैंने नगर के कई कारीगरों को नौकरी पर रखा और कई सौ अशर्फियाँ दे कर नगर में रस्सी बटनेवाले बहुत-से कारखाने लगवाए। कई विश्वस्त व्यवस्थापक भी रखे जिन्होंने उन कारखानों का भार सँभाल लिया। इस समय बगदाद नगर में कोई गली ऐसी नहीं है जिसमें मेरा रस्सी बटनेवाला कारखाना मौजूद न हो। इसी प्रकार अन्य बड़े नगरों और जिलों के प्रशासन केंद्रों में भी मैंने रस्सी के कारखाने खोले। वहाँ व्यवस्थापक और हिसाब-किताब के लिए मुनीमों को नौकर रखा। इससे मुझे बहुत धन प्राप्त हुआ।
मैंने एक बड़ा पुराना मकान लिया जिसमें जमीन बहुत थी। उसकी इमारत तुड़वा कर वहीं एक बड़ी इमारत बनवाई। वही आपने कल देखी थी। उसे मैंने अपना केंद्रीय कार्यालय बनाया और घर का अतिरिक्त सामान भी वहीं रखा। पुराने घर को छोड़ कर नए घर में जा बसा।

काफी दिन बाद साद और सादी मेरे पुराने मकान में मुझे पूछते हुए आए। मुहल्ले के लोगों ने कहा कि अब उसे हसन कोई नहीं कहता, अब उसे ख्वाजा हसन हव्वाल कह कर बुलाते हैं और वह उस मुहल्ले में एक बड़े मकान में रहता है। उसका बहुत बड़ा कारोबार हो गया है। वे दोनों मित्र मुझे पूछते हुए मेरे घर पर आए। उस समय सादी को यह बिल्कुल विश्वास न हुआ कि साद के दिए हुए पैसे से मेरी दशा बदली है, वह समझता था कि मैंने अशर्फियों के खोने की दो बार झूठी कहानी गढ़ी है।
उसने साद से कहा कि हसन ने दो बार मुझसे झूठ बोला कि मेरी दी हुई अशर्फियाँ उससे खो गई हैं, यह व्यापार उसने कहाँ से बढ़ाया अगर वे अशर्फियाँ खो गई थीं। किंतु उसने कहा कि हसन ने सच बोला या झूठ, इससे कोई अंतर नहीं पड़ता, मुझे उसकी समृद्धि देख कर प्रसन्नता ही होगी। यह मानने को मैं बिल्कुल तैयार नहीं हूँ कि जो ताँबे का पैसा तुमने उसे दिया था उससे वह अमीर बना है।
साद ने कहा, तुम्हारी बात बिल्कुल निर्मूल है। मैं हसन को बहुत दिनों से जानता हूँ। वह निर्धन था किंतु उसकी झूठ बोलने की कभी आदत नहीं थी। जो कुछ भी उसने उन अशर्फियों के बारे में कहा सब सच होगा। तुम्हें यह भी मालूम हो जाएगा कि मेरे एक पैसे की बदौलत ही उसका व्यापार इतना चमका है।
इसी प्रकार बहस करते-करते वे मेरे घर आए। उन्होंने दरवाजे पर आवाज दी तो दरबान ने फाटक खोल दिया। सादी अंदर बहुत-से नौकरों को देख कर डरा कि किसी सरदार के मकान में तो नहीं आ गया। उसने दरबान से पूछा कि ख्वाजा हसन हव्वाल यही रहते हैं? दरबान ने कहा, यहीं रहते हैं और इस समय अपनी बैठक में बैठे हैं। आप अंदर जाइए। नौकर आपके आने की सूचना उन्हें दे देगा। उन दोनों के आने की सूचना मिली तो मैं उन्हें बुलाने के बजाय दीवानखाने से उठ कर उनके स्वागत के लिए चला। उन्हें देख कर मैंने दौड़ कर सम्मानार्थ उनके वस्त्र चूमे। वे मुझे गले लगाना चाहते थे किंतु मैंने ऐसा न होने दिया क्योंकि उन्हें अब भी अपने से ऊँचा समझता था। अंदर ले जा कर मैंने उन्हें एक दालान में एक ऊँचे स्थान पर बिठाया। वे मुझे अपने बराबर बिठाना चाहते थे किंतु मैंने कहा, महानुभावो, मैं यह नहीं भूला कि मैं वही रस्सी बटनेवाला हसन हूँ और आप लोग मेरे उपकारकर्ता हैं। मैं उनके सामने बैठ गया और हम लोगों में प्रारंभिक शिष्टाचार के बाद बातें होने लगीं।

कहा, मैंने तुम्हारी पगड़ी पर ध्यान नहीं दिया इसलिए यह नहीं कह सकता कि यह वही पगड़ी है या नहीं।
सादी ने कहा, मैं भी तुम्हारी पगड़ी नहीं पहचानता। लेकिन अगर यह वही पगड़ी है तो इसमें बाकी बची हुई एक सौ नब्बे अशर्फियाँ भी होंगी। मैंने कहा, मैं तो पहचानता हूँ। यह पगड़ी वही है जिसे चील ले गई थी।
मैंने पगड़ी को घोंसले से उठाया तो वह काफी भारी लगी। मैंने उसकी तहें खोलीं तो उसमें से थैली निकली। मैंने सादी से कहा, आप मेरी पगड़ी नहीं पहचानते किंतु आप यह थैली तो पहचानते ही होंगे। दरअसल मुझे सादी के अविश्वास पर रोष आया था किंतु उसका अहसान याद करके मैंने पहले कुछ नहीं कहा था। सादी ने कहा, यह थैली तो वाकई वही है जो मैंने तुम्हें दी थी। इसमें अशर्फियाँ भी होनी चाहिए। मैंने थैली खोल कर उसके सामने उलट दी और कहा कि अशर्फियाँ भी गिन लीजिए। उसने अशर्फियाँ गिनीं तो उनकी संख्या ठीक एक सौ नब्बे निकली।
सादी यह देख कर लज्जित हुआ किंतु उसने कहा, तुम्हारी एक बार की कही हुई बात तो साबित हो गई लेकिन मैं यह नहीं मानता कि एक पैसे में तुम्हारी किस्मत बदली है। तुमने चार सौ अशर्फियों से न सही, उन दो सौ अशर्फियों से जरूर व्यापार आरंभ किया होगा जो मैंने तुम्हें दूसरी बार दी थीं। मैं इस पर चुप हो रहा किंतु साद ने फिर उसे टोका कि तुम बेकार की जिद पर अड़ हुए हो। उन दोनों में फिर से वही बेतुकी बहस शुरू हो गई।
खैर भोजन आया तो बहस खत्म हुई। भोजन के बाद हम लोग वहीं सो रहे। साद और सादी को दूसरे दिन जरूरी काम था और रात ही में हम लोगों को लौटना था। रात में धारा से उलटे चल कर नदी की राह से वापस होने में कोई तुक न थी। इसलिए हम तीनों शाम को घोड़ों पर सवार हो कर बगदाद को रवाना हुए। हमारे साथ तीन गुलाम थे। रात काफी हो गई तो हम एक जगह उतर गए। घोड़ों को शाम को दाना नहीं मिला था इसलिए मैंने दासों से कहा कि कहीं से घोड़ों के चारे का प्रबंध करें। रात हो जाने से सारी दुकानें बंद हो गई थीं, सिर्फ एक परचून की दुकान खुली थी। दाना तो नहीं मिला किंतु भूसी से भरी एक नाँद मिली। मेरे दासों ने इसी को गनीमत जाना और भूसी के दाम दे कर और सवेरे खाली नाँद के वापस करने का वादा करके नाँद उठा लाए। एक नौकर नाँद में से भूसी निकाल-निकाल कर घोड़ों को देने लगा तो उसका हाथ एक पोटली पर लगा और उसे वह मेरे पास ले आया ताकि सवेरे दुकानदार को थैली दे दी जाए।

मैंने पोटली को देखा तो पहचान गया कि वही पोटली है जिसमें अशर्फियाँ बाँध कर मैंने भूसी की नाँद में रखा था। बाहर जा कर नाँद को देखा तो उसे भी पहचान लिया कि मेरी ही है। मैंने दोनों मित्रों को बुला कर नाँद और उसमें से निकली पोटली दिखाई, फिर पोटली खोल कर उसमें की अशर्फियाँ सादी के सामने उलट दीं, और कहा, इन्हें गिन लीजिए। उसने गिनीं तो पूरी एक सौ नब्बे निकलीं। सादी ने कहा, अब मुझे हसन की सत्यवादिता पर और तुम्हारे सिद्धांत पर पूरा विश्वास हुआ कि धन न पूँजी के बल पर आता है, न उद्यम के बल पर बल्कि भाग्य से मिलता है। इसके बाद हम सो रहे ओर सवेरे बगदाद आ गए जहाँ दोनों मित्र मुझसे विदा हो कर अपने घर चले गए।
खलीफा ने हसन की पूरी कहानी सुन कर कहा, हसन मियाँ, तुम्हारे पड़ोसियों से सुना था कि तुम धन को समझ-बूझ कर खर्च करनेवाले आदमी हो। तुम्हारी कहानी से मालूम हुआ कि तुम सीधे-सच्चे और सभ्य आदमी भी हो। तुम जिस हीरे की बात कर रहे हो वह खजाने में हैं, मैंने उसे यहूदी जौहरी से डेढ़ लाख अशर्फियों में खरीदा था। तुम सादी को यहाँ भेजना कि वह हीरा देखे और इत्मीनान कर ले। तुम मेरे कोषाध्यक्ष के पास जा कर मेरा आदेश दो कि वह तुम्हारे मुँह से हीरे की प्राप्ति का वृत्तांत सुने और लिखवा कर हीरे के साथ रखवा दे।
यह कह कर खलीफा ने हसन को विदा होने के लिए इशारा किया। वह सिंहासन का पाया चूम कर वापस हुआ। बाबा अब्दुल्ला और सीदी नुमान भी खलीफा के सिंहासन का पाया चूम कर अपने-अपने घरों को चले गए।
कहानी सुन कर दुनियाजाद ने उसकी प्रशंसा की और पूछा कि और कोई कहानी भी आती है या नहीं। शहरजाद ने कहा कि एक बड़ी मनोरंजक कहानी है। किंतु शहरयार ने कहा, अब सवेरा हो गया है। दूसरी कहानी कल शुरू करना।

अलीबाबा और चालीस लुटेरों की कहानी

अगली रात को मलिका शहरजाद ने नई कहानी शुरू करते हुए कहा कि फारस देश में कासिम और अलीबाबा नाम के दो भाई रहते थे। उन्हें पैतृक संपत्ति थोड़ी ही मिली थी। किंतु कासिम का विवाह एक धनी-मानी व्यक्ति की पुत्री से हुआ था। उसे अपने ससुर के मरने पर उसकी बड़ी दुकान उत्तराधिकार में मिली और जमीन में गड़ा धन भी। इसलिए वह बड़ा समृद्ध व्यापारी बन गया। अलीबाबा की पत्नी निर्धन व्यक्ति की पुत्री थी इसलिए वह बेचारा गरीब ही रहा। वह अपने तीन

किया, तुम पूरा हाल सुनोगी तो इस ईश्वरीय देन पर प्रसन्न होगी। यह कह कर उसने सारी कहानी सुना कर अपनी पत्नी को संतुष्ट कर दिया।
अलीबाबा ने उन्हें उसके सामने ढेर कर दिया तो स्त्री की आँखें चौंधिया गईं। फिर वह अशर्फियों को गिनने लगी। अलीबाबा ने कहा, तुम्हें बिल्कुल समझ नहीं है - यह अशर्फियाँ इतनी हैं कि शाम तक गिनती रहोगी। लाओ, मैं गढ़ा खोद कर इन्हें गाड़ देता हूँ कि किसी को इसका पता न चले। उसकी पत्नी ने कहा, अच्छा, मैं इन्हें गिनूँगी नहीं किंतु अंदाजा जरूर करना चाहती हूँ कि यह कितनी हैं। मैं इन्हें तोल लूँगी। यह कह कर वह कासिम के घर गई और उसकी स्त्री से तराजू माँगने लगी। कासिम की स्त्री को ताज्जुब हुआ कि इन रोज बाजार से लाने और खानेवाले लोगों के पास कौन-सा अनाज आ गया जिसे यह तोलना चाहती है। यह जानने के लिए उसने तराजू के पलड़ों में थोड़ी-थोड़ी चरबी लगा दी ताकि तोली जाने वाली वस्तु कुछ उन में चिपक जाए। अलीबाबा की स्त्री ने अशर्फियाँ तोलीं और अलीबाबा ने घर के आँगन में एक गढ़ा खोदा ओर दोनों ने मिल कर सारी अशर्फियाँ उसमें दबा दीं।
अलीबाबा की स्त्री जब कासिम के घर तराजू वापिस करने गई तो उसने जल्दी में यह न देखा कि तराजू के एक पलड़े में एक अशर्फी लगी रह गई है। वह तो तराजू दे कर लौट आई उधर कासिम की स्त्री ने तराजू में अशर्फी चिपकी देखी तो पहले तो उसकी समझ में न आया। फिर जब समझ में आया कि तराजू में अशर्फियाँ तोली गई हैं तो वह ईर्ष्या की आग में जलने लगी। साथ ही वह इस बात पर आश्चर्य भी करने लगी कि अलीबाबा जैसे गरीब लकड़हारे को इतनी अधिक अशर्फियाँ कहाँ से मिलीं कि उन्हें तोलने की जरूरत पड़ गई। शाम को जब कासिम दुकान बंद करके घर आया तो उसकी स्त्री ने ताने के स्वर में कहा, तुम अपने को बड़ा अमीर समझते हो। तुम अलीबाबा के मुकाबले कुछ नहीं हो। तुम अशर्फियाँ गिन कर रखते हो, वह तोल कर रखता है। कासिम ने कहा, यह तू क्या बक रही है? उसकी स्त्री ने दिन में घटी घटना उसे सुना दी। साथ ही तराजू में चिपकी अशर्फी भी दिखाई जिस पर पुराने जमाने के किसी बादशाह के नाम की मोहर लगी हुई थी।
कासिम को भी जलन के मारे रात भर नींद नहीं आई। दूसरे दिन तड़के ही उठ कर वह अलीबाबा के घर गया और बोला, भाई, तुम लोगों से अपनी निर्धनता का बहाना क्यों करते हो जब कि तुम्हारे पास अपार संपत्ति है। तुम्हारे पास इतनी अशर्फियाँ हैं कि उन्हें गिनने की तुम्हें फुरसत नहीं है। अलीबाबा को कुछ खटका तो हुआ लेकिन उसने कहा, भैया, मैं तुम्हारा मतलब नहीं समझा। सभी जानते

था। उसकी दुकान में अँधेरा सा था लेकिन वह डट कर काम कर रहा था। मरजीना बोली, बाबा मुस्तफा, तुम तो बड़े होशियार आदमी मालूम होते हो, इतने अँधेरे में ऐसी नाजुक सिलाई कर रहे हो। मोची हँस कर बोला, लड़की, तू समझती क्या है। मैं तो इससे अधिक अँधेरे में तुझे काट कर दुबारा जोड़ दूँ। मरजीना ने पास आ कर फुसफुसा कर कहा, बाबा, मुझे तुम मत काटो जोड़ो। लेकिन एक ऐसा ही काम है। दाम अच्छे मिलेंगे, लेकिन किसी को पता न चले। एक अशर्फी मिलेगी। अशर्फी के लालच में बूढ़ा तैयार हो गया। मरजीना ने कहा, किंतु उस चौराहे के आगे मैं तुम्हारी आँखों पर पट्टी बाँध दूँगी। बूढ़ा पहले इस पर तैयार नहीं हुआ। किंतु जब उसे मरजीना ने एक अशर्फी और देने का वादा किया तो वह तैयार हो गया।
उस समय तक अँधेरा हो गया था। चौराहे पर आ कर मरजीना ने उसकी आँखों पर पट्टी बाँधी और गलियों-गलियों उसे अपने घर तक लाई। बूढ़ा घाघ था। वह अपने कदम गिनता गया और मोड़ों का ध्यान रखता गया। घर ले जा कर उसने एक कोठरी में रखी कासिम की लाश उसे दिखा कर कहा, इन टुकड़ों को सी कर एक पूरा शरीर बनाना है। मुस्तफा को और भेद जान कर क्या करना था। उसने घंटे दो घंटे में टुकड़े सी कर पूरा शरीर बना दिया। मरजीना ने उसे दो के बजाय तीन अशर्फियाँ दीं और कहा, मैं तुम्हें जिस तरह लाई थी उसी तरह वापस तुम्हारी दुकान के सामनेवाले चौराहे पर पहुँचा दूँगी। यह अतिरिक्त अशर्फी इसलिए है कि तुम इस बात को गुप्त रखो। मुस्तफा ने यह वादा कर लिया।
मरजीना रात ही में मुस्तफा को उसकी दुकान के सामनेवाले चौराहे पर उसकी आँखों में पट्टी बाँध कर छोड़ आई। घर में उसने और अलीबाबा ने मिल कर लाश को नहलाया और कफन में लपेट दिया। दूसरी सुबह मरजीना फिर रोती हुई अत्तार के पास गई और उससे कहा, जो दूसरी दवा तुम कहते थे वह दे दो। मालिक की हालत अब तब हो रही है। मालूम नहीं यह दवा भी वे ले सकेंगे या पहले ही दम तोड़ देंगे।
अत्तार ने दवा दे दी और मरजीना चली गई। अत्तार ने और लोगों को भी कासिम की हालत के बारे में बताया। कासिम मुहल्ले का प्रतिष्ठित व्यक्ति था इसलिए कई आदमी उसके द्वार पर उसका हाल पूछने आ गए। कुछ ही देर में घर के अंदर से रोने-पीटने की आवाजें आने लगीं और दस-पाँच मिनट में अलीबाबा आँसू पोंछते हुए आया। उसने लोगों को बताया कि कल सुबह ही कासिम को जानलेवा रोग हुआ और आज सुबह उसने दम तोड़ दिया।

अलीबाबा अँधेरे में उठ कर अब्दुल्ला को ले कर हम्माम चला गया। दो तीन घंटे के बाद लौटा तो देखा कि अहाते में खच्चर वैसे ही बँधे हैं और तेल के कुप्पे वैसे ही रखे हैं। उसने मरजीना से कहा, क्या वह तेल का व्यापारी अभी सो कर नहीं उठा। उसे तो इस समय तक बाजार में होना चाहिए था। मरजीना ने कहा, मालिक, भगवान आपकी लंबी उम्र करें। वह व्यापारी भाग गया। आप नाश्ता कीजिए, फिर मैं आपको सारा हाल बताऊँगी।
इसीलिए मैंने एकांत कर लिया है। पहले आप उन कुप्पों में झाँक कर देख आइए। अलीबाबा हैरान हो गया। उसने एक कुप्पे में झाँक कर देखा तो मरा आदमी दिखाई दिया। वह भाग कर फिर मरजीना के पास आ कर बोला कि जल्दी बता कि क्या बात है। मरजीना ने कहा कि आप इत्मीनान से बैठिए। मैं आपको पूरा हाल बताऊँगी। आपकी जान को कल रात बड़ा भारी खतरा पैदा हो गया था किंतु ईश्वर की कृपा से वह खतरा टल गया है।
फिर मरजीना बोली, उन अड़तीस कुप्पों में से सिर्फ एक में तेल था और बाकी में डाकू छुपे थे। वह व्यापारी उन का सरदार था। मुझे पिछले चार-पाँच दिनों से शक था कि कोई व्यक्ति आप का अनिष्ट करना चाहता है। मैं सजग भी हो गई और अपनी समझ के अनुसार सावधानी भी बरती जो भगवान की दया से सफल हुई। एक दिन मैंने घर के दरवाजे पर सफेद खड़िया का निशान देखा। मैं समझ गई कि कोई व्यक्ति बुरी नीयत से आप का मकान पहचानना चाहता है। इसलिए मैंने वैसे ही खड़िया के निशान मुहल्ले के सारे दरवाजों पर बना दिए जिससे आपके घर की पहचान खत्म हो जाए। दो-तीन दिन बाद मैंने देखा कि सफेद निशान के पास एक छोटा-सा लाल निशान बना है। मुझे विश्वास हो गया कि आपके किसी दुश्मन की यह कार्रवाई है। आपका शहर में कोई दुश्मन हो ही नहीं सकता। इसलिए मैंने सोचा कि यह गुफावाले डाकू ही हैं जो आपके पीछे पड़े हैं। मैंने मुहल्ले के सारे घरों के दरवाजों पर सफेद निशानों के पास वैसे ही लाल निशान बना दिए इस प्रकार एक बार फिर उन लोगों की योजना असफल हो गई। मैंने आपसे उस समय इसलिए कुछ नहीं कहा कि आप मेरा विश्वास तो करते नहीं, बेकार और लोगों में बात फैलती और यह भी संभव था कि डाकुओं को आपका घर मालूम हो जाता।
किंतु मेरी चुप्पी के बावजूद डाकुओं ने किसी तरह आपके घर का पता लगा लिया और सरदार आपने सैंतीस साथियों को तेल के कुप्पों में बंद कर एक तेल के कुप्पे के साथ यहाँ लाया था। मालूम होता है कि जासूसी असफल होने पर उसने अपने दो साथियों को मार डाला। वरना वह बीस खच्चर लाता और उन पर अपने

उक्त व्यापारी ने लगातार तीन रातों तक यह स्वप्न देखा कि एक दिव्य रूप का वृद्ध व्यक्ति उससे ही कह रहा है, तू अपना हज करने का इस्लामी कर्तव्य क्यों नहीं निभाता? तू अविलंब मक्का के लिए रवाना हो जा। अब उसने तय किया कि मक्का जाना ही चाहिए। उसने अपना व्यापार समेटा और मकान में एक किराएदार रख लिया। व्यापार समेट कर उसने जो कुछ पाया उसमें से कुछ तो यात्रा के खर्च के लिए अपने पास रख लिया बाकी एक हजार अशर्फियाँ बचीं जिनसे उसने हज से लौट कर दोबारा व्यापार करने की योजना बनाई। वह उन्हें साथ में न रखना चाहता था। क्योंकि राह में लुटने का भी भय था। उसने एक हँडिया में अशर्फियाँ रखीं और फिर उसके मुँह तक जैतून का तेल भर दिया। अपने व्यापारी मित्र के पास जा कर उसने कहा, भाई, मैं हज को जाना चाहता हूँ। मेरी यह तेल की हाँड़ी रख लो। मैं इसे वापस आ कर ले लूँगा। उसने उसे यह नहीं बताया कि इसमें अशर्फियाँ हैं। व्यापारी ने उसे अपने गोदाम की चाबी दी और कहा, जहाँ तुम चाहो अपने तेल की हाँड़ी रख दो। लौटना तो वहीं से उठा लेना। मित्र व्यापारी ने हाँड़ी की ओर देखा तक नहीं।
अलीख्वाजा ने हाँड़ी गोदाम में रख कर मक्के का सफर शुरू कर दिया किंतु वह ऊँट पर लाद कर कुछ छोटी-मोटी बिक्री की वस्तुएँ भी ले गया ताकि वहाँ भी कुछ व्यापार करे। हज के सारे कर्तव्य पूरे करने के बाद उसने वहीं अपनी छोटी-सी दुकान खोल दी। एक दिन उसकी दुकान पर दो व्यक्ति आए और कहने लगे कि तुम्हें यहाँ कम मुनाफा होगा, तुम्हारी यह चीजें काहिरा में ऊँचे दामों पर बिकेंगी।
अलीख्वाजा का कोई अपना संबंधी तो था ही नहीं जो बगदाद में उसकी वापसी की प्रतीक्षा करता। उसने मिस्र देश के सौंदर्य की प्रशंसा भी सुन रखी थी। वह फौरन अपनी वस्तुएँ ऊँट पर लाद कर व्यापारी दल के साथ काहिरा के लिए रवाना हो गया। वहाँ उसने अपनी वस्तुएँ काफी ऊँचे मूल्य पर बेचीं और खूब मुनाफा कमा कर अपना व्यापार और फैलाया। उसने काहिरा तथा मिस्र देश के अन्य स्थानों में खूब सैर-सपाटा भी किया। उसने नील नदी पर सदियों से बने अहराम (पिरामिड) भी देखे और काहिरा के दर्शनीय स्थानों को देखने के बाद मिस्र के अन्य नगरों की भी सैर की। इस तरह वहाँ कई महीने बिताने के बाद वह दमिश्क की ओर चला। रास्ते में वह रोड्स नामक द्वीप में भी गया और वहाँ पुराने जमाने में मुसलमानों द्वारा बनवाई हुई प्रसिद्ध मसजिदों को भी उसने देखा। फिर वह सैर के साथ व्यापार करता हुआ दमिश्क नगर पहुँचा। दमिश्क बड़ा सुंदर नगर

था। वहाँ के बाजार और महल बहुत सजे हुए थे और उसके आसपास अनगिनत बाग थे जहाँ तरह-तरह के फल-फूल और जल कुंड, नहरे, झरने आदि थे। यहाँ का सौंदर्य देख कर वह बगदाद को भूल ही गया। कई वर्षों के बाद उसका वहाँ से भी जी भर गया। इसके बाद उसने हलब, मोसिल और शीराज आदि नगरों में जा कर निवास किया। इसके बाद वह बगदाद वापस आया। उसकी वापसी इस नगर में सात वर्षों के बाद हुई। विदेश रह कर अलीख्वाजा ने केवल इतना व्यापार किया था कि उसका काम चलता रहा, बाकी समय में वह सैर-सपाटा करता रहता था। बगदाद आ कर उसे व्यापार जमाने के लिए अपनी बचाई हुई हजार अशर्फियों की जरूरत पड़ी। किंतु उसकी वापसी के कुछ दिन ही पहले उसके व्यापारी मित्र ने उसके साथ धोखा कर डाला था। हुआ यह कि एक दिन व्यापारी के आने के कुछ दिन ही पहले उसके व्यापारी मित्र ने उसके साथ धोखा कर डाला था। हुआ यह कि एक दिन व्यापारी की पत्नी ने कहा कि बहुत दिनों से घर की किसी चीज में जैतून का तेल नहीं पड़ा है, कल बाजार से लाना। व्यापारी को अलीख्वाजा की हाँड़ी याद आई और उसने कहा, अलीख्वाजा हज को जाते समय मेरे मालगोदाम में जैतून के तेल की हाँड़ी रख गया था। उसी में से थोड़ा-सा तेल ले ले। वैसे वह तेल बहुत पुराना हो गया है और खराब हो गया होगा। किंतु देखते हैं, शायद अच्छा हो।
उसकी पत्नी बोली, यह क्या करते हो? किसी की धरोहर को छूने में भी पाप लगता है। मुझे जैतून के तेल का ऐसा शौक नहीं है कि तुम मेरे लिए धर्म और नैतिकता के विरुद्ध कोई काम करो। व्यापारी ने कहा, तुम पागल हो गई हो। अगर पूरी हाँड़ी में से एक कटोरी तेल ले लिया तो क्या कमी हो जाएगी। फिर अलीख्वाजा का क्या पता? वह सात वर्ष पूर्व हज करने गया था। हज करने में सात वर्ष तो नहीं लगते। न मालूम वह कहाँ है और क्या मालूम आए या न आए। मालूम नहीं वह मर गया है या जिंदा है। स्त्री बोली, कुछ भी हो, उसका तेल नहीं छूना है। यह तुम कैसे कह सकते हो कि वह अब नहीं आएगा। सात वर्ष की अवधि कौन ऐसी अधिक होती है। संभव है कल ही आ जाए।
व्यापारी उस समय तो अपनी स्त्री के कहने से मान गया। किंतु अब उसने सोचा कि अलीख्वाजा ने जैतून के तेल की हाँड़ी क्यों रखवाई। ऐसी क्या बात थी उस तेल में जिससे उसे सँभाल कर रखवाने की आवश्यकता पड़ी। रात वह अपनी पत्नी से छुप कर गोदाम में यह देखने को गया कि वह तेल कैसा है और उसकी क्या दशा है। उसने गोदाम में जा कर मोमबत्ती जलाई ओर एक नई हाँड़ी ले कर उसने अलीख्वाजा की हाँड़ी को हिलाया और उसमें से अपनी हाँड़ी में तेल डालने लगा। तेल

एक हजार अशर्फियाँ अलीख्वाजा को दी जाएँ। उसने काजी बननेवाले बालक को एक हजार अशर्फियाँ का इनाम दिया और अन्य बालकों को भी कुछ इनाम दिया।
यह कहानी कह कर मलिका शहरजाद ने अगले दिन नई कहानी शुरू कर दी।

यंत्र के घोड़े की कहानी

बादशाह सलामत, आपको यह मालूम ही है कि हजारों वर्ष से फारस में नौरोज यानी वर्ष का प्रथम दिवस बड़े हर्षोल्लास से मनाया जाता है। उसमें सभी लोग विशेषतः अग्निपूजक, भाँति-भाँति के नृत्यों और खेल-तमाशों का आयोजन करते हैं। बादशाहों और सामंतों को उनके प्रशंसक और सहायक अच्छी-अच्छी भेंटें देते हैं, देश-विदेश की सुंदर और दुर्लभ वस्तुएँ उन्हें भेंट में दी जाती हैं और बादशाह और अमीर लोग भी अपने वफादार साथियों और सेवकों को हजारों रुपए इनाम में देते हैं। पुराने जमाने में फारस का एक बादशाह नगर के बाहर मैदान में हो रहे नौरोज के उत्सव में भाग लेने के लिए गया। उसके सारे दरबारियों, सामंतों और प्रमुख राजकर्मचारियों ने आ कर उसकी सेवा में बहुमूल्य भेंटें दीं। प्रख्यात कलाकारों और कारीगरों ने अपनी बनाई सुंदर वस्तुएँ भेंट में दीं।
इन में हिंदुस्तान से आया हुआ एक बहुत होशियार हिंदू कारीगर भी शामिल था। उसने बादशाह को जमीन तक झुक कर सलाम किया और यंत्र रूप में बना हुआ एक घोड़ा भेंट किया। उसने कहा, पृथ्वीपाल, इस तुच्छ सेवक ने कई वर्षों तक अथक परिश्रम करके आप की सेवा में देने के लिए यह अद्भुत वस्तु बनाई है। आपको समस्त संसार में ऐसी वस्तु न मिलेगी। देखने की तो बात ही क्या है। किसी ने ऐसी चीज के बारे में सुना भी नहीं होगा। बादशाह ने त्योरी पर बल डाल कर कहा, तुम इसे अद्भुत वस्तु क्यों कहते हो? यह तो केवल लकड़ी का बना घोड़ा है जिस पर तुमने सुनहरा रुपहला साज लगाया है। हमारे यहाँ के कारीगर इससे सुंदर लकड़ी का घोड़ा बना सकते हैं। मैं तो कोई खास बात इस घोड़े से नहीं देखता।
कारीगर बोला, सरकार, मैं अपने घोड़े की गढ़न और सजावट की बात नहीं कर रहा। निश्चय ही रूप-रंग में इससे अच्छे घोड़े बन सकते हैं। किंतु इस घोड़े में एक ऐसी अद्भुत कारीगरी का काम है जो कहीं देखने को नहीं मिल सकता। ऐसा घोड़ा, मैं फिर निवेदन करता हूँ, बनाने की कोई सोच भी नहीं सकता। इसमें ऐसे पेंच लगे हैं जिन्हें घुमाने पर मैं, या कोई अन्य व्यक्ति जिसे मैं इसके

यंत्रों के बारे में समझा दूँ, इस घोड़े पर आकाश की सैर कर सकता है, यह घोड़ा चिड़ियों की तरह उड़ता है। यह इतना शीघ्रगामी है कि देखते-देखते कोसों की यात्रा कर के वापस आ सकता है। यदि आपकी अनुमति हो तो मैं इस पर बैठ कर इसके करतब आपको दिखाऊँ।
बादशाह यह सुन कर बड़ा प्रसन्न हुआ। उसने ऐसी किसी चीज के बारे में सोचा तक नहीं था। उसने हिंदोस्तानी से कहा, दिखाओ इस घोड़े का कमाल। हिंदोस्तानी कारीगर बाईं रिकाब में पाँव डाल कर उचका और घोड़े की पीठ पर बैठ गया। उसने दोनों रिकाबों में पाँच जमा लिए और लगाम पकड़ कर बादशाह से बोला, मुझे किधर जाने का हुक्म होता है? फारस की राजधानी शीराज से, जहाँ यह उत्सव हो रहा था, लगभग तीन मील दूर एक ऊँचा पहाड़ था जो राजधानी से दिखाई देता था। बादशाह ने कहा, वह पहाड़ देख रहे हो? हालाँकि वह यहाँ से बहुत दूर नहीं है किंतु तुम्हारे घोड़े की परीक्षा के लिए इतनी दूरी ही काफी है। उस पहाड़ की तलहटी में एक खजूर का पेड़ लगा है। तुम उसकी एक पत्ती ले आओ।
अभी बादशाह के मुँह से पूरी बात भी नहीं निकली थी कि हिंदुस्तानी कारीगर ने घोड़े की गर्दन में लगा हुआ एक पेंच मरोड़ा। घोड़ा एकदम धरती से आकाश की ओर तेजी से उठा और वायु वेग से पहाड़ की ओर उड़ने लगा और शीघ्र ही आँखों से ओझल हो गया। सारे दरबारी और सामंत तथा अन्य लोग इस बात को देख कर बड़े आश्चर्य में पड़े और सभी के मुख से घोड़े की प्रशंसा के शब्द निकलने लगे। पाँच सात मिनट बाद वह घोड़ा अपने कारीगर सवार को लिए हुए वापस आ गया। कारीगर के हाथ में खजूर के पेड़ की एक टहनी थी। उसने घोड़े से उतर कर बादशाह को वह टहनी भेंट की।
बादशाह यह देख कर बहुत खुश हुआ। उसने हिंदोस्तानी कारीगर से उस घोड़े का दाम पूछा। कारीगर बोला, जगाधिपति, मैं इस घोड़े को बेचने के लिए नहीं लाया किंतु यह मैं इस शर्त पर आपको भेंट कर सकता हूँ कि जो इच्छा मैं व्यक्त करूँ वह पूरी की जाए। बादशाह ने कहा, तुम क्या चाहते हो? हमारे देश में बड़े सुंदर प्रदेश और नगर हैं। तुम जहाँ का चाहो वहाँ का शासक तुम्हें बना दूँ। कारीगर ने कहा, मुझे शासनाधिकार नहीं चाहिए। मेरी इच्छा इससे कुछ अधिक की है। किंतु उस इच्छा को बताने से पहले मैं आपसे यह वचन लेना चाहता हूँ कि आप नाराज नहीं होंगे और मुझे कोई दंड नहीं देंगे। बादशाह ने वचन दिया तो हिंदोस्तानी बोला, मैं राजकुमारी से विवाह करना चाहता हूँ। यह सुन कर दरबारी और सामंत क्रोध में भर गए किंतु बादशाह को चुप देख कर वे भी चुप

बादशाह को इससे तसल्ली नहीं हुई। उसने कहा, मान लिया कि घोड़े के दूसरे पेंच पर उसका हाथ पड़ गया और वह नीचे भी उतर आया लेकिन न जाने कब उसका हाथ पड़े और वह कहाँ उतरे। अगर वह किसी बहुत ऊँचे पहाड़ पर उतरा या किसी नदी में जा उतरा तो क्या होगा? कारीगर ने कहा, इसकी चिंता न कीजिए। नदी में उतरा तो चाहे नदी कितनी ही गहरी या चौड़ी क्यों न हो घोड़ा अपने सवार को सुरक्षापूर्वक किनारे पर पहुँचा देगा। फिर शहजादा घोड़े के चलानेवाले यंत्र को जानता है, वह बस्ती के अलावा कहीं न उतरेगा। बादशाह ने कहा, कुछ भी हो, मैं तुझे कैद में डाल देता हूँ और अगर तीन महीने में युवराज वापस न आया तो तुझे मरवा डालूँगा। यह कह कर उसने उत्सव बंद करा दिया और कारीगर को कैद में डाल दिया।
उधर फीरोजशाह आकाश में उड़ा तो इतना ऊँचा हो गया कि पहाड़ मिट्टी के ढेलों जैसे दिखाई देने लगे। अब उसने चाहा कि अपनी राजधानी में जा उतरूँ। उसने चालू करनेवाले पेंच को उलटी ओर मरोड़ा किंतु घोड़ा आगे ही बढ़ता गया। उसने तरह-तरह से पेंच को घुमाया किंतु घोड़ा नीचे नहीं उतरा। फीरोजशाह इस बात से बहुत घबराया किंतु घोड़ा और तेजी से आगे ही बढ़ता गया। फीरोजशाह बहुत देर तक घोड़े के सिर और गर्दन को टटोल कर देखता रहा। बहुत देर के बाद उसे घोड़े के दाएँ कान के नीचे छोटा पेंच मिला। उसे घुमाया तो घोड़ा नीचे उतरने लगा किंतु अब तक बहुत देर हो गई थी। अब तक डेढ़ पहर रात बीत गई थी और फीरोजशाह को पता न चला कि कहाँ उतर रहा है। आधी रात तक घोड़ा धरती पर आया। इस समय तक फीरोजशाह को बहुत भूख भी लग आई थी। घोड़ा एक बड़े महल की छत पर उतर कर खड़ा हो गया। फीरोजशाह उस छत पर, जिसकी मुँड़ेरें संगमरमर की बनी थीं, इधर-उधर घूम कर देखने लगा कि नीचे जाने का रास्ता कहाँ है। अंत में एक जीना दिखाई दिया जिसका एक किवाड़ खुला था। वह सोचने लगा कि नीचे जाऊँ या न जाऊँ, यहाँ के निवासी शत्रु समझ कर मुझे कहीं हानि न पहुँचाएँ। किंतु उसने सोचा कि मेरे निरस्त्र होने के कारण कोई शत्रुता समझेगा नहीं। यह सोच कर वह उतर गया।
वह एक दालान में पहुँचा और कान लगाए आहट लेने लगा किंतु सोनेवालों के खर्राटों के अलावा कुछ न सुनाई दिया। एक कमरे में दिए जल रहे थे। फीरोजशाह ने झाँक कर देखा तो कई दासियाँ और जनाने सो रहे थे। वह समझ गया कि यह किसी रानी या राजकुमारी का महल है। वह बंगाल देश की राजकुमारी का महल था। शहजादा आगे बढ़ा तो एक ओर एक कमरे के द्वार पर रेशमी परदा पड़ा था और अंदर

एक कमरे को सुसज्जित करके उसमें उसे सुला दिया। शहजादी अब तक फीरोजशाह के प्रेम में फँस चुकी थी। यह बात दासियों ने फौरन ताड़ ली। शहजादे के भोजन और शयन का प्रबंध करने के बाद दासियाँ शहजादी के पास आईं और उसके बारे में बातें करने लगी। एक मुँहलगी दासी ने कहा, राजकुमारी, यह शहजादा आपके योग्य है। आपका विवाह इसी से होना चाहिए। शहजादी की हार्दिक इच्छा यही थी किंतु उसने स्त्रीसुलभ लज्जा के नाते उसे डाँट दिया और कहा, क्या बेकार की बकबक लगा रखी हो। जाओ, सो जाओ और मुझे सोने दो।
सुबह उठ कर राजकुमारी ने बहुत देर तक अपना श्रृंगार किया। अपनी नागिन जैसी केश राशि में उसने मोती पिरोए, अपनी सुडौल गर्दन में हीरों का हार पहना, बाँहों में जड़ाऊ बाजूबंद पहने, तन पर विशेष रूप से राज परिवार के लिए तैयार किए जानेवाले रेशम का परिधान पहना और एक रत्नों से जड़ा महीन रेशम का कमरबंद अपनी कमर में बाँधा। इस रूप में सुंदरता में रति को भी लज्जित करने लगी।
उसका श्रृंगार काफी देर में पूरा हुआ। फिर उसने एक दासी को फीरोजशाह के कक्ष में भेज कर कहलवाया कि तुम मुझसे मिलने के लिए इधर न आना बल्कि मैं तुम्हारी ओर आ रही हूँ। फीरोजशाह भी जब जागा तो उसने दासियों से कहा कि तुम जा कर पता लगाओ कि शहजादी जागी हैं या अभी नहीं। अगर हों तो कहना कि मैं उनकी सेवा में उपस्थित होना चाहता हूँ। दासियों ने उसे शहजादी का संदेश दिया कि वह शहजादी की ओर न आए, शहजादी खुद उससे मिलने उसकी ओर आ रही हैं। कुछ देर में अपने अति मनमोहक रूप में दासियों के बीच मंद-मंद गति से चलती हुई शहजादी उसके पास पहुँची। दोनों एक दूसरे को देख कर अति प्रसन्न हुए। शहजादे ने कहा, रात को मैंने आपकी निद्रा में विघ्न डाल कर आपको बड़ा कष्ट दिया। मेरा अपराध क्षमा करें। शहजादी ने कहा, अपराध की कोई बात नहीं है। मुझे आपसे मिल कर बड़ी प्रसन्नता हुई है। अब आप यह बताएँ कि आप अपने देश से चल कर इतनी जल्दी हमारे देश में कैसे पहुँचे और रात को मेरे महल में किस प्रकार प्रविष्ट हुए। यहाँ तो चिड़िया भी पर नहीं मार सकती। मुझे आपका हाल जानने की अतिशय अभिलाषा है।
शहजादा फीरोजशाह ने अपना वृत्तांत वर्णन किया, कल हमारे यहाँ नौरोज का त्योहार था। सभी शिल्पियों ने मेरे पिता को भेंटें दीं। उनमें हिंदोस्तान से आया एक कारीगर भी था।

नहीं जो कि बादशाह से भेंट करनेवालों के पास होना चाहिए। मैं अगर इसी हालत में उनसे मिलूँगा तो वे मेरे वंश के बारे में जान कर खुश होंगे किंतु मेरी साधारण वेशभूषा और रहन-सहन से उनके मन में मेरे प्रति प्रतिष्ठा कम हो जाएगी। और यह मैं नहीं चाहता।
शहजादी ने कहा, इसमें कोई कठिनाई नहीं है। यहाँ आपके देश के बहुत से व्यापारी रहते हैं। आप एक अलग मकान लें और अपने देश के प्रचलित साज-सज्जा का सामान उन व्यापारियों से ले कर अपना मकान सजाएँ। फीरोजशाह ने कहा, यह सुझाव आपने बहुत अच्छा दिया। अब मैं आपसे अपने मन की एक और उलझन कहता हूँ। मुझे इतने दिन हो गए अपने पिता का कोई समाचार नहीं मिला है। मेरे अचानक गायब हो जाने से वे कितने दुखी होंगे इसका कोई ठिकाना नहीं है। मुझे उनकी बड़ी चिंता लगी रहती है कि कहीं मर ही न गए हों। अगर आप कुछ खयाल न करें तो मैं एक बार अपने पिता से मिल आऊँ और उनसे आपके साथ अपने विवाह की अनुमति लूँ।
शहजादी को फीरोजशाह की बातों में तथ्य तो मालूम हुआ लेकिन उसने यह भी डर हुआ कि कहीं ऐसा न हो कि फीरोजशाह अपने देश जा कर मुझे भूल जाए या किसी अन्य स्त्री के प्रेम में पड़ जाए या उसे अपने माता-पिता ही का प्रेम इतना अधिक हो जाए कि मेरे पास न आना चाहे। इसलिए उसने सोचा कि किसी प्रकार उसे कुछ दिन और अपने पास रखा जाए, हो सकता है कि इसका मुझसे इतना प्रेम बढ़ जाए कि यहाँ से जाने को इसका मन ही न करे। यह सोच कर उसने यह कहा, आपकी बात बिल्कुल ठीक है लेकिन मैं चाहती हूँ कि आप कुछ दिनों के लिए यहाँ और ठहर जाएँ। फीरोजशाह ने इस बात को स्वीकार कर लिया।
शहजादी ने फीरोजशाह के लिए अपने यहाँ निवास का आकर्षण और बढ़ा दिया। उसने तरह-तरह के मनोरंजन, खेलों और तमाशों का प्रबंध किया। शहजादा रोज ही महल के समीप के जंगल में जा कर शिकार खेलता था, भाँति-भाँति के संगीत आदि से उसका मन बहलाया जाता और अपनी प्रेमिका शहजादी के सौंदर्य का आनंद तो उठाता ही था। इसलिए उसका मन वहाँ ऐसा रमा कि दो महीनों तक घर की याद ही नहीं आई। लेकिन इसके बाद उसे अपने पिता का ध्यान आया और शहजादी से फारस जाने की बात कही। शहजादी यह सुन कर उदास हो गई। फीरोजशाह ने उसकी मनोदशा को समझा और कहा, सुनो शहजादी, यह तो अत्यंत अनुचित है कि मैं अपने माता-पिता से हमेशा के लिए उनकी जानकारी के बगैर अलहदा हो जाऊँ। लेकिन अगर तुम्हें मेरे प्रेम पर विश्वास नहीं है और सोचती हूँ कि मैं वापस नहीं आऊँगा तो तुम मेरे साथ

दंड नहीं दूँगा। किंतु तुम मेरे लिए फकीरों जैसे वस्त्र ले आओ। वहीं पास में फकीरों का अखाड़ा था। प्रबंधक ने जा कर उनसे कहा, एक रईस को बादशाह मरवाने ही वाला है। रईस जान बचा कर भागना चाहता है। आप कृपया एक फकीरी बाना दे दें तो वह उसे पहन कर निकल जाए। अखाड़े के फकीरों को राजाज्ञा की चिंता न थी। उन्होंने दया करके उसे फकीरी बाना दे दिया। शहजादे ने उसे पहना, बहुमूल्य रत्नों और अशर्फियों से भरी हुई थैली उसमें छुपाई और शहजादी की तलाश में फकीर बन कर निकल पड़ा।
उधर हिंदोस्तानी कारीगर शहजादी को ले कर उड़ता रहा और कुछ घंटों के उड़ने के बाद कश्मीर के राज्य में पहुँच गया। वह खुद भी भूखा था और उसे मालूम था कि शहजादी को भी भूख लग आई होगी। किंतु उसने शहर में उतरने के बजाय एक घने जंगल में घोड़े को उतारा। वहाँ पर घने पेड़ों के कारण शीतलता थी। एक ओर एक तालाब था जिसमें निर्मल जल भरा था। कारीगर ने शहजादी को घोड़े के पास छोड़ा और पास के एक गाँव में जा कर कुछ खाने पीने की चीजें लेने के लिए चला गया। शहजादी स्वयं को उस कुरूप अधेड़ व्यक्ति के चंगुल में फँसा पा कर बहुत घबराई। उसकी इच्छा हुई कि भाग कर उससे जान बचाए किंतु न तो उसे रास्ता मालूम था और न पैदल चलने की आदत थी। वह भूख से निढाल भी हो रही थी। कुछ देर में कारीगर खाना ले कर आया। उसने खुद भी खाना खाया और शहजादी को भी खाने के लिए दिया।
खा-पी कर उसने शहजादी के साथ भोग की इच्छा प्रकट की। शहजादी ने घृणापूर्वक इनकार किया तो कारीगर ने उसे मारा-पीटा और बलपूर्वक अपनी इच्छा पूरी करनी चाही। शहजादी बड़े जोर से रोने लगी। कारीगर को इसकी परवा नहीं थी। इसीलिए वह जंगल में उतरा था। संयोग से कश्मीर का बादशाह शिकार खेलने के बाद उधर से हो कर गुजर रहा था। उसने और उसके दलवालों ने स्त्री कंठ का आर्तनाद सुना तो उस तरफ आए। उन लोगों ने कारीगर से पूछा, तुम कौन हो? तुम्हारे साथ की यह स्त्री कौन है और क्यों रोए चली जा रही है? कारीगर ने बादशाह को न पहचाना। उसने कड़क कर कहा, यह मेरी पत्नी है। मेरे साथ यह हँसे या रोए, तुम लोगों को इससे क्या मतलब? शहजादी ने पूछनेवाले के शाही रंग-ढंग देखे और रो कर कहा, सरकार, आपको भगवान ने मेरी सम्मान रक्षा के लिए भेजा है। मैं बंगाल की राजकुमारी हूँ, मेरा विवाह फारस के शहजादे से होनेवाला था। यह नीच कारीगर मुझे ले भागा है।

बंद कर दिया गया है। आप पहले खिड़की से उसे देखें। फीरोजशाह वहाँ पहुँचा तो खिड़की से झाँक कर देखने लगा। उसने शहजादी को पहचान लिया जो बड़े दर्द भरे स्वर में उसके विरह में गीत गा रही थी। फीरोजशाह ने गौर से देखा तो यह भी समझ गया कि शहजादी को कोई रोग नहीं है वह खुद ही अपने को पागल दिखा रही है ताकि उसका बादशाह के साथ विवाह न हो सके।
बादशाह के पास आ कर उसने कहा, मेरी समझ में शहजादी का रोग आ रहा है। उसका कमरा खुलवाइए। मैं उसके पास जा कर उसे देखूँगा। लेकिन उस समय कमरे में कोई दूसरा आदमी नहीं होना चाहिए। बादशाह ने इस बात को मान लिया। फीरोजशाह अकेला शहजादी के पलंग की ओर बढ़ा। वह उसे पहचान न पाई और हकीम समझ कर चीखने और गालियाँ देने लगी। फीरोजशाह तेजी से पलंग के पास पहुँचा और धीमे से बोला, अच्छी तरह देखो। मैं हकीम-वकीम कुछ नहीं हूँ। फारस का शहजादा फीरोजशाह हूँ। तुम्हें तलाश करता हुआ आया हूँ। तुम मेरे साथ सहयोग करो तो तुम्हें निकाल ले चलूँ। शहजादी ने उसके स्वर से उसे पहचाना और ध्यान से देखा तो सूरत भी पहचान ली।
शहजादी ने चीखना बंद कर दिया और धीमे स्वर में बोली, मैंने अपना सतीत्व बचाने के लिए यह पागलपन का ढोंग किया था। मुझे नहीं मालूम था कि कब तक यह तमाशा करना पड़ेगा। सौभाग्य से तुम आ गए। लेकिन यहाँ से मुझे निकालोगे कैसे? बादशाह को मालूम होगा कि तुम मेरे प्रेमी और भावी पति हो तो तुम्हें जीता न छोड़ेगा। फीरोजशाह ने कहा, तुम सिर्फ यह करो कि पागलपन का प्रदर्शन बहुत कम कर दो, सिर्फ कभी-कभी कुछ अजीब हरकतें किया करो। बंगाल की शहजादी ने उसके कथनानुसार काम किया। उसने कपड़े फाड़ना, मार-पीट आदि करना बंद कर दिया। फीरोजशाह ने बाहर आ कर बादशाह से कहा, आप चल कर देख लें। शहजादी सहिबा लगभग पूर्ण रूप से स्वस्थ हो गई हैं।
बादशाह फीरोजशाह के साथ शहजादी के कमरे आया। शहजादी ठीक-ठाक वस्त्र पहने बैठी थी। उसका व्यवहार भी लगभग सामान्य था। बादशाह ने वापस आ कर फीरोजशाह की बड़ी प्रशंसा की और कहा, हकीम साहब, आपने कमाल कर दिया है। बड़े बड़े हकीम महीनों लगे रहे और कुछ न कर सके। आपने दो-चार मिनट ही में शहजादी को ठीक कर दिया। मैं आप को मालामाल कर दूँगा। फीरोजशाह ने कहा, आपकी बड़ी कृपा है लेकिन अभी मैं एक पैसा नहीं लूँगा। शहजादी जब बिल्कुल ठीक हो जाएँगी उस समय आप जो भी देंगे मैं सिर झुका कर स्वीकार करूँगा।

पुत्री को मैंने अपने युवराज से ब्याह दिया है, आप यह संबंध स्वीकार करें।
उसने खुशी से संबंध स्वीकार किया और बहुमूल्य भेंटें फारस को भेजीं।
शहरजाद की इस कहानी को भी दुनियाजाद और शहरयार ने बहुत पसंद किया। अगली रात शहरजाद ने दूसरी कहानी कहना आरंभ किया।

शाहजादा अहमद और परीबानू की कहानी

शहरजाद ने कहा, बादशाह सलामत, पुराने जमाने में हिंदोस्तान का एक बादशाह बड़ा प्रतापी और ऐश्वर्यवान था। उसके तीन बेटे थे। बड़े का नाम हुसैन, मँझले का अली और छोटे का अहमद था। बादशाह का एक भाई जब मरा तो उसने उसकी पुत्री को अपने महल में रख कर उसका पालन-पोषण किया। उसने उसकी शिक्षा- दीक्षा के लिए कई गुणवान और विद्वान नियुक्त किए। वह बचपन में अपने चचेरे भाइयों के साथ खेल कूद कर बड़ी हुई थी। पहले बादशाह का विचार था कि अपनी भतीजी का विवाह किसी अन्य शहजादे से करे। लेकिन उसे मालूम हुआ कि तीनों शहजादे अपनी चचेरी बहन पर मुग्ध हैं, उनमें से हर एक की इच्छा है कि उसका विवाह शहजादी के साथ हो जाए।
बादशाह को बड़ी चिंता हुई कि इस समस्या का समाधान कैसे किया जाए। यह तो स्पष्ट ही हो गया था कि अगर उसका विवाह किसी बाहरी राजकुमार से किया जाएगा तो उसके तीनों ही पुत्र दुखी होंगे। संभव है कि शहजादी के हमेशा निगाहों से दूर होने के कारण उनमें से कोई आत्महत्या कर ले। यह भी संभव है कि उनमें से कोई क्रोध के वशीभूत हो कर अपने पिता ही से विद्रोह कर बैठे। अगर उनमें से किसी एक के साथ शहजादी का विवाह किया जाता है तो बाकी दो दुखी होंगे और सोचेंगे कि हमारे साथ अन्याय किया गया है। इस निराशा की स्थिति में भी वे न जाने क्या करें। बादशाह अजीब उलझन में पड़ा था। उसकी समझ में इस जटिल समस्या का कोई समाधान नहीं आ रहा था।
बादशाह कई दिनों तक इस पर विचार करता रहा कि तीनों पुत्रों में से वह अपनी भतीजी नूरुन्निहार के लिए किसी का चुनाव किस आधार पर करे। फिर एक दिन उसने तीनों को अपने पास बुलाया और कहा, बेटो, तुम तीनों ही नूरुन्निहार के साथ विवाह करना चाहते हो। नूरुन्निहार सभी से ब्याही नहीं जा सकती, किसी एक ही से ब्याही जाएगी। मेरी नजर में तुम तीनों बराबर हो। मैं किसी एक को नूरुन्निहार के लायक समझ कर बाकी दो के दिलों में यह विचार पैदा नहीं करना चाहता कि मैं उन्हें घटिया समझता हूँ।

हुसैन बहुत देर तक इन बाजारों में घूमता और उनकी शोभा देखता रहा। अंत में वह थक गया और इच्छा करने लगा कि कहीं बैठ कर सुस्ता ले। एक दुकानदार ने उसके थके हुए चेहरे को देखा और वह सौहार्दपूर्वक उसे दुकान के अंदर ला कर बिठाया। हुसैन दुकान की चीजें देखता रहा और एक-आध चीज उसने खरीदी भी। कुछ देर बाद एक दलाल उधर से आवाज लगाता हुआ निकला, एक गलीचा तीस हजार अशर्फियाँ का है। है कोई इसको लेनेवाला? हुसैन को आश्चर्य हुआ कि गलीचे का इतना मूल्य भी हो सकता है। उसने दलाल को बुलाया और पूछा, भाई, गलीचे का दाम मैंने कभी इतना नहीं सुना, यह कैसा गलीचा है? दलाल ने समझा कि हुसैन कोई मामूली व्यापारी है। उसने कहा, भाई, तुम न समझ सकोगे कि इसमें क्या खास बात है। वास्तव में मैं तीस हजार अशर्फी गलत बोल गया, इसका मालिक चालीस हजार अशर्फी से एक कौड़ी कम नहीं लेगा।
हुसैन के जोर देने पर दलाल ने उसे गलीचा दिखाया। वह खूबसूरत और नरम था और लंबाई-चौड़ाई में चार-चार गज था। फिर भी उसमें कोई खास बात न थी। हुसैन ने कहा, यह तो एक अशर्फी से अधिक का नहीं मालूम होता। दलाल ने कहा, देखने में यह ऐसा ही लगता है लेकिन इसकी विशेषता यह है कि इस पर बैठ कर जहाँ जाने की इच्छा करो, यह वहीं पहुँचा देता है। हुसैन ने कहा, अगर बात ठीक है तो मैं इसके लिए चालीस हजार अशर्फियाँ दे सकता हूँ। किंतु यह मालूम कैसे पड़े कि इसका यह गुण है। दलाल ने पूछा कि आप कहाँ ठहरे हैं। हुसैन ने उस सराय का नाम लिया जहाँ वह ठहरा था। दलाल ने कहा, इसकी परीक्षा इस तरह हो सकती है कि मैं इसे यहाँ बिछा दूँ, हम दोनों इस पर बैठें और उस सराय में जाने की इच्छा करें। अगर यह हम लोगों को वहाँ पहुँचा दे तो आपको विश्वास हो जाएगा और तभी मैं आपसे इसका दाम चालीस हजार अशर्फी लूँगा। यह कह कर उसने दुकान में गलीचा बिछा दिया। हुसैन उसके साथ गलीचे पर बैठा और दोनों ने सराय के कमरे में जाने की इच्छा की। गलीचा हवा में उड़ा और उसने पलक मारते ही दोनों को सराय में हुसैन के कमरे में पहुँचा दिया।
हुसैन इससे बड़ा खुश हुआ। उसे विश्वास था कि उसके भाइयों को इससे अधिक विचित्र वस्तु नहीं मिल सकती और अब नूरुन्निहार उसी की होगी। उसने दलाल को तुरंत ही चालीस हजार अशर्फियाँ गिन दीं। उसका काम पूरा हो चुका था और वह वापस जा सकता था किंतु उसने सोचा कि अगर मैं अभी उस सराय में पहुँच गया तो मुझे महीनों तक सराय में रुक कर वर्ष के अंत तक अपने भाइयों की प्रतीक्षा करनी पड़ेगी और मैं बहुत ऊबूँगा। इसलिए उसने तय किया कि तब तक इस सुंदर देश

अहमद ने कहा, यदि इसमें यह गुण है तो मैं इसी अभी खरीद लूँगा। लेकिन यह मालूम कैसे हो कि इसमें यह गुण है। यह भी नहीं मालूम यह किसने और कैसे बनाया है। दलाल ने कहा, यहाँ के सभी लोग जानते हैं कि इसे यहाँ के एक बड़े हकीम ने बरसों तक जड़ी-बूटियों का शोधन करके बनाया है। उसने इसे सुँघा कर सैकड़ों रोगियों को ठीक किया किंतु संयोग से उसे ऐसा आकस्मिक रोग हुआ कि वही इसका प्रयोग न कर सका और मर गया। उसका सारा धन इसके बनाने में खर्च हो गया था। उसके स्त्री-बच्चों ने निर्धनता के कारण इसे बेचने के लिए मुझे दिया है। इस सेब की किसी समय भी परीक्षा की जा सकती है।
जो लोग जमा हो गए थे उनमें से एक ने कहा, मेरा एक रोगी मित्र मरणासन्न है। आप लोग उसे ठीक कर दें तो आपका अहसान मानूँगा। अहमद ने दलाल से कहा, उस आदमी को अच्छा करो। दलाल बोला, आप ही अपने हाथ से रोगी को यह सेब सुँघा कर इसका कमाल देखें। मेरा तो बीसियों बार का आजमाया हुआ है। सब लोग रोगी के पास गए। वह बेहोश था किंतु जैसे ही अहमद ने उसे सेब सुँघाया वह बिस्तर से उठ कर खड़ा हो गया। दलाल ने कहा कि इतनी परीक्षा ली गई है, अब तो मैं इसकी चालीस हजार अशर्फियाँ लूँगा। अहमद ने चालीस हजार अशर्फियाँ दे दीं और सेब ले लिया। उसके बाद उसने उस नगर और प्रदेश की कई महीने तक सैर की। फिर हिंदोस्तान जानेवाले एक काफिले के साथ हो लिया।
कुछ समय के बाद वह उसी सराय में पहुँचा जहाँ उसके दोनों भाई उसकी प्रतीक्षा कर रहे थे। तीनों ही इकट्ठे होने पर बहुत प्रसन्न थे कि सभी की यात्रा सकुशल समाप्त हुई। फिर उन्होंने अपनी-अपनी यात्राओं और उपलब्धियों का वर्णन किया। हुसैन ने कहा, मैं विष्णुगढ़ गया था। वह बड़ा समृद्ध देश है और वहाँ के निवासी बड़े शिष्ट हैं। मुझे वहाँ एक ऐसी चीज मिली जो और किसी को नहीं मिल सकती। तुम उस गलीचे को देख रहे हो। यह देखने में साधारण-सा गलीचा लगता है किंतु सब से असाधारण चीज है। इस पर बैठनेवाला जिस जगह भी जाने का विचार करे यह हवा में उड़ कर उसे क्षण मात्र में उस जगह पहुँचा देता है। मैंने इसे चालीस हजार अशर्फियाँ में खरीदा है। मैंने विष्णुगढ़ की कई महीने सैर की, फिर भी महीनों पहले इस सराय में आ गया हूँ क्योंकि इस गलीचे पर अपने सेवकों के साथ बैठ कर ज्यों ही मैंने यहाँ पहुँचने की इच्छा की उसी क्षण हम लोग यहाँ पहुँच गए। इसीलिए मैं यहाँ दो- तीन महीने से हूँ और तुम लोग अभी आए हो।

उसकी प्रशंसा की तो रूपसी ने कहा, मेरे दूसरे महल इससे कहीं अधिक सुंदर हैं।
फिर वह शहजादे को अपने पास बिठा कर बोली, तुम मुझे नहीं जानते लेकिन मैं तुम्हें जानती हूँ। तुमने किताबों में यह तो पढ़ा ही होगा कि पृथ्वी पर मनुष्यों के अलावा जिन्न और परियाँ भी रहती हैं। मैं एक प्रमुख जिन्न की पुत्री हूँ। मेरा नाम परीबानू है। अब तुम अपना हाल भी मुझसे सुन लो। तुम तीन भाई हो। तुम्हारी चचेरी बहन नूरुन्निहार है। तुम तीनों उसे अपनी-अपनी पत्नी बनाना चाहते थे। उसके लिए तुम तीनों ने अपने पिता के आदेशानुसार दूर देशों की यात्रा की। तुम्हारे पिता ने अद्भुत वस्तुओं को लाने को कहा था। तुम समरकंद गए और वह रोग निवारक सेब लाए, जिसे मैंने ही वहाँ तुम्हारे लिए भेजा था। इसी प्रकार मेरा भेजा हुआ गलीचा विष्णुगढ़ से तुम्हारा बड़ा भाई हुसेन लाया और इस प्रकार की दूरबीन फारस से अली लाया। इसी से समझ लो कि मैं तुम्हारे बारे में सब कुछ जानती हूँ। अब तुम्हीं बताओ मैं अच्छी हूँ या नूरुन्निहार?
परीबानू ने आगे कहा, जब तुम ने तीर फेंका तो मैंने समझ लिया कि यह तीर हुसैन के तीर से भी पीछे रह जाएगा। मैंने उसे हवा ही में पकड़ा और ला कर बाहर के टीले की चट्टान से चिपका दिया। मेरा उद्देश्य यह था कि तुम तीर को ढूँढ़ते हुए यहाँ आओ जिससे मैं तुमसे भेंट कर सकूँ। यह कह कर परीबानू ने प्यार की निगाहों से अहमद को देखा और शरमा कर आँखें झुका लीं। अहमद भी उसके रूप रस को पी कर उन्मत्त हो गया था। नूरुन्निहार दूसरे की हो चुकी थी और उसके प्रेम में फँसे रहना पागलपन होता। इधर परीबानू नूरुन्निहार से कहीं अधिक सुंदर थी। उसने कहा, सुंदरी, मैंने तुम्हें आज ही देखा है किंतु तुम्हें देख कर मेरी यह दशा हो गई कि मैं यह चाहने लगा हूँ कि सब कुछ छोड़ कर जीवन भर तुम्हारे चरणों में पड़ा रहूँ। किंतु मेरे चाहने से क्या होता है। तुम जिन्न की पुत्री हो, परी हो। तुम्हारे आत्मीय यह कब चाहेंगे कि तुम किसी मनुष्य के साथ विवाह संबंध स्थापित करो।
परीबानू ने कहा, यह बात नहीं है। मेरे माता-पिता ने मुझे पूरी छूट दे रखी है कि जिसके साथ चाहूँ विवाह करूँ। और यह तुमने क्या कहा कि तुम मेरे चरणों में पड़े रहो। मैंने तुम्हें अपना पति माना है। पति का मतलब होता है स्वामी। मैं और यह सारे महल तथा संपत्ति अब तुम्हारे ही अधिकार में रहेंगे क्योंकि मैं अभी-अभी तुम्हारे साथ विवाह करूँगी। तुम समझदार आदमी हो।

मुझे तुम्हारी बुद्धिमत्ता से पूर्ण आशा है कि तुम मुझे अपनी पत्नी बनाने से इनकार नहीं करोगे। अपने बारे में तो मैं यह कह ही चुकी कि मुझे मेरे माँ-बाप ने विवाह के लिए पूरी स्वतंत्रता दे रखी है। इसके अलावा भी हमारी जाति विशेष के जिन्नों-परियों में यह रीति है कि विवाह के मामले में हर परी को स्वतंत्रता दी जाती है कि वह जिन्न, मनुष्य या किसी और जाति में भी जिससे चाहे विवाह संबंध बनाए क्योंकि हम लोगों की मान्यता है कि अपनी पसंद की शादी से स्त्री-पुरुष में सदा के लिए प्रीति बनी रहती है। इसलिए मेरी- तुम्हारी शादी सभी को मान्य होगी।
परीबानू से यह सुन कर अहमद आनंद से अभिभूत हो गया और परीबानू के पैरों पर गिरने लगा। परी ने उसे इससे रोका और सम्मानपूर्वक अपना वस्त्र भी न चूमने दिया बल्कि अपना हाथ बढ़ा दिया जिसे अहमद ने चूमा और हृदय और आँखों से लगाया। उस समाज में सम्मान प्रदर्शन की यही रीति थी। परीबानू ने मुस्कुरा कर कहा, अहमद, तुमने मेरा हाथ थामा है। इस हाथ गहे की लाज हमेशा बनाए रखना। ऐसा नहीं कि धोखा दे जाओ। अहमद ने कहा, यह किसके लिए संभव है कि तुम्हारे जैसी परी मिलने पर भी उसे छोड़ दे? मैं तो अपना मन-प्राण सब कुछ तुम्हें अर्पित कर चुका। अब मेरी हर प्रकार से तुम्हीं स्वामिनी हो। हाँ, हमारा विवाह कहाँ और कैसे होगा? परीबानू ने कहा, विवाह के लिए एक-दूसरे को पति- पत्नी मान लेना काफी होता है, सो हम दोनों ने मान लिया। बाकी विवाह की रस्में बेकार हैं। हम दोनों इसी क्षण से पति-पत्नी हो गए। रात में हम लोग एक सुसज्जित कक्ष में एक-दूसरे के संग का आनंद लेंगे।
फिर दासियाँ दोनों के लिए नाना प्रकार के स्वादिष्ट व्यंजन लाईं। दोनों ने तृप्त हो कर भोजन किया। भोजन के पश्चात दोनों ने मद्यपान किया और देर तक परस्पर प्रीति की बातें करते रहे। फिर परीबानू ने अहमद को अपना महल दिखाया जिसमें हर जगह इतनी बहुतायात से रत्नादिक एकत्र थे कि शहजादे की आँखें फट गईं। उसने भवन की प्रशंसा की तो परीबानू ने कहा कि कई जिन्नों के पास ऐसे शानदार महल हैं जिनके आगे मेरा महल कुछ नहीं है। फिर वह शहजादे को अपनी वाटिकाओं में ले गई जिनकी सुंदरता का वर्णन करने में शब्द असमर्थ हैं। शाम को वह उसे अपने रात्रिकालीन भोजन कक्ष में ले गई जहाँ की सजावट देख कर शहजादा हैरान हो गया। भोजन कक्ष में कई रूपवान सुंदर वस्त्राभूषणों से सुसज्जित गायिकाएँ और वादिकाएँ भी थीं जो इन दोनों के वहाँ पहुँचते ही मीठे स्वरों में गायन-वादन करने लगीं। कुछ देर में भोजन आया, जिसमें

मुझे तुम पर पूरा विश्वास है। सचमुच ही तुम्हारे पिता तुम्हारी अनुपस्थिति से बहुत दुखी होंगे। तुम उन्हें देखने जरूर जाओ किंतु जल्दी लौटना।
उधर अहमद के पिता यानी हिंदोस्तान के बादशाह का हृदय वास्तव में बहुत दुखी रहता था। उसका एक बेटा नूरुन्निहार से विवाह करके अति सुख से रहता था और इसका बादशाह को संतोष था किंतु हुसैन और अहमद के चले जाने से उसे हृदयविदारक कष्ट भी था। अली के विवाह के दो-चार दिन बाद उसने महल के कर्मचारियों से पूछा कि हुसैन और अहमद क्यों नहीं दिखाई देते। उन्होंने कहा, शहजादा हुसैन तो संसार त्याग करके ईश्वर की खोज में फकीर बन कर निकल गए हैं लेकिन शहजादा अहमद अचानक न मालूम कहाँ गायब हो गए हैं। बादशाह ने शहजादा अहमद की खोज में बहुत जासूस दौड़ाए किंतु शहजादे का पता किसी को न चल सका। बादशाह बड़ा चिंतित हुआ।
एक दिन उसे मालूम हुआ कि इसी शहर में एक होशियार जादूगरनी रहती है जो तंत्र-विद्या से अज्ञात बातें जान लेती है। बादशाह ने उसे बुला कर कहा, जब से मैंने नूरुन्निहार से शहजादा अली का विवाह किया है शहजादा अहमद का कुछ पता नहीं चलता। मैं इससे बहुत परेशान हूँ। तुम अपने जादू से मुझे बताओ कि अहमद जीवित है या नहीं, जीवित है तो किस दिशा में है और मुझसे उसकी भेंट होगी या नहीं। जादूगरनी ने कहा, इसी क्षण तो मैं कुछ भी न बता सकूँगी। कई क्रियाएँ करनी होती हैं। कल जरूर मैं आपके प्रश्नों का उत्तर दूँगी। बादशाह ने कहा, तुमने ठीक सूचना दी तो तुम्हें मालामाल कर दूँगा। इस समय तुम घर जाओ और जो क्रियाएँ जरूरी हैं वह करो। जादूगरनी दूसरे दिन आ कर बोली, मैंने जादू से यह तो जान लिया है कि शहजादा अहमद सही-सलामत हैं। किंतु वे कहाँ हैं इसका पता नहीं लग सका। मालूम होता है कि कहीं बड़े रहस्यमय स्थान में हैं जिससे मुझे कुछ पता नहीं चलता। बादशाह को इतने से ही बहुत संतोष हुआ कि अहमद जिंदा है।
इधर शहजादा अहमद अपने पिता के घर आने को तैयार हुआ तो परीबानू ने कहा, तुम एक बात का ध्यान जरूर रखना। अपने पिता तथा अन्य संबंधियों, मित्र आदि को यह हरगिज न बताना कि तुम कहाँ रहते हो और कैसे यहाँ पर पहुँचे। तुम सिर्फ यह कहना कि मेरा विवाह हो गया है और मैं जहाँ भी रहता हूँ बड़े सुख और संतोष के साथ रहता हूँ। किसी विचित्र बात का उल्लेख न करना और इसके अलावा कुछ न

मैंने बता दिया है उसके अतिरिक्त कुछ भी बताने की स्थिति में मैं नहीं हूँ। आप इत्मीनान रखें मैं जल्दी-जल्दी आया करूँगा।
बादशाह ने कहा, बेटा, मेरी इच्छा किसी रहस्य को जानने की नहीं है। मैं तो केवल तुम्हारी कुशलक्षेम से आश्वस्त होना चाहता था। तुम्हारा हाल मिलता रहे यही काफी है। तुम जब चाहो आओ जब चाहो जाओ। अतएव अहमद तीन दिन तक शाही महल में रहा। चौथे दिन सुबह अपने निवास स्थान को रवाना हुआ। परीबानू उसकी वापसी पर बहुत प्रसन्न हुई। दोनों प्रेमपूर्वक जीवन का आनंद उठाने लगे। एक महीना पूरा होने पर भी जब शहजादा अपने पिता से मिलने नहीं गया तो परीबानू ने पूछा कि तुम तो कहते थे कि महीने-महीने पिता से मिलने जाऊँगा, इस बार क्यों नहीं गए। अहमद ने कहा, मैंने सोचा शायद अबकी बार तुम जाने की अनुमति न दो।
परीबानू हँस कर बोली, मेरी अनुमति पर इतना निर्भर न रहो। महीने-महीने मुझे पूछे बगैर ही पिता के पास हो आया करो। अतएव शहजादा दूसरे दिन सुबह बड़ी धूमधाम से अपने पिता के पास गया और तीन दिन वहाँ रहा। इसके बाद उसका नियम हो गया कि हर महीने शाही महल में जाता, तीन दिन वहाँ रहता और इसके बाद परीबानू के महल में आ जाता। उसके शाही महल में आगमन की तड़क-भड़क हर बार बढ़ती ही जाती थी।
यह देख कर महल का एक प्रधान कर्मचारी, जो बादशाह के मुँह लगा हुआ था, शहजादे की सवारी की बढ़ती हुई शान-शौकत से आश्चर्य में पड़ा। वह सोचने लगा कि शहजादे का विचित्र रहस्य मालूम होता है। कुछ पता नहीं कि वह कहाँ रहता है और वह ऐश्वर्य उसे कहाँ से मिला है। वह मन का नीच भी था इसलिए बादशाह को बहकाने लगा। उसने कहा, सरकार अपनी ओर से असावधान रहते हैं। आपने कभी ध्यान दिया है कि आपके पुत्र का ऐश्वर्य बढ़ता ही जाता है। उसकी शक्ति ऐसे ही बढ़ती रही तो एक दिन यह भी संभव है कि आप पर आक्रमण करके आपका राज्य हथिया ले और आपको कैद कर ले। जब से आपने नूरुन्निहार को शहजादा अली से ब्याहा है तब से शहजादा हुसैन और शहजादा अहमद अत्यंत अप्रसन्न हैं। शहजादा हुसैन ने तो फकीरी बाना ओढ़ लिया, वह चाहे भी तो आप की कुछ हानि नहीं कर सकता लेकिन कहीं अहमद आपसे बदला न ले।
बादशाह उसके बहकावे में आ गया और अहमद का हाल जानने के लिए उत्सुक रहने लगा। इसी कर्मचारी के कहने से उसने मंत्री की जानकारी के बगैर ही महल में चोर दरवाजे से जादूगरनी को बुला कर कहा, तुमने अहमद के जीवित होने की बात

जादूगरनी शाही महल पहुँची और महल के चोर दरवाजे से, जहाँ से वह साधारणतः महल में जाया करती थी, प्रविष्ट हुई। बादशाह ने उसे अपने कमरे में बुलाया और दासों से एकांत करने को कहा। बादशाह ने कहा, तुम्हारा चेहरा उतरा हुआ है। मालूम होता है कि इस बार भी तुम्हें सफलता नहीं मिली है। जादूगरनी ने कहा, नहीं सरकार, जिस काम के लिए मैं गई थी वह तो पूरी तरह कर आई। चेहरा उतरने का कारण कुछ और ही है।
फिर उसने विस्तारपूर्वक बताया कि चालाकी से शहजादा अहमद के मन में दया भाव उत्पन्न करके किस तरह उसने उसके निवास स्थान में प्रवेश पाया और वहाँ क्या- क्या देखा। उसने कहा, उस महल की मालिक जो परी है वह आपके बेटे की पत्नी की तरह रहती है। आप शायद यह सुन कर प्रसन्न हुए हों कि आपकी बहू परी है और अहमद को सुख प्राप्त हुआ है। मैं कहती हूँ कि इसके कारण आपका अहित होगा। यह बिल्कुल मुमकिन है कि अहमद आप से दुश्मनी करे। आप शायद यह सोचते होंगे कि अहमद सपूत है और ऐसा नहीं हो सकता कि वह आपसे दुश्मनी ठाने। अहमद स्वभाव का अच्छा है किंतु इस समय वह पूरी तरह परी के बस में है और उसके कहने पर कुछ भी कर सकता है। आप अपनी ओर से होशियार रहें। अब मुझे जाने की अनुमति दी जाए।
बादशाह ने कहा, मैं तुम पर दो कारणों से बहुत प्रसन्न हूँ। एक तो यह कि तुमने मेरे कहने पर वह काम किया जो किसी और व्यक्ति के लिए संभव नहीं था। दूसरे इस कारण कि तुमने मेरे हित के लिए मुझे परामर्श दिया। तुम जाओ, बीच-बीच में मैं तुम्हें जरूरत पड़ने पर बुलाया करूँगा। जादूगरनी ने फर्शी सलाम किया और अपने घर चली गई।
अब बादशाह ने महल के उस प्रमुख कर्मचारी को बुलाया जिसने उसके मन में अहमद के प्रति शंका डाली थी। उसने जादूगरनी द्वारा दी गई सूचना विस्तारपूर्वक उसे बताई और पूछा, अहमद अभी तो कुछ बुरा नहीं सोच रहा है किंतु वह इस स्थिति में है कि जब चाहे मुझ पर हमला कर दे। तुम्हारी राय में मुझे क्या करना चाहिए? प्रधान कर्मचारी ने कहा, हुजूर, मेरी राय में अहमद को मरवाना ठीक न होगा, इससे आपकी बदनामी हो जाएगी। मेरी राय में उसे कैद में डाल देना चाहिए। बादशाह ने कहा, अच्छा, मैं सोचूँगा। प्रधान कर्मचारी विदा हुआ तो बादशाह ने फिर जादूगरनी को उसके घर बुलाया।
उसके आने पर कहा कि प्रधान कर्मचारी ने अहमद को कैद में डालने की सलाह दी है। जादूगरनी ने कहा, सरकार, इसमें बड़ा खतरा है। अहमद के साथ आप उसके साथ

xxxxx xxx xxxxx xxx xxxxx xx xxxxxx xxx xxxxx xxxxx xx xxxxx xx xx xxxxx xxxxxxx xx xxxxx xxxxxxxxx xx xx xxxxx xxxxx xxx xx xxxxxx xx xx xxxxxxx xxx xx xxxxx x xxxxx xx xxx xxx, xxxxx-xxxxx xxxxx xxxxx xxxxx xxx xxx xx?

xxxxx xx xxxxx xxxxx xx xx xxxxxxxx xxxxx xxxxx xxxxx xxx xxxxx xxx xxxxx xxxxx xx xxxxxx xx xxx xxx xxxxxxxx xx xxx xx xx xxxxxx xxxxx xx xx xx xxxxx xxxxxx xxxxx xxxxx xxxxxxxx xx xxxxx, xxx xx xxx xxxxxx xxxxxx x xx? xxx xxxxx xx xxxxxx xxxxx xxx xxxxx xxx xx? xxxxxxx xxxxx xx xxxxx xxx xxxxxxx xxxxxxxx xx xxxxxxx xx xx xxx xxx xxxxx xxx, xxxxxxx xxxxx xxxxx xxxxxxx xxxxxx xxx xxxxxx xx xxxxx xxx xxx xxxxx x xxx xxx xxxxx xx xxx, xx xxx xxxxx xx xxx xxx xxx xx xxxxxxx xx xxx xxxxxxxx xxxxx xxxxxxxxxx xxxxx xxxxxx xx xx xxxxxxx xxx xxx-xxx xxxxx xxx xx xxxxx xxxxxxx xx xxxxx xxxxxxxxx xxxxx xx xxxxxxx xxxxxx xxxxx xx xxx xxxxxxx xx xxxxx xx xx xxxxx xxxxxx xxx xxx xx xxxxxxx xxxxxx xx xx xxxxx xxxxxx xxx xx xxx xxx

xxxxxxxx xxxxx, xxxxxxx, xxxxxxxx xxx xx xx xxxxxx xx xxxxxxxx xx xxx xx, xxxxx xxx xxxxxx xxx xx xxx xxx xx, xxxxx xxx xx, xx xxxxxx xxxxx xxx xx xxxxxxx xx xxxxxx xxx xxxxx xxxxx xx xxxxxxx xxxxxx xx xxx xx xxx xxx xx xxxxx xx xxxxx xxx xxxxxxx xx xxx xxx xx xxx xxx xxxxx xxxxx xx xx xxxxxx xxxxx xxx xx xxxxxxx xxxxx xxxxx xx xxxxx xxx xx xxx xxxxx xxx xx xxx xxxxx xx xx xxxxx xx xxx xxx xxx xxxxx xxxxx xx xxx xxxxx xxx xxx xxxxxx xxxxx xx xxxxxxxx xxxxx xx xxx xxx xxxxx xxxxx xxx xxxxxxxxxxxxxxx xxxxxxx xxxxx xxxxx xxxxxx xx xx xxx xxxxx, xxxxxxx xxxxxxxx xxxxx xx xxxxx xxxxxxx xxxxxx xx xxxxx xx xxxxxx xxx xxxxxx xxxxx xx xxx xxxxx xxxxx xxxxx xx xxxxxx xx xxxxx xx xxxxxx xxx xx xxx xxxxxx

xxxxx xx xxx, xxx xxxxxxx xxx xxxxx xxxxxxxx xxx xxxxxx xxxxx xx xxx xxxxx xxxxx xxxxxx xxxxxxxx xx xxx, xxxxxxx xxx xx, xxx xxxxxxx xxxxx xxxxx xxxxx xx xx xxxxx xxxxxxx xxx xxx xxxxx xxxxx xx xxx xxx xxxxx xxx xxxxx xx xxxxx xxxxxxxx xx xxxxx, xxxxx xxxxxx xxxxx xx? xxx xxxxx xx xxxxx xxx xxxxx? xxxxxxxx xx xxxxxxxxx xx xxxxx xx xxx, xxxxxxxx, xx xxxxxx xxx xx xxx xxxxx xxxxx xx xxx xxxxx xx xxxxxxx xxxxx xx xx xx xxxxx xx xxxxxxxx xx xxxxx xxx xxxxxxxx xx xxxxx xxxxxxx xxx xxxxxx xx xxxxxxx xx xx xx xxx xx xxxxx xxx xx xxxxx-xxxxxx xxxxxx xxx xxx xxxxx xxxxxxx xx xxxxx xxxxx xxxxx xx xxxxxx xxxxx xx

फिर डेरे को खड़ा कर दिया। अहमद ने देखा कि उसने नीचे एक क्या दो फौजें आ जाएँ।
नूरजहाँ ने डेरा तह किया और शहजादे के साथ अंदर आई। अहमद ने कहा, कहो तो इसे अभी ले जा कर पिता को दे दूँ। परीबानू ने कहा, ऐसी क्या जल्दी है। अगले महीने अपने निश्चित समय पर जाना। शहजादा मान गया। अगले महीने वह राजधानी में गया तो महल के अंत:पुर में जाने के बजाय सीधे दरबार में पहुँचा। बादशाह ने व्यंग्यपूर्वक पूछा, मेरी चीज तो ले ही आए होगे। अहमद ने कहा, आपके चरणों के प्रताप से ले आया हूँ। अभी बाहर चल कर इसे देख लें। अभी आपको मेरी मुट्ठी देख कर विश्वास नहीं हो पा रहा होगा। बादशाह और दरबारी बड़े मैदान में गए जहाँ अहमद ने डेरा खड़ा कर दिया। सभी की आँखें फट गईं। बादशाह ने अहमद की बड़ी प्रशंसा की और उसे आराम करने को कहा।
किंतु वास्तव में उसकी घबराहट बढ़ गई थी। वह सोच रहा था कि वाकई अहमद की शक्ति अत्यधिक है और वह कुछ शंकित भी हो गया है। उसने महल में जा कर फिर जादूगरनी को बुलाया और कहा, अब क्या करूँ? अहमद तो अपनी मुट्ठी में ऐसा डेरा ले आया जिस में एक क्या दो सेनाएँ आसानी से समा जाएँ। उसने कुछ सोच कर कहा, अब की बार अहमद से चश्म-ए-शेराँ का पानी लाने को कहें जिसकी कुछ बूँदें पीने से आदमी हमेशा जवान और तंदुरुस्त रहता है।
दूसरे दिन उसने दरबार में अहमद को बुलाया और कहा, बेटे, तुमने बड़ा डेरा ला कर मेरी एक बड़ी जरूरत पूरी कर दी किंतु अब दूसरी जरूरत भी पूरी करो। मेरा बुढ़ापा आ रहा है और रोग भी उत्पन्न हो रहे हैं। अगर तुम अपनी पत्नी की सहायता से मेरे लिए चश्म-ए-शेराँ का स्वास्थ्यवर्धक पानी ला सको तो बड़ी अच्छी बात हो। अहमद कुढ़ गया कि एक चीज पाते ही दूसरी अलभ्य वस्तु माँग बैठे। वह यह भी सोच रहा था कि परीबानू के लिए असंभव तो यह भी न होगा लकिन वह इन फरमाइशों से चिढ़ेगी जरूर। उसने थोड़ी देर तक सोच कर कहा, आज्ञाकारी पुत्र की हैसियत से मुझे आपकी आज्ञा के पालन में खुशी होगी। लेकिन मैं वादा नहीं कर सकता। पत्नी से सलाह लूँगा और यदि संभव होगा तो वह जल आपकी सेवा में अर्पित करूँगा।
अहमद दूसरे दिन ही परीबानू के महल की ओर चल पड़ा। परीबानू के सामने जा कर बोला, डेरा पा कर मेरे पिता ने तुम्हारा बड़ा अहसान माना है। लेकिन एक नई फरमाइश भी कर दी है। उन्होंने चश्म-ए-शेराँ का स्वास्थ्यवर्धक जल माँगा है। मुझे तो यह भी नहीं मालूम कि यह चश्माए-शेराँ क्या बला है। परीबानू ने

कहा, मालूम होता है कि तुम्हारे पिता ने तुम्हें तंग करने पर कमर कस ली है। इसीलिए अजीब चीजें मँगाते हैं। अब की बार उन्होंने वह चीज मँगाई है जो जिन्न भी आसानी से न ला सकें। खैर तुम चिंता न करो। मैं तुम्हें बताऊँगी कि चश्म-ए-शेराँ तक कैसे पहुँचो और वह पानी कैसे लाओ।
तुम कल सुबह उस ओर की सड़क पर जाना। काफी दूर जाने के बाद एक लोहे का फाटक मिलेगा, जिसके अंदर वह सरोवर है जिसका पानी लाने को तुमसे कहा गया है। अब इस सरोवर का पानी लाने की तरकीब सुनो। अपने साथ दो घोड़े लो। एक पर बैठो और दूसरे पर एक भेड़ के चार टुकड़े लादो और उस घोड़े की लगाम पकड़े रहो। भेड़ मैं आज रात ही कटवा रखूँगी। मैं इसी समय दो गेंदें तुम्हें सी कर दूँगी। यहाँ से निकलते ही तुम एक गेंद अपने पास रखना और एक जमीन पर डाल देना। वह लुढ़कती चली जाएगी और तुम्हें सरोवर के लौह द्वार तक पहुँचा देगी। द्वार पर दो जागे हुए सिंह तुम्हें देखेंगे तो अपने सोए हुए साथियों को जगा देंगे। फिर चारों मिल कर भयंकर गर्जन करेंगे। लेकिन तुम उनसे बिल्कुल न डरना। चारों के आगे कटी हुई भेड़ का एक-एक टुकड़ा डाल देना। इस बात का ध्यान रखना कि कहीं फाटक के बाहर ही घोड़े से न उतर पड़ो। घोड़े पर बैठा रहना जरूरी है नहीं तो नुकसान हो सकता है। शेर मांस खाने लगें तो तुम घोड़े को एड़ लगा कर आगे बढ़ना। फाटक अपने आप खुल जाएगा। अंदर जा कर घोड़े से उतरना और उस चाँदी की सुराही में जो मैं तुम्हें दूँगी, तुरंत ही उस सरोवर का जल भर लेना और सिंहों के भोजन समाप्त करने के पहले ही फाटक से बाहर निकल आना। फिर तुम कुशलतापूर्वक वापस आ जाओगे। वहाँ से सीधे अपने पिता के पास चले जाना।
दूसरी सुबह शहजादा अहमद ने अपनी पत्नी के बताए हुए ढंग से काम किया। उसने दो घोड़े लिए जिनमें से एक पर भेड़ के चार टुकड़े रखे थे। गेंद को पृथ्वी पर डाला तो वह लुढ़कती हुई चली और उसने अहमद को लौह द्वार के सामने खड़ा कर दिया। अहमद ने भेड़ के टुकड़े शेरों के आगे डाले और जब वह खाने लगे तो अंदर जा कर चाँदी की सुराही में जल भर लिया और वापस चला। दो शेरों ने खाना खत्म कर लिया था और वे उसके पीछे लगे। शहजादे ने म्यान से तलवार निकाली तो एक शेर तो लौट गया किंतु दूसरे ने सिर और पूँछ के इशारे से उसे बताया कि तुम डरो नहीं, मैं तुम्हारी रक्षा के लिए तुम्हारे पीछे चल रहा हूँ। अहमद सीधा राजधानी में पहुँचा। सिंह वहाँ से वापस लौट गया। शहजादा सीधा दरबार में

गया और बादशाह से बोला, आपके प्रताप से मुझे एक ही दिन में स्वास्थ्यवर्धक जल मिल गया है। इसे स्वीकार करें।
बादशाह ने अहमद की बड़ी प्रशंसा और सम्मान किया और उसे अपने साथ तख्त पर बिठाया किंतु उसकी जान अहमद की वीरता को देख कर सूखने लगी। महल में जा कर उसने फिर जादूगरनी को बुलाया और उसे वह जल दिखाया। उसने इस बात की पुष्टि की कि यह जल वास्तव में चश्म-ए-शेराँ का है। बादशाह ने कहा, अब मैं उससे क्या चीजें माँगू जिसे लाना उसके लिए असंभव हो? जादूगरनी भी इस बात पर विचार करने लगी।
परीबानू ने दूर ही से बैठे-बैठे जादूगरनी की मति फेर दी। अहमद के वृत्तांत से जो बादशाह की जबानी उसे मालूम हो चुका था उसे मालूम हो जाना चाहिए था कि परी अपनी पूरी ताकत से शहजादे की मदद कर रही है। उसे यह भी मालूम हो जाना चाहिए था कि वह कितनी ही होशियार हो, क्रुद्ध परी का मुकाबला नहीं कर सकती। किंतु विनाश काले विपरीत बुद्धिः। उसने असंभव समझ कर अपनी निश्चित मृत्यु को निमंत्रण दे दिया। जादूगरनी ने ऐसी वस्तु माँगने के लिए बादशाह से कहा कि बादशाह उछल पड़ा। उसने बुढ़िया जादूगरनी की पीठ ठोंकी और उसे अथाह धन-संपदा दे कर विदा कर दिया।
दूसरे दिन दरबार के समय बादशाह ने शहजादा अहमद को बुलाया और कहा, बेटे, तुमने सिद्ध कर दिया कि तुमसे बढ़ कर सपूत कोई हुआ है न होगा। अब तुम मेरी एक अंतिम इच्छा पूरी कर दो। शहजादे के पूछने पर उसने कहा, मैं अपने दरबार में एक ऐसा आदमी रखना चाहता हूँ जिसके अस्तित्व की लोग कल्पना भी न कर सकें। तुम मेरे लिए एक ऐसा आदमी लाओ जिसकी ऊँचाई एक गज हो लेकिन जिसकी दाढ़ी बीस गज की हो। साथ ही उसके कंधे पर एक छह मन का सोंटा हो जिसे वह मामूली लकड़ी की तरह घुमा सके। स्पष्ट है कि जादूगरनी ने ही उसे ऐसे आदमी की माँग करने की सलाह दी थी। अहमद ने कहा, यह आप क्या कर रहे है? गज भर के आदमी की बीस गज की दाढ़ी कैसे हो जाएगी और वह साढ़े छह मन का सोंटा कैसे घुमाएगा? बादशाह ने मुस्कुरा कर कहा, तुम अपनी पत्नी से जिक्र करो। शायद वह यह माँग भी पूरी कर दे। न कर सके तो यहाँ आने की जरूरत नहीं है।
अहमद उसी दिन परीबानू के पास लौट आया। उसने कहा, पिताजी बिल्कुल सठिया गए हैं। अबकी बार उन्होंने साढ़े छह टन का सोंटा घुमानेवाला बीस गज की दाढ़ीवाला गज भर के कद का आदमी माँगा है। ऐसा आदमी कहाँ होगा और किस काम का है? परीबानू ने कुटिलता से मुस्कुरा कर कहा, तुम बादशाह के पास चले जाना।

जरूरत है। शाम को मैं पूरा हाल तुम्हें बताऊँगी कि बादशाह ने तुम्हें किस कारण से बुलाया है। अहमद ने यह सुन कर सिर नीचा कर लिया।
शाम को अकेले में परीबानू ने शब्बर को अहमद के विरुद्ध होनेवाले षड्यंत्र का पूरा हाल बताया। दूसरी सुबह को अहमद की सवारी फिर राजधानी की ओर चली। शब्बर आगे-आगे पैदल ही घोड़ों से तेज चल रहा था। नगर में पहुँचने पर नगर निवासी शब्बर के भयानक रूप को देख कर इधर-उधर भागने लगे। शब्बर किसी पर ध्यान दिए बगैर सीधे दरबार में घुसा और तख्त के पास जा कर कड़क कर बोला, हिंदोस्तान के बादशाह, तुमने मुझे बुलाया है। क्या काम है तुम्हें मुझसे? बादशाह ने उत्तर देने के बजाय भय से आँखों पर हाथ रख लिए और तख्त से उतर कर भागने की कोशिश करने लगा। शब्बर ने और जोर से गरज कर कहा, यह क्या बदतमीजी है? तुम्हारे बुलाने पर मैं इतनी दूर से चल कर आया हूँ और तुम बात किए बगैर ही भागे जा रहे हो।
यह कह कर उसने सोंटे के वार से बादशाह का सिर टुकड़े-टुकड़े कर दिया। इतने में अहमद भी दरबार में पहुँच गया। शब्बर ने कहा, मंत्री कहाँ है? मैं उसका भी यही हाल करूँगा। किंतु अहमद ने उससे मंत्री की जान यह कह कर बचा दी कि मंत्री ने भरसक मेरे प्रति मित्रता ही रखी। शब्बर ने दो-चार दरबारियों और सामंतों को छोड़ कर, जो मौका पा कर दरबार से भाग निकले थे, सभी दरबारियों और सरदारों को मार डाला क्योंकि सभी ने इस अवधि में अहमद के विरुद्ध कुछ न कुछ कहा था।
अब शब्बर ने राजमंत्री से कहा, महल के प्रधान कर्मचारी और जादूगरनी को घसीट कर लाओ, उन्होंने मेरे बहनोई के विरुद्ध षड़यंत्र किया था। अहमद के दूसरे शत्रुओं को भी यहाँ लाओ वरना तुम्हारी खैर नहीं। वे घसीट कर लाए गए और शब्बर ने सब को खत्म कर दिया। शब्बर इतना क्रुद्ध था कि सारे नगर को समाप्त करना चाहता था किंतु अहमद ने उसकी खुशामद करके इस हत्याकांड से रोका। शब्बर ने वहीं अहमद को सिंहासन पर बिठा कर उसका राजतिलक कर दिया। यह सब करने के बाद उसने अहमद के बादशाह होने की मुनादी कराई और परीबानू को राजमहल में ले आने के बाद विदा हो गया। जाते समय अहमद से कह गया कि जब भी जरूरत हो मुझे बुला लेना।
अहमद ने बादशाह बन कर भाइयों के साथ अच्छा सलूक किया। अली और नूरुन्निहार को बुला कर उन्हें भेंटें दीं और अली को एक सूबे का हाकिम बना कर भेज दिया। उसने हुसैन के पास भी एक सरदार भेज कर संदेशा दिया कि जिस प्रदेश का हाकिम

बनना चाहो बना दूँ। किंतु हुसैन ने उसे आशीर्वाद दे कर कहलवाया कि अब संसार के मोह में न फँसूँगा।

ईर्ष्यालु बहनों की कहानी

पुराने जमाने में फारस में खुसरो शाह नामी शहजादा था। वह रातों को अक्सर भेस बदल कर सिर्फ एक सेवक को अपने साथ रख कर नगर की सैर किया करता था और संसार की विचित्र बातें देख कर अपना ज्ञान बढ़ाया करता था। जब अपने वृद्ध पिता की मृत्यु होने पर वह राजगद्दी का मालिक हुआ तो उसने अपना नाम कैखुसरो रखा। किंतु उसने भेस बदल कर नगर का घूमना तब भी जारी रखा। हाँ, उसके साथ सेवक के बजाय मंत्री होता था।
एक दिन इसी तरह नगर भ्रमण करते हुए वह एक गली में जा पड़ा। वहाँ एक मकान के अंदर से स्त्रियों की कुछ ऐसी बातचीत सुनाई दी कि वह कान लगा कर उस दरवाजे पर खड़ा हो गया। दरवाजे की दरारों से झाँक कर देखा तो उसे एक दालान में तीन नवयुवतियाँ बातें करती दिखाई दीं। यह तीनों बहनें थीं। बड़ी बहन ने कहा, मुझे अच्छी रोटियाँ खाने का शौक हैं। अगर मेरा विवाह शाही नानबाई से हो तो मजा आ जाए। मँझली बहन बोली, मैं तो तरह-तरह के खानों की शौकीन हूँ। मैं चाहती हूँ कि मेरा विवाह बादशाह के बावर्ची से हो। छोटी बहन चुप रही। उसकी बहनों ने बहुत पूछा तो उसने कहा, मेरा काम नौकर-चाकरों से नहीं चलेगा, मैं तो स्वयं बादशाह से शादी करना चाहती हूँ। इतना ही नहीं, मैं चाहती हूँ कि बादशाह से मेरे एक बेटा पैदा हो जिसके एक ओर के बाल सोने के हो, दूसरी ओर के चाँदी के। वह बालक जब रोए तो उसकी आँखों से आँसुओं की जगह मोती गिरें और जब वह हँसे तो उसके होंठों में कलियाँ खिली हुई मालूम हों। उसकी बड़ी बहन यह सुन कर हँसने लगी और बोली कि तू हमेशा पागलों जैसी बात करती है।
बादशाह को इस वार्तालाप से बड़ा कौतूहल हुआ। उसने मंत्री को आज्ञा दी कि इस घर को अच्छी तरह पहचान रखो और कल सुबह इन तीनों बहनों को मेरे सामने हाजिर करो। मंत्री ने दूसरे दिन उसकी आज्ञा का पालन किया और तीनों बहनों को बादशाह के समक्ष ला कर पेश कर दिया। बादशाह ने देखा कि छोटी बहन अपनी अन्य बहनों से कहीं अधिक सुंदर है। वह निगाहों से बुद्धिमान भी लगी। बादशाह उसे देख कर मुग्ध हो गया।
फिर बादशाह ने कहा, तुम लोग कल रात को अपने दालान में बैठी क्या बातें कर रही थीं। ठीक-ठीक वही बताना जो तुमने कहा था। खबरदार, एक शब्द का भी अंतर न

संयोग से मंत्री भी वहाँ मौजूद था। उसने समझा-बुझा कर बादशाह का क्रोध शांत कर दिया।
जिस नहर में ईर्ष्यालु बहनों ने बच्चेवाली टोकरी बहाई थी वह शाही बागों के अंदर से जाती थी। सारे शाही बागों के व्यवस्थापक यानी बागों के दारोगा का स्थान उसी नहर के किनारे था। उसने नहर में टोकरी बहते देखा तो एक माली से कह कर उसे निकलवाया क्योंकि नहर में इधर-उधर की चीजें नहीं आनी चाहिए। देखा तो उसमें एक अत्यंत सुंदर बालक था। दारोगा को देख कर आश्चर्य हुआ कि टोकरी में रखा बच्चा नहर में कैसे आ गया। लेकिन उसने अधिक सोच-विचार नहीं किया। वह निपूता था। बच्चे को उठा कर वह पत्नी के पास ले गया और कहा, भगवान ने यह बच्चा हमें दिया है। उसकी पत्नी भी बड़ी प्रसन्न हुई और बच्चे का पुत्रवत लालन-पालन करने लगी।
दूसरे वर्ष मलिका के फिर एक पुत्र पैदा हुआ। इस बार भी उसकी बहनों ने वैसी ही दुष्टता की। बच्चे को बाहर जा कर नहर में बहा दिया और मलिका के नीचे एक मरा बिल्ली का बच्चा ला कर रख दिया। महल में फिर मातम सा छा गया और बादशाह का क्रोध फिर आसमान छूने लगा और उसने मलिका का वध कराने की बात फिर कही। इस बार भी दयालु मंत्री ने समझा-बुझा कर उसे मलिका को मरवाने से रोका। मलिका पहले से अधिक अपमान की स्थिति में रहने लगी। इधर जिस टोकरी में बच्चा रखा था वह फिर बागों के दरोगा के हाथ लगी। वह इस बच्चे को भी पहले की भाँति पालने लगा।
कुछ दिनों बाद मलिका को फिर गर्भ रहा। बादशाह को आशा थी कि इस बार की संतान ठीक-ठीक होगी। लेकिन दोनों दुष्ट बहनें अब भी वहाँ मौजूद थीं और उनके मुँह खून लग चुका था। इस बार मलिका के बेटी हुई। मलिका की बहनों ने उसे भी नहर में बहा दिया। उस टोकरी को भी बागों के दारोगा ने निकलवा लिया और ईश्वरीय देन समझ कर इसका पालन-पोषण करने लगा। उधर दुष्ट बहनों ने मशहू्र किया कि मलिका ने छछुंदर जना है।
इस बार बादशाह अपना क्रोध बिल्कुल नहीं सँभाल पाया। उसने कहा कि ऐसी जीव-जंतु पैदा करनेवाली रानी से बदनामी ही होगी, इसे जरूर मरवा देना होगा। दयालु मंत्री ने उसके पैरों पर गिर कर कहा, पृथ्वीपाल, आप कुछ न्याय-अन्याय का विचार करें। इसमें रानी का क्या अपराध है? आप की बदनामीवाली बात ठीक है। तो इसके लिए यह करें कि मलिका के पास जाना छोड़ दें।

निवास के उपयुक्त न लगा। उसने शहर के बाहर जंगल के समीप उनके लिए विशाल भवन बनवाना शुरू किया।
दारोगा ने अपनी देखरेख में वह भवन बनवाया। वह तैयार हो गया तो उसकी दीवारों पर प्रख्यात कलाकारों द्वारा बड़े सुंदर चित्र बनवाए और महल को हर प्रकार की सुंदर और मूल्यवान सामग्री से सजाया। उसके पास ही उसने बड़ी मनोरम पुष्प वाटिका बनवाई जहाँ वे लोग मन बहलाया करें। इसके अतिरिक्त एक बड़ा भूमिक्षेत्र घिरवा कर उसमें बहुत-से जंगली जानवर रखवाए ताकि वे लोग घर के समीप ही शिकार खेल सकें क्योंकि स्वस्थ रहने के लिए शिकार अच्छी कसरत है।
महल के बन जाने पर दारोगा ने बादशाह से निवेदन किया कि मैंने जंगल के पास एक नया मकान बनवाया है, आपकी अनुमति हो तो मैं बाग के छोटे मकान को छोड़ कर नए मकान में रहूँ। बादशाह उससे खुश था इसलिए उसे तुरंत अनुमति मिल गई। इससे कुछ वर्ष पूर्व दारोगा की पत्नी का देहांत हो गया था। महल बनवाने में उसका कुछ उद्देश्य पत्नी की मृत्यु का दुख भुलाना भी था। किंतु महल बनने के कुछ महीनों बाद ही वह अचानक बीमार हो कर मर गया। उसने काफी धन-दौलत छोड़ी थी और उन तीनों को जीविका की कोई चिंता न थी किंतु उसकी अचानक मौत से उन्हें बड़ा दुख हुआ। अंत समय में वह इन तीनों से इससे अधिक कुछ न कह सका कि आपस में मिल-जुल कर रहना।
उसके मरने पर उसका विधिपूर्वक अंतिम संस्कार करके तीनों बहन-भाई मिल-जुल कर रहने लगे। दोनों भाइयों को एक प्रतिष्ठित राज पद भी मिल गया यद्यपि उनकी बादशाह से भेंट न होती थी। एक दिन दोनों शहजादे शिकार खेलने को गए। परीजाद घर में अकेली थी, सिर्फ उसकी दो-एक दासियाँ उसके साथ थीं। उसी समय एक धर्मनिष्ठ वृद्धा वहाँ आ कर कहने लगी, बेटी, नमाज का समय है, अनुमति दो तो अंदर आ कर नमाज पढ़ लूँ। परीजाद ने तुरंत अनुमति दे दी। जब वह नमाज पढ़ चुकी तो परीजाद के इशारे पर दासियों ने उस बुढ़िया को सारा महल इत्यादि दिखाया। उसने खुश हो कर कहा कि निःसंदेह जिसने यह महल बनवाया है वह अपने कार्य का विशेषज्ञ है।
मकान दिखाने के बाद दासियाँ, बुढ़िया को परीजाद के पास ले आईं। परीजाद ने कहा, बैठिए, आप जैसी धर्मनिष्ठ महिला का साथ करके मैं स्वयं को भाग्यशाली मानती हूँ। बुढ़िया ने नीचे फर्श पर बैठना चाहा लेकिन परीजाद ने उसे खींच कर अपने तख्त पर अपने बगल में बिठाया। बुढ़िया ने कहा, मालकिन, मेरी आपके

साथ बैठने की हैसियत बिल्कुल नहीं है, लेकिन आपका अनुरोध टाल भी नहीं सकती, इसलिए बैठ रही हैं।
परीजाद बुढ़िया से उसके ग्राम, परिवार आदि के बारे में बातें करने लगी। कुछ देर बार परीजाद की दासियों ने जलपान उपस्थित किया जिसमें भाँति-भाँति की रोटियाँ, नान, कुलचे तथा हरे फल और सूखे मेवे थे। कई प्रकार की मिठाइयाँ भी थीं। परीजाद ने कई चीजें अपने हाथ से उठा कर वृद्धा को दीं और कहा, अम्मा, अच्छी तरह पेट भर कर खाओ, तुम देर की अपने घर से निकली हो। थक भी गई होगी और रास्ते में कुछ खाया भी नहीं होगा। बुढ़िया ने कहा, बेटी, तुम जुग-जुग जियो। इतनी सुशील कोई अमीरजादी हो सकती है। यह बात मैं सोच भी नहीं सकती थी। मैं निर्धन हूँ, ऐसी स्वादिष्ट वस्तुएँ खाने की मेरी आदत नहीं है, लेकिन तुम इतने प्यार और आदर से कह रही हो तो खुशी से खाऊँगी। मैं इसे भगवान की दया समझती हूँ कि उसने मुझे तुम्हारा घर दिखाया।
नाश्ता करने के बाद परीजाद ने बुढ़िया से और भी बातें कीं क्योंकि वह कई विषयों की जानकार मालूम होती थी। उसे बुढ़िया से धर्म और ईश्वर भक्ति के बारे में कई प्रश्न पूछे जिनका उसने बहुत अच्छी तरह उत्तर दिया। फिर परीजाद ने बुढ़िया से पूछा, अम्मा, मेरे महल और बाग वगैरह के बारे में तुम्हारी क्या राय है? क्या और भी कोई वस्तु है जो तुम्हारी राय में यहाँ होनी चाहिए? बुढ़िया हँस कर बोली, बेटी, यह प्रश्न मुझ से न करो तो अच्छा हो। मैं कुछ कहूँगी तो तुम कहोगी कि यह दो टके की बुढ़िया मेरे महल और बाग में नुक्स निकालती है। परीजाद ने जोर दे कर कहा, मैं ऐसा कुछ नहीं कहूँगी। तुम जो कुछ कमी इसमें समझती हो वह मुझे जरूर बताओ, मैं उसे पूरा करने की कोशिश करूँगी।
बुढ़िया ने कहा, यहाँ सब कुछ है। किंतु मेरी समझ में यहाँ पर तीन चीजें और आ जाएँ तो संसार में तुम्हारा बाग अद्वितीय हो जाए। लेकिन उनका मिलना कठिन है। एक तो बुलबुल हजार दास्ताँ है। जब वह बोलता है तो हजारों चिड़ियाँ जमा हो जाती हैं ओर उसके स्वर में स्वर मिलाने लगती हैं। दूसरा एक गानेवाला पेड़ है। उसके पत्ते मोटे और चिकने हैं। जब हवा चलने पर पत्ते एक दूसरे से रगड़ खाते हैं तो उनसे मधुर संगीत निकलता है। इस संगीत से हर एक सुननेवाला मुग्ध हो जाता है। तीसरी वस्तु है सुनहरा पानी। उसकी एक बूँद किसी बर्तन में रख दी जाए तो वह बर्तन अपने आप भर जाता है और फिर उसमें से एक फव्वारा

बहमन को तो तलाश थी ही कि कोई आदमी मिले क्योंकि पहला मिलनेवाला ही उसे गंतव्य स्थान का पता दे सकता था। वह यह भी समझ गया कि पहला और आखिरी आदमी यहाँ यह ही मिल सकता है और यह भी स्वाभाविक ही है कि ऐसी अलभ्य वस्तुओं का पता किसी सिद्ध तपस्वी से लगे। बहमन घोड़े से उतरा और उसने वृद्ध तपस्वी के पास जा कर प्रणाम किया। बहमन को उस जगह से जहाँ वृद्ध का मुख हो सकता था कोई ध्वनि तो सुनाई दी किंतु उसकी समझ में कुछ भी नहीं आया।
कुछ देर बाद बहमन ने समझ लिया कि मूँछों और दाढ़ी के घने बालों ने बूढ़े सिद्ध का मुख इस रह बंद कर रखा है कि इसकी आवाज घुट कर रह जाती है। उसने अपना घोड़ा एक पेड़ से बाँधा और तपस्वी के पास आ कर अपनी जेब से एक छोटी-सी कैंची निकाली। फिर वह बोला, हे तपस्वी पिता, तुम्हारी बात मेरी समझ में बिल्कुल नहीं आई। अगर अनुमति दो तो मैं तुम्हारी भौंहें और मूँछें छाट दूँ। इनके कारण तुम्हारी सूरत आदमी के बजाय रीछ जैसी मालूम होती है। तपस्वी ने इशारे से उसे अनुमति दे दी।
बहमन ने उसकी भौंहों और मूँछों को छाँट डाला तो तपस्वी का चेहरा बिल्कुल बदल गया। शहजादा बहमन बोला, तपस्वी पिता, अगर मेरे पास दर्पण होता तो मैं तुम्हें दिखाता कि हजामत के बाद यही नहीं हुआ कि तुम रीछ के बजाय आदमी लगो बल्कि तुम बूढ़े के बजाय जवान भी लगने लगे हो। तपस्वी इस प्रकार की मनोरंजक वार्ता सुन कर मुस्कुराया और बोला, बेटे, मैं तुम्हारी सेवा से प्रसन्न हुआ। अब बताओ कि इतनी दूर किस लिए आए हो ताकि तुम्हारे उद्देश्य की सिद्धि के लिए मैं जो कुछ मदद कर सकता हूँ वह करूँ।
बहमन बोला, तपस्वी पिता, मैं बहुत दूर से बुलबुल हजार दास्ताँ, गानेवाला पेड़ और सुनहरा पानी लेने के लिए आया हूँ। आप कृपा कर के मुझे बताएँ कि यह वस्तुएँ मुझे कहाँ और कैसे मिलेंगी। बूढ़े ने यह सुन कर सिर झुका लिया और बहुत देर तक चुपचाप बैठा रहा। बहमन ने फिर कहा, तपस्वी पिता, तुमने मौन क्यों साध लिया है। अगर तुम्हें नहीं मालूम तो कह दो कि नहीं जानता। मैं किसी और से पूछूँ।
तपस्वी ने कहा, मुझे मालूम तो है लेकिन मैं तुम्हें इसलिए नहीं बताना चाहता कि तुम्हारी सेवा के बदले तुम्हें मुसीबत में नहीं डालना चाहता। बहमन ने कहा, यह क्या बात हुई? सिद्ध ने कहा, जहाँ यह चीजें हैं वहाँ का मार्ग बड़ा भयावह है, तुम्हारी तरह बीसियों आदमियों ने वहाँ जाने की राह

मुझसे पूछी है और कोई वापस नहीं लौटा। इसलिए तुमसे कहता हूँ कि जहाँ से आए हो वापस चले जाओ।
बहमन ने कहा, मैं वापस जाने के लिए यहाँ तक नहीं आया हूँ। मुझे अपना कार्य पूरा करना ही है चाहे इसमें मेरी जान चली जाए। अपने उद्देश्य में असफल हो कर मैं कायर की तरह जीना नहीं चाहता। अभी तक कोई शत्रु मुझे हरा नहीं सका है। जिसकी मौत आई होगी वही मेरी राह में रोड़ा अटकाने आएगा। तुम केवल इतनी कृपा करो कि मुझे राह बता दो, आगे की पूरी जिम्मेदारी मेरी। तुम मेरे युद्ध कौशल पर विश्वास तो करो।
तपस्वी ने कहा, बेटे, यही तो मुश्किल है कि तुम्हें युद्ध कौशल दिखाने का अवसर नहीं मिलेगा। तुम्हें जो शत्रु मिलेंगे वे सामने से मुकाबला नहीं करते बल्कि छुपे तौर पर वार करते हैं। शहजादे ने कहा, मैं छुपे तौर पर वार करनेवालों से भी निबटना जानता हूँ, आप मुझे वहाँ जानेवाली राह तो बताएँ। तपस्वी ने उसे बहुत समझाया लेकिन जब यह देखा कि बहमन किसी तरह अपनी जिद छोड़ता ही नहीं और जब तक राह न मालूम कर लेगा हरगिज नहीं टलेगा, तो उसने अपने झोले से एक गेंद निकाली और कहा, मुझे तुम्हारी जवानी पर अफसोस हो रहा है। लेकिन तुमने जिद पकड़ रखी है तो अपना भला-बुरा तुम्हीं जानो। तुम सवार हो कर उधर को जाओ और उस गेंद को भूमि पर गिरा दो।
यह गेंद खुद ही लुढ़कने लगेगी और तुम इसी के पीछे-पीछे चले जाना जब तक यह लुढ़कती रहे, तब तक तुम भी चलते रहना। एक पहाड़ के नीचे जा कर यह गेंद रुक जाएगी। वहाँ तुम रुक कर घोड़े से उतर जाना और घोड़े की लगाम उसकी गर्दन पर डाल देना ताकि वह ठहरा रहे। तुम फिर पहाड़ पर चढ़ना। तुम अपने दोनों ओर काले पत्थर काफी अधिक संख्या में देखोगे। उन पर तुम ध्यान न देना। इसके अलावा अपने पीछे से आते हुए बहुत-से अपशब्द और धमकियाँ सुनोगे। यह बहुत जरूरी है कि तुम इन गालियों की पूर्ण उपेक्षा कर दो। अगर तुमने एक बार भी डर कर पीछे की ओर देखा तो तुम और तुम्हारा घोड़ा दोनों काले पत्थर बन जाएँगे। तुम्हें राह में मिलनेवाले काले पत्थर भी तुम्हारी तरह उन तीन चीजों की खोज में जानेवाले आदमी थे। पीछे देखने के कारण वे पत्थर बन गए हैं।
अगर तुम कुशलतापूर्वक पहाड़ की चोटी पर पहुँच गए तो वहाँ एक वृक्ष पर टँगा हुआ पिंजड़ा मिलेगा जिसमें गानेवाली चिड़िया मौजूद है। उस चिड़िया की बातों से भी न डरना और उससे गानेवाले पेड़ और सुनहरे पानी का पता पूछना। वह

ऐसा सद्व्यवहार किया और उसने मुझे इसका ऐसा बदला दिया। अब मिले तो उस कलमुँही की बोटियाँ नोच लूँ। मेरे प्यारे भाई की जान उसी के दिलाए लालच के कारण गई। हे भगवान, तू भैया को जिंदा घर लौटा, चाहे मेरी मौत भेज दे। भैया न रहे तो चिड़िया, पेड़ और पानी को पा कर भी मैं क्या करूँगी। मुझे यह चीजें नहीं चाहिए, मुझे और भी कुछ नहीं चाहिए। मुझे सिर्फ मेरा भाई चाहिए। परीजाद बहमन की बातों को याद करके देर तक रोती रही। परवेज भी आँसू बहाता रहा। फिर उसने कहा, परीजाद, अब रोने-धोने से कुछ नहीं होगा। अब मैं जाता हूँ। मैं पता लगाऊँगा कि भैया किसी प्राकृतिक कारण से मरे हैं या किसी शत्रु ने उन्हें मारा है। किसी ने उन्हें मारा होगा तो मैं उसे जीता नहीं छोड़ूँगा, भैया की मौत का बदला जरूर लूँगा। परीजाद ने बहुत समझा कर उसे रोकना चाहा। वह बोली, मैंने एक भाई तो खोया ही है, दूसरे को मौत के मुँह में नहीं जाने दूँगी। बड़े भैया तुम से कुछ कम बहादुर नहीं थे। लेकिन परवेज ने उसकी एक भी बात न सुनी। उसने दूसरे दिन सुबह अपनी साहस यात्रा पर जाने की तैयारी शुरू कर दी।
दूसरे दिन उसके रवाना होने के समय परीजाद रो कर बोली, बड़े भैया ने तो अपनी कुशल जानने को एक राह भी बताई थी, तुम्हारा हाल मुझे कैसे मालूम होगा? परवेज ने उसे मोतियों की एक माला दी। उसने कहा, देखो, इसके सारे मोती अलग-अलग हैं। इसे उँगलियों पर चलाने से एक-एक मोती उँगलियों में आता है। जब तक यह मोती ऐसे ही रहें तो समझ लेना कि मैं ठीक-ठाक हूँ। जिस दिन यह एक-दूसरे से चिपक जाएँ और माला न फेरी जा सके तो समझ लेना कि मैं भी दुनिया में नहीं रहा। यह कह कर परवेज निकल पड़ा।
बीस दिन की यात्रा के बाद वह वहीं पहुँचा जहाँ वह सिद्ध तपस्वी बैठा था। उसने आदरपूर्वक सिद्ध को प्रणाम किया और पूछा, क्या आप बता सकेंगे कि मुझे बोलनेवाली चिड़िया, गानेवाला पेड़ और सोने का पानी कहाँ से मिल सकते हैं? तपस्वी ने कहा, बेटे, वह राह बहुत खतरनाक है। तुम वहाँ जाने का इरादा न करो और यहीं से लौट जाओ। वहाँ से अभी तक कोई वापस नहीं आया है। एक महीने से भी कम हुआ तुम्हारी ही शक्ल-सूरत का एक नौजवान मेरे लाख रोकने पर भी उधर को गया था। वह भी नहीं लौटा है।
परवेज ने कहा, वह मेरा बड़ा भाई था। यह तो मुझे मालूम है कि वह जीवित नहीं है, लेकिन मैं यह नहीं जानता कि वह कैसे मरा, किसी प्राकृतिक कारण से मरा या किसी दुश्मन ने उसे मारा। सिद्ध ने कहा, मैं तुम्हें बताता हूँ। बहुत-से

इसके अलावा मैं अपने दोनों कानों में कस कर रूई ठूँस लूँगी ताकि मुझे वे आवाजें सुनाई ही न दें।
सिद्ध ने मुस्कुरा कर कहा, बेटी, मालूम होता है कि तुम्हारे ही भाग्य में है। इतने लोग वहाँ गए हैं किंतु यह उपाय किसी को अभी तक नहीं सूझा। बस, सब कुछ इस पर निर्भर है कि चाहे जो कुछ सुनाई दे आदमी उसका असर अपने मन पर न पड़ने दे। परीजाद ने कहा, विश्वास रखिए कि मैं आपकी दी हुई सलाह पूरी तरह मानूँगी। अब आप यह बता दीजिए कि पहाड़ को कौन-सा रास्ता जाता है। बूढ़े तपस्वी ने कहा, बेटी, तुम होशियार तो बहुत मालूम होती हो लेकिन मैं एक बार फिर तुम्हें सलाह दूँगा कि घर लौट जाओ।
परीजाद आगे जाने की जिद पर अड़ी रही तो वृद्ध ने मजबूर हो कर अन्य लोगों की भाँति उसे भी मार्ग प्रदर्शन करनेवाली गेंद दी और कहा, इसे भूमि पर डाल दो। यह अपने आप लुढ़कती हुई पहाड़ के नीचे जा कर रुक जाएगी। तुम वहीं घोड़े से उतरना और पहाड़ पर चढ़ना शुरू कर देना। परीजाद ने ऐसा ही किया और तेजी से लुढ़कती हुई गेंद के पीछे घोड़ा दौड़ाने लगी। गेंद पर्वत के नीचे जा कर रुक गई तो वह घोड़े से उतर पड़ी और उसकी गर्दन पर लगाम डालने के बाद उसने अपने कानों में ठूँस-ठूँस कर रूई भर ली और धीरे-धीरे पहाड़ पर चढ़ने लगी। उसके पीछे आवाजें होने लगीं किंतु वे कानों में रूई ठुँसी होने के कारण उसे सुनाई न दीं और वह बढ़ती गई। फिर पीछे से आनेवाली आवाजें और तेज हुईं। यह आवाजें भी उसे धीमी सुनाई दीं और उन्होंने उसके मस्तिष्क को बिल्कुल विचलित नहीं किया। फिर उसे ऐसी गालियाँ सुनने को मिलीं जो स्त्रियों के लिए होती हैं और बड़ी अपमानजनक होती हैं। परीजाद को एक क्षण तो बुरा लगा किंतु फिर वह उन गालियों पर हँस पड़ी।
इसी तरह उस भयानक चढ़ाई को दृढ़ता और संयम से पूर्ण करने के बाद वह शिखर पर पहुँची तो देखा कि एक पिंजड़े में एक सुंदर चिड़िया मधुर स्वर में गा रही है। परीजाद को देखते ही वह सिंह की तरह गरज कर बोली, ए लड़की, खबरदार मेरे पास न आना। परीजाद इस पर हँसने लगी और दौड़ कर चोटी पर पहुँच गई। वहाँ भूमि समतल थी। उसने दौड़ कर चिड़िया के पिंजड़े पर हाथ रखा और बोली, चिड़िया रानी, आज से मैं तुम्हारी मालकिन हूँ और तुम मेरे कब्जे में रहोगी। फिर उसने कानों की रूई निकाल दी। चिड़िया बोली, तुम ठीक कह रही हो। अब मैं सदैव तुम्हारी सेवा और हित साधना करती रहूँगी। मैं पिंजड़े में बंद रहती हूँ किंतु संसार की कोई बात नहीं जो मुझे मालूम नहीं है। तुम्हारा हाल इतना

रास्ते पर पड़ गए जहाँ से हो कर बादशाह की सवारी आ रही थी। यह देख कर उन्होंने चाहा कि बगल के किसी रास्ते से निकल जाएँ। यह संभव न हुआ और वे बादशाह के सामने पड़ गए।
मजबूरी में वे घोड़ों से उतरे और बादशाह को झुक कर सलाम करने लगे। पहले बादशाह ने समझा कि वे उसके सामंतों में से हैं और देखने को ठहर गया कि कौन हैं। उसने उन्हें उठने की आज्ञा दी। वे उठे और सिर झुका कर खड़े हो गए। बादशाह उनकी सूरतें देख कर ठगा-सा रह गया। फिर उसने उनका नाम और निवास स्थान पूछा। बहमन ने हाथ जोड़ कर कहा, हुजूर, हम लोग आपके भूतपूर्व बागों के दारोगा के पुत्र हैं। हमारे पिता नहीं रहे। हम जंगल के किनारे उस महल में रहते हैं जो उन्होंने आपसे अनुमति ले कर बनवाया था। हमें वे इसीलिए अच्छे वातवरण में रखते थे कि बड़े हो कर हम आपकी सेवा करें।
बादशाह ने कहा, यह तो ठीक है। लेकिन लगता है कि तुम यहाँ शिकार खेल रहे थे। क्या तुम्हें मालूम नहीं कि यह शाही शिकारगाह है जहाँ और कोई शिकार नहीं खेल सकता? बहमन ने निवेदन किया, सरकार, हमारे पिता असमय ही जाते रहे और हमारा निर्देशक कोई नहीं रहा, इसीलिए हम लोगों का ज्ञान अधूरा है और अन्य नौजवानों की तरह हमसे भी भूल हो जाती है। बादशाह उनकी इस चतुराई पर मुस्कुरा उठा। फिर उसने पूछा, शिकार खेलना आता भी है? दोनों ने कहा, आप अवसर दें तो हम भी देखें हमें कितना शिकार खेलना आता है। बादशाह ने कहा, शिकार खेल कर दिखाओ। जंगल में पहुँचे तो बहमन ने एक शेर और परवेज ने एक रीछ को बरछियों से मार कर बादशाह के आगे रखा। दोबारा घने जंगल में जा कर बहमन ने एक रीछ और परवेज ने एक शेर मारा। बादशाह ने कहा, बस करो, क्या सारे जंगली जानवर आज ही मार डालोगे? मैं तो सिर्फ यह देखना चाहता था कि तुम लोगों में कितना शौर्य है।
बादशाह उनके शिष्टाचार, शारीरिक सौंदर्य और वीरता से अत्यधिक प्रभावित हुआ। वह उन्हें अपने से अलग करना ही नहीं चाहता था। उसने कहा, मैं चाहता हूँ कि तुम लोग यहाँ से मेरे साथ महल में चलो और मेरे साथ भोजन करो। बहमन ने कहा, हुजूर, इस समय आपका साथ न कर सकेंगे। इस उद्दंडता के लिए क्षमा चाहते हैं। बादशाह ने आश्चर्य से पूछा, क्यों? बहमन बोला, हमारी एक बहन है। हम तीनों जो भी करते हैं तीनों की सलाह से करते हैं। हम बहन की सलाह ले कर ही आपके यहाँ आ सकेंगे।

बादशाह ने कहा, मुझे इस बात की बड़ी खुशी है कि तुम भाई-बहन एक-दूसरे की सलाह ही से काम करते हो। आज तुम अपने घर जाओ। अपनी बहन से सलाह करके कल यहीं शिकार खेलने आना और मुझे बताना कि तुम लोगों में क्या सलाह हुई है। बहमन और परवेज बादशाह से विदा हो कर अपने घर आए किंतु उन्हें बादशाह की कही हुई बात याद न रही और उन्होंने बहन से कोई सलाह नहीं ली। दूसरे रोज वे शिकार खेलने गए तो वापसी में बादशाह ने पूछा कि तुमने अपनी बहन से सलाह ली या नहीं। अब यह दोनों घबराए। अस्लियत यह थी कि दोनों का मन शिकार में ऐसा रमा था कि उन्हें शिकार के अलावा हर बात भूल जाती थी। बादशाह ने पूछा तो वे दोनों घबरा कर एक-दूसरे की ओर देखने लगे। आखिर में बहमन ने कहा, हमसे बड़ी भूल हुई, हम अपनी बहन से सलाह लेना बिल्कुल भूल गए। बादशाह ने कहा कि कोई बात नहीं, आज पूछ लेना और कल आ कर मुझे बताना।
लेकिन वे उस दिन भी भूल गए और तीसरे दिन फिर बादशाह के सामने लज्जित हो कर कहा कि हम लोग आज भी आपकी आज्ञा का पालन करना भूल गए। बादशाह इस पर भी नाराज न हुआ कि मैं इन लोगों के साथ भोजन कर इनका सम्मान बढ़ाना चाहता हूँ और इन्हें इतनी भी परवा नहीं कि बहन से याद करके मेरे निमंत्रण की बात करें। लेकिन उसने बहमन को सोने की तीन गेंदे दीं और कहा कि इन्हें कमर में बँधे पटके में रख लो, जब कमर खोलोगे तो पटके से यह गेंदें जमीन पर गिरेंगी और उस समय तुम्हें याद आ जाएगा कि मेरे निमंत्रण के बारे में तुम्हें अपनी बहन से सलाह लेनी है।
इतनी बातचीत होने पर भी दोनों घर जा कर इस बात को भूल गए। लेकिन रात को सोने के लिए जाते समय बहमन ने कमरबंद खोला तो गेंदें जमीन पर गिरीं। वह फौरन अपनी बहन के पास गया और परवेज को भी ले गया। परीजाद अभी तक अपने शयनकक्ष में नहीं गई थी। दोनों भाइयों ने उसे बताया कि बादशाह ने उन्हें भोजन का निमंत्रण दिया है और यह भी कहा कि दो दिन तक तुमने सलाह लेना भूलते रहे। उसने कहा कि यह तो तुम्हारा सौभाग्य है कि बादशाह ने तुम्हें खाने पर बुलाया है किंतु तुमने यह बड़ा बुरा किया कि दो दिन तक बादशाह तक की कही हुई बात को भूले रहे। भला बताओ, जब मुझे इस बात से इतना बुरा लग रहा है तो बादशाह को रंज न हुआ होगा? वैसे तो तुम्हें बादशाह का निमंत्रण मिलते ही उसे सधन्यवाद स्वीकार कर लेना चाहिए था। लेकिन अब जब इतनी बात हो गई तो मैं बोलती चिड़िया से भी सलाह ले लूँ। फिर वह चिड़िया का पिंजड़ा अपने कक्ष में ले गई और बोली, चिड़िया रानी, तुम्हें तो सारी छुपी हुई बातों का पता

उसी समय शहजादे बढ़िया कपड़े पहन कर घोड़ों पर सवार हुए और शाही शिकारगाह में पहुँचे। शिकारगाह में कुछ देर तक उन्होंने बादशाह के साथ रह कर शिकार खेला। किंतु उस रोज गर्मी अधिक थी और धूप तेज थी, इसलिए उसने और दिनों से कुछ जल्दी ही शिकार खेलना खत्म कर दिया और अपने सैनिकों को वापस भेज कर दो- एक आदमियों को ले कर बहमन और परवेज के साथ उनके भवन की ओर चला। बहमन ने आगे बढ़ कर पहले से परीजाद को बताया कि बादशाह आ रहे हैं। वह ठीक कपड़े पहन कर भवन के मुख्य द्वार पर आ खड़ी हुई। बादशाह द्वार के सामने घोड़े से उतरा और भवन की ओर चला तो परीजाद आगे बढ़ी और उसने अपना सिर बादशाह के चरणों पर रख दिया।
बहमन और परवेज ने परिचय दिया कि यही हमारी बहन परीजाद है। बादशाह ने उसे उठा कर उसके सिर पर हाथ फेरा ओर उसके सुंदर रूप को वात्सल्यपूर्ण दृष्टि से देखता रहा। उसे यह देख कर ताज्जुब-सा हो रहा था कि परीजाद की जैसी सूरत उसकी स्मृति में धुँधली-सी उभर रही थी।
किंतु वह समझ न पाया कि किसकी सूरत है। इसके बाद परीजाद बादशाह को भवन के अंदर ले गई। उसने बादशाह को अपने सुंदर और विशाल आवास के हर भाग को दिखाया। बादशाह ने पूरा भवन देख कर कहा, बेटी, तुमने अपने महल की सजावट और रखरखाव खूब कर रक्खा है। अब मुझे अपना बाग भी दिखाओ। कोई आदमी मुझसे तुम्हारे बाग की बड़ी तारीफ कर रहा था।
परीजाद ने उस कक्ष का, जिसमें यह सभी लोग मौजूद थे, एक ओर का दरवाजा खोला तो हरा-भरा बाग दिखाई दिया। बाग में वैसे तो सब कुछ सुंदर था किंतु बादशाह की नजर फव्वारे पर अटक गई। सुनहरा पानी काफी ऊँचाई तक उछल रहा था। बादशाह ने उसे पास से देखना चाहा। परीजाद उसे फव्वारे के पास ले गई। बादशाह ने कहा, इसके सुनहरे पानी का हौज कहाँ है और किस चीज के जोर से यह फव्वारा इतना ऊँचा उछलता है। यहाँ तो मुझे कोई चीज दिखाई नहीं देती न कोई हौज...।
वह अपनी बात पूरी करने के पहले ही चौंक कर एक ओर देखने लगा जहाँ से सुमधुर संगीत का ध्वनि आ रही थी। उसने कहा, क्या तुम लोगों ने बाग के अंदर भी गाने- बजाने का प्रबंध कर रखा है और यह कौन गायक है जिसकी आवाज शाही गवैयों से भी अच्छी है? परीजाद हँस कर बोली, नहीं हुजूर, कोई गवैया नहीं है। यह आदमी नहीं, पेड़ गा रहे हैं। बादशाह की भौंहें चढ़ गईं, उसने सोचा परीजाद हँसी कर रही है। लेकिन परीजाद ने कहा, आइए, आपको दिखाऊँ। यह कह कर वह बादशाह को गानेवाले पेड़ के पास ले गई। बादशाह हक्का-बक्का रह गया। मधुर संगीत

वास्तव में पेड़ ही से निकल रहा था। कुछ देर तक बादशाह के मुँह से कोई आवाज नहीं निकली। कभी फटी-फटी आँखों से गानेवाले पेड़ को देखता कभी सुनहरे फव्वारे को।
कुछ देर बाद उसने कहा, यह दोनों चीजें कल्पना के बाहर हैं। यह पेड़ तुमने कहाँ पाया? और हाँ, मैं पूछ रहा था कि फव्वारे का हौज कहा है और इतना ऊँचा किस चीज के जोर से उछलता है? परीजाद ने कहा, सरकार, इस पानी का कहीं हौज नहीं है, न किसी कल द्वारा इसे जोर की उछाल दी जाती है। संगमरमर के हौज के अंदर रखा हुआ जो बर्तन आप देख रहे हैं, उसी में कुल पानी है। यह उसी में से उछलता है और वहीं पर लौट कर गिरता है। यह सूखता भी नहीं इसीलिए कम नहीं होता। जो गानेवाला पेड़ अभी आपने देखा है उसकी अपनी विशेषता संगीत देने की है। इसके पत्ते ऐसे हैं कि जब हवा चलने पर आपस में रगड़ खाते हैं तो उनसे अपने आप मनोहर संगीत पैदा होता है। जब हवा बिल्कुल नहीं चलती तो यह वृक्ष मूक रहता है।
बादशाह ने कहा, यह तो बड़ी अजीब चीजें हैं। इनके जैसी किसी चीज की मैं कल्पना भी नहीं कर सकता था। तुमने इन्हें कहाँ पाया? परीजाद ने कहा, यह चीजें किसी देश में नहीं पाई जातीं। मैं इन्हें एक रहस्यमय स्थान से लाई हूँ लेकिन मेरे वहाँ से आने के बाद वहाँ का रास्ता भी बंद हो गया।
फिर परीजाद ने कहा, सरकार, मेरे पास एक और अजीब चीज है जिसे आप देखें। यह एक चिड़िया है जो आदमियों की तरह बोलती है। और जब यह गाती है तो सारे पक्षी जमा हो जाते हैं और इसके सुर में सुर मिला कर गाने गाते हैं। बादशाह ने कहा, उस चिड़िया को भी दिखाओ। परीजाद बादशाह को उस बारहदरी के पास लाई जिसमें उस चिड़िया का पिंजड़ा रखा गया था। बादशाह ने देखा कि आसपास के चार-छह पेड़ों पर सैकड़ों और विभिन्न प्रकार के पक्षी एक सुर में गा रहे हैं। उसने पूछा, क्या यह सब पक्षी तुमने पाले हैं? परीजाद बोली, नहीं। यह बारहदरी में रखे पिंजड़े में जो चिड़िया है उसके गाने से खिंच कर आए हैं और उसके साथ-साथ गा रहे हैं। बादशाह बारहदरी में गया तो देखा कि पिंजड़े में बंद एक चिड़िया मस्त हो कर गा रही है।
परीजाद ने कहा, बोलनेवाली चिड़िया, देखती नहीं कि बादशाह सलामत खुद आए हुए हैं? तेरा इधर ध्यान नहीं है। यह सुन कर चिड़िया चुप हो गई और उसके साथ ही आसपास के पेड़ों पर बैठे हुए सारे पक्षी चुप हो गए। चिड़िया ने बादशाह को प्रणाम किया और पूछा कि आपको यहाँ तक आने में किसी प्रकार का कष्ट तो नहीं

हुआ। बादशाह को यह देख कर ताज्जुब हुआ कि यह चिड़िया बिल्कुल मनुष्य जैसी आवाज में बोलती है। उसने चिड़िया के अभिवादन का यथोचित उत्तर दिया और कुछ देर उससे बातें कीं। चिड़िया ने हर बात का शिष्टाचारपूर्वक उत्तर दिया। बादशाह उससे ऐसा प्रभावित हुआ कि खाने के समय भी उसका पिंजड़ा पास में रखवा लिया ताकि उससे बातें करता रहे।
बादशाह खाने पर बैठा तो संयोग से सबसे पहले खीरे के शोरबेवाला कटोरा ही उठाया। जब उसमें देखा कि उसकी सतह पर अनबिंधे मोती बिछे पड़े हैं, उसने खाने पर बढ़ा हुआ हाथ खींच लिया और नाराजगी से बोला, यह क्या मजाक है? यह क्या पेश किया गया है? तीनों भाई-बहन चुप रहे किंतु चिड़िया ने तपाक से कहा, सरकार, ईश्वर की माया अपरंपार है। मलिका के पेट से कुत्ते-बिल्ली निकल सकते हैं तो बादशाह के पेट में मोतियों के ढेर भी जा सकते हैं।
बादशाह पहले तो आँखें तरेर कर चिड़िया को देखने लगा। फिर उसे बीती बातें याद आईं तो उसने सिर नीचा कर लिया। कुछ देर मौन रहने के बाद बोला, चिड़िया, तेरी बात ठीक है। मैं भी सोचता हूँ जिन बातों पर मैंने विश्वास किया वे बुद्धि से कोसों दूर हैं। फिर भी मैंने उन पर इसलिए विश्वास किया कि स्वयं मलिका की बहनों ने यह कहा था और मैंने सोचा कि वे झूठ न कहेंगी क्योंकि वे उसकी सगी बहनें थीं, उसकी हितचिंतक थीं।
चिड़िया ने कहा, सरकार से यही तो भूल हुई कि आप ने उन्हें हितचिंतक समझा। जब से उन्होंने देखा कि वे नौकरों से ब्याही गईं और छोटी बहन राजरानी बन गई तो वे जल मरीं। उन दुष्टों ने इस बात का भी ख्याल न किया कि मलिका ने शादी के बाद भी उनसे बहनों जैसा प्रेम रखा था। मलिका को मृत्यु-दंड दिलाने के लिए ही उन्होंने तीन- तीन बार सफेद झूठ बोला। वह तो भला हो उस नेक मंत्री का जिसके कारण मलिका की जान बच गई।
मलिका के प्रति अपने दुर्व्यवहार को याद करके बादशाह की आँखों में आँसू आने लगे। चिड़िया फिर बोली, सरकार, अपने सामने बैठे इन तीन बच्चों को देखिए। यह वह पिल्ला, बिलौटा और छछूंदर हैं जिन्हें आपकी मलिका ने जन्म दिया था। मलिका की दुष्ट बहनों ने इनके जन्म पर इनकी जगह मरे जानवर रख दिए और इन्हें कंबल में लपेट कर टोकरियों में डाल-डाल कर बहा दिया था ताकि दूर जा कर डूब जाएँ और किसी को पता न चले। किंतु भगवान को इन्हें जीवित रखना था। आपके दिवंगत बागों के दारोगा ने इन तीनों को ही नहर से निकलवा लिया। उसके कोई संतान नहीं थी इसलिए उसने इनका लालन-पालन अपनी संतान की तरह किया

जिंदा हैं और बड़े आराम से हैं, तुम चल कर उनसे मिलो। यह खबर सारे राज्य में फैल गई और सभी लोग उत्सव-सा मनाने लगे।
हर जगह नाच-रंग होने लगे। मलिका बादशाह के साथ इन लोगों के महल में गई।
तीनों बच्चे अपनी माँ से देर तक चिपटे रहे। फिर सब ने मिल कर भोजन किया।
इसके बाद बादशाह और तीनों संतानों ने मलिका को गानेवाला पेड़, सुनहरे जल का स्वयंचालित फव्वारा और मनुष्यों की भाँति बोलनेवाली चिड़िया दिखाई।
मलिका को मालूम हो रहा था कि वह स्वप्न देख रही है।
उन लोगों के निवास स्थान से शाही महल तक आनेवाली सवारी को देखने के लिए सड़कों पर जबर्दस्त भीड़ हो गई। बादशाह ने सार्वजनिक समारोह का आदेश दिया और कई दिनों तक खेल-तमाशे होते रहे। बादशाह ने इतना दान दिया कि शहर में कोई व्यक्ति निर्धन नहीं रहा। बादशाह ने इसी अवसर पर बहमन को युवराज घोषित करके क्रियात्मक रूप से उसके हाथ में सारा राज्य-प्रबंध दे दिया। परवेज को उसने सेना का अधिपति बना दिया। परीजाद को अपने एक मित्र बड़े बादशाह के एकमात्र पुत्र से ब्याह दिया।
शहरजाद ने यह कहानी खत्म की तो दुनियाजाद ने कहा, बड़ी सुंदर कहानी सुनाई। अब कौन-सी कहानी सुनाओगी? शहरजाद ठंडी साँस भर कर बोली, कोई नहीं। मुझे जो भी कहानियाँ आती थीं सब खत्म हो गईं और आज जल्लाद के हाथों मेरी कहानी भी खत्म हो जाएगी।
शहरयार ने मुस्कुरा कर कहा, नहीं बेगम, तुम्हारी कही हुई कहानियाँ अमर रहेंगी और तुम्हारी उम्र लंबी होगी। तुमने कहानियाँ सुना कर मेरा ज्ञानवर्धन भी किया है और मन का मैल भी धो दिया है। मैं आज घोषणा करूँगा कि आज से मैं अपना शादी करके पत्नी को मरवाने का नियम समाप्त कर रहा हूँ। शहरजाद उसके पैरों पर गिर पड़ी। दुनियाजाद के आँसू बहने लगे।

***** समाप्त

*****

sjeet